АНТОЛОГИЯ РУССКОГО РАССКАЗА

СОВРЕМЕННЫЙ СОВЕТСКИЙ РАССКАЗ

ИЗДАТЕЛЬСТВО ПРОГРЕСС•
МОСКВА

श्रेष्ठतम रूसी कहानियां

आधुनिक सोवियत रचनाएं

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक – मदन लाल 'मधु'

•

АНТОЛОГИЯ РУССКОГО РАССКАЗА,
СОВРЕМЕННЫЙ СОВЕТСКИЙ РАССКАЗ

На языке хинди

अनुक्रम

मिखाईल शोलोखोव (जन्म १६०५) – विश्व-विख्यात सोवियत लेखक। इनके उपन्यासो 'धीरे बहे दोन रे', और 'कुवारी धरती ने अगडाई ली' पर विश्व-सस्कृति उचित रूप से गर्व कर सकती है।

'इन्सान का नसीबा', यह कहानी १६५७ में लिखी गई थी। इस कहानी पर आधारित सोवियत फिल्म को न्यायोचित रूप से उच्चतम अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

मिख़ाईल शोलोखोव
इन्सान का नसीबा

लडाई के बाद का पहला वसन्त जब ऊपरी दोन के प्रदेश मे आया तो उसके अजब रग नजर आये। वह बडी तेजी, बहुत जोर-शोर दिखाता आया। मार्च के अत मे अजोव-सागर के किनारे से गरम हवाये बहने लगी और दो दिनो के अन्दर ही दोन नदी के बायें तट की सारी बालू के ऊपर की बर्फीली चादरे हट गईं। स्तेपी मे बर्फ से भरी हुई घाटिया, नाले और खड्ड फूल-से गये। स्तेपी की नदिया बर्फ तोडकर

पागलो-सी उमड चली। रास्तो से ग्राना-जाना बिल्कुल दुश्वार हो गया।

साल के इस अटपटे समय मे कुछ ऐसा हुआ कि मुझे बुकानोव्स्काया कस्बे मे जाना पडा। दूरी कोई विशेष न थी। बस, कोई साठ किलोमीटर। पर यही किलोमीटर जब तय होने पर आये तो काले कोसो मे बदल गये।

मै अपने मित्र के साथ सूर्योदय के पहले रवाना हुआ। मोटे-ताजे घोडो ने जोतो पर पूरा ज़ोर मारा, फिर भी भारी गाडी मुश्किल से खिची। पहिये धुरो तक बालू, जमे हुए पानी और बर्फ के मिले-जुले गारे मे धसते रहे। एक घटे के अन्दर-अन्दर घोडो की बगलो और कूल्हो के बदो के नीचे के हिस्सो पर झाग के बडे-बडे दूधिया चकत्ते नजर आने लगे। सुबह की ताजी हवा घोडे के पसीने और साज पर पुते हुए और धूप मे गर्म हो जानेवाले तारकोल की तीव्र और नशीली बास से भर गई। जहा घोडो को गाडी खीचने मे खास कठिनाई होती, वहा हम उतर जाते और पैदल चलते। हमारे पैर जहा भी पडते, बूटो के नीचे की ढीली बर्फ पिस सी उठती, और आगे बढना बहुत ही टेढी खीर लगता। परन्तु, रास्ते के किनारो पर अब भी जमे हुए पानी की चमचमाती परत बिछी हुई थी, और उधर से जाना और भी दुस्तर था। गरज यह कि येलन्का नदी को पार करने तक की तीस किलोमीटर की मजिल तय करने मे हमे छ घटे लगे।

मोखोव्स्की गाव के सामने बहती हुई छोटी सी नदी जो गरमी मे जगह-ब-जगह सूखी रहती थी अब आलदार के पौधो से भरी दलदलो की एक किलोमीटर की चौडाई तक बाढ से उमडी मिली। यहा हमे नदी को पार करने के लिए एक नाव का सहारा लेना पडा। नाव थी चपटे तले की और अविश्वसनीय। उसमे अधिक से अधिक तीन आदमी एक साथ जा सकते थे। तो, अब हमने घोडे वापस कर दिये। उस पार सामूहिक फार्म के शेड मे खडी एक जीप हमारा इन्तजार कर रही थी। जीप पुरानी थी, उसके अजर-पजर ढीले थे, और वह जाडे मे वहा छोड दी गई थी। पर, वह तो बाद की बात थी। इस समय तो मै और ड्राइवर हिचकते-झिझकते उस हिलती-डुलती डोगी पर सवार हुए। मेरा मित्र सारे सामान के साथ किनारे पर ही रह गया। डोगी ने किनारा छोडा ही था कि सडे हुए तख्तो से पानी के छोटे-छोटे फव्वारे चालू हो गये। हमने जो हाथ आया उससे दरारे भरी और रह-रह कर पानी बाहर उलीचते रहे। इस तरह एक घटे मे हम नदी के दूसरे किनारे पर पहुचे। ड्राइवर गाव से जीप लाया, दुबारा नाव के पास गया और डाड उठाते हुए बोला – "अगर यह सडा-गला, पुराना तसला टुकडे-टुकडे होकर पानी मे बह ही न जायेगा तो मै दो घटे मे आपके दोस्त को लेकर वापस आ जाऊगा। हा, इससे कम वक्त न लगेगा।"

गाव नदी से काफी दूर था, और नीचे, पानी के पास एक अजब-सा सन्नाटा था। ऐसा सन्नाटा वीरान जगहो मे या तो शरद् के काफी बीतने पर छाता हे, या फिर वसन्त के बिल्कुल आरम्भ मे घिरता है। पानी से सीली-सीली बू आ रही थी और इस बू मे सडते हुए आलदारो के पोधो की सडायध मिली हुई थी। बकाइनी धुध से नहायी दूर की स्तेपी से धरती की सोधी-सोधी बास हवा के हलके-हलके लहरो के परो पर उडी चली आ रही थी। यह सदाबहारी बास इन्द्रियो की पकड मे भी कठिनता से ही आती थी और ऐसी जमीन की थी, जिसे हाल ही मे बर्फ की जकड से छुटकारा मिला था।

पानी से थोडी ही दूर बालू के ऊपर बेंतो और शाखो की एक टूटी हुई बाड पडी थी। मै उस पर बैठ गया और सिगरेट का धुआ उडाने की सोची। पर, जेब मे हाथ डाला तो निराशा हाथ लगी। सिगरेट का पैकेट भीग गया था। बात यह है कि पानी की सतह से सटी हुई नाव के ऊपर से गुजरती हुई एक लहर मुझे कमर तक मटियाले पानी से तर-बतर कर गई थी। उस समय सिगरेट की बात सोचने का समय नही था मेरे पास, क्योकि नाव को डूबने से बचाने के लिए मुझे दूसरे ही क्षण अपने हाथ का डाड रखकर पानी उलीच-उलीचकर बाहर फेंकना पडा था। परन्तु इस समय अपनी लापरवाही पर काफी खीझ आई। मैने बहुत

सावधानी से गीला, भूरा सा पैकेट जेब से निकाला और उकडू बैठ एक-एक करके सारी सिगरेटे बाड पर बिछाने लगा।

समय दोपहर का था। सूरज मई के दिनों की तरह तप रहा था। मुझे लगा कि सिगरेटे देखते ही देखते सूख जायेंगी। गरमी तो सचमुच ऐसी थी कि मुझे अफसोस होने लगा कि इस सफर के लिये मैंने यह फौजी पतलून और यह रूई की जैकेट आखिर पहिनी क्यो? जाडे के बाद वह सचमुच पहला गरम दिन था। अपने को पूरी तरह उस वीराने और सन्नाटे को सौपकर, अपनी पुरानी गर्म फौजी टोपी उतारकर वहा बैठना, मशक्कत की खेवाई के बाद बाल सुखाना और धुधलाये नीलम के बीच लहराते, चौडे सीनेवाले बादलो को भर आख देखना मुझे बहुत भला लगा।

इसी समय गाव के सिरे के घरो के पीछे से निकलकर मैंने एक आदमी को रास्ते पर आते देखा। वह एक लडके का हाथ पकडे जा रहा था। लडके की उम्र मुझे कोई पाच या छ वर्ष की लगी, अधिक नही। सो, वे दोनो धीरे-धीरे नदी को पार करने की जगह की ओर बढे, पर जीप के पास पहुचकर मुडे और मेरी तरफ आने लगे। आदमी कद का लम्बा था, उसके कधे थोडे झुके हुए थे। वह सीधा मेरे पास आया और भारी, भर्राई हुई आवाज मे बोला–"कहो भाई।"

"सुनाओ भाई"—मैंने उसके बढे हुए बडे, खुरदरे हाथ से हाथ मिलाया।

आदमी लडके की ओर झुका और बोला—"चाचा को नमस्ते कहो, बेटे! लगता है, तुम्हारे बापू की तरह यह भी कोई ड्राइवर है। फर्क सिर्फ यह है कि हम और तुम चलाते थे लॉरी और यह उस छोटी-सी मोटर को दौडाता है।"

बच्चे ने आसमान की तरह निर्मल अपनी आखे मेरी आखो मे डाली और जरा-सा मुस्कराते हुए अपना गुलाबी, ठडा हाथ मेरी ओर बढा दिया। मैंने धीरे से उसका हाथ दबाते हुए पूछा—"ठडक से ठिठुरे जा रहे हो, बूढे बाबा? आज तो ऐसी गरमी है और तुम्हारा हाथ इतना ठडा है यह क्यो?"

हृदयस्पर्शी, बाल-सुलभ विश्वास के साथ लडका मेरे घुटनो के पास सट आया और अचरज से भरकर अपनी छोटी-छोटी, पीली भौंहे ऊपर उठाते हुए बोला—"लेकिन मै तो बूढा नही हू, चाचा मै तो अभी लडका हू और, ठड भी मुझे नही लग रही है सिर्फ मेरे हाथ ठडे है, क्योकि मै बर्फ के गोले बनाता रहा हू।"

पीठ पर से अधभरा सफरी थैला नीचे उतारते हुए पिता धीरे से मेरी बगल मे आ बैठा और बोला—"मेरा यह नन्हा-मुन्ना मुसाफिर मेरा यार मुसलसल सिरदर्द है यानी कि किया क्या जाये, है ही! यह खुद तो थका ही, साथ

ही इसने मुझे भी थका मारा। आप लम्बा डग भरिये तो लडका दुलकी मारने लगता है . खैरियत तभी है कि आप उसके छोटे-छोटे कदमो से कदम मिलाकर चले नतीजा यह कि जहा एक कदम से मेरा काम चल सकता है, वहा मुझे तीन कदम भरने पडते है और हम घोडे और कछुये की तरह चलते चले जाते है। फिर यह कि यह क्या कर रहा है और क्या नही, इसके लिए दो आखे आपके सिर के पीछे होनी चाहिए। आपने पीठ फेरी नही कि साहबजादे या तो किसी गढे-गढैया मे उतर गये या जमे हुए पानी के किसी टुकडे को तोडने मे जुट गये और उसे मिठाई की तरह चूसने लगे। नही भाई, ऐसे बच्चे को साथ लेकर सफर करना आदमी के बस की बात नही कम से कम पैदल तो बिल्कुल ही नही।"—इसके बाद थोडी देर तक वह चुप रहा और फिर उसने पूछा—"और तुम तुम अपनी कहो, भाई, अपने चीफ का इन्तजार कर रहे हो?"

उसे यह बतलाना अब मुझे अच्छा नही लग रहा था कि मै ड्राइवर नही हू, अतएव मैने उत्तर दिया—"हा, इन्तजार करना ही पड रहा है।"

"चीफ तुम्हारा उस पार से आनेवाला है?"

"हा, उस पार से ही आयेगा।"

"तुम्हे पता है, क्या नाव जल्दी ही आनेवाली है?"

"कोई दो घटे मे आयेगी।"

"काफी वक्त है। खैर, तो जरा सास ले ली जाये। मुझे कोई जल्दी नही। मै तो इधर से गुज़र रहा था कि तुम पर नजर पडी। सोचा कि कोई अपना ही ड्राइवर भाई है इन्तजार कर रहा है चलू मै भी वही, उसके साथ दो-चार कश तम्बाकू के ही हो जाये। अकेले कुछ मजा नही आता ऐसे ही जैसे अकेले दम तोडने मे कुछ मजा नही। लगता है कि ठाठ से जीते हो सिगरेटे पीते हो भीग गई सिगरेटे ऐ? खैर मेरे भाई, गीला तम्बाकू और डॉक्टरी इलाज के बाद घोडा दोनो के दोनो बेकार तो, आओ फिर, सिगरेट के बजाय देसी तम्बाकू का ही सहारा लिया जाये।"

उसने अपने हल्के, खाकी पतलन की जेब से नली की तरह लिपटी हुई गुलाबी रग की एक पुरानी-सी थैली निकाली और खोली तो मेरी निगाह एक कोने पर कढे कुछ शब्दो पर पडी। लिखा था – "प्यारे फौजी को – लेबेद्यान्स्काया माध्यमिक स्कूल की छठी श्रेणी की एक छात्रा की ओर से।"

हमने देसी तेज तम्बाकू के कश लगाये, और बहुत देर तक मौन साधे रहे। फिर मैने सोचा कि उससे पूछू कि इस लडके के साथ वह आखिर जा कहा रहा है, और क्या ऐसा काम आ पडा कि इन बुरे रास्तो का मुह देखना पडा। परन्तु, मै पूछू-पूछू कि उसने ही पहले सवाल कर दिया – "क्या पूरी लडाई भर ड्राइवरी ही करते रहे?"

"लगभग पूरी लडाई भर।"

"मोर्चे पर?"

"हा।"

"खैर, भाई मेरे, वहा भी ऐसी मुसीबते देखी, ऐसी तकलीफे झेली कि   कुछ न पूछो   जरूरत से ज्यादा झेली   "

उसने अपने बडे, काले हाथ घुटनो पर टिकाये और कधे झुका लिये। मैंने बगल से उसपर निगाह डाली तो अजीब ढग से परेशान हो उठा। आपने कभी ऐसी आखें देखी है जिनमे राख का छिडकाव नजर आये   ऐसी कलप और उदासी से भरी आखे कि उनकी तरफ देखने की हिम्मत ही न हो? बस, तो नदी-नाव सजोग से मिले मेरे इस परिचित की आखे बिल्कुल ऐसी ही थी।

उसने बाड से ऐंठी हुई एक टहनी तोडी और एक क्षण तक बालू पर उससे कुछ अजीब सी चित्रकारी करता रहा। फिर बोला—"कभी-कभी रातो को मै पलक तक नही झपका पाता। मै बस अधेरे मे आखें गडाये रहता हू, गडाये रहता हू, और सोचता रहा हू—'जिन्दगी   तुमने ऐसा क्योकर किया   तुमने इस तरह मेरे अग क्यो काट लिये   तुमने मेरे तन-बदन से सारी जान क्यो निकाल ली   इस तरह बेजान क्यो कर दिया?'—पर, न तो इन सवालो का कोई जवाब मुझे अधेरा देता है, और न दमकते सूरज का

उजाला   नही, मुझे कोई जवाब नही मिलता   और, शायद मुझे कोई जवाब कभी मिलेगा भी नही   "—इतना कहकर वह अपने आपे मे आया, अपने बेटे को स्नेह से थपथपाते हुए बोला—"मुन्ने, जाओ, पानी के पास जाकर खेलो   बडी नदी हो तो छोटे बच्चो को खेल-खिलवाड के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाता है   पर, देखो, ख्याल रखना   तुम्हारे पैर न भीगने पाये।"

धुआ उडाते समय मैने मौका मिलते ही तेजी से एक निगाह बाप और बेटे दोनो पर डाली और एक बात मुझे बहुत ही अजीब लगी। लडके के कपडे सादे, पर अच्छे और गफ थे। मेमने की पुरानी खाल के अस्तरवाला, लम्बे पल्ले का छोटा सा कोट उसके बदन पर बहुत ही फिट था, छोटे-छोटे बूटो मे ऊनी मोजो के समाने की अच्छी गुजाइश थी और कोट की एक आस्तीन का फटा हुआ हिस्सा बहुत ही सफाई से सिला हुआ था। यानी यह कि इन सब मे किसी औरत का अर्थात् उसकी मा का कुशल हाथ था। पर, पिता का हिसाब-किताब बिल्कुल दूसरा था। उसकी रूईदार जैकेट कई जगह से जली हुई थी और रफू भद्दा था। पुराने, खाकी पतलून पर लगा पैवद ठीक से सिला न था। मोटे-मोटे टाके लगाकर यो ही जोड दिया गया था। हाथ किसी मर्द का मालूम होता था। उसके फौजी जूते लगभग नये थे, पर मोटे ऊनी मोजो मे छेद ही छेद थे। उन्हे जैसे किसी औरत का

हाथ नसीब ही न हुआ था   इसपर भी अनुभव मैंने यही किया कि या तो यह आदमी विधुर है या इसके और इसकी पत्नी के बीच कुछ न कुछ गडबड है।

उसने पानी की ओर दौडते हुए अपने बेटे को गौर से देखा, खासा, और फिर बोलना शुरू किया। मैं उसकी बात पूरे ध्यान से सुनने लगा। कहने लगा—

"शुरू मे मेरी जिन्दगी बहुत साधारण रही है   मैं वोरोनेज प्रदेश का रहनेवाला हू और वहा मेरा जन्म १६०० मे हुआ। गृह-युद्ध के जमाने मे मैं किक्विद्जे डिविजन मे लाल-सेना मे रहा। १६२२ के अकाल के वक्त मैं कुबान चला गया और वहा कुलको के लिए बैल की तरह खटा। इसलिए ही जिन्दा बच गया। पर, मेरे परिवार के सारे लोग यानी पिता, माता और बहन घर पर ही बने रहे और भुखमरी के शिकार हो गये। इस तरह मैं अकेला रह गया। जहा तक और नाते-रिश्तेदारो की बात है, मेरा नामलेवा कही कोई नही। खैर, तो एक साल बाद मैं कुबान से लौटा और अपनी झोपडी बेचकर वोरोनेज चला गया। वहा पहले मैंने बढई का काम किया, फिर एक कारखाने मे चला गया और मेकेनिक का काम सीख लिया। इसके बाद जल्दी ही मेरी शादी हो गई। मेरी पत्नी का लालन-पालन बाल-सदन मे हुआ था। वह भी अनाथ थी। हा, पत्नी मुझे कायदे की मिल गई! बडा मधुर स्वभाव, बडी हसमुख, हमेशा दूसरे को खुश करने को

उत्सुक! और, फुर्तीली और चुस्त भी वह मुझसे कही ज्यादा थी। बचपन से उसने दुख-मुसीबते देखी थी। हो सकता है कि इस बात का भी उसके चरित्र पर प्रभाव पडा हो। तुम उसे अजनबी के नाते देखते तो कह लो कि कही कोई भी खास बात न लगती। पर, देखो न, मै तो उसे ऐसे नही देखता था। उसका पूरा व्यक्तित्व मेरे सामने रहता था, और मेरे लिए उससे ज्यादा खूबसूरत औरत न तब दुनिया मे थी और न अब कभी होगी।

"मै काम से घर आता—थकान से चूर—और कभी-कभी तो ऐसा बौखलाता-बरसता कि कुछ न पूछो! पर, नही, वह रुखाई और सख्ती का जवाब सख्ती से कभी न देती। हमेशा सदय और शात रहती, कम आमदनी होते हुए भी मुझे बढिया से बढिया भोजन खिलाने की कोशिश करती। उसे देखते ही मन हलका हो जाता और मै एक क्षण बाद ही उसकी कमर मे हाथ डालता और कहता—'मेरी प्यारी-प्यारी इरीना, मुझे बडा दुख है कि मैने तुम्हारे साथ इस तरह का रूखा व्यवहार किया। जानती हो, आज काम पर दिन बहुत ही बुरा बीता।' और, फिर हम मे सुलह हो जाती और मेरा चित्त स्थिर हो उठता। और, भाई, तुम जानते हो, कि काम करनेवाले के लिए इसके मानी क्या होते है? सुबह आख खुलती तो मै पलग से बन्दूक की गोली की तरह चालू होता और यह जा—वह जा कि फैक्ट्री को रवाना। फिर

तो यह कि जिस काम को हाथ लगाता वही घडी की तरह सटीक चलता। यानी, पत्नी के रूप मे सचमुच समझदार मित्र के साथ होने के मानी यही होते है!

"कभी ऐसा होता कि मै तनख्वाह के दिन यार-दोस्तो के साथ ढाल लेता और फिर लडखडाते हुए, गिरते-पडते घर आता। देखने मे जरूर ही बहुत भयानक लगता होगा। ऐसे मे किनारे की कुल्हियो-गलियो की तो बात क्या, बडी सडक की चौडाई भी मेरे लिए कम पड जाती। उन दिनो मै हट्टा-कट्टा, गठीला जवान था, काफी शराब पचा सकता था, और बिना किसी की मदद-सहारे के, पीने के बाद, अपने-आप घर जा सकता था। पर, कभी-कभी आखिरी दौर मे गाडी निचले गेयर मे आ जाती, और, जानते हो, मामला हाथो और घुटनो के बल रेगने तक आ पहुचता। पर, फिर भी पत्नी मेरी न मुझे डाटती, न फटकारती, न चीखती-चिल्लाती। मेरी इरीना केवल हस देती और सो भी ऐसी होशियारी से कि मै उस हसी का भी कोई गलत मतलब न लगा पाता। वह मेरे बूट खीचकर उतारती और फुसफुसाते हुए कहती—'अन्द्रेई, अच्छा हो कि आज तुम दीवार की तरफ लेटो—कही नीद मे लुढककर नीचे न जा रहो।'—और, मै जई के बोरे की तरह पलग पर ढह पडता, और मेरे सामने की हर चीज जैसे नाचने-सी लगती। फिर अनुभव करता कि वह हलके-हलके मेरा सिर सहला रही है, और धीरे-धीरे प्यार

भरे कुछ शब्द कह रही है। इसपर भी मुझे बराबर लगता कि उसका मन मेरे लिए दुखी है

"सुबह वह मुझे काम पर जाने के कोई दो घटे पहले जगा देती ताकि मै बिल्कुल अपने होश-हवास मे आ जाऊ और चारो खूट चौकस हो जाऊ। वह जानती थी कि शराब पी लेने के बाद मै कुछ खाता नही, इसलिए वह सिरके का एक खट्टा खीरा या ऐसा ही कुछ ले आती और शराब का बचा-खुचा असर दूर करने के लिए कायदे के गिलास मे वोद्का भर देती। कहती—'यह लो, अन्द्रेई, लेकिन, अब दुबारा इस तरह की पिलाई न करना, मेरे प्यारे।' भला ऐसे और इस तरह विश्वास करनेवाले आदमी को नीचा कोई कैसे दिखला सकता है? मै तुरन्त गिलास खाली कर देता, उसे भर आख देखता, चूमकर मौन धन्यवाद देता और चुपचाप काम के लिए चल पडता। पर, मेरे नशे की हालत मे यदि वह एक शब्द भी मेरे खिलाफ कहती या कोसा-कासी और डाटना-डपटना शुरू कर देती तो मै दुबारा पीकर घर आता। ईश्वर जानता है कि मै बिल्कुल यही करता। जिन परिवारो मे पत्निया बेवकूफ होती है, वहा यही होता है। मैने यह कितनी ही बार देखा है, और मै अच्छी तरह जानता हू।

"खैर, तो फिर जल्दी ही बच्चे पैदा होने लगे। पहले बेटा हुआ और फिर दो लडकिया। बस, तो इसके बाद मै

अपने यार-दोस्तो से कट गया और अपनी सारी तनख्वाह घर लाकर पत्नी के हाथो मे देने लगा। अब तक परिवार काफी बडा हो गया था, और अब मै पीने की बात सोच भी नही सकता था। छुट्टी के दिन मै सिर्फ एक गिलास बीयर पीकर सन्तोष कर लेता था।

"१९२९ मे मै मोटरो मे दिलचस्पी लेने लगा। मैने ड्राइविग सीखी और एक लॉरी पर काम करना शुरू कर दिया। फिर जब एक बार इस रास्ते पर पड गया तो दुबारा कारखाने मे जाने को मन न हुआ। लॉरी चलाना मेरे जी को ज्यादा भाया। इस तरह दस साल मैने यो बिता दिये कि मालूम ही न हुआ कि समय कब आया और कब निकल गया। सब कुछ एक सपना था जैसे। पर, क्या होते है दस वर्ष! जरा चालीस के ऊपर के किसी आदमी से पूछ तो देखो कि तुमने देखा, तुम्हारी इतनी जिन्दगी कैसे बीत गई? मालूम होगा कि उसने जर्रा बराबर भी कुछ नही देखा! गुजरा हुआ जमाना धुध के पीछे छिपी, एक किनारे पडी दूर की उस स्तेपी की तरह होता है। आज सुबह जब मै उसे पार कर रहा था तो हर चीज चारो ओर साफ थी, पर, अब मै बीस किलोमीटर पार कर आया हू तो धुध का एक पर्दा सा पड गया है। अब मै न पेडो को घास से अलग कर देख सकता हू और न जुते हुए खेत को चरागाह से अलगाकर।

"उन दस वर्षों मे मैने दिन-रात काम किया, खासी रकम कमाई और हम दूसरो से कुछ उन्नीस ढग से नही जिये। बच्चे हमारे दिलो की खुशी रहे। तीनो बच्चे स्कूल की पढाई मे अच्छे निकले, और सबसे बडा बच्चा अनातोली तो गणित मे ऐसा चमका कि उसका नाम एक केन्द्रीय अखबार तक मे छपा। वैसे यह महान प्रतिभा उसे किससे मिली, कहा से मिली, यह मै तुम्हे नही बतला सकता, मेरे भाई! पर, मेरे लिए यह बडे ही सुख की बात रही, और मुझे उसपर अभिमान रहा—बडा अभिमान रहा!

"दस वर्षो मे हमने थोडी-सी रकम बचा ली, और लडाई के पहले अपने लिए एक छोटा-सा घर खडा कर लिया—दो कमरे, स्टोर और गलियारा। इरीना ने दो बकरिया खरीद ली। और, भला हम क्या चाहते? बच्चो की खीर के लिए घर मे दूध, हमारे सिर पर छाया करने को छत, शरीर पर कपडे और पैरो मे जूते। यानी, सभी कुछ था, और ठीक था। अगर कोई कसर थी तो सिर्फ यह कि घर के लिए जगह अच्छी न थी। जो जगह मुझे दी गई थी, वह हवाई जहाजो के कारखाने से कोई बहुत दूर न थी। हो सकता हे कि अगर मेरा छोटा-सा मकान वहा न होकर कही और होता, तो मेरी जिन्दगी शायद कोई दूसरा मोड ले लेती

"और, फिर छिड गई लडाई। दूसरे दिन मेरे बुलावे के कागजात आ गये, और इसके बाद, 'कृपया स्टेशन पर

रिपोर्ट कीजिये'। मेरे परिवार के चारो सदस्यो ने मुझे विदाई दी, यानी इरीना, बेटे अनातोली और मेरी दो बेटियो ने मुझे विदा किया। बच्चो ने हिम्मत से काम लिया, गोकि बेटियो की आखो मे रह-रह कर आसू छलकते रहे। अनातोली थोडा-सा सिहरा, जैसे कि उसे सर्दी लग रही हो। उस समय वह सत्रह वर्ष का होने जा रहा था। लेकिन मेरी वह इरीना   हम दोनो सत्रह साल साथ रहे थे, पर इस रूप मे तो मैने कभी उसे देखा ही न था। उस रात को मेरी कमीज और मेरा सीना उसके आसुओ से तर हो गये थे, और सुबह भी वही झडी जारी थी   हम स्टेशन पर आये तो उसके लिए मेरा मन इतना दुखा कि मै उसकी आख से आख न मिला सका। आसुओ की बौछार से उसके होठ सूज गये थे, बाल शॉल के बाहर निकले हुए थे और आखे किसी बदहवास आदमी की तरह बेजान और धुधलाई हुई थी। अफसरो ने गाडी मे सवार होने का हुक्म दिया, पर वह मेरे सीने पर ढह पडी, मेरी गरदन मे हाथ डाल लिये, और सिर से पैर तक इस तरह कापने लगी, जैसे कि वह कोई ऐसा पेड हो, जिसे काटा जा रहा हो   बच्चो ने समझाने की कोशिश की, और मैने भी   पर, सारी कोशिश बेकार रही। दूसरी औरते अपने पतियो और बेटो से इधर-उधर की बाते करती रही, पर मेरी पत्नी तो शाख की पत्ती की तरह मुझसे चिपक गई, सारे समय सिहरती रही और उसके

मुह् से एक शब्द न फूटा। मैने कहा – 'अपने को सम्भालो, मेरी इरीना मेरे जाने के पहले मुझसे कम से कम दो बाते तो कर लो।' इसपर सिसकियो के बीच उसने जो कुछ कहा, वह यह था – 'अन्द्रेई मेरे प्रियतम हम अब कभी नही एक-दूसरे से अब कभी नही मिलेगे इस दुनिया मे '

"इधर तो मेरा दिल खुद ही उसके लिए दर्द से फटा जा रहा था, और उधर वह मुझसे ऐसी बात कह रही थी! मुझे लगा कि उसे सोचना तो चाहिए कि उससे बिछुडना मेरे लिए भी कोई ऐसा आसान तो नही – फिर, मै किसी दावत-पार्टी मे तो जा नही रहा। बस, तो यह ख्याल आते ही मै अपने आपे मे न रहा। मैने उसके हाथ अपने बदन से अलग किये और उसे एक ओर को हल्के-से झटक दिया। वह झटका मुझे तो हल्का-सा लगा, पर उस समय मै बैल की तरह मजबूत आदमी था। नतीजा यह हुआ कि वह कोई तीन कदम तक लडखडाती पीछे चली गई। इसके बाद छोटे-छोटे कदम रखते हुए फिर मेरी ओर बढी तो मै चीख पडा – 'इसी तरह विदा दी जाती है न? तुम मेरे मरने से पहले ही मुझे दफन कर देना चाहती हो क्या? ' लेकिन फिर मैने उसकी हालत बिगडती देखी तो उसे अपनी बाहो मे बाध लिया "

इसके बाद आप बीती कहनेवाले की आवाज उसका साथ न दे सकी। वह यकायक ही चुप हो गया। इस मौन मे मैने एक

सिसकी सी सुनी और उसकी भावना ने अपनी गहराई मेरे अन्तर तक पहुचा दी। मैंने बगल से देखा तो उसकी उन मुर्दा, राख सी धुधली आखो मे मुझे एक भी आसू नजर न आया। वह मायूसी से सिर झुकाये बैठा रहा। उसके सुन्न से पडे, दोनो तरफ लटकते हाथ हल्के-हल्के काप रहे थे . उसकी ठोडी थरथरा रही थी, और इसी तरह उसके हठीले होठ भी कपकपा रहे थे।

"बीती बातो को मत दोहराओ, मेरे दोस्त!" मैंने धीरे-से कहा, पर लगा कि उसने मेरी बात सुनी ही नही। फिर बडी चेष्टा से उसने अपने को साधा और अजब ढग से बदली हुई, भर्राई-सी आवाज मे बोला—"जिन्दगी के आखिरी लमहे तक, अपनी आखिरी सास तक उसे इस तरह धक्का देने के लिए मै अपने को क्षमा न करूगा!"

अब वह फिर चुप हो गया और यह चुप्पी काफी देर तक बनी रही। उसने एक सिगरेट रोल करने की कोशिश की, पर अखबारी कागज का टुकडा उसकी उगलियो के बीच तार-तार हो गया और तम्बाकू घुटनो पर बिखर गया। आखिरकार उसने एक भद्दी-सी सिगरेट जैसे-तैसे रोल की, दो-चार लम्बे-लम्बे कश खीचे, फिर गला साफ किया और अपनी दास्तान जारी रखी—"मैंने किसी तरह अपने को इरीना से अलग किया, उसका चेहरा अपने हाथो से साधा और उसे चूमा। उसके होठ बर्फ की तरह ठडे लगे। मैंने बच्चो से

अलविदा कही, और भाग कर चलती हुई गाडी पर चढ गया। गाडी धीरे-धीरे आगे बढी, और इस तरह मै एक बार फिर अपने परिवार के सामने से गुजरा। मैने देखा कि बेचारे मेरे अनाथ बच्चे एक-दूसरे से सटे हुए से, हाथ हिला रहे है और मुस्कराने की कोशिश कर रहे है, पर मुस्कान है कि चेहरे पर आने का नाम ही नही ले रही है मैने देखा कि इरीना हाथो से सीना थामे है, उसके होठ खडिया से सफेद पड गये है, वह कुछ बुदबुदा रही है, टकटकी बाधकर देख रही है और उसका सारा शरीर इस तरह आगे की ओर झुका हुआ है, जैसे कि वह तेज उलटी हवा से लडती हुई आगे बढने की कोशिश मे हो ओर, उसका यही चित्र हमेशा-हमेशा, जिन्दगी भर मेरी आखो के सामने रहेगा— हाथो से सीना थामे, सफेद होठ, और आसुओ से भरी हुई फटी-फटी-सी आखे अक्सर इसी रूप मे तो मै उसे अपने सपनो मे देखता हू क्यो मैने उसे इस तरह धक्का दिया था? आज भी जब यह याद करता हू तो मुझे ऐसे लगता है मानो कोई कुन्द छुरी से मुझे हलाल कर रहा हो

"हमे उक्रइना मे स्थित बेलाया त्सेरकोव मे अपने युनिटो मे जमा दिया गया। मुझे एक तीन टनवाली लॉरी मिली, और इस लॉरी के साथ मै मोर्चे पर गया। खैर, तो लडाई की चर्चा तुमसे क्या की जाय! वह तो तुमने खुद भी देखी है, और तुम्हे पता ही है कि शुरू-शुरू मे कैसा-क्या रहा।

मुझे घर-परिवार से बहुत-सी चिट्ठिया मिलती, पर मै खुद कम ही लिखता। कभी-कभी लिखता—'सब कुछ ठीक है दुश्मन से थोडा-बहुत लोहा ले रहे है। अभी बेशक हम कुछ पीछे हट रहे है, पर चिन्ता की कोई बात नही। हम जल्दी ही अपनी ताकत जुटायेगे, और ऐसी मुह की देगे कि जर्मनो को मजबूर होकर आगा-पीछा सोचना पडेगा ' और भला लिखा भी क्या जाता? बडा विकट समय था। कुछ लिखने-लिखाने का मन ही नही होता था। वैसे यहा यह भी कह दू कि मेरी गिनती उनमे कभी रही भी नही जो पत्रो मे रोने रोया करते। इसके साथ ही मोर्चे पर वे भी मुझे फूटी आखो न सुहाते जिनकी आखे डबडबाई रहती, जो मतलब-बेमतलब हर दिन अपनी पत्नियो और प्रेयसियो को खत लिखते, और कागज पर भरी नाक छिनकते कि उफ, यहा की जिन्दगी का हाल कुछ न पूछो बडी मुसीबत है उफ मेरी जान जा सकती है! तो, ये कुत्ते के पिल्ले, इस तरह शिकवे-शिकायत करते जाते, हमदर्दी जगाते जाते, और टसुये बहाते रहते। वे यह बात समझते ही नही थे कि घर-परिवार मे उनकी मुसीबत की मारी पत्निया और बच्चे भी उतनी ही परेशानी की जिन्दगी बिता रहे है, जितनी कि हम यहा। यानी, ये औरते और बच्चे सारा देश अपने कधो पर साध हुए थे और जरा सोचो तो कि क्या और कैसे कधे हमारी उन औरतो और बच्चो के होते कि वे इस बोझ

के नीचे दबकर पिस नही जाते! और, वे सचमुच दबकर पिस नही गये! उन्होंने यह बोझ सहारा। फिर, बच्चो की तरह ठुनकता कोई ऐसा ही आदमी दर्द से भरा खत लिख देता और किसी मजदूर पेशा औरत के पैरो के नीचे की धरती ही खिसक जाती। ऐसे पत्र के बाद बेचारी दुख मे गहरी डूब जाती, समझ न पाती कि कैसे अपने को सम्भाले और अपने काम का क्या करे! नही, यही तो तू मर्द बच्चा साबित होता है यही तो पता चलता हे कि तू सिपाही है, तुझे ही तो हर परिस्थिति का सामना और जरूरत होने पर हर दर्द सहन करना होता है। लेकिन अगर, भाई, तुम तबीयत से मर्द से ज्यादा औरत हो तो जाओ और झालरदार स्कर्ट पहनो ताकि तुम्हारे हड्डिहे चूतड ढक जाये, फूले-फूले लगे, और तुम कम से कम पीछे से तो औरत लगो ही। इसके बाद चुकन्दर की निराई करो और गाये दुहो, तुम सरीखे लोगो की जरूरत मोर्चे पर नही। तुम्हारे बिना भी वहा काफी बदबू है!

"लेकिन, मै एक साल भर भी लडाई मे हिस्सा न ले पाया इस बीच मै दो बार घायल हुआ, मगर दोनो ही बार हल्की चोट आई—एक बार बाजू पर तो दूसरी बार पैर पर पहली बार एक हवाई जहाज से गोली लगी तो दूसरी बार बम के एक हिस्से का शिकार हुआ। जर्मनो ने मेरी लॉरी की छत मे और अगल-बगल मे सूराख कर दिये,

पर भाई शुरू मे तो मै किस्मत का धनी साबित हुआ, किस्मत बराबर साथ देती रही। लेकिन, फिर नसीबा फिर गया और सन् १६४२ की मई मे मै लोज़ोवेकी मे दुश्मनो के हाथो मे पड गया और कैदी बना लिया गया। बहुत ही अटपटी परिस्थिति मे यह सब कुछ हुआ। जर्मन जोर-शोर से हमला कर रहे थे कि हमारी १२२ मिलीमीटर वाली तोपो के गोले खत्म हो गये। मेरी लॉरी के ऊपर तक गोले भरे गये और खुद मैने इस तरह जुटकर काम किया कि मेरी कमीज पसीने से सराबोर होकर चिपक गई। बहुत जल्दी करने की जरूरत थी, क्योकि दुश्मन हमारे नजदीक आते जा रहे थे। बाई ओर किसी के टैंक घडघडा रहे थे तो दाई ओर और सामने से गोलिया बरस रही थी। आसार कुछ अच्छे न थे।

" 'इस सब के बीच से निकल जा सकते हो, सोकोलोव?'— हमारी लॉरी-कम्पनी के कमान्डर ने पूछा। पर उसके इस सवाल की कोई जरूरत न थी। सोचने की बात है कि वहा मेरे साथियो की जान पर बन सकती थी। ऐसे मे मै भला कैसे हाथ पर हाथ रखे बैठा रह सकता था? इसलिए मैने जवाब दिया— 'यह भी कोई पूछने की बात है? मुझे तो बीच से जाना ही है और बस!' कमान्डर बोला—'तो फिर हवा हो जाओ बैठो लॉरी पर।'

"और मै चल दिया। इस तरह मोटर या लॉरी मैने जीवन मे क्या ही कभी चलाई थी! मै जानता था कि मै

ग्रालू लिये नही जा रहा हू। मै जानता था लॉरी पर सामान ऐसा है कि मुझे ज्यादा से ज्यादा होशियारी बरतनी है, पर यह मै कर कैसे सकता था जबकि हमारे अपने जवान खाली हाथो लड रहे थे। और जब कि सारा रास्ता तोपो की आग के नीचे उबल रहा था। खैर, तो मैने छ किलोमीटर की दूरी तय की और मै ऐन ठिकाने के पास पहुच गया। अब मुझे तोपखानेवाली खाई तक पहुचने के लिये मुडकर सडक छोड देनी चाहिए थी। पर, मैने देखा क्या? मैने देखा कि चारो तरफ से गोले बरस रहे है, और कसम अपनी जान की, हमारी प्यादा पलटन के सिपाही सडक के दोनो ओर के मैदान मे से पीछे को भागे आ रहे है। अब मै क्या करू? लौट जाऊ, यह तो करूगा नही! तो, अब मैने आव देखा न ताव, अपनी लॉरी पूरी रफ्तार से दौडा दी। तोपखाने और मेरे बीच सिर्फ कोई एक किलोमीटर का फासला था गाडी मै सडक से काट ही लाया था, पर भाई मेरे, अपने तोपखाने तक पहुच नही पाया हो न हो, कोई लम्बी मार करनेवाली तोप ही रही होगी लॉरी के पास ही उसने कोई भारी गोला फेका। मैने न कोई धडाका सुना और न कुछ और। कोई चीज सिर्फ मेरा दिमाग भेदती चली गई, और इसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नही। मुझे याद नही कि मै कैसे जिन्दा बचा और नही बता सकता कि कितनी देर तक खाई से कुछ दूर अचेत पडा रहा। मैने

ग्राखे खोली तो उठते न बना। मेरा सिर झटके खाता रहा ग्रौर मै यो कपकपाता रहा, जैसे कि मुझे बुखार हो। जिधर देखा उधर ही ग्राखो के ग्रागे ग्रधियारा नज़र ग्राया। बाये कधे के ग्रन्दर कोई चीज मुझे खुरचती ग्रौर पीसती-सी लगी। बदन के जोड-जोड मे इस तरह दर्द का ग्रनुभव हुग्रा जैसे कि किसी के हाथ जो पडा, उसने वही उठा-उठाकर पिछले दो दिनो बराबर मेरे बदन पर दे मारा हो। ऐसे मे कितनी ही देर तक मै पेट के बल पडा ऐठता रहा ग्रौर ग्राखिरकार जैसे-तैसे उठा। पर, फिर भी समझ न पाया कि मे हू कहा ग्रौर मुझे हुग्रा क्या हे। मेरी याददाश्त जैसे पर लगाकर उड गई थी। फिर से लेटने की बात सोचकर मेरा मन डरता था। मुझे लगा कि ग्रगर लेटा तो फिर उठने की नोबत कभी न ग्रायेगी। इसलिए तूफान की लपेट मे ग्राये चिनार के पेड की तरह मै जहा का तहा खडा इधर-उधर झटके खाता रहा।

"जब मै सम्भला ग्रौर मैने चारो तरफ निगाह दौडाई तो मुझे लगा जैसे कि किसी ने मेरे दिल को प्लास से जकड रखा है। जो गोले मै ले जा रहा था, वे मेरे चारो ग्रोर फैले पडे थे। मेरी लॉरी भी पास ही थी, टूटी-फूटी ग्रोर मुडी-मुडायी। पहिये हवा मे थे। ग्रौर लडाई लडाई मेरे पीछे चल रही थी हा, मेरे ठीक पीछे चल रही थी। क्यो क्या ख्याल हे!

"मुझे आज यह मानने मे कोई शर्म नही कि यह बात समझते ही मेरी टागे जवाब दे गई और मै ऐसे गिरा जैसे कि किसी ने कुल्हाडे से मुझे काट डाला हो। सबब साफ है। मैने अनुभव किया कि मै कटकर दुश्मनो की कतारो के पीछे रह गया हू, यानी साफ-साफ कहू तो, फासिस्टो का कैदी हो गया हू। ऐसे-ऐसे रग दिखाती है लडाई

"नही, यह समझना बहुत आसान नही होता मेरे दोस्त, यह समझना बहुत आसान नही है कि आप अपनी इच्छा के विरुद्ध, अनचाहे ही कैदी हो जाये! और, जिसपर खुद कभी यह बीती नही, उसे यह बात समझाने मे भी वक्त लगेगा कि आखिर इसके मानी क्या होते है!

"इस तरह मै वहा लेटा रहा कि जल्द ही मैने टैको की गडगडाहट सुनी, चार मझोले जर्मन टैक पूरी रफ्तार से मेरी बगल से गुजरे और जिस दिशा से मै गोले लाया था, उस दिशा मे बढे। तुम क्या सोचते हो कि उस समय मुझ पर कैसी गुजरी होगी?! इसके बाद तोपे खीचते हुए ट्रैक्टर गुजरे और उसके पीछे एक चल-बावर्चीखाना। सबसे पीछे थी पैदल-सेना। पैदल-सेना बहुत नही थी। एक कम्पनी के बचे-खुचे जवान। मैने जब-तब चोर नजर से निगाह डाली और फिर अपना चेहरा धरती मे गडा लिया। उन्हे देखते ही मुझे घृणा होने लगती, कलेजा मुह मे आने लगता

"जब मैंने सोचा कि सब के सब लोग जा चुके हैं तो सिर ऊपर उठाया और देखा कि कोई सौ कदम के फासिले पर छ सबमशीनगन चालक मार्च करते चले आ रहे हैं। मेरे देखते-देखते वे सडक छोडकर सीधे मेरी ओर आये—छ के छ बिल्कुल चुपचाप। मैंने सोचा कि अब खैर नही। मैं लेटे-लेटे दम तोडना न चाहता था, इसलिए पहले तो मैं उठकर बैठा और फिर खडा हो गया। अब उन छ मे से एक मुझसे कुछ कदमो की दूरी पर ठिठका और झटके से उसने अपनी सब-मशीनगन कधे से उतारी। आदमी जाने किस अजीब मिट्टी का बना होता है, पर उस समय मुझे जरा भी घबराहट नही हुई, मेरे दिल मे फुरेरी तक नही हुई। मैं उस आदमी की तरफ देखता हुआ सोच रहा था—अभी चुटकी बजाते मे यह मेरा खेल खत्म कर डालेगा, पर जाने निशाना कहा साधेगा—मेरे सिर पर या मेरे सीने पर? जैसे कि मुझे इस बात से कोई फर्क पडता था कि वह मेरे बदन के किस हिस्से को छेदेगा!

"आदमी जवान था—हट्टा-कट्टा, बाल काले, पर उसके होठ तागे की तरह पतले थे और वह आखे सिकोडकर देखता था। मुझे लगा कि यह आदमी तो न आव देखेगा न ताव और बस मुझे गोली से उडा देगा। सचमुच ऐसा ही हुआ भी, उसने सबमशीनगन साध ली। मैंने उसकी आखो मे आखे डाली और मुह से कुछ नही कहा। पर, इसी समय उम्र मे

उससे बडा कारपोरल या ऐसे ही कुछ एक दूसरे आदमी ने चिल्लाकर कुछ कहा, फिर उस आदमी को एक ओर को ढकेला, और मेरी ओर आया। अब वह अपनी भाषा मे कुछ बुदबुदाया, मेरी कोहनी झुकाई और मेरी बाह की मास-पेशिया टटोली। मेरे मजबूत पुट्ठे को टटोलते हुए खुशी से 'ओ ह' कह उठा। उसने डूबते हुए सूरज की ओर जानेवाली सडक की ओर इशारा किया और जैसे कहा—'चलो खच्चर! चलकर हमारे 'राइख' की सेवा करो ' कुत्ते का बच्चा बडा मक्खीचूस किस्म का आदमी था

"लेकिन, काले बालोवाले की नजर मेरे बूटो पर थी। वे देखने मे काफी अच्छे और मजबूत थे। सो, उसने हाथ से इशारा किया—'उतारो!' मै जमीन पर बैठ गया, जूते उतारे और उसकी ओर बढाये। उसने उन्हे जैसे कि मेरे हाथ से छीन ही लिया। इसके बाद मैने पैर की पट्टिया उतारी और उसकी आखो मे आखे डालकर उसे देखते हुए उसकी ओर बढाई। पर इसपर वह बुरी तरह बिगडा, उसने गालिया दी और उसकी सबमशीनगन फिर तन गई। दूसरे लोग हसते-हसते लोट-पोट होते रहे, और फिर वहा से हट गये। महज उसी काले बालोवाले ने सडक तक पहुचने के पहले मुडकर मुझे तीन बार देखा। उसकी आखो मे भेडिये के बच्चे की आखो जैसी आग धधक रही थी। ऐसा लगता था मानो उसने नही, बल्कि मैने उसके जूते उतरवा लिये हो!

"तो, दोस्त, हो ही क्या सकता था। मै सडक पर ग्राया, वोरोनेज की जो बुरी से बुरी ग्रोर भयानक से भयानक गाली याद ग्राई वह बक दी ग्रौर पश्चिम की ग्रोर कदम बढाये। ग्रब मै एक कैदी था। पर, मुझमे चलने की हिम्मत न रह गई थी। इसलिए एक घटे मे सिर्फ एक किलोमीटर चल पाता था—इससे ज्यादा नही। चलता भी यो था कि जैसे शराब के नशे मे होऊ! यानी मै सीधे बढने की कोशिश करता, पर कोई चीज मुझे सडक के एक सिरे से दूसरे सिरे की ग्रोर ढकेल देती। इस तरह मैने थोडी दूरी पार की कि मेरे ग्रपने ही डिविजन की टुकडी के लोग बन्दी बने हुए मेरे बराबर ग्रा पहुचे। वे कोई दस जर्मन सबमशीन-गनरो की हिरासत मे थे। सब से ग्रागे-ग्रागे चलनेवाला जर्मन मेरे पास ग्राया, उसने न कुछ कहा, न सुना ग्रौर मेरे सिर पर सबमशीनगन की ठोकर दी। ऐसे मे ग्रगर मै गिर पडता तो वह जर्मन तडाक से गोली चलाता ग्रोर मुझे जमीन से पाट देता। पर मेरे साथी-फौजियो ने मुझे गिरते-गिरते थाम लिया ग्रौर टुकडी के बीच मे कर लिया। कुछ दूर तक वे मुझे सहारा दिये रहे। यही नही, मै जब जरा सम्भला तो एक साथी ने कान मे फुसफुसाते हुए कहा—'ईश्वर के लिए गिरना मत! जब तक जरा-सी भी शक्ति वाकी रहे, चलते जाग्रो, वरना यह लोग तुम्हे मार डालेगे।' मेरे बदन मे

बेशक बहुत ही थोडी शक्ति बच रही थी, फिर भी मै जैसे-तैसे चलता रहा।

"फिर ज्यो ही सूरज डूबा, जर्मनो ने गार्ड बढा दिये। अब एक लॉरी मे २० सबमशीनगनर और आये और हमे अधिक तेज रफ्तार से हाक चले। हम मे से जो लोग बुरी तरह घायल थे वे बाकी लोगो के कदमो मे कदम मिलाकर न चल सके, और उन्हे जर्मनो ने रास्ते मे ही गोली से उडा दिया। दो लोगो ने भाग निकलने की कोशिश की, पर यह भूल गये कि चादनी रात मे आदमी एक मील की दूरी तक मैदान मे नजर आता है। मतलब यह कि गोलियो से भून दिये गये। आधी रात होते-होते हम एक अधजले गाव मे पहुचे। दुश्मन हमे चकनाचूर गुम्बदवाले एक गिरजे के अन्दर ले गये। रात हम सबने, बिना फूस के एक तिनके के, पत्थर के फर्श पर बिताई। किसी के पास ओवरकोट नही था। सब ट्यूनिक पहने हुए थे, इसलिए नीचे बिछाने के लिए कुछ नही था। हममे से कुछ के बदन पर तो ट्यूनिक भी न थे, सिर्फ नीचे पहनने की कमीजे थी। यह लोग ज्यादातर नान कमीशड अफसर थे। उन्होने अपने ट्यूनिक इसलिए उतार दिये थे, कि वे भी साधारण फौजियो जैसे नजर आये। तोपचियो के बदन पर भी ट्यूनिक न थे। वे तो अधनगे तोपो पर अपना काम कर रहे थे कि उन्हे कैदी बना लिया गया था...

"उस रात मूसलाधार पानी बरसा और हम सबके सब तर-बतर हो गये। गिरजे का गुम्बज तोप के भारी गोले या बम से उड गया था। छत भी बिल्कुल टूटी-फूटी पडी थी यहा तक कि वेदी के ऊपर भी चप्पा भर सूखी जगह नही थी। इस तरह हमने ठीक उसी तरह इस गिरजे मे पूरी रात बिताई जैसे भेडे एक अन्धेरे बाडे मे।

"कोई आधी रात के समय किसी ने मेरे बाजू पर हाथ रखा और पूछा—'तुम घायल हो क्या साथी?' मैने कहा—'क्यो भाई, तुम यह क्यो पूछ रहे हो?' जवाब मिला—'मै डॉक्टर हू—तुम्हारी किसी तरह की मदद कर सकता हू?' मैने उसे बताया कि मेरा बाया कधा आवाज करता है, सूजा हुआ है और बहुत दर्द करता है। व्यक्ति ने दृढतापूर्वक कहा—'ट्यूनिक और अन्दर की कमीज उतार डालो।' मैने हर चीज उतार डाली और वह अपनी पतली-पतली उगलियो से मेरे कधे को इधर-उधर से टटोलने और दर्द पहुचाने लगा। मैने दात पीसे और बोला—'तुम जानवरो के डॉक्टर होगे, साधारण डाक्टर तो तुम हो नही सकते जहा दर्द होता है, वही क्यो दबाते हो सगदिल शैतान!' पर वह उसी तरह इधर-उधर टटोलता रहा और फिर बिगडते हुए इस तरह बोला—'तुम्हारा काम है कि तुम अपना मुह सिये रहो, समझे। बडे बक्की हो तुम तो! हिम्मत से काम लेना, अभी और जोर से दर्द होगा।'

ग्रौर, इसके बाद उसने मेरा हाथ इस तरह ऐंठा कि मेरी ग्राखो से लाल-लाल चिनगारिया फूट पडी।

"मै होश मे ग्राया तो मैने उससे पूछा—'कम्बख्त फासिस्ट, तुम यह करते क्या हो? मेरे बाजू का जोड-जोड टूटा हुग्रा है, ग्रौर तुम उसे इस तरह ऐंठते हो?' वह धीरे से हसा ग्रौर फिर बोला—'मै तो समझता था कि तुम मुझपर दाहिना हाथ जमा दोगे, पर लगता है कि तुम खासे ठण्डे स्वभाव के ग्रादमी हो। बात यह हे कि तुम्हारा हाथ टूटा नही था, जोड से खिसक गया था ग्रोर मैने उसे उसकी जगह पर जमा दिया है। हा, तो ग्रब कुछ पहले से बेहतर हे न?' ग्रौर, सचमुच ही मुझे दर्द कम होने लगा। मैने डॉक्टर को दिल से धन्यवाद दिया। वह ग्रधेरे मे धीरे से यह पूछते हुए ग्रागे बढा—'कोई घायल है?' वह था ग्रसली डॉक्टर। घुप ग्रधेरे मे भी वह ग्रपना महान् कर्त्तव्य पूरा करता रहा।

"रात बडी बेचैनी से भरी थी। सीनियर-गार्ड ने हमे जोडो मे गिरजे के ग्रन्दर हाकते हुए पहले से ही ग्रागाह कर दिया था कि पेशाब-पाखाने के लिए भी बाहर नही जाने दिया जायेगा। ग्रौर, किस्मत का फेर कि हममे से एक ईसाई को पाखाना लगा। कुछ देर तक तो वह टालता गया, पर ग्रत मे रो पडा—'मै पवित्र स्थान को तो ग्रपवित्र नही कर सकता। मै ग्रास्तिक हू। मै ईसाई हू यारो मुझे बताग्रो मै क्या करू?' ग्रौर, तुम जानते ही हो ग्रपने लोगो को!

हम मे से कुछ इस बात पर हसे, कुछ ने भला-बुरा कहा और कुछ उसे उल्टी-सीधी मजाकिया सलाहे देने लगे। उसने हम सब का खासा मन बहलाया, मगर आखिर मे नतीजा बहुत बुरा हुआ। वह जोर से दरवाजा खटखटाने और यह प्रार्थना करने लगा कि उसे बाहर निकलने दिया जाये। उसकी प्रार्थना 'स्वीकार' की गई। एक फासिस्ट ने दरवाजे के बीच से गोलिया बरसानी शुरू कर दी। उसने उस ईसाई के साथ अन्य तीन लोगो को भी गोलियो से भून डाला। इनके अलावा एक आदमी इस बुरी तरह घायल हुआ कि सुबह होते-होते दम तोड गया।

"हमने मुर्दो को खीचकर एक किनारे किया, फिर चुपचाप बैठकर मन ही मन सोचने लगे कि श्रीगणेश तो कुछ अच्छा नही हुआ। इसी समय फुसफुसाहट शुरू हुई और लोग एक-दूसरे से पूछने लगे कि कौन कहा का है, और कौन किस तरह दुश्मन के हाथो मे पडा? इसके बाद एक ही प्लाटून या एक ही कम्पनी के लोग अंधेरे मे ही एक-दूसरे को सम्बोधित करने लगे। अपनी बगल मे ही मैंने धीरे-धीरे यह बातचीत होती सुनी एक बोला—'अगर कल यहा से आगे ले चलने के पहले वे हमे कतार मे खडे करके पूछेंगे कि हममे से कौन कमिसार है, कौन कम्युनिस्ट है, और कौन यहूदी, तो तुम अपने को छिपाने की कोशिश न करना, प्लाटून-कमाडर! इस तरह जान नही बचेगी। तुम्हारा ख्याल है कि

तुमने अपना ट्यूनिक उतार दिया है, इसलिए तुम मामूली फौजी समझ लिये जाओगे? इससे कोढ नही धुलेगा। फिर मैं तुम्हारे कारण अपने को मुसीबत मे नही डालूगा! सबसे पहले तुम्हारी तरफ इशारा करूगा। मैं जानता हू कि तुम कम्युनिस्ट हो। तुमने मुझे पार्टी मे लाने के लिए डोरे डालने की भी कोशिश की थी। आज यहा तुम उसका जवाब दोगे '
यह बाते जिस व्यक्ति ने कही, वह बिल्कुल मेरे पास ही, बाईं ओर बैठा हुआ था। उसकी बगल मे बैठे हुए दूसरे व्यक्ति ने अपने युवा स्वर मे उत्तर दिया – 'क्रीजनेव, तुम्हारे मामले मे हमेशा मेरे मन मे यह शका बनी रही थी कि तुम अच्छे आदमी नही हो। यह बात खास तौर पर तब मुझे महसूस हुई थी जब तुमने पार्टी का सदस्य बनने से इन्कार किया था और बहाना बनाया था कि तुम अपढ हो। लेकिन, तुम गद्दार साबित होगे, यह मैंने कभी नही सोचा था। तुमने ७ साला स्कूल की पढाई तो खत्म की हे न? ' दूसरे आदमी ने अलसाये से स्वर मे जवाब दिया – 'हा, खत्म की है। तो, इससे क्या?' इसके बाद कुछ देर तक वे दोनो चुप रहे। तब मैंने दूसरी आवाज पहचानी और प्लाटून-कमाडर को धीरे से यह कहते सुना – 'देखो, मुझे दुश्मनो को मत सौपना, साथी क्रीजनेव।' क्रीजनेव हल्के-से हस दिया – 'तुम्हारे साथी मोर्चे के उस पार रह गये हैं मैं तुम्हारा कोई साथी-वाथी नही, इसलिए मेरी मिन्नत-समाजत करने से कोई लाभ

नही होगा। मै तो तुम्हारी तरफ इशारा करूगा ही। अपनी जान तो आदमी को सबसे ज्यादा प्यारी होती ही हे।'

"उनकी बातचीत बन्द हो गई, पर इस कमीनी हरकत की बात सोचते ही मुझे अपने शरीर मे फुरफुरी-सी अनुभव हुई। मैने मन ही मन सोचा—'नही, कुतिया के पिल्ले, मै तुझे तेरे इस कमाडर के साथ गद्दारी नही करने दूगा! अपने पैरो के बल तो तू इस गिरजे से बाहर जाने से रहा, तुझे पावो से घसीटकर ही बाहर फेकेंगे ' जब कुछ-कुछ उजाला हुआ तो मैने वही एक बडे थलथल चेहरेवाले आदमी को, सिर के पीछे हाथ बाधे, चित लेटे देखा। उसकी बगल मे एक छोकरा-सा बैठा था—उठी हुई छोटी-सी नाक, हाथ घुटनो के गिर्द—पीला चेहरा और बदन पर महज एक कमीज। मैने सोचा—'यह छोकरा इस साड को क्या साधेगा . मुझे ही इसका काम तमाम करना होगा।'

"मैने छोकरे के बाजू पर हाथ रखा और फुसफुसाते हुए पूछा—'तुम प्लाटून-कमाडर हो?' लडके ने मुह से कुछ न कहकर सिर्फ सिर हिला दिया। मैने चित लेटे आदमी की ओर इशारा किया और कहा—'यही है न जो तुम्हे दुश्मन के हाथो सौप देना चाहता है?' उसने फिर सिर हिलाकर हामी भरी। मैने कहा—'तो, अच्छा, उसके पैर कसकर पकड लो ताकि वह लात न चला सके। और, देखो, जल्दी करो।' अब मै कूदकर उस आदमी के ऊपर जा डटा, और

मैने अपनी उगलियो मे उसकी गरदन जकड ली। उसे चीखने तक का मौका नही मिला। कुछ देर तक मैने अपनी पकड ज्यो की त्यो रखी, और फिर हाथ ढीले कर दिये। उसकी जीभ बाहर लटक आई। कर ले बेटा अब गद्दारी।

"उसके मरने के बाद मेरा जी बडा ही खराब हुआ। बहुत बुरी तरह मैने अपने हाथ धोने चाहे जैसे कि मैने आदमी का खात्मा न कर किसी रेगते हुए साप को कुचल डाला हो . जिन्दगी मे पहली बार मैने किसी की जान ली थी—सो भी अपने ही एक आदमी की। पर वह क्या खाक अपना था! वह तो दुश्मन से भी गया बीता था, गद्दार था आखिर को मै उठा और मैने प्लाटून-कमाडर से कहा—'साथी, यहा से कही और चलना चाहिए गिरजा बहुत बडा है!'

"जैसा कि क्रीजनेव ने कहा था, सुबह होते ही हम सब को गिरजे के बाहर कतार मे खडा कर दिया गया। सबमशीनगनरो ने हमे चारो ओर से घेर लिया, और तीन जर्मन अफसर ऐसे लोगो को चुन-चुनकर अलग करने लगे जिन्हे वे खतरनाक समझते थे। उन्होने पूछा—'कौन कम्युनिस्ट, कौन अफसर, और कौन कमिसार है?' पर, ऐसा कोई हाथ नही लगा। फिर यह कि हममे उन्हे कोई ऐसा गद्दार भी नही मिला, जो गद्दारी करता। यद्यपि हममे से आधे लोग कम्युनिस्ट थे, कितने ही अफसर और कितने ही कमिसार थे। इस तरह २०० से अधिक लोगो मे से

उन्होने सिर्फ चार आदमी छाटे—आम फौजियो के बीच से एक यहूदी और तीन रूसी। इन रूसियो की इसलिए मुसीबत आई कि उनका रग जरा सावला था और बाल घुघराले थे। सो, जर्मन अफसर उनके पास आये और बोले—'यहूदी?' उन्होने तीनो मे से जिससे पूछा उसी ने अपने को रूसी बतलाया, पर उन्होने कान ही नही दिया। 'कतार से बाहर आ जाओ!'—और, बात खत्म!

"तो उन्होने इन बदकिस्मतो को गोली से उडा दिया और हमे आगे हाक ले चले। जिस प्लाटून-कमाडर ने गद्दार का गला घोटने मे मेरी मदद की थी, वह पोजनान तक मेरे दाहिने चलता रहा। मार्च के पहले दिन तो वह रह-रहकर मेरे पास सट आता, और चलते-चलते मेरा हाथ दबा देता। पर, पोजनान मे हम एक-दूसरे से अलग हो गये। घटना कुछ इस तरह घटी।

"बात यह है, भाई, कि जिस दिन मै दुश्मनो के हाथ पडा था, उसी दिन से भाग निकलने की बात मेरे दिमाग मे नाचने लगी थी। पर, कोशिश मामला पक्का होने पर ही करना चाहता था। पोजनान पहुचने तक के रास्ते मे जहा उन्होने हमे कायदे के कैम्प मे रखा कोई ढग का मौका मेरे हाथ नही आया। पर यहा ऐसा लगा जैसे कि जो मुझे चाहिए, वह मुझे मिल गया। मई के महीने के आखिर तक हमारे कितने ही साथी पेचिश से मर गये—हमे उन्हे दफनाने

के लिए कब्रे खोदने को कैम्प के पास के एक छोटे से जगल मे भेजा गया। यहा पोजनान की जमीन खोदते समय मैने जो इधर-उधर नजर दोडाई तो देखा कि हमारे गार्डो मे से दो तो बैठे कुछ खा रहे है और एक धूप मे बेठा ऊघ रहा है। बस, तो मैने अपना फावडा रखा और चुपके से एक झाडी के पीछे जा छिपा। और, फिर मै अपनी पूरी ताकत भर सीधे उस दिशा मे भाग चला जिधर से सूरज निकला था।

"स्पष्टत गार्डो को काफी देर बाद ही मेरा ध्यान आया। मै सूखकर ऐसा हो चुका था कि हड्डी-हड्डी गिन लीजिये। नही जानता कि मुझमे इतनी ताकत कहा से आ गई कि मैने एक दिन मे लगभग ४० किलोमीटर की दूरी तय कर डाली। पर, बात कुछ बनी नही। चौथे दिन जब मै उस मनहूस कैम्प से काफी दूर निकल गया था, दुश्मनो ने मुझे पकड लिया। उन्होने खून के प्यासे शिकारी कुत्ते मेरी खोज मे मेरे पीछे लगा दिये थे। जई के एक अनकटे खेत मे उन्होने मुझे आ खोजा।

"सुबह-तडके मै एक खुले खेत मे आ निकला तो दिन के उजाले मे उसे पार करने की बात सोचकर मेरा मन काप उठा। जगल और इस खेत के बीच कम से कम तीन किलोमीटरो का फासला था, इसलिए मै जई के बीच ज्यादा से ज्यादा दुबककर लेट रहा कि दिन कट जाये तो यहा से

निकलू। यहा मैने जई की एक बाल को मसला, कुछ दाने निकालकर खाये और जेब मे डाले कि कुत्तो के भूकने और मोटर-साइकल की घडघडाहट की आवाज मेरे कोनो मे पडी। मेरा दिल बैठ गया, क्योकि कुत्ते नजदीक ही नजदीक आते जा रहे थे। मै पट लेट गया और मैने अपना चेहरा हाथो से ढक लिया ताकि वे मेरा मुह न नोच डाले। खैर, तो वे मेरे पास आ पहुचे और पल भर मे उन्होने मेरे कपडे-लत्ते तार-तार कर डाले। मेरे बदन पर कुछ न रह गया और इस तरह मै मादरनगा हो गया। अब कुत्तो ने मुझे जई के बीच इधर-उधर घसीटा और जो मन भाया सो किया। आखिर मे एक बडे कुत्ते ने मेरे सीने पर अपने अगले पजे जमाये और मेरे गले की ओर खरोच-खरोच शुरू की। लेकिन, उसने फौरन दात नही गडाये।

"दो मोटरसाइकलो पर जर्मन आये। उन्होने पहिले तो कसकर मेरी मरम्मत की और फिर मुझ पर कुत्ते लुहा दिये कि बदन मे जहा-तहा मास निकल आया। मै बिल्कुल नगा और खून से तर-बतर था। उसी हालत मे वे मुझे कैम्प मे वापस ले गये। इस तरह भागने के लिए मुझे एक महीने तक एकान्त मे कैद रखा गया, पर जिन्दा मै तब भी रहा जैसे-तैसे जिन्दा रहा ही!

"भाई मेरे, कैदी की शकल मे मुझ पर क्या-क्या गुजरी उसे याद करके ही दिल भारी हो जाता है, और उस सब

का बयान करना तो खैर ग्रौर भी मुश्किल है। जब याद ग्राता है कि वहा जर्मनी मे हमारे साथ कैसा जानवरो का सा व्यवहार किया गया, जब वे अपने ही सगी-साथी याद आते है जिन्हे कैम्पो मे तरह-तरह से सता-सता कर मार डाला गया तो कलेजा मुह को आ जाता है, नीचे की सास नीचे ग्रौर ऊपर की ऊपर रह जाती है।

"उफ, कैद के दो सालो के दौरान मुझे कहा-कहा की खाक नही छाननी पडी! आधा जर्मनी तो मझा ही डाला होगा मैने। सैक्सोनी मे मैने सिलीकेट पत्थरो के एक कारखाने मे काम किया। रूह्र प्रदेश मे एक खान मे कोयला निकाला। बवारिया मे कमर झुकाये हुए फावडे चला-चलाकर पसीने-पसीने होकर गला। कुछ समय तक थुरीगेन मे भी खटा। शैतान ही जानता है कि जर्मनी मे कहा-कहा मारे-मारे नही फिरना पडा। जगह-जगह कुदरत के अलग-अलग नजारे देखने को मिले, पर जिस ढग से उन्होने हमे गोली से उडाया और मार-मारकर अधमरा किया, वह हर जगह एक जैसा ही रहा। नर्क के इन अजदहो और आदमखोरो ने जिस तरह पीट-पीट कर हमारी खाल मे भुस भरा, उस तरह तो हमारे यहा जानवरो को भी नही पीटा जाता। वे हम पर घूसे बरसाते, ठोकरे जमाते, रबड के डडो से झोरते, जो भी लोहा हाथ मे आता उसे ही उठाकर दे मारते। राइफलो के

कुदो और लकडी की अन्य चीजो की तो खैर चर्चा ही क्या की जाये।

"वे हमे इसलिए पीटते थे कि हम रूसी थे, क्योकि हम अब तक दुनिया मे जिन्दा थे और क्योकि हम उनके लिए खटते थे। वे इसलिए भी हमारी चमडी उधेडते थे कि उन्हे हमारा देखने का ढग पसन्द नही आया था, कि उन्हे हमारी चाल अच्छी नही लगी थी, कि उनके मनपसन्द ढग से हम मुड नही पाये थे वे मारते ताकि हमारी जान निकाल ले। वे मारते कि हमारा ही खून हमारे गले मे अटक जाये और हम मार खाते-खाते इस दुनिया से चल बसे। मै समझता हू कि जर्मनी मे उस समय मुर्दो को जलाने के लिए शायद काफी भट्ठे नही थे।

"फिर यह कि हम जहा भी जाते, खाना हमे एक-सा ही दिया जाता, यानी लकडी का बुरादा मिली 'इरसात्ज' रोटी और शलजम का पतला शोरबा। कही-कही हमे पीने को उबला हुआ पानी दिया जाता और कही-कही वह भी नही। इन बातो की चर्चा भी क्या की जाये? तुम खुद ही निर्णय कर सकते हो। अब तुम खुद ही सोच लो कि लडाई शुरू होने के पहले मेरा वजन ८६ किलोग्राम था, और शरद के आते-आते मै पचास किलोग्राम से अधिक न रह गया था, सिर्फ हड्डिया रह गई थी और हड्डियो के ऊपर की खाल। ताकत इतनी भी नही कि इन हड्डियो का ही बोझ ढोया

जा सके। लेकिन, इस पर भी काम तो करना ही पडता था, और सो भी बिना मुह खोले। फिर यह कि काम भी ऐसा जो गाडी खीच्नेवाले घोडे को भी भारी पडता।

"सितम्बर के शुरू मे लडाई के हम १४२ सोवियत कैदियो को जर्मनो ने कुस्तरीन के पास के कैम्प से ड्रेस्डेन के निकटवर्ती बी-१४ कैम्प मे भेज दिया। उस समय उस कैम्प मे हमारे कोई दो हजार कैदी थे। तो, हम सब पत्थर निकालने की खान मे काम करते और जर्मन पत्थर अपने हाथो से काटते और तोडते थे। हमारे लिए मात्रा तय होती और हममे से हर एक को चार घन मीटर पत्थर हर दिन काटना पडता। जरा सोचो तो कि यह साधना पडता उस आदमी को जो किसी तरह अपने तन का बोझ ढो रहा था। नतीजा यह कि दो महीने के बाद हमारे दल के १४२ लोगो मे से महज ५७ रह गये। क्यो क्या ख्याल है तुम्हारा, भाई? ऐसा बुरा वक्त गुजरा कि कुछ न पूछो! हम अपने साथियो को दफनाने भी न पाये थे कि यह अफवाह कोनो मे पडी कि जर्मनो ने स्तालिनग्राद* ले लिया है और वे साइबेरिया की ओर आगे ही आगे बढते जा रहे है। एक के बाद एक चोट दिल पर पडती। ये चोटे हमे इस तरह दबाये रखती कि हम जमीन से ऊपर नजर न उठा पाते, जैसे कि हम कह

---

*स्तालिनग्राद – अब वोल्गोग्राद।

रहे हो कि हमे जर्मनी की इस अजनबी धरती मे ही समो दीजिये! और, ऐसे मे हर दिन कैम्प के गार्ड पीते, गला फाड-फाड कर गाते और मनमानी रग-रेलिया मनाते।

"एक दिन शाम को हम काम से अपनी बैरक मे लौटे। सारे दिन पानी बरसता रहा था और हमारे तन के चिथडे बिल्कुल तर-बतर हो गये थे। हम ठडी हवा के मारे कापने लगे और हमारे दात किटकिटाने लगे। चिथडे सुखाने या तन गर्माने की कही कोई जगह नही थी। फिर भूख भी ऐसी लगी थी कि दम निकला जा रहा था। लेकिन, शाम को हमे खाने को कुछ भी नही दिया जाता था।

"खैर, तो मैने गीले चिथडे उतारे, अपने सोने के पटरे पर फेंके और कहा—'ये लोग माग करते है कि हम चार घन मीटर हर दिन निबटायें, लेकिन हममे से हर एक की कब्र के लिए तो एक घन मीटर ही बहुत काफी होगा।' सिर्फ इतना ही कहा मैने, लेकिन तुम यकीन करोगे कि हमारे अपने साथियो मे से ही एक आदमी ऐसा कुत्ता निकला जिसने जाकर कैम्प-कमाडर से चुगली खा दी और मेरे कडवे शब्द दोहरा दिये।

"कैम्प-कमाडर या वहा के लोगो के अपने लफ्जो मे लागेर-फूरेर एक जर्मन था और उसका नाम मुल्लर था—कद बहुत लम्बा नही, हट्टा-कट्टा, बाल सन के गुच्छे जैसे और खुद भी भूरा-भूरा-सा। उसके सिर के बाल भूरे थे, बरौनियो के

बाल भी भूरे थे और आखे भी भूरी-भूरी थी फूली-फूली-सी। रूसी वह तुम्हारी और मेरी तरह बोलता था। उच्चारण कुछ कुछ वोल्गा-प्रदेश के लोगो जैसा था, जैसे कि उन्ही इलाको मे पैदा और बडा हुआ हो। रही गालिया देने की बात, ओह, सो कुछ न पूछो! इस मामले मे तो भयानक था वह। जाने उस कम्बख्त ने इस धधे मे ऐसा कमाल कैसे हासिल किया था? जर्मनो के शब्दो मे ब्लॉक यानी बैरक के सामने हमे कतार मे खडा होने का हुक्म देता और अपने दुमछल्लो से घिरा, दहिना हाथ ताने हुए एक सिरे से दूसरे सिरे तक बढता चला जाता। वह चमडे के दस्ताने पहनता और चमडे के नीचे उगलियो के बचाव के लिए सीसे की एक पट्टी होती। वह हर दूसरे आदमी की नाक से खून की धार बहाता जाता। इसे वह इन्फ्लुयेंजा-विरोधी टीका कहता। और, यह सिलसिला हर दिन चलता। कैम्प मे कुल चार ब्लॉक थे। एक दिन वह ये टीके एक ब्लॉक के लोगो को लगाता तो दूसरे दिन दूसरे ब्लॉक के लोगो को, और इसी तरह यह क्रम चलता जाता। आदमी पक्का हरामी था। एक दिन का भी नागा न करता। लेकिन एक बात थी जो वह बेवकूफ समझ नही पाता था। होता यह कि अपनी गश्त शुरू करने के पहले वह सामने आकर खडा हो जाता, और अपने को तैयार करने के लिए गालिया देना शुरू करता। तुम जानते हो, गालिया देता तो हीक भर गालिया देता, और हम थोडे

हरिया उठते। देखो न भाई, लफ्ज बिल्कुल अपने लगते और ऐसा अनुभव होता कि हवा का कोई झोका हमारे मुल्क-देश से आ गया है। मै सोचता हू कि अगर वह यह बात जानता कि उसकी गालियो और कोसा-कासी से हमे सुख मिलता है तो वह हरगिज रूसी मे गालिया न देकर अपनी मातृभाषा का प्रयोग करता। और, हमारा एक साथी, मास्कोवासी मेरा एक यार तो बहुत बौखला उठता। कहता—'जब वह इस तरह गालिया देता है तो मै तो आखे मूद लेता हू, और ऐसा लगता है जैसे कि मास्को मे हू किसी बीयरखाने मे बैठा हू। कुछ ऐसा वहा का सा रग होता हे कि एक गिलास बीयर के लिए मन तडप-तडप उठता है।'

"तो, घन मीटरोवाली बात के दूसरे दिन कैम्प-कमाडर ने मुझे बुलवा भेजा। शाम को एक दुभाषिया और दो गार्ड हमारी बैरक मे आये और आवाज दी—'सोकोलोव अन्द्रेई?' मैने जवाब मे हा की। वे बोले—'चलो, आओ, हमारे पीछे-पीछे जल्दी करो, श्रीमान लागेरफूरेर ने खुद तुम्हे बुलाया है।' मै आगे का सारा कुछ फौरन ही समझ गया कि सीधे-सीधे गोली मार दी जायेगी। मेरे साथी भी यह बात जानते थे। मैने उनसे अलविदा कही, एक लम्बी सास ली और गार्डो के पीछे-पीछे चल दिया। कैम्प के मैदान को पार करते हुए मैने आख उठाकर सितारो को देखा, उनसे विदा ली और मन ही मन सोचा—'खैर, तुमने जुल्म मुसीबत का

अपना उधार पाट दिया, अन्द्रेई सोकोलोव, नम्बर ३३१।'
इस समय इरीना और बच्चो के लिए मेरा मन कलपा, पर मैंने अपने को रूंधा और बिना डगमगाये, एक फौजी की तरह पिस्तौल की नली का सामना करने के लिए साहस बटोरने लगा ताकि दुश्मन यह न ताड पाये कि इस जिन्दगी से अलग होते समय, आखिरी वक्त मुझे कितनी तकलीफ हुई

"कमाडर के कमरे मे खिडकी के दासे पर फूल रखे थे और कमरा हमारे क्लबो के किसी भी कमरे की तरह साफ-सुथरा था। मेज के पास कैम्प के पाचो अफसर बैठे थे। वे श्नाप्स शराब ढाल रहे थे और सुअर की चरबी चबा रहे थे। मेज पर श्नाप्स शराब की खुली हुई एक बडी बोतल, रोटी, चरबी, सिरके मे खट्टे किये हुए सेब और तरह-तरह के डिब्बे खुले रखे थे। मैंने सभी चीजो पर एक उडती नजर डाली और तुम यकीन न करोगे कि मेरा जी ऐसा खराब हुआ कि कै होने-होने को हो गई। बात यह हे कि मै भेडिये की तरह भूखा था और अब तक इन्सानी खुराक का जायका तक भूल चुका था। और यहा मेरी आखो के सामने तरह-तरह की चीजो के मजे उडाये जा रहे थे

"जैसे-तैसे मैंने अपनी मतली पर काबू पाया, मगर उस मेज से अपनी निगाह हटा पाने के लिए मुझे काफी कोशिश करनी पडी।

"मेरे ठीक सामने बैठा था मुल्लर शराब के नशे मे आधा चूर – पिस्तौल को कभी एक ओर कभी दूसरे हाथ मे उछालकर खिलवाड करता हुआ। तो, उसने अपनी निगाह मुझपर गडा दी – बिल्कुल साप की तरह। खैर तो, मैंने टूटी हुई एडिया आवाज करते हुए मिलाई, एटेंशन खडा हुआ, और ऊची आवाज मे कहा – 'लडाई का कैदी अन्द्रेई सोकोलोव आपकी सेवा मे हाजिर है, श्रीमान कमाडर।' वह बोला – 'तो, रूसी इवान, चार घन मीटर पत्थर की निकासी तुम्हारे लिए बहुत ज्यादा है, क्यो?' मैंने जवाब दिया – 'जी हा, श्रीमान कमाडर, बहुत ज्यादा है।' इसपर वह बोला – 'और एक घन मीटर तुम्हारी कब्र के लिए काफी?' मैंने कहा – 'जी हा, श्रीमान कमाडर, बहुत काफी है, कुछ बच भी रहेगा।'

"वह उठा और बोला – 'मै तुम्हे बडी इज्जत बख्शूगा और इन शब्दो के लिए खुद गोली मारूगा। लेकिन, यहा ठीक नही, इसलिए वहा अहाते मे चले चलो। वहा बाहर आराम रहेगा मरने मे।' मैंने जवाब दिया – 'जैसा आप कहे।' अब वह एक मिनट तक खडा कुछ सोचता रहा, फिर उसने पिस्तौल मेज पर रखी, श्नाप्स शराब से गिलास भरा, रोटी का एक टुकडा लिया, उसपर चरबी का एक छोटा सा टुकडा रखा, सब कुछ मेरी ओर बढ़ाया और बोला – 'रूसी इवान, मरने के पहले, जर्मनो की विजय का जाम पी लो।'

"मैं शराब का गिलास और रोटी उसके हाथ से लेने ही वाला था, लेकिन जब मैंने उसके लफ्ज सुने तो मुझे अपने अन्दर आग-सी जलती अनुभव हुई। मैंने सोचा—मैं एक रूसी फौजी, जर्मनों की जीत का जाम पिऊ? क्या और कुछ तुम मुझसे नही चाहोगे, श्रीमान कमाडर? मरना तो है ही मुझे, भाड मे जाओ तुम और तुम्हारी यह श्नाप्स!

"मैंने गिलास मेज पर रख दिया और उसके साथ ही रोटी भी। बोला—'मेहमाननेवाजी के लिए धन्यवाद। लेकिन, मैं पीता नही।' वह मुस्कराया—'तो, तुम हमारी जीत का जाम नही पीना चाहते? खैर, तो अपनी मौत का जाम पिओ।' इसमे मेरा भला क्या जाता था? 'अपनी मौत और इस यातना से निजात के लिए'—मैंने कहा, गिलास उठाया और दो घूटो मे सारी शराब गले के नीचे उतार गया। पर, रोटी मैंने छुई तक नही। मैंने हल्के से अपने होठ पोछे और कहा—'इस खातिर के लिए धन्यवाद। मैं तैयार हू। अब आप मुझे गोली से उडा सकते हैं, श्रीमान कमाडर।'

"मगर वह मुझे पैनी नजर से देखते हुए बोला—'मरने के पहले दो कौर मुह मे डाल लो।' मैंने कहा—'पहले गिलास के बाद मैं कुछ नही खाता।' इसपर उसने दूसरा गिलास भरा और मेरी ओर बढाया। मैंने वह भी पी डाला, पर रोटी फिर भी नही छुई। मैंने हिम्मत को अपना

हथियार बनाया और सोचा—'चलो, मरने के लिए बाहर अहाते मे जाने से पहले नशे मे हो लू।' कमाडर की भूरी भौहे ऊपर उठी—'लेकिन, तुम खाते क्यो नही, रूसी इवान?—शर्माओ नही।' मै अपनी बात पर अडा रहा—'माफ कीजिये, श्रीमान कमाडर, मै दूसरे गिलास के बाद भी कुछ नही खाता।' उसने अपने गाल फुलाये, नाक बजाई, और फिर जोर का ठहाका लगाया। साथ ही उसने जर्मन भाषा मे जल्दी-जल्दी कुछ कहा। शायद मेरी बात का अपने साथियो के लिए अनुवाद किया। दूसरे भी हसे, अपनी कुर्सिया पीछे खिसकाई और मुझे देखने के लिए अपने तामलोट जैसे चेहरे मेरी ओर किये। अब मैने उनकी आखो मे कुछ और ही यानी नर्मी का सा भाव लहरे लेते देखा।

"कमाडर ने मेरे लिए तीसरा गिलास भरा। इस बीच हसी के मारे उसका हाथ कपकपाता रहा। यह गिलास मैने जरा धीरे-धीरे खाली किया, जरा सी रोटी काटी और बाकी मेज पर रख दी। मै इन शैतानो को यह दिखला देना चाहता था कि बेशक भूख से मेरा दम निकल जा रहा था, फिर भी उन्होने जो टुकडे मेरे सामने फेक दिये थे, मै उन्हे अपने मुह मे ठूसने नही जा रहा था। मै उन्हे यह जतला देना चाहता था कि मेरा अपना रूसी स्वाभिमान और रूसी मर्यादा है, और लाख चाहने पर भी वे अभी मुझे आदमी से जानवर नही बना पाये है।

"इसके बाद उस कमाडर का चेहरा गम्भीर हो गया, उसने अपने सीने के लोहे के दो क्रॉस सीधे किये, निहत्था मेज से आगे बढ आया और बोला—'देखो, सोकोलोव, तुम सच्चे रूसी फौजी हो। तुम बढिया फौजी हो। मै भी फौजी हू, और मै शानदार दुश्मन की इज्जत करता हू। मै तुम्हे गोली नही मारूगा। और, जानते हो, आज हमारी बहादुर फौजे वोल्गा तक पहुच गई है और उन्होने स्तालिनग्राद पर पूरी तरह कब्जा कर लिया है। यह हमारे लिए बहुत ही खुशी की बात है, इसलिए मै तुम पर रहम कर तुम्हारी जान बख्शता हू। इसलिए अपने ब्लॉक मे वापस जाओ, और यह तुम्हारी हिम्मत का इनाम है, इसे अपने साथ लेते जाओ।'—यह कहकर उसने एक पाव रोटी और चरबी का एक लोदा मेरे हाथो मे थमा दिया।

"मैने उस रोटी को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया और चरबी अपने बाये हाथ मे ले ली। सारी घटना के एकदम एक अप्रत्याशित मोड ले लेने से मुझे इतनी हैरानी हुई कि मै धन्यवाद तक देना भूल गया। केवल बाई ओर मुडकर घूमा और दरवाजे की ओर बढ चला। पर, हर समय मुझे यही लगता रहा कि अब उसने मेरा कधा उडाया और मै इस टुकडे को अपने साथियो तक पहुचाने मे मजबूर हुआ। लेकिन, कुछ नही हुआ। एक बार फिर मौत मेरी बगल से निकल गई। सिर्फ उसकी ठडी सासो से मेरी सासे छुई, और बस!

"मै कमाडर के कमरे से बिल्कुल सधे हुए कदमो से निकला, पर बाहर निकलते ही कभी इधर लडखडाया तो कभी उधर। गिरते-पडते बैरक मे पहुचा, अन्दर घुसा। सीमेट के फर्श पर ढह पडा और बेहोश हो गया। फिर अभी अधेरा ही था कि साथियो ने मुझे जगाया—'बताओ तो कि हुआ क्या?' इसपर मुझे कमाडर के यहा की पूरी घटना याद आई और मैने उन्हे सारा किस्सा सुनाया। 'पर रोटी हम आपस मे किस तरह बाटेगे?'—कापती हुई आवाज मे मेरी बगल के पटरे के आदमी ने पूछा। मैने कहा—'सभी को बराबर-बराबर।' फिर, हमने उजाला होने की राह देखी और उजाला होने पर डोरे के एक टुकडे से रोटी और चरबी काटी। हर एक को दियासलाई की डिबिया के बराबर रोटी मिली और एक कण भी बरबाद नही किया गया। जहा तक चरबी का सवाल है, वह तो थी ही इतनी कि आदमी के होठ भर चिकने हो सके। लेकिन, उसमे भी हमने सभी के बराबर हिस्से लगाये।

"जल्दी ही जर्मनो ने हममे से सबसे मजबूत ३०० लोगो को एक दलदल साफ करने पर लगा दिया और फिर हम रूह्र प्रदेश की खानो मे काम करने के लिए भेज दिये गये। वहा मै १९४४ तक रहा। उस समय तक हमारी फौजो ने जर्मनो की थोडी अक्ल ठिकाने कर दी थी और फासिस्टो ने हम कैदियो की उपेक्षा करना बद कर दिया था।

"एक दिन जर्मनो ने हमे यानी सुबह की पाली के पूरे के पूरे लोगो को एक कतार मे खडा किया और दौरे पर आये किसी ओबेर-लेफ्टीनेंट ने दुभाषिये के सहारे हमसे कहा – 'तुममे से जो फौज मे या लडाई के पहले मोटर-ड्राइवर रहे हो, वे एक कदम आगे आ जाये।' तो, हममे से कोई सात ड्राइवर आगे आ गये। अब जर्मनो ने हमे पुराने ओवरऑल दिये और गार्डो की निगरानी मे वे हमे पाट्सडम ले आये। वहा पहुचे तो हमे अलग कर दिया गया। मुझे 'टोड्त' मे काम करने के लिए भेजा गया। सडके बनाने और हिफाजत के कामो से सम्बध रखनेवाली सस्था को जर्मन इसी नाम से बुलाते थे।

"तो 'टोड्त' मे मै जर्मन इजीनियरो के एक मेजर की 'ओपेल-ऐडमीरल' मोटर चलाने लगा। यह समझो कि वह फासिस्ट बेहद मोटा था! – ठिगना सा आदमी, जितना लम्बा उतना ही चौडा, पेट कि बिल्कुल घडा, पीछे का हिस्सा बिल्कुल छिनालो जैसा। सामने लटकती हुई ठोढियो की गिनती एक नही तीन, गरदन के पीछे चारो ओर झूलती हुई मास की तीन परते। मेरे ख्याल मे बदन की शुद्ध चरबी का वजन कुछ नही तो पचास किलोग्राम होगा। चलता तो इजन की तरह हवा छोडता और हाफता और खाने बैठ जाये तो समझो कि भगवान ही खैर करे। सारे दिन मुह चलाता रहता और अपने फ्लास्क से उडेल-उडेल कर ब्राडी के बडे-बडे

घूट घोटता रहता। जब-तब थोडा-बहुत हिस्सा मेरा भी लग जाता। वह सडक के किनारे मोटर रुकवाता, थोडी सी सॉसेज और पनीर काटता और गिलास चढाता। कभी रग मे होता तो कुत्ते की तरह एक टुकडा मेरी ओर भी लोका देता। हा, हाथ मे सीधे कभी न देता। कभी नही—इसे तो वह अपनी शान के खिलाफ बात समझता। लेकिन, जो भी हो, कैम्प से इस जिन्दगी का कोई मुकाबिला नही था और धीरे-धीरे मै आदमी जैसा नजर आने लगा—यहा तक कि कुछ कुछ मास भी हड्डियो पर चढने लगा।

"लगभग दो हफ्तो तक मै मेजर को पोट्सडम से बर्लिन ले जाता और बर्लिन से पोट्सडम वापस लाता रहा। इसके बाद वह हमारी फौजो के विरुद्ध किलेबन्दी के सिलसिले मे आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया। फिर तो मेरी पलको की नीद हवा हो गई। मै सारी रात यही सोचता रहता कि किस तरह यहा से भाग कर अपने साथियो से जा मिलू, कैसे अपने देश वापस पहुचू!

"हम पोलोत्स्क नगर गये। वहा दो साल मे पहली बार अपनी तोपो के धडाके मेरे कानो मे पडे। जानते हो, भाई मेरा दिल कैसे खुशी से उछला था? यो समझो दोस्त कि इरीना के साथ शुरू की मुलाकातो मे भी दिल इस तरह कभी न धडका था! लडाई पोलोत्स्क से कोई १८ किलोमीटर के फासले पर पूरब मे चल रही थी। शहर के जर्मन बुरी तरह बौखलाये

हुए थे, बुरी तरह घबराये हुए थे। ऐसे मे मेरे घडे-से पेटवाले अफसर ने पीने का हिसाब बढाना शुरू किया तो बढाता ही चला गया। दिन मे वह मोटर मे इधर-उधर चक्कर लगाता और किलेबदी के बनाये जाने के सिलसिले मे हिदायते देता, और रात को अकेले बैठकर ढालता। नतीजा यह कि वह फूलता चला गया और उसकी आखो के नीचे बडी-बडी थैलिया लटकने लगी।

"मैने सोचा—'अब और देर नही करनी चाहिए अब मेरा वक्त आया है लेकिन, अकेले मुझे यहा से बचकर नही जाना है . इस मोटे-तोदल को भी साथ ले जाना है हमारे लोगो के काम आयेगा।'

"तो, खडहरो मे मुझे भारी वजन का एक लोहा मिल गया। मैने उसके चारो तरफ चिथडे लपेट दिये ताकि इससे वार करने पर खून न निकले। फिर, सडक पर टेलीफोन का एक लम्बा-सा तार भी मेरे हाथ लग गया, इस तरह मैने जरूरत की हर चीज तैयार कर ली और अगली सीट के नीचे छिपा दी। जर्मनो को अलविदा कहने के दो दिन पहले, एक दिन शाम को, मै मोटर मे पेट्रोल डलवाकर लौट रहा था कि मैने एक छोटे जर्मन अफसर को नशे मे धुत्त दीवार को थाम कर चलते देखा। बस तो मै उसके पास पहुचा, उसे एक टूटी हुई इमारत मे ले गया, उसकी वर्दी और सिर की टोपी उतार ली। यह सब

भी मैंने सीट के नीचे छिपा दिया। अब तैयारी पूरी हो गई।

"२६ जून की सुबह को मेरे मेजर ने मुझे शहर से बाहर त्रोस्नीत्सा की तरफ ले चलने को कहा। वह वहा के रक्षा-सम्बधी निर्माण-कार्यों का सचालक था। हम मोटर मे बैठे और रवाना हो गये। मेजर पीछे की सीट पर बैठा चैन से ऊघने लगा, और अगली सीट पर मेरा कलेजा उछलकर बाहर आने-आने को होने लगा। मैंने मोटर तेज चलाई पर शहर के बाहर पहुचकर रफ्तार धीमी कर दी। फिर गाडी रोकी, बाहर निकला और चारो ओर नजर दौडाई। पीछे बहुत दूर दो लॉरिया धीरे-धीरे आती दीखी। मैंने अपना वजनी लोहा निकाला और पूरा दरवाजा खोला। देखा कि घडे सी तोदवाला मेजर सीट पर पडा इस तरह खर्राटे ले रहा है, जैसे कि उसकी बीवी उसकी बगल मे हो। बस, तो फिर मैंने आव देखा न ताव, और लोहा उसकी बाई कनपटी पर दे मारा। उसका सिर उसके सीने पर झूल गया। मामला पक्का करने के लिए मैंने एक चोट फिर की। पर, मैं उसे मारना नही चाहता था। मैं उसे जिन्दा अपने साथ ले जाना चाहता था, हमारे लोग उससे कितनी ही काम की चीजे जान सकते थे। हा तो मैंने उसके केस से पिस्तौल निकाली और उसे अपनी जेब मे डाल लिया। फिर मैंने पिछली सीट के पीछे एक ब्रैकेट घुसेडा और टेलीफोन का तार मेजर की

गर्दन के चारो ओर लपेटकर ब्रैकेट मे बाध दिया ताकि मेरे तेजी से मोटर चलाने पर वह लुढके नही। अब मैंने जर्मन वर्दी डाटी, टोपी लगाई और मोटर सीधे उस ओर बढाई जिस ओर धरती हाहाकार कर रही और लडाई चल रही थी।

"मैंने जर्मन मोर्चे की सीमा तोपो की भूमिगत चौकियो के बीच से पार की। एक खाई से सबमशीनगनरो की एक टोली ने सिर बाहर निकाला। मैंने जान-बूझकर मोटर धीमी कर दी, ताकि वे देख ले कि मेरे साथ एक मेजर है। इसपर वे चीखने-चिल्लाने और हाथ हिला-हिलाकर मुझे आगे जाने से रोकने लगे, लेकिन मै ऐसे बना जैसे कि कुछ समझ ही नही रहा, और मैंने मोटर अस्सी की रफ्तार पर छोड दी। जब तक जर्मनो ने असलियत समझी-समझी और गोली चलाई-चलाई तब तक मै बिल्कुल खरगोश की तरह गढो से बचता-बचाता अधिकारहीन इलाके मे पहुच गया।

"यहा जर्मन पीछे से गोलिया बरसाते रहे कि आगे से मेरे अपने साथी तिलमिला उठे और मुझ पर निशाना साधने लगे। चार गोलिया विड-स्क्रीन के पार हो गई। उन्होने रेडियेटर उडा दिया पर, पास ही एक झील की बगल मे मुझे एक छोटा सा जगल नजर आया और अपने कुछ साथी मोटर की ओर दौडते दीखे। मैंने गाडी जगल की ओर बढा दी। वहा पहुचकर दरवाज़ा सपाट खोल दिया

ग्रौर धरती पर लेटकर उसे चूमा। इस समय सास मुश्किल से ही ग्राती-जाती रही

"जैसी मैने पहले कभी नही देखी थी, ट्यूनिक पर लगी कधे की ऐसी खाकी सी पट्टियोवाला एक जवान सबसे पहले मेरे पास ग्राया ग्रौर दात निकालते हुए बोला – 'हा, तो जर्मन शैतान, रास्ता भूल गया है तू ?' मैने झटके से जर्मन ट्यूनिक चीर डाली, टोपी को पैरो के नीचे रौदा ग्रौर उससे बोला – 'प्यारे-प्यारे, जवान बच्चे, मेरे राजा बेटे, मै ग्रौर जर्मन वोरोनेज मे पैदा हुग्रा, वही बडा हुग्रा! मै तो लडाई का कैदी रहा हू, समझे! ग्रौर, सुनो, ग्रब उस धमधूसड को मोटर से बाहर निकालो, उसका ब्रीफ-केस ग्रपने कब्जे मे करो ग्रौर मुझे ग्रपने कमाडर के पास ले जाग्रो!'

"मैने उसे पिस्तौल सौप दी ग्रौर फिर शाम तक एक ग्रादमी से दूसरे ग्रादमी के पास भेजा जाता रहा। ग्राखिर शाम को डिविजन के कर्नल-कमाडर के सामने पेश होने को कहा गया। उस समय तक मुझे खिलाया-पिलाया ग्रौर नहलाया-धुलाया जा चुका था। तरह-तरह के सवाल पूछे जा चुके थे ग्रौर नई वर्दी मिल चुकी थी। इसलिए मै कर्नल की खाई मे गया तो कायदे से, कायदे के कपडो मे, तन ग्रौर मन से निर्मल। कर्नल ग्रपनी कुर्सी से उठा, सभी ग्रफसरो के सामने उसने मुझे ग्रपने सीने से लगाया ग्रौर बोला –

'फौजी, जो तोहफा तुमने हमे लाकर दिया है, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारे मेजर और उसके ब्रीफ-केस से हमे इतनी सूचना मिली है जितनी हमे मोर्चे पर बन्दी बनाये जानेवाले बीस जर्मनो से भी न मिलती। मै सरकारी सम्मान और पदक के लिए तुम्हारी सिफारिश करूगा ' कर्नल के शब्दो और स्नेह ने मुझे इस तरह द्रवित किया कि हजार न चाहने पर भी मेरे होठ थरथरा उठे। मै सिर्फ इतना ही कह पाया—'साथी कर्नल, मेरी प्रार्थना है, कि मुझे राइफल यूनिट मे शामिल कर लिया जाये।'

"पर, कर्नल हसा और मेरा कधा थपथपाया—'तुम भला लडोगे क्या जब सीधे खडे भी नही हो सकते? मै तुम्हे अभी-अभी सीधे-सीधे अस्पताल भेज रहा हू। वहा तुम्हारा जरूरी इलाज होगा और तुम्हे खिला-पिला कर कुछ तगडा किया जायेगा। इसके बाद तुम एक महीने की छुट्टी पर घर जाकर अपने परिवार के लोगो से मिलोगे। जब वापस आओगे तब तय करेगे कि तुम्हे कहा भेजा जाये!'

"कर्नल और वहा उपस्थित सभी अफसरो ने मुझसे हाथ मिलाये और दिल से अलविदा कही। मै जब बाहर आया तो बहुत उत्तेजित और द्रवित था, क्योकि युद्ध के कैदी के रूप मे पिछले दो वर्षों मे बिल्कुल भूल ही गया था कि इन्सान के साथ इन्सान का सा व्यवहार कैसा होता है। और, भाई, जरा गौर करना, एक जमाने तक मेरा यह हाल रहा कि

जब अपने ऊचे अफसरो से बातचीत करता तो गर्दन कधो के बीच छिपाता रहता। हर वक्त यही खटका लगा रहता कि अब उनका हाथ उठा, कि अब उठा। हा तो इस तरह का बना दिया गया था हमे फासिस्ट कैम्पो मे

"अस्पताल मे पहुचते ही मैने इरीना को एक पत्र लिखा और इने-गिने शब्दो मे पूरी दास्तान दोहराई कि मैं कैसे कैदी बना और कैसे जर्मन मेजर के साथ जान बचाकर भाग निकला। बच्चो की तरह डीग हाकने की मुझे यह क्या सूझी थी, कहना मुश्किल है। मै बिल्कुल सब्र से काम नही ले पाया और यह तक भी लिख दिया कि कर्नल ने पदक के लिए मेरे नाम की सिफारिश करने का वायदा किया है।

"फिर दो हफ्तो तक मैं सिर्फ सोता और खाता-पीता रहा। अस्पताल मे लोग एकबारगी खाना कम ही देते, पर दिन मे कई बार खिलाते। डॉक्टर ने कहा कि अगर तुम्हे तुम्हारे मनमाने ढग से खाने को दिया जाये तो तुम मर जाओगे। मै खूब स्वस्थ हो गया। लेकिन, दो हफ्ते बाद तो एक कौर तक मुह मे डालने को मेरा मन न होता। इस बीच घर से कोई खत नही आया और मुझे यह मानना ही होगा कि मेरा मन बहुत परेशान रहने लगा। अब न खाने का ध्यान आता और न सोने का। तरह-तरह के बुरे ख्याल दिमाग मे चक्कर काटते रहते। ऐसे मे तीसरे सप्ताह वोरोनेज से खत आया, पर पत्र इरीना का न था, बल्कि बढई का

काम करनेवाले मेरे एक पडोसी इवान तिमोफेयेविच का था। ईश्वर न करे कि किसी को कभी ऐसा खत मिले! पडोसी ने लिखा था—'जर्मनो ने जून १९४२ मे हवाई जहाजो के कारखाने पर बमबारी की और एक बम सीधे तुम्हारे घर पर गिरा। जब बम गिरा तो इरीना और बच्चिया घर पर ही थी बाद मे हमे उनके नाम-निशान तक का पता न चला। जहा तुम्हारा मकान था, वहा गहरा गढा-सा बन गया ' पहली बार तो हिम्मत जवाब दे गई और मै वह खत पूरा पढ नही सका। आखो के आगे अधेरा छा गया और दिल एकदम मुर्दा-सा हो गया और लगा कि बस अब खेल खत्म! मै पलग पर लेट रहा और जब थोडी सी हिम्मत और शक्ति लौटी तो मैने खत आखिर तक पढा। मेरे पडोसी ने लिखा था कि बम के गिरने के समय अनातोली शहर मे था। शाम को घर आया तो उसने वहा गहरा गढा देखा। वह उसी रात को शहर लौट गया। जाने के पहले उसने पडोसी से सिर्फ इतना कहा कि मै नाम लिखाकर लाम पर जा रहा हू और बस।

"जब मेरा दिल जरा काबू मे आया और तबीयत सम्हाल मे आई तो मुझे याद आया कि स्टेशन पर मुझसे अलग होते समय इरीना कैसे मेरे साथ लिपटी रही थी। उसके औरत के दिल ने जरूर तभी उसे यह बता दिया होगा कि अब हम एक-दूसरे से कभी मिलेगे नही। और, मैने उसे एक ओर

को ढकेल दिया था   कभी मेरा परिवार था, मेरा अपना घर था और इस परिवार और इस घर को बसाने मे सालोसाल लगे थे, पर एक झटके मे ही सब कुछ बरबाद हो गया था, और मै अकेला रह गया था   मै सोचने लगा — मेरी यह अटपटी जिन्दगी क्या एक सपना, एक ख्वाब तो नही है? बेशक सपना ही है! जब मै कैदी था तो हर रात को इरीना और बच्चे मेरे सपनो मे आते थे और मै उन्हे यह कहकर ढाढस बधाने की कोशिश करता था कि तुम लोग दुखी न हो, मन मैला न करो, मै जल्दी ही घर आऊगा   मै मजबूत आदमी हू, सब कुछ सह सकता हू   हम जरूर एक न एक दिन फिर एक साथ होगे   यानी, दो साल तक मै बराबर मुर्दो से बाते करता रहा था?! "

वह एक मिनट तक चुप रहा, फिर बदली हुई, धीमी आवाज मे रुक रुककर बोला — "आओ, भाई, एक सिगरेट हो जाये   जाने क्यो ऐसा लग रहा है जैसे कि कोई मेरा गला घोट रहा है।"

हमने सिगरेटे जलाई। बाढ की लपेट मे आये हुए जगल को गुजाता हुआ कोई कठफोडवा खट-खट कर रहा था। गर्म हवा आलदारो की सूखी पत्तियो को अब भी सरसरा रही थी। आसमान मे बहुत ऊपर, नावो के कसे हुए दूधिया पाल जैसे बादल अब भी नीलम के बीच तैरते हुए सामने से

गुजर रहे थे। उदासी भरे मौन के इन क्षणो मे वसन्त के विशद् आगमन के लिए, जीवन मे प्राण की अमर प्रतिष्ठा के लिए तैयार होता अपार जगत मुझे बिल्कुल दूसरा ही लगा।

चुप्पी जैसे काटने लगी, और मैने पूछा—"फिर फिर क्या हुआ?"

अपनी कहानी अपनी जबानी कहनेवाले ने बेमन से जवाब दिया— "फिर फिर क्या होता? फिर मुझे कर्नल ने एक महीने की छुट्टी दे दी। एक सप्ताह बाद मै वोरोनेज जा पहुचा, और पैदल उस जगह गया जहा कभी अपने परिवार के साथ रहता था। वहा जग लगे पानी का एक बडा गढा नजर आया। हर ओर उगी हुई जगली झाडिया कमर कमर तक ऊची थी। हर तरफ गहरा सन्नाटा था, वीरानगी थी—कब्रगाह की तरह का सा सन्नाटा। भाई मेरे, उस समय कैसा लगा, कैसी तबीयत परेशान हुई, तुम्हे बतला नही सकता मै! मै वहा खडा रहा, भारी मन लिये हुए। इसके बाद मै स्टेशन लौट आया। वहा तो एक घटे रहना भी दुश्वार हो गया। नतीजा यह कि उसी दिन डिविजन मे वापिस!

"लेकिन, तीन महीने बाद मेरी जिन्दगी मे खुशी का एक क्षण अनजाने ही कौधा, जैसे बादलो के बीच धूप की एक किरण। मुझे अनातोली की खोज-खबर मिली। उसने दूसरे मोर्चे से मेरे नाम खत भेजा। हमारे उसी पडोसी से उसे

मेरा पता मिल गया था। पता चला कि शुरू-शुरू मे उसने तोपखाने के कॉलेज मे प्रशिक्षण पाया और गणित मे उसकी विशेष योग्यता उसके खासे दाहिने आई। एक साल बाद उसने शानदार अक प्राप्त करके इम्तहान पास किया और लडाई पर चला गया। उसने लिखा कि उसे कप्तान का ओहदा मिल गया है, अब वह '४५' के एक तोपखाने की कमान कर रहा है, और अब तक उसे छ ऑर्डर और पदक मिल चुके है। एक लफ्ज मे उसने अपने बूढे बाप को बहुत पीछे छोड दिया था और एक बार फिर मुझे उसपर बडा अभिमान हुआ। तुम जो चाहे सो कहो, पर यह कि मेरा अपना बेटा कप्तान और एक तोपखाने का कमाडर हो गया था, यह कोई मामूली बात नही थी! इतना ही नही, वह बहुत से पदक भी पा चुका था। इससे क्या फर्क पडता है कि उसका बाप स्टूडीबेकर लॉरी मे तोप के गोले और ऐसी ही दूसरी चीजे इधर-उधर पहुचाता फिरता था। उसके बाप का जमाना गुजर चुका था, लेकिन उसकी, मेरे उस कप्तान की तो सारी जिन्दगी उसके आगे पडी थी।

"और, अब रातो को मै बूढो के से सपने देखने लगा कि लडाई खत्म होते ही मै अपने बेटे की शादी करूगा और नये परिवार के साथ रहूगा। थोडी-बहुत बढईगीरी और बच्चो की देखभाल करूगा – यानी वह सब करूगा जो कोई भी बूढा आदमी करता है।

"मै लडखडाया, पर मैने अपने पैर साध लिये। फिर मलबे से अटी सडको पर उस लेफ्टिनेट-कर्नल के साथ उसकी बडी मोटर मे बैठकर मै जैसे गया, वह आज तक सपने सा लगता है। सीधी लाइन मे खडे फौजियो और लाल मखमल से ढके ताबूत की आज मुझे महज धुधली-धुधली सी याद है। पर, मेरे दोस्त, मेरा अनातोली आज भी उसी तरह मेरी निगाहो के सामने है, जैसे तुम! मै ताबूत के पास गया। हा, उस समय मेरी आखो के सामने मेरा बेटा था और फिर भी जैसे वह मेरा बेटा नही था! मेरा बेटा अनातोली तो मेरे सामने सदा बच्चे की शक्ल मे आया था—होठो पर हमेशा मुस्कान, कधे सकरे और पतली गर्दन की उभरी हुई कठी। लेकिन, यहा तो मेरे सामने एक पूरा जवान था—कधे चौडे, देखने मे सुन्दर, आखे अधमुदी जैसे कि मुझे न देखते हुए कही दूर, अनजाने इलाके मे कुछ देख रहा हो! महज एक चीज ज्यो की त्यो थी और वह थी मेरे बेटे के होठो के कोनो पर हल्की-सी मुस्कान। यही थी वह मुस्कान जिससे मै परिचित था। सो, मैने उसे चूमा और हटकर एक किनारे खडा हो गया। लेफ्टिनेट-कर्नल ने भाषण दिया। मेरे अनातोली के मित्र अपने आसू पोछ रहे थे, पर मेरी आखो मे एक भी आसू न आया। मुझे लगता है कि मेरे आसू मेरे दिल मे ही सूखकर रह गये थे। शायद इसीलिए मेरा दिल आज तक बुरी तरह टीसता है।

"मैंने अपनी आखिरी खुशी और उम्मीद उस परायी जर्मन धरती मे दफना दी। तोपो ने गोले दागकर अपने कमाडर को लम्बे सफर के लिये विदा दी। मुझे अपने अन्दर की कोई चीज जैसे दम तोडती-सी लगी मैं अपने यूनिट मे वापस आया तो एकदम लुटा-लुटा-सा। इसके बाद जल्द ही मुझे सेना से छुट्टी मिल गई। जाऊ तो कहा? वोरोनेज? मन ने कहा—'नही, हरगिज नही!' मुझे अपने एक दोस्त की याद आई। वह लडाई मे अपाहिज होकर जाडे मे ही घर लौटा था और उर्यूपिन्स्क नगर मे रहता था। उसने एक बार मुझे आने की दावत भी दी थी—तो बस, मैं रवाना हो गया।

"मेरे दोस्त और उसकी बीवी का कोई बच्चा न था और शहर के सिरे पर उनका छोटा-सा निजी घर था। दोस्त को अपाहिजी की पेंशन मिलती थी, पर वह लॉरी-डिपो मे ड्राइवर का काम करता था। सो, मुझे भी वही काम मिल गया। मेरे दोस्त ने मुझे भी सिर छिपाने की जगह दे दी। हम लॉरियो पर तरह-तरह के सामान लादकर आसपास के इलाको मे पहुचाते। शिशिर मे हम अनाज की ढुलाई करते। तो, यही मेरा परिचय अपने नये बेटे से हुआ, यानी इस बच्चे से हुआ जो इस समय वहा बालू मे खेल रहा है।

"हम ड्राइवर लोग जब कोई लम्बा चक्कर लगाकर लौटते है तो सबसे पहले किसी कॉफे मे जाते है, मुह मे कुछ डालते

है, और थकान मिटाने के लिए एक गिलास वोद्का गले के नीचे उतारते है। मै यह मानता हू कि उस वक्त तक यह मेरी खराब सी आदत हो गई थी। सो, मै एक दिन कॉफे मे गया तो मैने इस लडके को वहा देखा और दूसरे दिन गया तो इसे फिर वहा पाया। नन्हा-मुन्ना सा यह बच्चा अजीब फटेहाल मे दीखा—चेहरा तरबूज के रस और धूल-गर्द से सना हुआ ऐसा गदा कि कहने की बात नही, चेहरे पर अस्त-व्यस्त बाल लेकिन आखे ऐसी जैसे कि बरखा-बूदी के बाद रात के सितारे! बात बडी बेतुकी-सी लग सकती है, पर वह मेरे मन मे ऐसा उतर गया कि न देखता उसे तो जैसे कोई कमी सी खटकती। यही नही, मै अपना काम जल्दी-जल्दी पूरा करता ताकि कॉफे पहुचू और जल्दी से जल्दी उसे एक नजर देखू। यह बच्चा उस कॉफे मे ही खाता यानी जो कोई जो कुछ दे देता, वही इसका खाना हो जाता।

"चौथे दिन मै अपनी लॉरी मे अनाज भरे सीधा कॉफे आया और मैने अपनी लॉरी वहा रोकी। बच्चा सीढी पर बैठा पैर हिलाता नजर आया। लडका खासा भूखा है, यह बात उसके चेहरे पर एक निगाह डालते ही साफ हो गई। मैने खिडकी से बाहर सिर निकाला और चिल्लाकर कहा—'हे वान्या, इधर आओ चढ, आओ लॉरी पर मै तुम्हे एलीवेटर तक ले चलूगा। फिर हम यहा लौटेगे और

खायें-पियेंगे।' लडका मेरी आवाज से चौक गया, फिर सीढियो से राह के तख्ते पर कूदा और लॉरी के पायदान पर चढा। उसकी सितारो जैसी आखे अचरज से फैल गईं। वह धीरे से बोला–'तुम्हे कैसे मालूम कि मेरा नाम वान्या है?' लडका आखें फाडकर मेरे जवाब का इन्तजार करने लगा। मैंने कहा–'भैये, मेरी गिनती दुनिया के उन लोगो मे है जो सभी कुछ जानते हैं।'

"लडका घूमकर दाईं ओर आ गया। मैंने दरवाजा खोलकर उसे अपनी बगल मे बिठा लिया और हम चल दिये। लडका बडा ही जिन्दादिल लगा, लेकिन यकायक चुप हो गया और रह-रहकर अपनी लम्बी, छल्लेदार बरौनियो के नीचे से मुझे देखता और आह भरता रहा। सोचो कि इतना नन्हा सा बच्चा और आहे भरे! मैंने पूछा–'तुम्हारे बापू कहा है, वान्या?' बहुत धीमी आवाज मे जवाब मिला–'लडाई के मोर्चे पर मारे गये।' 'और, तुम्हारी मा?' 'मा, हम गाडी मे सफर कर रहे थे कि एक बम आ गिरा और वह मर गईं।' 'गाडी मे कहा से आ रहे थे तुम?' 'मालूम नही मुझे याद नही।' 'यहा तुम्हारा कोई रिश्तेदार नही है?' 'नही कोई भी नही है।' 'रात को तुम सोते कहा हो?' 'कही भी।'

"गर्म गर्म आसू छलकने को बेकरार होने लगे। मैंने तुरन्त ही फैसला कर लिया कि मुझे क्या करना है। क्या

जरूरत है हमे अकेले-अकेले और अलग-अलग यातनाये भोगने की! मै इसे बेटा बना लेता हू! बस, तो इस ख्याल के साथ ही मन जैसे हल्का हो गया और दिल मे जैसे एक तरह का उजाला हो गया। मै उसकी तरफ झुका और मैने बहुत धीरे से पूछा–'वान्या, तुम जानते हो कि मै कौन हू?' उसने गहरी सास लेते हुए पूछा–'कौन हो तुम?' 'मै तुम्हारा बापू हू'–मैने पहले की तरह धीरे से उसे कहा।

"भगवान ही जानता है कि इसके बाद क्या हुआ। वह मेरी गर्दन से आ लिपटा, मेरे गाल, होठ, और माथा चूमने लगा और गानेवाली चिडिया की तरह चहचहाने लगा–'मेरे प्यारे बापू, मै जानता था! मै जानता था कि तुम मुझे खोज लोगे! मै जानता था कि चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, तुम मुझे खोजकर ही दम लोगे। मै कब से तुम्हारी राह देखता रहा हू!' वह मेरे बदन से सट आया। वह हवा मे कापने वाली घास की पत्ती की तरह काप रहा था। मेरी आखे धुधला गई और मै भी कापने लगा। मेरे हाथ थरथराने लगे मै स्टीयरिग कैसे साधे रहा, कह नही सकता। फिर भी गाडी सडक से नीचे उतर गई और इजन बन्द हो गया। मेरी आखो से जब तक धुध हट नही गई मुझे गाडी चलाते हुए डर महसूस हुआ कि कही किसी को कुचल न दू। हम कोई पाच मिनट तक वहा बैठे रहे और मेरा बेटा

मुझ से बुरी तरह सटा, बिल्कुल खामोश और सिर्फ कांपता रहा। मैने अपना दाया हाथ उसके कधे पर रखा, उसे प्यार से कसा, गाडी बाये हाथ से घुमाई और अपने घर वापस आ गया। इसके बाद एलीवेटर तक जाने का ख्याल ही न रहा।

"घर पहुचने पर मैने गाडी दरवाजे पर रोकी, अपने नये बेटे को गोदी मे उठाया और अन्दर ले आया। वह मेरे गले मे झूल गया, और बस वही चिपककर रह गया। यही नही, उसने अपना गाल मेरे दाढीभरे गाल से चिपका लिया और फिर वही बनाये रखा। इसी रूप मे मै उसे घर लाया। मेरा मित्र और उसकी पत्नी दोनो घर पर थे। मैने उन्हे आखो से इशारे किये और उत्साह और खुशी से भरकर बोला— 'आखिर अपने नन्हे-मुन्ने वान्या को खोज ही लिया मैने! यह रहे हम दोनो, देखते हो!'

"मेरे सन्तानहीन मित्र-दम्पति तुरन्त ही सारी बात समझ गये और इधर-उधर दौडने-धूपने लगे। मगर बेटा था कि मुझ से चिपटा हुआ था। पर, किसी तरह मैने उसे बहलाया। मैने उसके हाथ साबुन से धोये और उसे खाने की मेज पर ला बिठाया। मेरे मित्र की पत्नी ने एक तश्तरी शोरबा तुरन्त ही उसके सामने ला रखा और जब उसने बच्चे को शोरबे पर टूटते देखा तो उसकी आखे भर आईं। वह स्टोव के पास खडी ऐप्रन से अपने आसू पोछती रही। मेरे वान्या

ने उसे रोते देखा तो वह दौडकर उसके पास पहुचा, स्कर्ट का सिरा खीचते हुए बोला – 'तुम रो क्यो रही हो, चाची? बापू ने मुझे कॉफे के पास पाया। इसपर हर एक को खुश होना चाहिए और तुम रो रही हो!' पर वह तो अब फूटकर रो पडी और फिर उसकी आखे ऐसी बरसी, ऐसी बरसी कि तन-बदन आसुओ से तर-बतर हो गया!

"खाने के बाद मै उसे नाई के पास ले गया और मैने उसके बाल कटवाये। फिर घर वापस लाकर मैने उसे टब मे नहलाया और साफ चादर उसके चारो ओर लपेटी। इसके बाद उसने मेरे गले मे बाहे डाली और उसी हालत मे सो गया। मैने उसे धीरे से पलग पर लिटाया, लॉरी ले जाकर अनाज एलीवेटर मे खाली किया, लॉरी डिपो मे पहुचाई और जल्दी-जल्दी दूकानो की ओर बढा। यहा मैने अपने बेटे के लिए सर्ज का पतलून, कमीज, एक जोडी सैडल और तिनकोवाला एक टोप खरीदा। सभी चीज़े गलत साइज की निकली और माल की निगाह से भी कोई बहुत अच्छी न रही। पतलून देखकर तो मेरे दोस्त की पत्नी ने मुझे डाट भी पिलाई – 'तुम्हारा दिमाग खराब है! ऐसी गरमी मे बच्चे को सर्ज का पतलून पहनाओगे!' यही नही, दूसरे ही मिनट उसने सिलाई की मशीन सामने रखी, कपडे की आलमारी उलटी-पलटी, कपडा निकाला और मेरे वान्या

के लिए देखते-देखते सूती पतलून और एक सफेद कमीज सीकर तैयार कर दी। रात हुई तो मैंने उसे अपने साथ सुलाया और एक जमाने के बाद पहली बार मै चैन से सोया। वैसे रात मे मै कोई चार बार जगा। बच्चा हल्की-हल्की सासे लेता पत्तियो के नीचे बसेरा लेती गौरैया की तरह मेरी बाहो मे बधा सोता रहा। दोस्त, मेरे पास शब्द नही कि मै तुम्हे बतलाऊ कि मुझे कैसा और कितना सुख मिला! मैंने कोशिश की कि हिलू-डुलू तक नही, कि कही बच्चे की नीद न टूट जाये। पर यह कोशिश बेकार रही। बीच-बीच मे मै बहुत धीरे से उठता, दिया-सलाई जलाता और उसके सिरहाने खडा उसे मन ही मन सराहता

"उजाला होने के जरा पहले मै जागा और समझ नही पाया कि क्यो मुझे घुटन-घुटन सी लगी। पर, जरा देर बाद ही मालूम हुआ कि बेटे-साहब अपनी चादर से बाहर आ गये है, मेरे सीने पर पसरे हुए है और नन्हा सा पैर मेरे गले पर टिकाये है। साथ सोता है तो परेशान तो बहुत करता है। पर, अब आदी हो गया हू। वह साथ नही सोता तो मुझे जैसे उसकी कमी सी खटकती है। रात को मै कभी उसे सोते हुए भर आख देखता हू, कभी उसके बाल सूघता हू और जैसे दिल का दर्द कम हो जाता है, तबीयत हल्की हो जाती है। मेरा दिल तो दर्द सहते-सहते पत्थर हो गया था, मेरे भाई

"शुरू-शुरू मे तो यह हुआ कि मै लॉरी चलाता तो वान्या मेरे साथ-साथ ही रहता। लेकिन फिर मुझे महसूस हुआ कि इस तरह काम चलने का नही। मेरी अकेली जान को भला जरूरत ही किस चीज की होती थी? एक टुकडा रोटी, एक अदद प्याज और एक चुटकी नमक, फौजी आदमी के सारे दिन के लिए काफी। मगर जब लडका रहता तो बात ही दूसरी होती। कभी उसे दूध की जरूरत पडती, तो कभी उसके लिए एक अडा उबाला जाना जरूरी होता और कुछ न कुछ गरम चीज खिलाना तो बिल्कुल जरूरी था। लेकिन, मुझे तो अपना काम भी करना होता। इसलिए मैने कलेजा कडा किया और उसे अपने दोस्त की पत्नी की देखरेख मे छोडने लगा। खैर तो, वह सारे दिन रोता रहता और शाम को मुझसे मिलने एलीवेटर पर आ जाता और काफी रात गये तक मेरी राह देखता रहता।

"शुरू-शुरू मे लडके के मामले मे काफी तकलीफो का सामना करना पडा। एक बार हम उजाला रहते ही पलग पर जा लेटे। दिन भर बहुत कडी मेहनत की थी मैने। लेकिन हमेशा गौरैया की तरह चहकनेवाला लडका आज बहुत ही उदास और शात लगा। मैने पूछा—'बेटे, क्या सोच रहे हो तुम?' उसने छत की तरफ देखते हुए पूछा—'तुमने अपना चमडे का कोट क्या किया, बापू?' मेरे पास चमडे का कोट जिन्दगी मे कभी रहा ही नही था! मैने जैसे-तैसे

बहलाया। कहा – 'कोट वोरोनेज मे रह गया!' 'और, मुझे खोजने मे तुम्हे इतने दिन क्यो लगे?' 'बेटे, मैंने तुम्हे खोजा जर्मनी मे, पोलैंड मे और पूरे बेलोरूस मे, लेकिन तुम मिले यहा उर्यूपिन्स्क मे।' 'क्या उर्यूपिन्स्क, जर्मनी की तुलना मे निकट है? क्या पोलैंड हमारे घर से दूर है?' यानी, इस तरह हम तब तक बाते करते रहे जब तक कि नीद नही आ गई।

"लेकिन, शायद दोस्त, तुम यह समझते हो कि चमडे के कोट का सवाल लडके ने योही, बिना किसी खास वजह के किया? नही, ऐसा नही है। उस सवाल के पीछे अच्छा-खासा एक कारण था। इसका मतलब यह है कि उसके असली पिता के पास कभी कोई चमडे का कोट था और उसे उस चमडे के कोट की याद हो आई थी। बच्चो की याददाश्त गरमी के दिनो की बिजली की तरह होती है कि अभी-अभी कौधी और हर चीज दमक उठी और अभी-अभी गायब! यानी, उस बच्चे की याददाश्त ने भी बिल्कुल गरमी की बिजली की कौधो का सा काम किया।

"हो सकता है कि उर्यूपिन्स्क मे हम एक साल और साथ रहते, पर नवम्बर मे मैं एक दुर्घटना कर बैठा। एक दिन एक गाव के दलदली रास्ते से लॉरी ले जा रहा था कि गाडी किनारे के सिरे पर फिसलने लगी और रास्ते मे एक गाय आ गई और उसकी टाग पर चोट लगी। तो, तुम

जानो कि औरतो ने बडा शोर-गुल मचाया। तमाम लोग इधर-उधर से आ जमा हुए। होते-होते एक ट्रैफिक-इन्स्पेक्टर भी वहा आ पहुचा। मैंने उससे कहा कि जाने दीजिये, मामूली सी बात है। लेकिन, उसने मेरा लाइसेस ले ही तो लिया। गाय उठी और पूछ नचाती हुई गली मे भाग गई, मगर मेरा लाइसेस छिन गया। फिर जाडे भर मैंने बढई का काम किया। इसके बाद ड्राइवर का काम करनेवाले एक पुराने फौजी-दोस्त से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ और उसने मुझे अपने घर आने की दावत दी। मेरा वह मित्र आपके जिले मे रहता है। उसने लिखा—'आओ और मेरे साथ रहो। तुम एक साल यहा बढई का काम करना। इसके बाद तुम्हे हमारे इलाके मे लॉरी चलाने का नया लाइसेस मिल जायेगा ' इस तरह हम यानी मै और मेरा बेटा कशारी के लिए रवाना हुए।

"लेकिन, दुर्घटना से इसका कोई सम्बध नही। गाय का मामला न होता तो भी मै उर्यूपिन्स्क तो छोड ही देता। मेरा दर्द मुझे एक जगह जमकर रहने नही देता। लेकिन, अब जब मेरा वान्या बडा हो जायेगा और स्कूल जाने लगेगा तब शायद कही पैर जमाना ही पडेगा। लेकिन, फिलहाल तो हम रूसी धरती मझा रहे है।"

"लडका इस तरह चलते-चलते थकता नही?"—मैने पूछा।

"वह अपने पैरो से तो बहुत ही कम चलता है। अकसर तो वह मेरी सवारी करता है। मै उसे कधो पर बैठा लेता हू और जब वह अपने पैर सीधे करना चाहता है तो नीचे कूद पडता है और मेमने की तरह उछलते हुए सडक के किनारे-किनारे दौड लगाता है। भाई मेरे, यह सब कुछ नही। हमारा साथ कायदे से निभेगा, पर बात तो महज यह है कि मेरे दिल मे कही कोई खटक होती है और इस मशीन का पिस्टन बदलना जरूरी हो गया है। कभी-कभी इस तरह टीस उठता है कि आखे चकराने लगती है। मुझे तो डर है कि कही किसी दिन सोते ही सोते मेरा दम न निकल जाये कि मेरा बेटा सहम जाये। फिर, एक दूसरी मुसीबत भी है। लगभग हर रात को सपनो मे मै अपने दिल के उन टुकडो को देखता हू, जो आज इस दुनिया मे मेरे लिए नही है, जिन्हे मै खो चुका हू। अकसर तो ऐसे देखता हू जैसे कि मै किसी काटेदार तार के इस तरफ हू और वे आजाद उस तरफ। मै अपनी इरीना और बच्चो से बाते करता हू, लेकिन ज्यो ही इस काटेदार तार को बीच से तोड-फेकने की कोशिश करता हू, त्यो ही वे दूर चले जाते है, मेरी आखो के सामने ही जैसे विलुप्त हो जाते है। और, इस मामले मे एक बात और भी है। दिन मे तो मै अपने को साधे रहता हू, इसलिए न तो पलके गीली होती है, और न मुह से उफ निकलती है, पर रातो मे कभी-कभी आख खुल जाती है तो पाता हू

कि मेरा तकिया आसुओ से तर है "

इसी समय नदी की ओर से मेरे मित्र और पानी मे डाडो के छपाके की आवाज आई। अब करीबी दोस्त लगनेवाले उस अजनबी ने लकडी के कुदे की तरह सख्त अपना हाथ मेरी ओर बढाया।

"विदा, भाई हमेशा किस्मत तुम्हारा साथ दे।"

"तुम भी मेरी शुभ-कामनाये स्वीकारो तुम्हारा कशारी का सफर सफल हो!"

"धन्यवाद हे बेटे, सुनते हो चलो, नाव मे चले।"

लडका दौडकर अपने पिता की बगल मे आ गया, और उसकी रूईदार जैकेट का सिरा पकडकर नाव की ओर नन्हे-नन्हे पैर बढाने लगा।

दो अनाथ, बालू के दो कण लडाई के भयानक तूफान मे उडकर किन अजीब लहरो के बीच जा पडे आखिर अब उनका भविष्य क्या है? मेरे अन्तर ने पूरे विश्वास से कहा कि यह रूसी, यह अदम्य इच्छा-शक्तिवाला आदमी सब कुछ सहार जायेगा, टूटेगा नही और यह लडका अपने पिता के स्नेह की छाया मे रहकर एक नये साचे मे ढलेगा। वह एक ऐसा आदमी बनेगा जो देश की पुकार पर कडी से कडी मुसीबत सह सकेगा, और बडी से बडी बाधा की कलाई मरोड सकेगा।

मैंने पिता और पुत्र को जाते देखा तो मेरा मन बडा टीसा। शायद जुदा होते समय इतना अधिक दुख न होता यदि अपनी पतली-पतली टागो से कुछ कदम जाने के बाद वान्या मेरी ओर मुडकर अपना नन्हा-मुन्ना गुलाबी हाथ न हिलाता। और, सहसा ही एक कोमल पर चगुलदार पजा मुझे अपना सीना जकडता सा लगा। मैंने झटपट मुह दूसरी ओर कर लिया।

नही, जिन सयाने लोगो के बाल लडाई के वर्षो ने सफेद किये है वे नीद मे ही नही, बल्कि उठते-बैठते, चलते-फिरते भी रोते है। पर, सबसे बडी बात है समय रहते आसू पोछ लेना। महत्व की बात यही हे कि बच्चे का दिल न दुखे, उसे ऐसा मौका न मिले कि उसकी निगाह आदमी के गाल के सूखे, दहकते हुए आसू पर पडे!

तत्याना तेस (जन्म १९०६) – सुविख्यात सोवियत पत्रकार। १९३४ से 'इज्वेस्तिया' समाचारपत्र की विशेष सवाददात्री। १९५० और उसके बाद कहानियो और शब्दचित्रो के कई सग्रह छप चुके है।

तत्याना तेस
यह मोज़म्बिक

होटल की दूसरी मजिल पर बडी नौकरानी को सभी मौसी पोल्या कहते थे।

भारी-भरकम शरीर और अधेड उम्र की यह नारी मरदाने जूते पहने रहती। सफाई करनेवाली नौकरानिया उनसे आग की तरह डरती। मौसी पोल्या को सफाई का तो जनून था। उनका यह जनून इस हद तक पहुचा हुआ था कि उनके जन्मस्थान राद्की गाव की नारिया भी आश्चर्यचकित रह

जाती। यह बात सर्वविदित थी कि राद्की गाव की गृहिणिया सफाई की दीवानी होती है और हर दिन खाना पकाने के बाद तन्दूर पर कलई करती है। मौसी पोल्या जब राद्की गाव मे रहती थी तो हर दिन न केवल तन्दूर पर ही कलई फेरती, बल्कि घर की दीवारो की भी पुताई करती। सफाई के मामले मे मौसी पोल्या के स्तर तक पहुच पाना राद्की गाव की गृहिणियो के बस की बात नही थी।

मौसी पोल्या को राद्की गाव छोडे हुए पचीस वर्ष हो चुके थे, किन्तु उनका जोश पहले की तरह ही बना हुआ था। इस छोटे और शान्त-से होटल मे उन्होने तुरत-फुरत अपनी मनमर्जी की व्यवस्था स्थापित कर दी। हर सुबह को सफाई करनेवाली युवतिया बरामदे और कमरो को खूब रगड-रगडकर उसी तरह से साफ करती जैसे कि जहाज के डेक को साफ किया जाता है। वे तब तक शीशो को जोर जोर से साफ करती रहती जब तक वे चमचम न करने लगते। तब मौसी पोल्या खिडकी के करीब जाती और कपडा लेकर उसे इस तरह घुमाती हुई शीशे को साफ करती कि वह सूरज की किरणो की तरह लौ देने लगता। मौसी पोल्या कुछ कदम पीछे हटती, अपने काम को आलोचनात्मक दृष्टि से देखती, आखे सिकोडती और चित्र पर अन्तिम तूलिका फेरनेवाले चित्रकार की भाति उसे जाचती।

यह होटल मास्को की कृषि-प्रदर्शनी मे भाग लेने के लिए

आनेवाले सामूहिक फार्म के किसानो के लिए बनाया गया था। मौसी पोल्या की मजिल पर अकसर ग्वालिने ठहरती थी। वे वसत शुरू होते आती, अपने साथ सबसे ज्यादा दूध देनेवाली गाये लाती और पतझर के अत मे प्रदर्शनी के बद होने पर घर लौट जाती।

मौसी पोल्या को इस बात की बहुत खुशी होती थी कि उनकी मजिल पर जो ग्वालिने आकर रहती, वे गभीर और रख-रखाव वाली नारिया होती। लम्बी गर्मी के दौरान मौसी पोल्या की उनसे मैत्री हो जाती। ग्वालिने प्रदर्शनी के बाद शाम को जब होटल मे लौटती, तो मौसी पोल्या उनके कहे बिना ही चाय और उबला हुआ पानी लेकर उनके कमरो मे पहुच जाती। ग्वालिने चाय पीने बैठती तो मौसी पोल्या को भी अपने साथ बैठने की दावत देती। शुरू मे तो मौसी पोल्या उपचारवश इन्कार करती, मगर बाद मे उनके साथ चाय पीने को राजी हो जाती। मौसी पोल्या ग्वालिनो की भाति ही चाय के चार बडे-बडे प्याले पीती और प्रदर्शनी मे दिन भर मे हुई घटनाओ पर विचार-विनिमय करती।

दिन भर मे घटनाए घटती भी बहुत-सी।

सब से बढिया गाये अजनबी वातावरण मे आकर कम दूध देने लगती। गायो के बाडे मे दिन भर दर्शक आते रहते। इन दर्शको के हाथो मे नोटबुके होती जिनमे वे हर प्रसिद्ध गाय के बारे मे पूरी तफसीले लिखते। ग्वालिने यह देखकर

कि गाय शोर-शराबे के कारण परेशान होती है और ढग से चारा नही खाती, मन ही मन खीझती-कुढती रहती।

सब से ज्यादा खिन्न तो होती क्सेनिया परफेनोव्ना। गोल-मटोल और फुरतीली परफेनोव्ना 'क्रास्नी लूच' (लाल किरण) नामक सामूहिक फार्म से आती थी। वह अपने कमरे मे आते ही जूते उतारती ताकि शहरी जूतो मे उसके पाव और न दुखे। फिर अपने भरे भरे गालो को रूमाल से पोछते हुए कहती

"गाय को बीच मे खडा कर दिया गया, उसके चारो ओर लोग आराम-कूर्सियो पर बैठ गये जैसे सर्कस हो रहा हो। तेज रोशनिया जला दी गयी और फिल्म खीचने वाले आ पहुचे। लगे कहने 'परफेनोव्ना, जरा बिजली की मशीन से दूध दुह कर दिखाओ।' और गाय थी कि दूध देने का नाम ही नही लेती थी! खम्भे की तरह खडी रही, एक बूद भी दूध न दिया। चाहे कोई सिर पटक कर क्यो न मर जाता!"

परफेनोव्ना ने मेज के नीचे अपने पाव की गुलाबी उगलिया हिलाते हुए खीझकर कहा

"यह भला कहा लिखा है कि गाय को सर्कस मे ले जाकर उसका दूध दुहा जाय?"

"तुम परेशान न हो," मौसी पोल्या ने उसे तसल्ली देते हुए कहा। "मै यहा बहुत बरसो से काम कर रही हू। शुरू मे तो सभी ग्वालिने तुम्हारी तरह ही गाय के कारण परेशान

रहती है। मगर बाद मे गाय वातावरण की अभ्यस्त हो जाती है। गाय तो गाय, लोग भी अभ्यस्त हो जाते है। अजीब है भगवान् की माया! ”

कोनेवाले कमरे मे ग्वालिनो के साथ गठे बदन की एक चुपचाप औरत ठहराई गई। वह वोल्गा पार के किसी सामूहिक फार्म से एक ऊट लेकर प्रदर्शनी मे आयी थी। मौसी पोल्या विशेष रूप से ऊट को देखने गयी। ऊट खडा था अपने साप की भाति छोटे-से सिर को बडे गर्व से ऊपर को उठाये हुए और थूक रहा था। मौसी पोल्या ने उसके इर्द-गिर्द कई चक्कर लगाये, उसे हर पहलू से देखा, मगर यह न समझ पायी कि कुदरत ने यह नमूना किसलिए गढा है! पर चुपचाप रहनेवाली यह नारी मानो अपने ऊट की पूजा करती थी। हर रात को वह अधेरे मे प्रदर्शनी का सारा क्षेत्र पार करके यह देखने जाती कि उसका ऊट उदास तो नही है।

इस समय वह भी मेज पर बैठी हुई चाय पी रही थी, मगर बातचीत मे हिस्सा न ले रही थी। परफेनोव्ना अपने दिल की भडास निकाल रही थी और वह औरत केवल अपना सिर हिलाये जाती थी। वैसे यह साफ जाहिर था कि वह भी अपने ऊट के लिए परेशान थी।

मौसी पोल्या के लिए ये सभी बाते रोजमर्रा की और जानी-पहचानी थी। मगर उस वसत मे एक असाधारण बात हो गयी।

वसत के शुरू मे सदा की भाति दूसरी मजिल पर ग्वालिने ठहरी हुई थी। गर्मी के मध्य मे यह आदेश मिला कि सभी कमरे खाली कर दिये जाये। वहा रहनेवालो को किसी होस्टल मे भेज दिया गया और डायरेक्टर ने अपने सभी कर्मचारियो को इकट्ठा करके यह घोषणा की कि होटल मे युवाजन के विश्व-समारोह के प्रतिनिधि ठहराये जायेगे।

मौसी पोल्या पढी-लिखी नारी थी, हर दिन रेडियो सुनती थी और इसलिए इस समारोह के बारे मे इतना कुछ जानती थी कि उन्हे डायरेक्टर की बात सुनकर कोई आश्चर्य न हुआ। किन्तु जब उन्हे यह मालूम हुआ कि समारोह मे आनेवाले प्रतिनिधि उसी होटल मे, यहा तक कि दूसरी मजिल पर भी ठहरेगे जहा वे ड्यूटी पर रहती थी, तो न जाने क्यो उन्हे परेशानी हुई और टागे जवाब देती सी अनुभव हुईं।

सभा के दौरान मौसी पोल्या ने यह कोशिश की कि उनके मन के भाव चेहरे पर न झलकने पाये। वे सदा की भाति धीर-गभीर और रोबीली सूरत बनाये बैठी रही। वे अपने काले बालो के ऊपर, जिनमे सफेदी की कही झलक तक नही थी, कलफ लगा हुआ रूमाल बाधे थी। जब डायरेक्टर ने अपनी मरी-सी आवाज मे कहा "साथियो, हमे सफाई का खास ख्याल रखना होगा " तो मौसी पोल्या हिली-डुली और उन्होने सारे हॉल को सुना कर कहा

"आप बच्चो से बाते नही कर रहे है, इवान नीफोन्तोविच!"

इस बात के बावजूद मौसी पोल्या असाधारण रूप से उत्तेजित घर लौटी। उनका मन हुआ कि बेटी से दिल की बात कहकर जरा जी हल्का करे।

बेटी अपने पति के साथ सिनेमा जाने के लिए कपडे पहनकर तैयार थी। वह हल्के नीले रग की शमीज पहने हुए दर्पन के सामने बैठी थी और अपने बालो को सवार रही थी। उसका बेटा ग्नातिक पास ही खेल रहा था। बेटी ने मानो खुद से बाते करते हुए कहा

"है न दिलचस्प बात कि वेनिजुएला तक से प्रतिनिधि आयेगे?"

मौसी पोल्या नही जानती थी कि वेनिजुएला किस बला का नाम है। मगर वे इतना समझ गयी कि बेटी को उनके कामो से कोई दिलचस्पी नही है और वह मन ही मन उससे रूठ गयी। मरदाने जूतो मे अपने पैरो को जोर से पटकती हुई वे रसोई घर मे खाना बनाने के लिए चली गयी।

वक्त गुजरता गया। मौसी पोल्या हर दिन इस इन्तजार मे रहती थी कि दूर के मेहमान कब आते है, मगर होटल खाली ही रहा। कमरो को जहाज की तरह खूब रगड-रगडकर साफ किया गया। चौराहे के निकट छज्जेदार टोपी वाला लकडी का एक अजीब-सा आदमी खडा कर दिया गया था।

उसका एक हाथ सामने की ओर बढा हुआ था और हथेली के नीचे «Hotel» लिखा हुआ था। मौसी पोल्या को यह अच्छा लगा, क्योकि यह शब्द समझ मे नही आता था और महत्त्वपूर्ण भी लगता था। पास ही घास के मैदान मे शामियाना खडा करके खाने की मेजे लगा दी गयी थी। इस जगह पर बडे बावर्ची की व्यवस्था थी। वह पक्के इरादे और पहलवानो जैसे मजबूत हाथो वाला आदमी था। फिलहाल खाने की मेजे भी खाली पडी रहती थी और वहा भी सन्नाटा देखकर मौसी पोल्या के दिल को तसल्ली होती थी। न जाने क्यो उनके मन मे हर समय यह शका रहती थी—हो सकता है कि उनके होटल मे मेहमान आये ही नही।

आखिर यह खबर फैली कि प्रदर्शनी के निकट वाले अन्य सभी होटलो मे मेहमान आने शुरू हो गये है।

आनेवालो को किसी ने भी देखा नही था, मगर खबर फैल गयी थी और वह उडती-उडती दूसरी मजिल तक आ पहुची थी जहा मौसी पोल्या ड्यूटी पर रहती थी।

मौसी पोल्या की ड्यूटी छ बजे खत्म होती थी। ड्यूटी बदलनेवाली नारी की बडी मुश्किल से प्रतीक्षा करती हुई वे अपनी व्यवस्था की जाच करने के लिए बाहर निकली। वे सभी चीजो और सफाई का काम करनेवाली युवतियो को बहुत ही कडी नजर से जाचती चली गयी।

सडक पर अक्सर खामोशी रहती थी। आज वहा रेलवे-स्टेशन की सी रेल-पेल थी। मौसी पोल्या यह भीड देखकर रुक गयी।

सडक के किनारे-किनारे एक जैसी पीली बसे एक कतार मे खडी थी। इन बसो मे से प्रतिनिधि निकल रहे थे। पटरी पर जिज्ञासु लोगो और शोर करते हुए लडको का जमघट था, इतना ही नही, दूर की फूलदार बाडवाली गलियो मे से बूढी औरते भी यह देखने के लिए आ गयी थी कि यहा क्या तमाशा हो रहा था।

मौसी पोल्या किसी की ओर भी ध्यान न देते और होठ भीचे हुए बस के पास से आगे बढ गयी।

बस मे से हसते और शोर मचाते हुए हल्के-फुल्के काले काले नौजवान अपना सामान नीचे उतार रहे थे। वे औरतो के जम्परो से मिलते-जुलते बुशर्ट पहने हुए थे। बहुत ही दुबली-पतली लडकिया तग घेरे का पतलून पहने थी और उनके घुघराले बाल ऐसे छोटे-छोटे थे जैसे कि टाइफाइड के बाद रह जाते है। वे सभी शोर मचा रहे थे, हस रहे थे और किसी बात पर बहस कर रहे थे। अत मे उन्होने बस से अपने सुटकेस और थैले निकालकर कधो पर लाद लिये और उत्सुकता से इधर-उधर देखते हुए होटल की ओर बढ चले।

मौसी पोल्या अगली बस के पास आयी और ठिठक गयी। इस बस मे से हृष्ट-पुष्ट नौजवान घुटनो तक के चौखाने

स्कर्ट पहने हुए इत्मीनान से बाहर आ रहे थे। उनकी पिडलियो पर हल्के लाल रग के बाल दिखायी दे रहे थे। लाल-लाल गालो और नीली आखो वाली लडकिया बडे निश्चिन्त भाव से इन नौजवानो के साथ साथ चल रही थी और बीच बीच मे किसी को "हल्लो" कह कर ऐसे पुकारती थी मानो टेलीफोन पर बातचीत कर रही हो। एक और बस आकर रुकी। इस बस के सभी मुसाफिर लाल रग की एक जैसी गोल टोपिया पहने हुए थे जिनके ऊपर फुदने लटक रहे थे। उनकी टोपिया बिल्कुल उस बौने की टोपी के समान थी जिसकी कहानी मौसी पोल्या ने अपने नाती ग्नातिक की किताब मे पढी थी। स्कर्ट वाले एक नौजवान ने नफीरी जैसी कोई चीज मुह के साथ लगायी और वह नकियाती-सी आवाज मे गूजने लगी। इस बाजे की आवाज बिल्कुल वैसी ही थी जैसी कि मेले मे अधे मगते के बाजे की होती है। किसी ने ढोल को ढमढमा दिया और किसी ने तुरही पर तान छेड दी पासवाली बस से एक बहुत ही मोटा नौजवान चमडे का आधा पतलून पहने हुए फस फसकर बाहर निकला। जाघो के नीचे उसकी टागे नगी थी। वह पख वाली टोपी पहने था। लडको की भीड मे से लाल बालो वाला एक लडका हाथ मे एक बिल्ला लिए हुए आगे बढा। उस बिल्ले पर मास्को विश्वविद्यालय का चित्र बना हुआ था।

"ओह !" बिल्ले को झपटते हुए उस मोटे व्यक्ति ने खुश होकर कहा। "ओह !" उसने फिर से यही आवाज दोहरायी और अपनी बुशर्ट की जेब मे से एक बिल्ला निकालकर लडके की ओर बढा दिया।

लडका बडी शान से इस बिल्ले को हाथ मे लिये हुए अपनी जगह लौट आया।

शोर-शराबे, रेल-पेल, अनजानी आवाजे और वहा जो कुछ भी हो रहा था, उससे मौसी पोल्या की कमर मे दर्द होने लगा। अचानक उनके दिमाग मे यह विचार कौध गया कि वह यहा खडी है और हो सकता है कि उनके होटल मे भी दूर के मेहमान आ गये हो। मौसी पोल्या उसी दम अपनी एडिया बजाती हुई इतनी तेजी से लौटी कि जिसकी उन्हे खुद भी आशा नही थी।

उनके होटल के सामने पहली बस अगले दिन ही आकर रुकी।

मौसी पोल्या ने खिडकी के नीचे बस के इजन की घर्र-घर्र सुनी तो बडी रोबीली सूरत बनाये हुए ड्यूटी के कमरे से बाहर निकली। नीचे, प्रवेश-कक्ष मे आवाजें सुनायी दे रही थी। मौसी पोल्या ने रेलिग पर से झुक कर देखा और उनका तो जैसे दम निकल गया।

सफेद लबादा-सा पहने हुए एक नारी मौसी पोल्या की ओर बढी आ रही थी। उसके छोटे-छोटे घुघराले बाल मुडी

हुई भेड के समान थे और त्वचा बिल्कुल आबनूसी थी।

वह सावली या सवलायी हुई नही थी। वह काली थी, एकदम काली, बिल्कुल तारकोल जैसी। वह अपने नगे, काले-काले पैरो मे स्लीपर पहने हुए थी। यह नारी सीढिया चढती हुई मौसी पोल्या की ओर चमकती हुई आखो से देखकर मुस्करा दी।

मौसी पोल्या ने पाव पटके और कुछ धीरे-धीरे बडबडाकर पीछे हट गयी। वे बिल्कुल हक्की-बक्की सी सीढियो की ओर देख रही थी जहा से अब लोगो की भीड चली आ रही थी। नारिया फूले-फूले चोगे या स्कर्ट पहने थी जिन्हे देखकर ऐसे लगता था मानो उन्होने अपने शरीर के गिर्द रग-बिरगा कपडा लपेट रखा हो। वे अपने गले मे बहुत ही विचित्र आभूषण पहने थी, कानो मे फूल ठोसे थी और हाथो मे सामान के अलावा ढोल-ढमक्के, पी-पी करनेवाले बाजे और किसी लकडी के टुकडे लिये थी। मर्द भी अजीब तरह की पोशाक पहने थे। एक हट्टा-कट्टा नौजवान जिसके कधे इस तरह चमक रहे थे मानो उन पर तेल मला गया हो, मौसी पोल्या को सिर्फ एक सफेद चादर मे लिपटा हुआ लगा। यह सच है कि इन मे से कुछ मर्द और औरते साधारण किस्म के शहरी सूट भी पहने हुए थे। कुछ नारिया तो बहुत ही फैशनदार और दस्तानो से मिलते-जुलते तग फ्राक पहने थी। किन्तु साधारण पोशाक मे उनके काले-काले चेहरे, बाल बनाने का ढग,

फुर्तीली और कोमल चेष्टाए, भारी और तनी हुई आवाजे, ये सभी चीजे और भी अधिक आश्चर्यजनक लगती थी।

मौसी पोल्या वही खडी रही, बुत बनी हुई। उसी बीच नये मेहमान दूसरी मजिल पर पहुच गये। वे बरामदे भर मे फैल गये, जोरो से ठहाके लगाने, बातचीत करने, अपने बाजे बजाने और नाचने भी लगे। उनके आगे-आगे होटल के डायरेक्टर इवान नीफोन्तोविच जा रहे थे, पसीने से ऐसे तर-बतर मानो अभी-अभी नहाकर निकले हो। मगर वे जाहिर ऐसे कर रहे थे मानो कोई खास बात नही हुई थी।

बरामदा जब तक खाली नही हो गया, मौसी पोल्या इसी भाति खडी रही।

युवा नौकरानिया कमरो मे दौड-धूप कर रही थी और हडबडी मे सब कुछ गडबड किये दे रही थी। जब नौकरानी गाप्किना के हाथ से गरम पानी की सुराही गिर कर टूटी, तभी मौसी पोल्या को होश आया। उन्होने शीशे इकट्ठे करती हुई गाप्किना को चीरती हुई नजर से देखा और फिर अपने ड्यूटी के कमरे की ओर चल दी।

रास्ते मे मौसी पोल्या ने देखा कि एक कमरा खाली रह गया है।

यह कोनेवाला वही रोशन कमरा था जहा पिछले साल ऊटवाली आकर रही थी। मौसी पोल्या लैडिग तक न जा

पाई थी कि उन्होने घूम कर देखा ग्रौर बरामदे मे दो ग्रौर मेहमान नजर ग्राये।

ये मेहमान थे एक पुरुष ग्रौर एक नारी, एकदम जवान, छरहरे ग्रौर किशोरो जैसे। वे दोनो ग्रोर से एक बडी-सी टोकरी को थामे हुए थे जिसे देखकर उस टोकरी का ध्यान ग्राता था जिसमे लाड्री के कपडे लाये जाते है। मर्द ग्रपनी बगल मे चीजो से भरी हुई रग-बिरगी पोटली दबाये था ग्रौर वैसी ही एक पोटली उसके कधे पर लटकी हुई थी। जब वह चलता था तो उसकी फूली हुई सफेद पोशाक के नीचे से उसके कधो की उभरी हुई हड्डिया हिलती-डुलती ग्राती थी।

नये मेहमान बरामदे के बीचोबीच ग्राकर रुक गये ग्रौर हतप्रभ से इधर-उधर देखने लगे। मौसी पोल्या ऐसे महसूस करती हुई मानो जगी चौकी पर खडी हो, तेजी से उनकी ग्रोर बढी।

मर्द ने शिष्टतापूर्वक मुस्कराकर कोनेवाले कमरे की चाबी मौसी पोल्या को दिखायी। नारी ने पक्षियो की कलगी जैसी ऊपर को उठी हुई ग्रपनी चोटी को एक ग्रोर को झटका दिया ग्रौर वह भी मौसी पोल्या की ग्रोर देखकर मुसकरा दी। यह नारी ग्रपने गले मे ऐसे मनको की माला पहने हुए थी जो मकई के सूखे हुए दानो के समान लगते थे। नारी ग्रपने पतले ग्रौर मानो ग्राबनूसी लकडी से काट कर बनाये गये हाथ से टोकरी को कसकर पकडे हुए थी।

मौसी पोल्या ने, टोकरी मे झाक कर देखा और "ओह्" कहकर रह गयी।

टोकरी मे दूध-पीता बच्चा सो रहा था।

बच्चा तकियो के बीच लेटा हुआ था और कोयले की तरह काला था। वह सो रहा था और नीद मे उसकी सास की सरसराहट सुनायी दे रही थी। बच्चे की टाग बाहर को निकली हुई थी और उसका तलवा काले गुलाब की पत्ती की भाति कोमल था।

"हाय मा!" टोकरी पर अपनी आखे गडाये हुए मौसी पोल्या बस इतना ही कह पायी।

नारी शर्माकर मुसकरा दी और उसने कोई लम्बी और समझ मे न आनेवाली बात कही। मौसी पोल्या हैरान होती हुई कमरा खोलने के लिए चल दी और मेहमान उनके पीछे पीछे हो लिये।

* * *

मौसी पोल्या जब घर लौटी तो उनके मन मे ढेरो बाते उमड-घुमड रही थी। उनका मन हो रहा था कि वे अपनी बेटी और दामाद को बडे इत्मीनान से और पूरे विस्तार के साथ वह सभी कह सुनाये जो कुछ उन्होने आज देखा था। मौसी पोल्या देखना चाहती थी कि वे दोनो कैसे हैरानी से चीखेगे और हाथ नचायेगे। तब वे उन्हे कुछ और सुनायेगी।

बहुत सम्भव है कि उनकी बेटी और दामाद ने भी प्रतिनिधियो को देखा हो, मगर इस तरह से नही देखा होगा जैसे उन्होने देखा था। वे उनके निकट से भागते हुए पाखाने और गुसलखाने मे नही गये होगे, वे उनके सामने बरामदे मे तो नही नाचे होगे और उन्होने पी-पी करनेवाले बाजे और लकडी के कगन भी नही बजाये होगे। ज़ाहिर है कि मौसी पोल्या के अतिरिक्त उन्हे इस रूप मे और किसी ने भी नही देखा होगा। और फिर इतने मेहमानो मे सिर्फ यह एक ऐसा जोडा है जिसने दूध-पीते बच्चे को टोकरी मे डाल कर दुनिया भर का सफर कराने का खतरा मोल लिया है। यह भी तो सिर्फ मोसी पोल्या ने ही देखा था।

घर पर कोई नही था।

बेटी और दामाद कही बाहर गये हुए थे और ग्नातिक को भी अपने साथ ले गये थे। मेज के बीचोबीच बैठी हुई बिल्ली फूलदान मे लगे गुलदस्ते से घास खीच-खीच कर खा रही थी।

"चल भाग, कम्बख्त सापिनी!" मौसी पोल्या बिल्ली पर बरस पडी।

मौसी पोल्या का मन इतना अधिक उदास था कि वे मुश्किल से ही अपने आसू रोक पायी। उन्होने तकिये फेकते हुए बिस्तर लगाया और शाम का खाना खाये बिना ही सो गयी।

अगले दिन मौसी पोल्या वक्त से पहले ही काम पर पहुच गयी, मगर मेहमान उनसे भी पहले उठ चुके थे।

दरवाजे लगातार भडभडा रहे थे और कमरो मे से काले-काले मेहमान इस तरह निकल रहे थे मानो किसी ने डिब्बे का मुह खोल दिया हो। कुछ मेहमान अपने लहराते हुए चोगो से मौसी पोल्या को हवा देते हुए उनके पास से निकल गये और कुछ भागते हुए सीढिया उतर गये। जाहिर था कि उन्हे नाश्ता करने की जल्दी थी। गुसलखाने से ठहाके और किलकारिया सुनायी दे रही थी। होटल के दरवाजे के पास बसो के इजन घरघरा रहे थे। यह शान्त होटल अब ऐसे बदल गया था कि पहचान से बाहर!

कोनेवाले कमरे का दरवाजा खुला था। मौसी पोल्या ने उसके अन्दर झाक कर देखा।

मर्द कही बाहर गया हुआ था। नारी हाथो पर बच्चे को लिये हुए खिडकी के पास खडी थी। बच्चा नग-धडग था। उसकी त्वचा चमक रही थी, उसके काले-काले हाथो पर बल पड रहे थे और वह कुल मिलाकर रबड का गुड्डा-सा लगता था। मा ने उसे अपने साथ चिपकाया, उसके नगे पेट को मुह से गुदगुदाया और हवा मे उछाला। मा और बेटा जोरो से हस रहे थे। निकट से यह नारी और भी अधिक कम उम्र की नजर आ रही थी। वह बिल्कुल लडकी-सी लगती थी। उसके बाल सख्त और घुघराले थे और फूले

फूले होठ इस तरह आगे की ओर फैले हुए थे कि देखकर हसी आये। उसने अपनी काली-काली और पतली-पतली दो उगलिया हिलायी और उनसे बच्चे को यह दिखाया कि "बकरी" आ रही है। उसने यह बिल्कुल उसी तरह से किया जैसे कि मौसी पोल्या तब करती थी जब ग्नातिक बहुत छोटा-सा था।

"आप लोग ऐसे छोटे-से बच्चे को इतनी दूर ले कैसे आये?" मौसी पोल्या ने पूछा और अनजाने ही वही बैठ गयी।

मौसी पोल्या ने भी बच्चे को उगलियो से "बकरी" दिखायी और वह मुह खोलकर हस दिया।

"बडे अजीब लोग है आप, आपने यह हिम्मत कैसे की?" मौसी पोल्या ने फिर से यह बात दोहरायी।

नारी ने हसी से लोट-पोट होते हुए बच्चे को हवा मे उछाला।

"कमाल ही कर दिया आपने!" मौसी पोल्या ने योही अनिश्चित ढग से कहा।

कुछ देर खामोशी रही।

"आप लोग रहनेवाले कहा के है?" मौसी पोल्या ने पूछा। मौसी पोल्या की बात समझने की कोशिश करते हुए वह नारी चुपचाप उन्हे देखती रही। "कहा से आये है आप लोग?" मौसी पोल्या ने जोर देकर पूछा। "कहा से आये

हैं? समझी? हे भगवान, रूसी भाषा भी नही जानती। मैं पूछती हू कि ग्राप लोग किस जगह रहते हैं? इसे समझाऊ भी तो कैसे?"

मौसी पोल्या ने कमरे मे चारो ग्रोर नजर दोड़ायी मानो दीवारे उसकी मदद कर सकती हो। नारी बच्चे को ग्रपने साथ चिपका कर मौसी पोल्या की ग्रोर देखती रही।

तब मौसी पोल्या ने दो उगलिया बढायी ग्रोर उन्हे तेजी से मेज पर दौडाने लगी। भागते हुए ग्रादमी को स्पष्ट करने के लिए मौसी पोल्या इसी तरह उगलिया दोडाकर ग्नातिक को भी दिखाया करती थी। इसके बाद उन्होने इजन की तरह फक-फक की ग्रौर हवाई जहाज के पखो की तरह हाथ फैलाकर उन्हे हिलाया। वे यह सब कुछ करके हाफ गयी ग्रौर हाथ झटक कर बैठ गयी।

नारी बहुत ध्यान से मौसी पोल्या की ग्रोर देख रही थी। सहसा उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी।

"मोजम्बिक!" उसने कोमल कठ्य ग्रावाज मे कहा, "मो-ज-म्बिक!"

"मोजम्बिक!" मौसी पोल्या ने दोहराया ग्रोर उस नारी ने सिर हिलाकर हामी भरी। "कहा है यह देश?"

मौसी पोल्या कुछ मिनट तक ग्रौर कमरे मे बैठी रही, मगर उनकी हर कोशिश के बावजूद बातचीत का सिलसिला

और आगे न बढ सका। तब उन्होने मेज पर से खाली चिलमची उठायी और डायरेक्टर के कमरे मे जा पहुची।

डायरेक्टर इवान नीफोन्तोविच पढे-लिखे आदमी थे और उनके कमरे मे यूरोप का बडा नक्शा लटका हुआ था। मौसी पोल्या नक्शे मे मोजम्बिक ढूढने लगी, किन्तु वह नही मिला, तो नही मिला। मौसी पोल्या चश्मा लगाये नक्शे के पास खडी हुई अपने मोटे-मोटे काले नाखूनो वाली उगलिया अड्रिएटिक सागर पर घूमा रही थी। उसी समय डायरेक्टर कमरे मे आ गये।

"आप यहा क्या कर रही है?" डायरेक्टर ने हेरान होते हुए पूछा। इवान नीफोन्तोविच ने समारोह की तैयारी के सिलसिले मे इतनी अधिक दौड-धूप की थी कि उनके गाल अन्दर को धस गये थे। ऐसा लगता था मानो वे बीमारी के बिस्तर से उठकर आये हो। "आप क्या ढूढ रही है, मौसी पोल्या?"

"यह मोजम्बिक कहा हुआ?" मौसी पोल्या ने हताश होते हुए कहा। "नक्शे मे तो कही नजर नही आ रहा!"

"काश! मुझे भी आप जैसी बेफिक्री होती, मौसी पोल्या!" इवान नीफोन्तोविच ने कहा और गहरी सास ली। "मोजम्बिक अफ्रीका मे है, अफ्रीका मे "

मौसी पोल्या अपनी ड्यूटी पर लौट आयी। उन्हे कोने

मौसी पोल्या ने एक बार फिर खिडकी मे से झाक कर देखा और तब एडिया बजाती हुई चाय पीने के लिए गर्म पानी लेने चल दी। उनके चेहरे पर खीझ झलक रही थी।

कोनेवाले कमरे के मेहमान सध्या को लौटे। सो भी उस वक्त, जब मौसी पोल्या अपनी जगह पर नही थी।

बरामदा लाघते हुए मौसी पोल्या ने खुले हुए दरवाजे मे से कुछ अजीब और तनी हुई आवाजे सुनी। अपने पर काबू न पाते हुए मौसी पोल्या ने कमरे मे झाक ही लिया।

नारी बैठी थी, टोकरी पर झुकी हुई और गा रही थी।

सच तो यह है कि उसे गाना नही कहा जा सकता था। कारण कि गाने मे कुछ शब्द होते है जो इसमे नही थे। फिर भी मौसी पोल्या ने अनुभव किया कि वह बहुत ही अच्छा और कोई दर्द भरा गाना है। नारी गा रही थी जैसे हवा गाती है, जैसे पत्ती गाती है, जैसे पक्षी गाता है सुर के साथ सुर मिलते जाते थे, वैसे ही जैसे सास के साथ सास। मौसी पोल्या दरवाजे से सटकर खडी थी और सुन रही थी।

मौसी पोल्या देर तक खडी रही, जब तक कि टागे नही थक गयी। मगर फिर भी वहा से हट न सकी। इस गीत

को सुनते हुए उनकी आखो के सामने कुछ धुधली-सी तस्वीरे उभरी। वे तस्वीरे वैसी ही थी जैसी कि वे बचपन मे उस समय देखा करती थी जब ठेले मे लेटी होती थी और गाडीवान गाना गाया करते थे। उस समय उन्हे दूर स्तेपी मे कोई रोशनिया-सी नजर आती और दूर के अनजाने घर और अपरिचित लोग दिखाये देते। तब मौसी पोल्या को लगता मानो वे उन्हे अपनी ओर बुला रहे है इस समय दरवाजे के पास खडी हुई मौसी पोल्या को खरखरी और कठ्य आवाज मे यह गाना सुनकर भी बहुत दूर की रोशनिया, जगल और रौदी हुई पगडडिया, अजनबी नदिया और अजनबी बच्चो के चेहरे दिखाये दे रहे थे खुले हुए दरवाजे मे से सुनायी देनेवाली धुन मे से एक अपरिचित जीवन का चित्र उनकी आखो के सामने उभर रहा था।

शायद यही मोजम्बिक है?

मै क्या जानू! हो सकता है, सचमुच यही मोजम्बिक हो?

मौसी पोल्या तब तक खडी रही जब तक उस नारी ने गाना बद नही कर दिया और कमरे मे से सोते हुए लोगो की धीमी धीमी सासे सुनायी नही देने लगी। तब वे दबे पाव वहा से चली गयी।

अगले दिन मौसी पोल्या जब दूसरी मजिल पर आयी तो उन्होने कोनेवाले कमरे की नारी को बरामदे मे खडी पाया। नारी पहले दिन वाली ही पोशाक पहने थी। मगर आज उसने

सिर पर फीता बाध रखा था जो ऊपर को निकला हुआ था। वह अपने हाथ मे रग-बिरगा थैला लिये थी और गले मे एक माला पहने थी जिसमे आलूबुखारे जैसे बडे-बडे मनके थे। जाहिर था कि वह सज-धज कर बाहर जाने को तैयार खडी थी।

मौसी पोल्या को देखते ही वह नारी हाथ हिलाने और इशारो से यह समझाने लगी कि वे उनके कमरे मे आये। नारी ने बकाइन जैसे गहरे रग की हथेली को सामने करते हुए ऊची आवाज मे जल्दी-जल्दी कुछ कहा और फिर बच्चे की ओर इशारा किया, फिर कुछ कहा और फिर बरामदे मे लगी हुई दीवाल-घडी की ओर सकेत किया। बच्चा मुट्ठिया बद किये हुए सो रहा था। पति टोकरी के पास खडा था। वह भी बीच-बीच मे कुछ कहता और तीन उगलिया दिखाता था। आखिर मौसी पोल्या समझ गयी कि वे लोग तीन घण्टे के लिए बाहर जा रहे है और यह अनुरोध कर रहे है कि इस बीच मै उनके बच्चे की देखभाल करू।

"मा का काम ही ऐसा है अगर कोई मदद न करे तो बच्चे का पालन-पोषण कैसे हो," मौसी पोल्या ने गम्भीरता से कहा। "कर लूगी देखभाल, इसमे बात ही क्या है!"

मौसी पोल्या ने नारी का कधा थपथपाकर उसे तसल्ली दी। नारी ने खूब मुसकराकर धन्यवाद दिया और फिर अपना

स्कर्ट सभलती हुई जल्दी से नीचे की ओर चल दी ताकि बस पकड ले। बिल्लो और लाल बालो वाले लडके ने इस नारी को रोकने की कोशिश की, मगर मौसी पोल्या ने उसे ऐसा करने से मना करने के लिये बिगड कर पूछा—

"क्या बात है?"

"हॉऊ डू यू डू?" लडके ने गुस्ताखी से कहा, मगर साथ ही इस नारी को जाने भी दिया। "मौसी, मै काले अफ्रीका का बिल्ला लेना चाहता हू!"

"यह भला कहा का तरीका है! लोगो को आराम नही करने देता। भाग जा यहा से! सुनता है किसे कह रही हू"

लडका चला गया और मौसी पोल्या फिर सफाई के काम मे लग गयी। सारे कमरे खाली पडे थे मानो सभी मेहमान हवा मे उड गये हो। कोनेवाले कमरे मे फर्श पर सूरज की एक किरण छन रही थी। बच्चा मजे मे सो रहा था।

मौसी पोल्या जब तब आती और कमरे मे झाक कर चली जाती। मगर बच्चा अफ्रीका की गहरी नीद सो रहा था। वह उसी तरह दो घण्टे तक सोता रहा। तीसरे घण्टे के अत मे जब मौसी पोल्या नीचे जाने को तैयार हो रही थी तो कोनेवाले कमरे से ऊची आवाज सुनायी दी जो अपनी ओर पुकार रही थी।

मौसी पोल्या जैसे ही टोकरी पर झुकी, बच्चा वैसे ही चुप हो गया।

बच्चा चित लेटा हुआ था, उसके ऊपर कोई कपडा नहीं था और वह काले गुलाब जैसे अपने तलवो को इधर-उधर झटकता हुआ बटन जैसी गोल-गोल आखो से मौसी पोल्या को देख रहा था।

"अभी मा आ जायेगी," मौसी पोल्या ने कहा, "जरा सब्र से काम लो।"

मौसी पोल्या बरामदे मे आ गयी और उसी क्षण उन्हे कमरे से रोने की ऊची आवाज सुनायी दी। वे फौरन लौटी और उन्होने टोकरी मे बिछी हुई चादर को हाथ से छूकर देखा।

"ओह!" मौसी पोल्या ने कहा, "तो यह मामला है!"

मौसी पोल्या ने नजर घुमा कर सूखे पोतडे की तलाश की। मगर वहा पोतडा नही था। तब मौसी पोल्या ने दृढतापूर्वक साफ तौलिया खूटी से उतारा और बच्चे के नीचे बिछा दिया।

बच्चा चुप हो गया। लेकिन मौसी पोल्या ने जैसे ही कमरे से बाहर कदम रखा कि वह फिर पूरे जोर से चिल्ला उठा। बात साफ थी तीन घण्टे गुजर चुके थे और बच्चे को भूख लगी थी।

"अरे वाह रे, क्या जोरदार आवाज पायी है," मौसी पोल्या ने कहा और बच्चे को हाथो मे उठा लिया। बच्चे ने अपनी काली-काली उगलियो से मौसी पोल्या के गले को कस कर पकड लिया। उससे दूध की और गर्म सी गध आ रही थी जैसी अक्सर बच्चो से तब आती है जब वे सो कर उठते है। "वह देख, वह रही बिल्ली " मौसी पोल्या ने उसे खिडकी के पास ले जा कर कहा। "वह देख, कुत्ता भाग रहा है "

मौसी पोल्या बच्चे को ठीक तरह से उठाये हुए थी और अपनी चौडी-चौडी हथेलियो को बच्चे की काली-काली जाघो के नीचे टिकाये हुए थी। बच्चे ने मोटे-मोटे होठ खोले और जोर से रोना शुरू कर दिया।

"अभी तक नही आयी तुम्हारी मा!" मौसी पोल्या ने कहा। "अब बता क्या करे, तुम्हारी मा जहा गयी, बस वही की होकर रह गयी "

बच्चा गला फाड-फाडकर लगातार रो रहा था। मौसी पोल्या उसे खिडकी के पास ले गयी, शीशे की डाट घुमाकर दिखायी और गठिये की मारी हुई अपनी टागो से किसी तरह नाचने की कोशिश भी की। मगर सभी कोशिशे नाकाम रही। बच्चे को भूख लगी थी, और बस!

सफाई करने वाली नौकरानिया कई बार कमरे मे आकर झाक गयी, फर्श पर पालिश करनेवाला चाचा फ्योदोर भी

ग्राया। सब ने ग्रपनी-ग्रपनी ग्रक्ल दौडायी ग्रौर तरह-तरह की सलाहे दी जिन्हे सुनकर मौसी पोल्या को हसी ग्राती रही। मौसी पोल्या खुद चार बच्चो की मा थी ग्रौर यह बात ग्रच्छी तरह से जानती थी कि जब बच्चे के खाने का वक्त हो जाता है तो उसकी क्या हालत होती है। लगभग चार घण्टे गुजर चुके थे ग्रौर मा-बाप ग्रभी तक नही लौटे थे। उन्हे तो मानो जमीन निगल गयी थी।

"जा री जरा भाग कर चाय ले ग्रा!" मौसी पोल्या ने सफाई करनेवाली नौकरानी गाप्किना को ग्रादेश देते हुए कहा जो बत्तख की तरह गर्दन उचकाये खडी थी ग्रौर रोते हुए बच्चे को देख रही थी। "जरा चीनी ज्यादा डालना। दीदे फाड-फाडकर क्या देख रही है? देखती नही बच्चा रो रहा है? खिडकी मे एक थैला रखा है जिसमे सेब पडे है। मैने ग्नातिक के लिए खरीदे थे। एक सेब कद्दूकश करके ले ग्राना। चुटकी बजाते मे ग्रा जाना!"

गाप्किना लचकती हुई चली गयी ग्रौर कुछ मिनट बाद हाफती हुई कमरे मे लौटी। मौसी पोल्या ने बहुत ही सावधानी से बच्चे के खुले हुए मुह मे चम्मच भरकर हल्की गरम चाय डाली। बच्चे ने बुरा-सा मुह बनाकर उसे बाहर निकाल दिया। मौसी पोल्या ने कद्दूकश किया हुग्रा सेब

खिलाने की कोशिश की। बच्चा मौसी पोल्या को घूरता हुआ घडी भर को चुप रहा और फिर गुस्से मे आकर जोर से पाव चलाता हुआ और भी अधिक ऊची आवाज मे रो पडा।

"जाने कैसा है वह मोजम्बिक।" मौसी पोल्या ने तग आकर कहा। "जाने वहा बच्चे क्या खाते है? चाय नही पीता, सेब नही खाता "

बच्चे की चीख-पुकार सुनकर उस समय ड्यूटी देनेवाली मैनेजर मारिया पेत्रोव्ना भी कमरे मे आ गयी। वह काफी देर तक चुपचाप खडी हुई मौसी पोल्या को देखती रही। मौसी पोल्या का चेहरा लाल था, उनका हाल बेहाल था और वे बिलखते हुए बच्चे को हाथो पर उठाये हुए कमरे मे इधर-उधर चक्कर लगा रही थी।

"अरे, थोडी देर रुक जाओ मेरे प्यारे " मौसी पोल्या ने आशा से घडी की ओर देखते हुए कहा।

बच्चा मौसी पोल्या की मोटी-मोटी छातियो को मुट्ठियो से मारता हुआ जोर-जोर से रो रहा था। रोते-रोते उसका गला बैठ गया था।

"सुनिए तो मौसी पोल्या," मारिया पेत्रोव्ना ने सोचते हुए कहा। "अगर तेर्योखिना से बात कर ली जाय तो कैसा रहे? क्या ख्याल है आपका?"

"हे, राम।" मौसी पोल्या बच्चे को हाथो पर उठाये

हुए जहा की तहा खडी रह गयी। "मुझे क्यो नही सूझी यह बात, सठिया गयी हू!"

मौसी पोल्या बच्चे को छाती से लगाये हुए प्रवेश-कक्ष के बगल वाली कोठरी मे पहुची। वहा कपडो की देखरेख करनेवाली तेर्योखिना मोटी पिडलियो वाली मजबूत टागे चौडी करके स्टूल पर बैठी थी और अपनी गोद की बच्ची को दूध पिला रही थी। बच्ची को दूध पिलाने के लिए खास तौर पर घर से लाया गया था। कपडो मे अच्छी तरह लिपटी हुई नन्ही-सी बच्ची गुडिया जैसी लग रही थी। वह अपनी मा के हाथो पर लेटी हुई बडे मजे से मा की उभरी हुई छाती से दूध पी रही थी।

"सुनो, तेर्योखिना " मौसी पोल्या ने लम्बी सास लेकर कहा। "देखो मामला यह है कि इसकी मा बाहर गयी है और बच्चे के दूध पीने का वक्त हो गया है। रो-रोकर बेचारे का गला भी बैठ गया है। देखो कैसा अच्छा बच्चा है, मगर क्या मजाल जो जरा बात मान ले!"

मौसी पोल्या के हाथो मे काला और जामुन की तरह चमकता हुआ बच्चा देखकर तेर्योखिना तो मानो बुत बनी रह गयी। वह अपनी झील की तरह साफ और चमकती हुई आखो से बच्चे को एकटक देखती रही। उसकी उठी हुई नाक पर पसीने की बूदें झलक उठी।

"तुम्हारा दूध तो चार के लिए काफी हो सकता है," कनखियो से उसके भरे हुए सीने को देखकर मौसी पोल्या ने कहा। "तुम्हारे लिए तो यह मामूली-सी बात है। क्यो क्या ख्याल है, तेर्योखिना ?"

"हु हु!" बच्चे पर नजर टिकाये हुए तेर्योखिना ने कहा।

दूध पीती हुई बच्ची हिली-डुली। तेर्योखिना ने उसकी ओर न देखते हुए उगलियो से जरा अपनी छाती दबायी।

"अच्छा तो लाओ," तेर्योखिना ने अचानक निर्णायक आवाज मे कहा और अपने स्वेटर के आखिरी दो बटन खोल लिये। "अगर ऐसी बात है, तो किया ही क्या जा सकता है! बच्चे को भूखा कैसे छोडा जा सकता है। मा कही खेल-तमाशे मे रह गयी है। हर दिन थोडे ही मास्को आना होता है "

उसने अपनी दूसरी छाती बाहर निकाली और बच्चे को मौसी पोल्या से ले लिया। बच्चा फौरन चुप हो गया और दोनो हाथो से छाती को पकडकर जल्दी-जल्दी और चसर-चसर दूध पीने लगा।

"देखो तो कैसे दूध पी रहा है!" तेर्योखिना ने हैरान होते हुए कहा। "समझदार लडका है!"

"हा, समझदार है " मौसी पोल्या ने कहा।

"कहा से लाये हैं इसे?" तेर्योखिना ने पूछा और बच्चे को अधिक सुविधाजनक ढग से लिटा लिया।

"मोजम्बिक से लायी हे इसे, अजीब औरत है!" मौसी पोल्या ने कहा और राहत की सास लेते हुए धम से दूसरी कुर्सी पर बैठ गयी। "मोजम्बिक से "

सेर्गेई अन्तोनोव (जन्म १६१५) – लोकप्रिय सोवियत कहानीकार। इमारती इजीनियर की शिक्षा पाई। इनका पहला कहानी-सग्रह १६४७ में प्रकाशित हुआ। इनकी बहुत-सी रचनाओ को फिल्माया जा चुका है। 'नया भोर', यह लेखक की प्रारम्भिक कहानियो में से एक है।
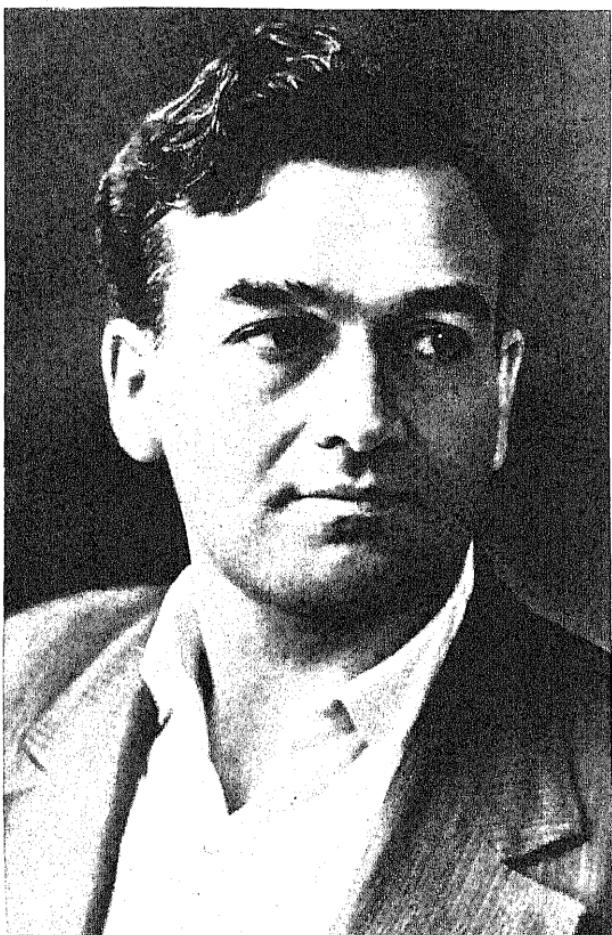
सेर्गेई अन्तोनोव

नया भोर

हम पुल के पास बैठे थे। अलेक्सेई एक लट्ठे पर और मैं अपने टियोडोलाइट यत्र के डिब्बे पर। मैं अपनी दिशा की तरफ जाने वाली कार पकडना चाहता था, इसलिए सडक पर से नजर नही हटा रहा था।

सुबह के लगभग पाच बजे थे। पौ फट रही थी। भोज-वृक्षो के वन के ऊपर आकाश मे हलकी लालिमा छायी हुई थी, लेकिन सूर्य उदय नही हुआ था।

पक्षी अभी सो रहे थे। कगार के सिरे पर छितरे बसे हुए गाव के अन्तिम घर मे चूल्हा जलाया जा चुका था और धुए के महीन रेशे आसमान मे शान्तिपूर्वक घुमड रहे थे।

समय-समय पर हमे बाध की ओर से, जहा बर्फ को डाइनामाइट से तोडा जा रहा था, हलके धडाके सुनायी दे रहे थे। बहुत साफ सुनायी दे रही थी रेलगाडी के पहियो की घडघडाहट। ऐसा लगता था मानो रेलवे-लाइन निकट ही, उस नीची पहाडी के पार हो। वास्तव मे रेलगाडी बहुत दूर जा रही थी और पहाडी के पार तो बिलकुल नही थी, इसके विपरीत वह उसकी विरोधी दिशा मे, वन के पास जा रही थी जहा उच्च वाल्टेज वाली ट्रासमिशन लाइन के खम्भे और ईट के कारखाने की नयी चिमनी दिखायी देती थी।

रेलगाडी की घडघडाहट जारी थी, छोटे-छोटे झरने ढलाव पर शोर करते हुए बह रहे थे और दूर पर धडाके गूज उठते थे। लेकिन इन सब आवाजो के बावजूद समूचे वातावरण मे भोर की शान्ति छायी हुई थी।

नदी, खेतो, गाव के छप्परो, जगल की वृक्षावली और अलेक्सेई तथा मुझ तक पर वह शान्ति छायी हुई थी और सूर्योदय को सूचित करनेवाली इस विचित्र, इस गम्भीर नीरवता को कोई भी शोर भग नही कर सकता था।

अलेक्सेई तेईस वर्षीय युवक था – भूरी आखे, सुनहरे केश, चौडे कधे और चेहरे का रग इतना निर्मल और उज्ज्वल,

मानो अभी अभी उसने अपना चेहरा ठडे पानी से धोया हो। इत्मीनान से अपनी गैती को लकडी की बेट मे फसाते हुए वह कभी-कभी एक नजर नदी की बर्फीली सतह पर डाल लेता था जिसका श्वेत सौदर्य अब काले धब्बो से नष्ट हो गया था। उसे इस पुल की देखभाल करने के लिए भेजा गया था। रात मे उसने रेलिग हटा दिया और शहतीर और खम्भो को कोई पाच सौ मीटर दूर, एक ऊचे स्थान पर ले जाकर रख दिया ताकि नदी मे बाढ आये तो वे बह न जाये। इस वर्ष नदी मे पानी बहुत ऊचा उठने की आशका थी। हो सकता था कि बाढ पुल को भी अपनी लपेट मे ले ले।

इस क्षण कोई काम न होने के कारण अलेक्सेई अपनी गैती के लिए बेट छीलने बैठ गया और वह काम को धीरे-धीरे करता हुआ लम्बा करता जा रहा था। छीलन के मुडे हुए टुकडे उसके पाजामे मे उलझे हुए थे। उसकी छज्जेदार टोपी एक कान पर तिरछी झुकी हुई थी और रूई की जाकेट के बटन खुले हुए थे।

"कोई कार ही आने का नाम नही लेती," नदी की ओर बेचैनी से निगाह डाल कर मैने कहा।

"हा, नही आती," अलेक्सेई ने उदासीनता से सहमति प्रगट की।

"अगर बर्फ बहने लग गयी तो मै इस नदी को पार भी नही कर पाऊगा। क्यो, है न?"

"हा, तुम नही पार कर पाओगे।"

"अगर कार आने के पहले ही बर्फ बह चली तो क्या होगा? मुझे यही बैठे रह जाना और दो दिन तक यही सडना पडेगा।"

"दो दिन, और हो सकता है तीन दिन।"

"लेकिन मै नही रुक सकता।"

"चिन्ता मत करो। दो कारे तो जरूर गुजरेगी। 'पहली पचवर्षीय योजना' नामक सामूहिक फार्म से सुपरफास्फेटस की खाद के लिए वसीली जरूर अपनी खडखडिया लेकर निकलेगा। वे लोग तो बस आखिरी दम पर ही काम करते है। और ट्रैक्टर स्टेशन का डायरेक्टर भी तेल के लिए कार भेजनेवाला होगा। बडा सख्त आदमी है वह डायरेक्टर। अगर उसे कोई चीज चाहिए तो फिर चाहे बर्फ बह रही हो या न बह रही हो, उसकी बला से, वह तेल लाने के लिए हुक्म दे देगा और बस।"

अलेक्सेई धीरे-धीरे बातचीत कर रहा था मानो ऐसा करने को उसका मन ही न हो। उसके हर शब्द के बाद मुझे अप्रैल के भोर की खामोशी की अनुभूति हो जाती थी। नमी और सर्दी थी। अभी सूरज उठा नही था और भूरे आसमान मे छोटा-सा चाद गलता जा रहा था।

यकायक अपना काम रोक कर अलेक्सेई ने कहा—

"वह आ रही है।"

"कौन?"

"मेरी पत्नी। इतने सवेरे यहा और कौन आयेगा?"

मैंने कान लगाये। रेलगाडी गुजर चुकी थी। डायनामाइट के धडाके बन्द हो चुके थे। सिर्फ ढलाव पर बह कर नदी से जा मिलनेवाले झरनो की कल-छल सुनायी दे रही थी।

"अरे, कैसे जल्दी जल्दी कदम बढाती आ रही है।" यह कह कर अलेक्सेई स्नेहपूर्वक हसा।

"तुम्हे भ्रम हो रहा है।"

"जरा ठहरो। अभी तुम्हे भी यही भ्रम होने लगेगा। यह तो तय है कि वह दूस्या ही है।"

और सचमुच पहाडी के पीछे से एक लडकी आती दिखाई दी जो कमर पर भेड की सफेद खाल का चुस्त कोट और फेल्टबूट पहने हुए थी और बूटो के ऊपर रबर के लाल जूते चढाए हुए थी। वह पोटली मे कुछ बाधे लिये चली आ रही थी। मैंने देखा कि अलेक्सेई यह देखकर आनन्दित हो उठा था कि वह इतनी सुबह उठकर उसके लिए नाश्ता ला रही थी, लेकिन वह त्योरिया चढाकर इस भाव को मुझ से छिपाने का प्रयत्न कर रहा था।

"मैंने सोचा था कि कोई नया चेहरा दिखाई देगा, लेकिन यह तो तुम निकली," उसने अपनी पत्नी से कहा।

दूस्या ने इस मज़ाक का जरा भी बुरा नही माना।

"तुम्हे ठड लग जायेगी। कम से कम गले का बटन तो लगा लो।"

"नही लगेगी ठड मुझे। बर्फ पिघलने के वक्त हवा बढिया होती है। कुछ मजबूत ही बनायेगी और बस," अलेक्सेई ने कहा, लेकिन साथ ही गले का बटन भी लगा लिया। "तुम क्या लायी हो?"

"वही, जो तुमने कहा था। जरा उधर को हटो तो।"

"इसकी क्या जरूरत है। तुम्हारी टागे अभी जवान हैं। तुम तो खडी भी रह सकती हो," अलेक्सेई ने कहा और थोडा खिसक कर बैठ गया।

दूस्या उसकी बगल मे बैठ गयी। उसने रूमाल खोला और अपनी जेब से नमक की पुडिया निकाली जो दवाखाने मे बाधी जानेवाली पुडिया के समान थी।

वह शाल से अपने सिर और चेहरे को ढके हुए थी। इसलिए उसकी ऊची उठी हुई नाक और बच्चो जैसी कौतूहलपूर्ण भूरी आखो के अलावा मुझे और कुछ भी दिखाई नही दे रहा था।

एक बर्तन और कुछ अन्य सामान निकाल कर उसने कहा –

"देखो, यह रहा दूध, यह रही रोटी और ये रहे उबले हुए अडे। ध्यान रखना, अडो के छिलके यही जमीन पर मत फेक देना, घर लेते आना।"

"लो, बस यही कसर रह गई थी। छिलके भी समेट कर लाने होगे।"

"और हा, खुद भी जल्द ही घर आ जाना।"

"हु, समझा! मेरे बिना उदास हो गई हो!"

"जैसे कि इसके सिवा मेरे पास करने-धरने को और कुछ है ही नही। तुम बाहर होते हो तो घर मे कम से कम सिगरेट का धुआ तो नही मडराता।"

"खैर, हटाओ इस बात को," बडी मुश्किल से गम्भीर रहते हुए अलेक्सेई ने कहा। "लेकिन आशका यही है कि मुझे यहा दो दिन और रुकना पडेगा।"

"वह क्यो?" दूस्या ने घबराकर कहा।

उसकी घबराहट इतनी आकस्मिक और हार्दिक थी कि अलेक्सेई बरबस खिलखिलाकर हस पडा।

"बस तुम्हे तो हर वक्त मजाक ही सूझा करता है," दूस्या ने हाथ नचाकर कहा। वह समझ गयी थी कि अलेक्सेई मजाक कर रहा था। "बडे बातूनी हो तुम! और यह मत समझना कि तुमने मुझे डरा दिया है। मेरी बला से, तुम यहा हफ्ते भर रहो   तुम भूमापक जी को खाने को कुछ क्यो नही देते? वे भी शायद भूखे ही बैठे है!"

यह बात का रुख बदलने का प्रयत्न था, लेकिन अलेक्सेई हसता ही रहा। मुझे भी हसी आ गयी।

"उफ, क्या पाला पडा है," दूस्या ने झेपते-शर्माते हुए कहा। "जाहिर है, मुझे अब अकेले रात बिताने की आदत नही रही   डर लगता है   अच्छा, अब मै जा रही हू।"

उसने मुझे अभिवादन किया और घर की ओर चल दी। शीघ्र ही पहाडी के पार से उसकी पदचाप सुनायी देनी बन्द हो गयी।

"हमारी शादी हुए काफी दिन हो गये। लगभग एक साल। लेकिन अभी तक चन्द घटे भी अकेले नही बिता पाती।"

मैंने देखा अलेक्सेई कुछ और भी कहना चाहता था। वह कुछ सोच रहा था, उधेड-बुन मे था और निश्चय नही कर पा रहा था। मैंने भी अपनी सैंडविचे निकाली और हमने नाश्ता करना शुरू कर दिया।

भोज-वृक्षो के वन के ऊपर सूरज का लाल गोला लुढक आया था और हर चीज गुलाबी कुहरे मे नहा गयी थी। उच्च वाल्टेज वाली ट्रासमीशन लाइन के दूरी पर खडे खम्भे और ईंट के कारखाने की चिमनी भी उसी गुलाबी कुहरे मे डूबी हुई थी।

"मेरी बीवी तो वीरागना है, वीरागना," यकायक अलेक्सेई ने कहा।

"लगा तो मुझे भी ऐसा ही," मैने उसकी बात का मतलब समझे बिना ही कहा।

"नही, मेरा मतलब यह नही है कि वह बडी दिलेर या रण-कौशल मे निपुण है। वह तो असली वीरागना है। समाजवादी श्रम की वीरागना। यह रहा उसका सितारा और पदक।"

उसने इलास्टिक डोर से बधा हुआ बटुआ खोला और उसमे से सोने का सितारा निकाला।

"मेरे पास यह हिफाजत से है। दूस्या इसे आज यहा तो कल वहा छिपा देती थी और फिर जब उसे जरूरत होती थी तो मिलता ही नही था। एक बार उसने इसे एक खाली डिब्बे मे रखा, डिब्बे को टूटे ग्रामोफोन मे रखा और ग्रामोफोन को एक बडे सदूक के बिल्कुल तल मे रख दिया। फिर जब उसे एक सम्मेलन मे भाग लेने जाना पडा तो यह उसे कही भी ढूढे न मिल सका। उसने सारा घर उलट-पलट कर एक कर दिया। इसके बाद उसने सभालकर रखने के लिए इसे मुझे सौप दिया।"

"यह उसे किस बात के लिए मिला था?"

"ग्रेचा* के लिए। तुमने कभी ग्रेचा का दलिया खाया है? खैर, तो इसी के लिए। ग्रेचा को उगाना बडा मुश्किल होता है उसका पौधा न गर्मी बर्दाश्त कर सकता है और न सर्दी। ठड मे जम जाता है और गर्मी मे मुरझा जाता है। इसकी फसल कैसे बढायी जाये, इसके लिए हमने तमाम दिमाग लडा मारा। साल मे तीन बार बोया एक बार बर्फ पिघलते ही, दूसरी बार थोडे दिनो बाद और तीसरी बार

---

* ग्रेचा — एक विशेष रूसी अनाज जिसका दलिया बहुत पौष्टिक माना जाता है। — स०

जब कि गर्मी लगभग ग्रा गयी थी। कभी जल्दी बोने का नतीजा ग्रच्छा निकला तो कभी देर से बोने का हर बार मौसम पर ही दारोमदार रहा। त्योरस साल हमारे खेत को योजना के ग्रनुसार ग्राम पैदावार से पाच गुना ग्रधिक ग्रेचा पैदा करनी थी। हम सभी, यानी बोर्ड के हम सभी सदस्य परेशान थे कि यह कैसे हो पायेगा। सिर्फ दूस्या ही हसती जाती थी। तब मै प्यारी दूस्या की तरफ कोई खास ध्यान नही देता था। उसे महज एक नन्ही बच्ची मानता था जो हमेशा चपल दिखायी देती थी ग्रौर कोम्सोमोल की बैठको मे बदहवास-सी बोलती रहती थी। तो उसी दूस्या ने ग्रेचा का ऐसा पौधा उगाने का तरीका खोज निकाला जो धूप बर्दाश्त कर सकता था। उसने ग्रेचा का टहनीदार पौधा खोज निकाला। ग्रब तुम्हे कैसे समझाऊ कि वह क्या होता है। पोप्लार कैसा होता है जानते हो? 'उक्रइनी रात' नामक तस्वीरवाला एक पोस्टकार्ड है ग्रौर उस पर पोप्लार का वृक्ष बना हुग्रा है। तो ग्रेचा का पौधा पोप्लार जैसा होता है, लेकिन दूस्या द्वारा उगाया हुग्रा पौधा टहनीदार है जैसे बलूत का पेड। उसकी टोपी पर छातानुमा पत्तिया होती है ग्रौर उस छाते की छाया मे नीचे बाले लगती है।"

"यह कोई नयी किस्म है क्या?"

"बिल्कुल नही। वह उगता उसी बीज से है। हम रई या गेहू की तरह उसकी घनी बोग्राई करते थे ग्रौर इससे उसकी

बाढ मारी जाती थी। लेकिन अगर उसे आधे मीटर की दूरी पर पात मे बोया जाय तो उसमे से टहनिया फूट निकलती है। और तब उसको मौसम मे तीन बार बोने की जरूरत नही रह जाती। धूप से उसे कोई नुकसान नही होता। जब अपनी नयी योजना के बारे मे हम लोग एक मीटिग मे चर्चा कर रहे थे तो दूस्या खडी हुई और उसने अपने नये तरीके के अनुसार सिर्फ एक बार जरा देर से फसल बोने की इजाजत मागी। उसने एक हेक्टर से डेढ टन पैदा करने का दावा किया।"

"जाहिर है कि तुमने उसका समर्थन किया होगा?"

"देखो न, मामला यह था कि उस समय तक मै उसके ग्रेचा के प्रयोगो के बारे मे कुछ नही जानता था और किसी की लम्बी-चौडी बात पर योही यकीन कर लू, यह मेरी आदत नही। ज्योही वह अपनी बात कह कर बैठी कि मै उठा और उसपर बरस पडा। मैने कहा हम तो लोगो को यह सिखाने की कोशिश कर रहे है कि बोआई जल्दी की जाय और यह इजाजत माग रही है देर से बोआई करने की। हर आदमी यह जानता है कि ग्रेचा को कितनी ही दूर-दूर क्यो न बोया जाये, आधे मीटर की दूरी पर या मीटर की दूरी पर, वह हर हालत मे धूप मे मुरझा जायेगी। आज इसने टहनीदार ग्रेचा की कल्पना की है कल यह छे पैरोवाली बकरी की कल्पना कर बैठेगी। और

फिर इस बकवास के लिए हमे इसकी पीठ भी ठोकनी चाहिए।

"तभी मैने क्या देखा कि लोग हस रहे है। मैने बेवकूफी करते हुए अपनी बात और जोर-शोर से कहनी शुरू की। भाषण देते वक्त अक्सर मै अपना हाथ सीने पर कोट के अन्दर चिपटा लेता हू ताकि उसे नचाने न लगू, लेकिन इस बार मै भूल गया और ताकत भर जोर से उसे इधर-उधर हिलाने लगा। 'टहनीदार ग्रेचा नाम की कोई चीज नही है,' मैने कहा।

"लोग और भी जोरो से हस पडे! अब मै समझा कि जरूर माजरा कुछ गडबड है। क्या ये लोग मुझ पर हस रहे है? मैने अपनी तरफ देखा। हर चीज ठीक थी। लेकिन वे लोग हसते ही जा रहे थे। बूढा स्तेपान तो हसी के मारे लोटपोट हुआ जा रहा था, उसके लिए तो सास लेना भी मुश्किल हो रहा था।

"मै चकरा गया, बुत-सा खडा रह गया, मेरी समझ मे न आया कि मामला क्या है। पता चला कि दूस्या ने अपने घर के बगीचे मे आधे मीटर की दूरी पर परीक्षार्थ ग्रेचा के बीज बोये थे और इस तरह वह ग्रेचा का टहनीदार पौधा उगाने मे सफल हो गयी थी। और जब मै भाषण दे रहा था तब उसने गमले मे लगा हुआ ऐसा ही एक पौधा मेरी पीठ के पीछे मेज पर लाकर रख दिया था। मै कह रहा था

कि टहनीदार ग्रचा जैसी कोई चीज नही होती और उधर वह गमला रखा हुआ था जिसे मेरे अलावा सभी देख रहे थे। इस तरह मैं चुपचाप खडा रहा और मेरी समझ मे न आया कि क्यो सभी लोग हस रहे थे। आखिर मैं भाप गया, मैंने मुडकर देखा और तुम कल्पना भी नही कर सकते कि मेरी आखे किस तरह फटी की फटी रह गयी।

"हमारे फार्म का अध्यक्ष इवान निकीफोरोविच हर आदमी की तरह ठहाके लगा रहा था, लेकिन उसने लोगो को शान्त करने के लिये मेज पर पेंसिल ठोकी और कहा 'कहे जाओ, अलेक्सेई, बोले जाओ, इन लोगो की तरफ ध्यान मत दो।'

"दूस्या ने इस तरह मेरा मजाक उडाया था, इसके लिए मुझे उससे चिढ जाना चाहिए था, लेकिन न जाने क्यो बात उलटी ही हुई। उस शाम के बाद से मेरी नजरे उसी पर टिकी रहने लगी। लेकिन यह सब सुनते-सुनते तुम ऊब गये होगे। वैज्ञानिक ढग की खेती मे तुम्हे भला क्यो दिलचस्पी होगी।"

मैंने उससे अपनी कथा जारी रखने का अनुरोध किया।

"अच्छा तो। इसके पहले भी मैं उसे हर रोज देखता था। कभी नाचते हुए और कभी हमारे खरबूजा उत्पादक पावेल के साथ उसकी साइकिल पर बैठ कर घूमने जाते हुए, लेकिन मुझे उन सबसे कोई मतलब नही रहता था। लेकिन

इसके बाद से तो मै उसके लिए पागल हो उठा। हालाकि शुरू मे मैने यह बात जाहिर न होने दी।

"हमने उसके तरीके से बुग्राई शुरू की। जब कभी मुमकिन होता मै उसकी सहायता के लिए जाता। मैने उसके खेत पर सबसे बढिया घोडे भिजवाये, ट्रैक्टर स्टेशन के लोगो से कह कर सबसे पहले उसके खेत पर मशीने भिजवायी ग्रादि ग्रादि। मैने नाचना सीखा। शाम को जब हम लोग गाने-बजाने के लिए इकट्ठे होते तो मै थोडी देर उसके साथ नाचता ग्रौर फिर जैसा कि होना चाहिए, उसे घर तक छोडने जाता। लेकिन मैने ग्रपने मन के भाव उस पर प्रगट नही होने दिये। पता नही उसने कैसे पता पा लिया, लेकिन वह जान ही गई। जब कभी हम लोग ग्रकेले पड जाते तो वह चौकन्नी हो उठती ग्रौर मौन साध लेती। मेरे साथ उसे ग्रजीब-सी बेचैनी महसूस होती। ग्रौर फिर जब उसे मालूम ही हो गया था तो मेरे चुप रहने मे ही क्या सार्थकता थी। इसलिए मैने उससे साफ-साफ कह दिया, एक कोम्सोमोल के सदस्य की तरह। ग्रौर उसने कहा 'मै तुमसे घबराती हू, ग्रलेक्सेई, तुम ग्रपनी बात पर ग्रडना जानते हो ग्रौर झुकना मै भी नही जानती। हमारी पट नही सकेगी।' ग्रौर वह चली गयी। ग्रौर उस इतवार को पावेल फिर ग्रपनी साइकिल पर चढाकर उसे घुमाने ले गया।

"मैने सोचा कि मामला खत्म हो गया। ग्रगर वह मुझे

पसद नही करती तो मै कर ही क्या सकता हू? मैने नाचने के लिए जाना बन्द कर दिया। शाम को मै घर बैठा हुआ ही पढता रहता। लगातार पढता रहता और मुझे ऐसा लगता कि दूस्या मेरी बगल मे बैठी हुई है और वही पुस्तक पढ रही है। एक तरह से मै बावला हो गया। बार-बार मै शीशे मे अपना मुह देखता। बरसो तक मैने कभी शीशा नही देखा था, लेकिन अब मै कभी अपनी नाक देखता, कभी आखे और कभी ओठ और सोचता 'अलेक्सेई, तुम अपनी बात पर अडना जानते हो। लेकिन क्या यही कुछ है तुम्हारे पास, और कुछ भी नही।' मेरी मा का ध्यान भी इस ओर जाये बिना न रह सका। 'बेटा, इस तरह शीशे मे तुम अपना मुह बार-बार क्यो देखते हो?' उसने पूछा। 'क्या मुहासे हो गये है?' गाव की दूकान से मैने एक टाई खरीदी। टाइयो का शौक मुझे कभी नही था गले मे जैसे फासी डाल ली। लेकिन फिर भी मैने खरीदी ही। अध्यापक के पास जा पहुचा और उस मनहूस टाई को बाधने की कला सीखी। आखिर मैने टाई बाध ली और फिर शीशे मे अपनी सूरत देखी। समझ मे नही आया कि सूरत सवरी या बिगड गई। मुझे याद है कि एक दिन हम कोम्सोमोल की बडी सभा मे भाग लेने शहर गये थे और जब हम लॉरी मे बैठे जा रहे थे तो मै हर साइकिल पर नजर दौडाता जाता था। जहा कही मुझे साइकिल दिखाई दे जाती, मै दात पीसने लगता। साइकिल

तो मुझे फूटी आखो नही सुहाती थी। हा, तो इस लडकी ने यह हालत कर दी थी मेरी।

"ग्रीष्म ऋतु आयी। मौसम गरम हो उठा। मैं सुबह उठता, खिडकिया खोल डालता और हाथ बाहर फैला देता। मुझे ऐसा लगता मानो वह हाथ मैंने गरम पानी मे डाल दिया हो। दूस्या द्वारा बोये हुए ग्रेचा के पौधे हर दिन बडे ही बडे होते जाते थे। जब वे फूल उठे तो सारा खेत दूधिया नजर आने लगा। चौधिया देने वाली सफेदी थी वहा। और तितलिया मडराती रहती। देखकर दिल बाग-बाग हो जाता।

"एक दिन मैं वहा उस समय गया जब दूस्या और उसकी सभी सहेलिया खेत मे से घास-पात निकाल रही थी।

"'तुम यहा रोज-रोज किसलिए आते हो?' दूस्या ने पूछा।

"आस्तीने समेटे दोनो हाथो मे घास-पात उठाये वह मेरे सामने खडी थी और मुझे और मेरी टाई को देख रही थी। मैंने देखा वह मुझ पर हस रही है। 'अच्छा तो यह बात है,' मैंने सोचा। 'जब अकेले मे मिलती है तो एक बोल नही फूटता और दूसरो के सामने यो मजाक उडाती है। अच्छी बात है। लोगो के सामने ही तुम्हे यह बताता हू कि मैं यहा रोज-रोज क्यो आता हू। जैसे कि मैं डरता हू लोगो से!' मैंने उसे अपनी बाहो मे खीच लिया और चूम लिया। वह मुझसे जूझ उठी। उसने अपना सिर फेर लिया, लेकिन

मेरी मजबूत गिरफ्त से निकलने के लिए तो किसी मर्द मे भी खासा दम होना चाहिए।

"लडकिया खिलखिलाकर हसती रही और मै, बस, उसे चूमता गया। जब मैने देखा कि वह रो ही देगी, तो मैने उसे छोड दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था, बाल बिखर गये थे। उसका रूमाल पीठ पर गले से झूल रहा था। 'देखो तुमने कितने पौधे कुचल डाले है। तुमने कितना नुकसान किया है,' वह बोली। मैने कहा 'कोई बात नही। जितना नुकसान किया है उससे ज्यादा फायदा भी किया है।' सचमुच मैने न जाने कितनी बार उनके काम मे मदद दी थी। 'हा, हा! बडी मदद की है तुमने! ज्योही देखा कि हमारी फसल खूब बढ-चढकर होगी, त्योही लगे हो हमारी सहायता का ढिढोरा पीटने! लेकिन भूल गये मीटिग मे तुमने क्या कहा था?' मैने जवाब देना चाहा, लेकिन उसने मुझे बोलने ही न दिया। 'हमे तुम्हारी मदद की उतनी ही जरूरत थी जितनी कि मछली को छाते की होती है। हम तुम्हारे बिना भी किसी तरह काम चला लेगे। हमारी फसल को फूलती-फलती देखते ही आ पहुचे हो अपना भी नाम करवाने!' पता नही यह बाते वह मुझे चोट पहुचाने के लिए सुना रही थी या सिर्फ गुस्से मे कह रही थी, लेकिन उसकी बोली की गोली मेरे सीने मे उतर गयी। 'जबान सभाल कर बोलो, दूस्या। वरना मै तुम्हारे पास भी न फटकूगा,' मैने कहा। 'मै तो

खुद ही तुम्हे अपने खेत के पास भी फटकने न दूगी। मेहनत दूसरो की और नाम करवाना चाहते हो तुम अपना!' यह और भी बुरी चोट थी। मेरी जबान से ऐसी कोई बात न निकल जाये कि जिस पर बाद मे मुझे पछतावा हो, इसलिये मैने अपने ओठ इतने जोर से भीच लिए कि उनसे खून बह निकला। मैने उसका गिरा हुआ कघा उठाया और उसको हाथ मे पकडाकर चल दिया। 'बस, अब सारा किस्सा खत्म हो गया! मेरी बला से, करती रहे अब खुद ही सारा काम,' मैने सोचा।

"किस्मत की बात कि उसी दिन लडकियो को पता चला कि ग्रेचा पर पराग छिडकाने के लिए उनके पास काफी मधुमक्खिया नही है। वे नदी के उस पार 'विजय' नामक फार्म से कुछ छत्ते मागने के लिए गयी। 'विजय' फार्म वालो ने छत्ते देने से इन्कार कर दिया। हमारे अध्यक्ष खुद मागने गये थे, पावेल अपनी साइकिल पर चढकर गया था और दूस्या भी गयी थी, लेकिन फल कुछ न निकला था। मैने देखा कि मामला काफी सगीन है। अध्यक्ष बक-झक कर रहे थे और दूस्या रो रही थी। लेकिन मै खुद कैसे जा सकता था? दूस्या समझती कि मै उसे खुश करने की कोशिश कर रहा हू। लेकिन दूसरे दिन मैने स्वय जाने का निश्चय कर ही लिया। मैने एक छोटी लॉरी ली और शाम को निकल गया। वहा मेरे एक चाचा फ्योदोर निकीतिच मधुमक्खिया पालते

है। उनके पास बारह छत्ते है। मै उनको रात के ग्यारह बजे तक यह समझाता-बुझाता रहा कि हमको छत्ते उधार देने मे खुद उनका लाभ है। ग्रेचा का शहद सबसे ज्यादा मीठा होता है। कभी वे सहमत हो जाते और कभी फिर मुकर जाते और उनकी पत्नी पेलगेया स्तेपानोव्ना तो बस एकदम खिलाफ मोर्चा जमाये हुए थी। अत मे चाची सोने चली गयी और मैने अपने चाचा को फुसला ही लिया। मैने ड्राइवर के साथ मिलकर छत्तो को लारी मे लादा, उन्हे लाये और उसी रात छत्तो को खेत मे रख भी दिया। मैने ड्राइवर से अनुरोध किया कि इन छत्तो को लाने वाला मै हू, यह बात वह किसी को भी और खास तौर से दूस्या को तो बिल्कुल न बताये। इसके बाद मै घर आया। मै इतना थक गया था कि कपडे उतारे बिना ही चारपाई पर पड रहा और सो गया। मै कुछ ही देर सो पाया था कि कोई मुझे बुलाने आ पहुचा। मै आखे मलकर उठ बैठा। कमरे मे रोशनी थी। मा चली गयी थी, लेकिन दूस्या मेरी चारपाई की बगल मे खडी थी। वह जिस तरह मुझे देख रही थी उस तरह उसने आज तक मेरी ओर नही देखा था।

"उसने कहा 'अलेक्सेई, ये मधुमक्खिया कौन लाया था?'

"मैने करवट लेते हुए कहा 'मुझे क्या मालूम।'

"वह बोली 'अलेक्सेई, तुम नाराज नही होना। पेलगेया स्तेपानोव्ना आयी है।'

"'क्यो ?'

"'अपने छत्ते वापिस लेने, बहुत बिगड रही है।'

"'तुम उसे मत ले जाने दो। वे उसके नही है, वे फ्योदोर निकीतिच के है।'

"'फ्योदोर निकीतिच भी आये है। वह भी खेत मे है।'

"'तो ?'

"'तो क्या, वह हुक्म दे रही हे और वह उन्हे लॉरी मे लादते जा रहे है।'

"'मेरे ख्याल मे तो ड्राइवर वसीली इवानोविच ही लाया होगा इन छत्तो को। उसे बुला लाओ, वह खुद मामला ठीक-ठाक कर लेगा।'

"'उसके किये-धरे कुछ नही हो सका। उसने कोशिश कर देखी।'

"मै चारपाई से उछल पडनेवाला ही था कि दूस्या झुकी और उसने अपने ठडे कपोल को मेरे कपोल पर रख दिया। फिर उसने मेरे कानो मे फुसफुसाकर कहा 'तुम बहुत भले व्यक्ति हो, अलेक्सेई, और बहुत ही सुन्दर, लेकिन इतने लोगो के सामने तुम्हे वह सब नही करना चाहिए था।' और फिर वह द्वार पर मा से टकराते हुए बाहर भाग गयी।

"मै चारपाई पर उठ कर बैठ गया। 'कम से कम आज तो उसे मेरी शक्ल अच्छी लगी,' मैने सोचा। मा दूध लेकर

आयी और मेरी तरफ यो देखने लगी मानो उसने कोई प्रेत देखा हो। 'अलेक्सेई, यह तुम्हे हुआ क्या है?' मा ने कहा। 'क्यो?' मैने पूछा। 'जरा शीशा देखो,' मा ने कहा। मैने शीशा देखा और अवाक् रह गया। ऐसा गोरखधधा भला तुमने क्या देखा होगा। रात को मधुमक्खियो ने जहा तहा काट खाया था। मेरा होठ सूजा हुआ था। आख के नीचे बडा-सा नील था जैसे किसी ने नीली स्याही पोत दी हो। दूस्या ने यह सब देखकर ही भाप लिया होगा कि मधुमक्खिया कौन लाया था। लेकिन वाह री चालाक लोमडी। एक शब्द भी नही कहा। मैने मुह धोया और खेत मे चला गया। फ्योदोर निकीतिच थोडी देर पहले ही अपनी मधुमक्खिया लेकर चले गये थे और लडकिया वहा किकर्त्तव्यविमूढ होकर सोच रही थी कि अब क्या होगा। लेकिन शीघ्र ही उन्होने तदबीर निकाल ली—ग्रेचा पर कृत्रिम तरीके से पराग फैलाने का फैसला किया। उन्होने चीथडो को डोर से बाधकर फूलो के ऊपर हलके हलके फेरा। इसका नतीजा ऐसा अच्छा हुआ मानो यह काम मधुमक्खियो ने ही किया हो। लेकिन वैज्ञानिक खेती की इन सब बातो से तुम तो ऊब रहे होगे।"

अलेक्सेई चुप हो गया और अडे के छिलके बीन कर उन्हे कागज के टुकडे मे बाधने लगा। इस समय तक सूरज काफी चढ आया था। ईंट बनाने के कारखाने की चिमनी छिली हुई गाजर की तरह चमकती दिखाई दे रही थी और दूरी

पर तार के खम्भे आसमान पर चढे हुए से लग रहे थे। नदी मे बाढ आ रही थी।

"लो, वह कार आ रही है। यह वसीली है," अलेक्सेई ने कहा। कार की आवाज मुझे अभी तक सुनाई नही दी थी। लेकिन फिर भी मै सामान समेटने लगा। शीघ्र ही कार सचमुच आ गयी। दुर्भाग्य से ड्राइवर की बगल मे आगे की सीट पर कोई पहले से ही बैठा था। इसलिये मैने अपना सामान लादा और अलेक्सेई को सलाम कह कर पीछे चढ गया। हम बसत के खेतो और वनो मे से गुजर रहे थे। उस समय मै देर तक यही सोचता रहा कि मानव मे कैसी नयी सुन्दरता पलक खोल रही है

गेन्नादी कलिनोव्स्की (जन्म १६२६) – सोवियत गद्यकारो की युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि। इनके अब तक के सक्षिप्त जीवन में वीरतापूर्ण कार्यों के कई पृष्ठ जुड़े हुए है। देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दिनो में आप बेलोरूस में एक क्रियाशील पार्टीजान दस्ते के सदेशवाहक रहे थे। युद्ध के बाद आपने मध्य एशिया में भूगर्भीय अनुसन्धान-कार्य करनेवाले अभियान-दल में भाग लिया।

गेन्नादी कलिनोव्स्की
चैन का ठिकाना

उस सुबह को जब डाकखाने के दरवाजे के सामने मोटर आकर रुकी और काउण्टर के सामने हरी बरसाती पहने हुए एक ऊंचे कद का आदमी आकर खडा हुआ, तो घडी भर के लिए इल्या रोमानोविच के दिल की धडकन रुक गयी। बडे मिया ने महसूस किया कि अब कोई गुल खिल कर रहेगा!

हरी बरसातीवाले व्यक्ति ने टोपी उतारी, रूमाल से अपनी गोल चाद का पसीना पोछा और खुश मिजाजी से इल्या रोमानोविच को आख मारकर कहा—

"अप्रैल के महीने मे ही आपके यहां इतनी सख्त गर्मी है!"

इल्या रोमानोविच ने अपना नीचे का होठ दबाया और जवाब देने के बजाय घर के बने हुए तिकोने लिफाफे पर जोर से ठप्पा मारा।

बरसातीवाला व्यक्ति पहले की तरह ही मुस्कराता रहा। उसने जेब से एक कागज निकाला और इल्या रोमानोविच की ओर बढाते हुए कहा—

"मेरा नाम है कोर्चेवोई। मै उस अभियान-दल का सचालक हू जिसका मुख्य कार्यालय आपके गाव मे स्थापित किया जाएगा। अभियान-दल अभी नही आया, मगर पत्र आ सकते है। यह पता है हमारा। आशा है शीघ्र ही आपसे फिर भेट होगी "

और पत्र सचमुच आने शुरू हो गये।

शुरू मे उनकी सख्या बहुत कम थी—हफ्ते मे यही कोई दो-तीन। उन्हे लेने भी कोई नही आया। बाद मे गाव की तग गलियो मे ट्रैक्टर भडभडाने लगे, चार सीटो वाली जीप कारे तेजी से इधर-उधर दौडने लगी और इल्या रोमानोविच की मेज पर अभियान-दल के नाम आनेवाले पत्रो के रग-बिरगे लिफाफो का ढेर लगने लगा।

डाकखाने के छोटे से कमरे मे धूल-मिट्टी से सने हुए भूगर्भशास्त्री और बरमाई करनेवाली मिस्त्री आते, ऊची आवाज मे अपना नाम बताते और मानो हुक्म देते हुए खत मागते।

हा, सिर्फ खत ही नही! पहले गाव मे महीने भर मे कोई एकाध पार्सल ग्राता ग्रौर इल्या रोमानोविच के लिए यह बहुत बडी घटना होती। वे बहुत ध्यान से पता पढते, उसे सभी ग्रोर से ग्रच्छी तरह देखते-भालते ग्रौर इस बात की जाच करते कि उसकी मोहरे तो सही-सलामत हैं। वे पार्सल लेनेवाले को भी बहुत देर तक परेशान करते, उसके परिचय-पत्र की इतनी कडी जाच करते कि उसके नाक मे दम ग्रा जाता। मगर ग्रब डाकखाने की सारी जगह मे पार्सल ही पार्सल बिखरे पडे रहते थे। इल्या रोमानोविच ने तो ग्रपनी कुर्सी तक हटा दी ग्रौर एक भारी से बक्स पर बैठकर काम करने लगे। परिचय-पत्र को जाचने का काम भी बहुत टेढा हो गया। बात यह थी कि परिचय-पत्र देश के ग्रलग-ग्रलग स्थानो से जारी हुए थे। इल्या रोमानोविच जब तक उनमे दर्ज की हुई तफसीले पढते, तब तक काउण्टर के दूसरी ग्रोर से कुछ खीझी सी ग्रावाज मे यह सुनायी देता—

"जरा जल्दी से हाथ हिलाये, बडे मिया!"

"मोटर बेकार खडी है!"

ग्रभियान-दल के ग्राने से इल्या रोमानोविच के मन का चैन ग्रौर घर-गृहस्थी का सुख भी हराम हो गया।

उनकी शब्दावली मे वे ग्रपने "जीवन के ग्राखिरी ढर्रे" पर बहुत कडाई से चलते थे। ग्रब वह ढर्रा गडबडा गया, ऊबड-खाबड ग्रौर टेढा-मेढा हो गया

इल्या रोमानोविच ने डाकखाने मे उस समय काम करना शुरू किया था, जब अभी रूस की पहली क्रान्ति भी नही हुई थी। शुरू मे उन्होने समरकन्द और फिर ताशकन्द मे काम किया। दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान वे प्रादेशिक केन्द्र के एक हल्का-डाकखाने मे डिप्टी पोस्टमास्टर हो गये। उन्होने काम भी खूब अच्छी तरह से किया। यो कहा जा सकता है कि काम के बेहद बोझ और जिम्मेदारी के एहसास ने उन्हे नई जवानी दे दी थी, उनमे नई रूह फूक दी थी। मगर युद्ध समाप्त होने के कुछ ही महीने बाद इल्या रोमानोविच ने अनुभव किया कि उनकी ताकत जवाब देती जा रही है, उनसे समय पर काम नही निपटता है और सहयोगी उनपर काम का कम से कम बोझ डालने की कोशिश करते है। वे उनकी गलतिया और भूल-चूक भी माफ कर देते है। इल्या रोमानोविच ने अपने को साधने-सम्भालने की कोशिश की, अपने मन को यह विश्वास दिलाया कि मै बस कुछ थक गया हू और उम्र का यहा कोई सवाल नही है। मगर एक बार जब उनसे मनीआर्डर के सिलसिले मे कोई गलती हो गयी, तो उन्होने सयोगवश लाल-लाल गालो वाली खजाची नाद्या को बडे इत्मीनान से यह कहते सुन लिया

"उनसे और आशा ही क्या की जा सकती है? वे तो पाषाण-युग के आदमी है "

अगले दिन इल्या रोमानोविच ने डाकखाने के सचालक

से यह प्रार्थना की कि मुझे अब काम से अलग कर दिया जाय क्योकि "बुढापे के कारण मै काम के योग्य नही रहा।"

सचालक ने दिखावा करते हुए कहा—

"आप बेकार ऐसी बात कर रहे है, इल्या रोमानोविच! आप अभी बिल्कुल ठीक-ठाक है," और साथ ही यह भी जोड दिया, "वैसे आप काफी लम्बे अर्से तक काम कर चुके है और अब आपको आराम करना चाहिए। अपनी ओर से मैं पूरी कोशिश करूगा कि आपको ज्यादा से ज्यादा पेशन मिले।"

"बहुत आभारी हू," जरा सिर झुकाकर इल्या रोमानोविच ने कहा। जब वे उस खिडकी के पास से गुजरे जहा खजाची नाद्या के लाल-लाल गाल खूब चमक रहे थे, तो उन्होने व्यग्य-बाण छोडा—"बहुत दुख की बात हे कि जब आप मेरी उम्र को पहुचेगी तो मै नही हूगा। वरना उस समय बराबरी के नाते मै आपसे पाषाण-युग के बारे मे बातचीत करता।"

नाद्या का चेहरा एक बडा-सा लाल धब्बा बन कर रह गया। इल्या रोमानोविच सन्तोष अनुभव करते हुए मुस्कराये और जल्दी से कदम बढाते हुए सडक पर पहुचे। आध घण्टे के बाद वे प्रादेशिक कार्यालय के सचालक के सामने एक अर्जी लेकर हाजिर हुए। उसमे यह प्रार्थना की गयी थी कि "अधिक चैन और कम ज़िम्मेदारी की जगह पर" उनकी बदली कर दी जाय।

प्रादेशिक कार्यालय के सचालक ने बहुत ध्यान से अर्जी पढी और इल्या रोमानोविच से यह कहा कि वे एक हफ्ते बाद आये। कोई एक महीना गुजरा तो इल्या रोमानोविच अपनी पत्नी अनास्तास्या वसील्येव्ना के साथ इस गाव मे आ पहुचे जो निकटतम रेलवे-स्टेशन से एक सौ किलोमीटर दूर था। वे गाव के नये डाकखाने के पोस्टमास्टर होकर आये।

डाकखाना एक कच्चे मकान के कमरे मे था। पतले-पतले तख्ते लगाकर उसे बाट दिया गया था। डाकखाने को जरा ढग का बनाने के लिए इल्या रोमानोविच के आदेशानुसार काउण्टर पर हरा रोगन कर दिया गया था। मगर स्पष्ट था कि रोगन घटिया किस्म का था, क्योकि गर्मी के दिनो मे तख्तो पर लेसदार बुलबुले उभर आते थे और डाकखाने मे आने वाले लोगो को काउण्टर से काफी दूर खडे रहना पडता था।

कुल मिलाकर यहा दो आदमियो का स्टाफ था। एक तो खुद इल्या रोमानोविच और दूसरा व्यक्ति था काना डाकिया—कुर्बान। कुर्बान की उम्र इल्या रोमानोविच से कुल पाच दिन कम थी।

यहा आते ही इल्या रोमानोविच का काया-कल्प हो गया। उनमे पहले जैसा आत्म-विश्वास लौट आया, काम-काज की गाडी मजे से चलने लगी और सबसे बडी बात तो यह कि वे अपने को महत्त्वपूर्ण और आदर के योग्य व्यक्ति अनुभव करने लगे।

इल्या रोमानोविच सुबह के साढे सात बजे काम के लिए रवाना हो जाते। वे धीरे-धीरे, कुछ शान के साथ कदम बढाते हुए गाव मे से गुजरते। सामूहिक फार्म के किसान उनका सादर अभिवादन करते तो वे अपनी वर्दीवाली टोपी उतार लेते, रुक-रुक जाते और हालचाल पूछते—

"कल जो आपके बेटे का खत आया है उसमे क्या लिखा है, करा-अता? क्या शुभ समाचार आया हे?"

कभी-कभी ऐसा भी होता कि इल्या रोमानोविच टोपी न उतारते और अपनी पकी हुई सख्त बालो वाली मूछो को ताव देते हुए रास्ते मे मिलने वाले को डाट कर कहते—

"मै जानता हू आप बडे प्रसिद्ध व्यक्ति है, आक-मुहम्मद! टोली के नेता है, आपके नाम बहुत खत आते है। किन्तु अभी तक आपकी ओर से दो पत्रो का उत्तर नही गया। लोग इन्तजार करते होगे।"

आक-मुहम्मद लज्जित होकर कसमे खाने लगता और कहता कि मै आज ही पत्रो का उत्तर लिख भेजूगा। इल्या रोमानोविच गर्व के साथ यह अनुभव करते हुए कि उन्होने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है, डाकखाने की ओर बढ जाते।

डाकिया कुर्बान रात के समय चौकीदार का काम भी करता। सुबह को वह खडखडाकर दरवाजे से लोहे का बोल्ट अलग करता, अपनी एकमात्र आख उठाकर छत की ओर देखता और बडबडाता हुआ कहता कि सब कुछ ठीक-ठाक है,

रात के समय कोई गडबड नही हुई। इसलिये इल्या रोमानोविच कुछ देर से भी आ सकते थे।

"भाई, नौकरी तो नौकरी है!" इल्या रोमानोविच सक्षिप्त-सा उत्तर देते और काम का दिन शुरू हो जाता।

दोपहर के समय एक पुरानी और छोटी-सी लॉरी धचके खाती हुई आती और डाक लाती।

इल्या रोमानोविच जल्दी-जल्दी साधारण पत्रो और रजिस्टरियो को अलग करते, पार्सलो को सम्भालते और फिर रोबदार आवाज मे कुर्बान को अपने पास बुलाकर कहते—

"डाकिये का मुख्य काम है—वक्त पर डाक पहुचाना। उसे न तो कही रुकना चाहिए और न इधर-उधर कही ध्यान ही देना चाहिए।"

कुर्बान झटपट अपना सिर झुका देता, थैले को कन्धे पर लटकाता और चल देता। इल्या रोमानोविच उसे विदा करते हुए गहरी सास लेते। उन्हे पहले से ही यह मालूम होता था कि कुर्बान हर घर मे कम से कम एक घण्टा जरूर बैठेगा। जब तक उसके सामने खत को कई बार नही पढा जायेगा, वह वहा से नही हिलेगा। इतना ही नही, वह इस बातचीत मे भी हिस्सा लेगा कि खत का क्या जवाब दिया जाय।

सूर्यास्त के पहले इल्या रोमानोविच घर लौटते, अनास्तास्या वसील्येव्ना का हाथ अपने हाथ मे लेते और धीरे-धीरे कदम बढाते हुए बडी नहर की ओर चल देते।

वहा पहुचने पर अनास्तास्या वसील्येव्ना अगूरो के घने बगीचे मे, चिनार के सबसे ऊचे वृक्ष के नीचे एक छोटा-सा गलीचा बिछा देती और बूढा-बुढिया उसपर आराम से चुपचाप बैठ कर छोटी सी दक्षिणी साझ का मजा लेते।

नहर का भूरा पानी कल-छल का गीत गुनगुनाता रहता, अगूरो के हिलते हुए पत्तो की बहुत ही धीमी-धीमी सरसराहट सुनायी देती और कही दूरी पर रेगिस्तान की नीली-सी धुध मे सूरज जल्दी-जल्दी गायब होता जाता।

ऐसे क्षणो मे इल्या रोमानोविच अपने लम्बे जीवन के बारे मे सोचने लगते। उनकी आखो के सामने अपने बेटे का चेहरा उभरता जो सन् बयालीस मे वीरगति को प्राप्त हुआ था। फिर उनकी आखो के सामने अपने जन्म-स्थान चेर्नीगोव प्रदेश के भोज वृक्षो के तनो की धुधली सी सफेदी झलक उठती। वे अपनी नौकरी के सिलसिले मे असफलताओ और अच्छे काम के लिए प्राप्त पुरस्कारो का हिसाब जोडते। उन्हे लेनिनग्राद विश्वविद्यालय मे पढनेवाली अपनी इकलौती पोती की याद आती तो दिल टीस उठता। उसने तीन महीने से एक कार्ड तक नही लिखा था

सूरज अचानक रेत के टीले की सुरमई गोद मे छिप जाता। अधेरे मे ठडी हवा की झुरझुरी सी अनुभव होती। अनास्तास्या वसील्येव्ना पति का कधा हिलाकर कहती—

"अब घर चलना चाहिए, इल्यूशा।"

"घडी भर और बैठ जाओ, अस्या। पानी की कल-छल बहुत भली लग रही है," इल्या रोमानोविच पत्नी से कहते।

"नही, तुम्हे ठड लग जायेगी। कल तुम्हे काम पर जाना है।"

घर लौटते हुए इल्या रोमानोविच सोचते कि वे अपने जीवन के अन्तिम वर्ष ढग से बिता रहे है। केवल कभी-कभी उनके चेहरे पर झलकने वाली असतोष की भावना इस बात को व्यक्त करती कि वे अपने दिल मे छिपे हुए इस सदेह से उलझ रहे है कि अधिकारियो ने, सूची से अलग-थलग, इस गाव मे यह डाकखाना केवल उन्ही के लिए खोला है

सुबह होती तो ऐसे सभी विचार उनके दिमाग से निकल जाते। हरे बुलबुलो वाले काउण्टर के पीछे बैठे हुए वे स्थायी रूप से खाली पडे उस डिब्बे को बडे सतोष से देखते जिस पर उन्होने स्वय अपने हाथ से यह शब्द लिखे थे "शिकायतो के लिए।"

और अब यह सभी कुछ गडबड हो गया था, उलट-पलट गया था।

अब गाव मे दिन रात मोटरो की जोरदार गड-गड गूजती रहती। हवा मे पेट्रोल की अप्रिय गध बसी रहती। काम पर जाते हुए इल्या रोमानोविच लगातार दाये-बाये मुडकर देखते जाते क्योकि ड्राइवर लोग ट्रैफिक के नियमो की ओर खास ध्यान नही देते थे।

भूगर्भशास्त्रियो और उनके सहयोगियो के वहां पहुंचने के पहले ही दिन से इल्या रोमानोविच को उनसे चिढ हो गयी थी। खुशमिजाज, मगर कुछ कुछ उजड्ड और हमेशा हडबडाए हुए इधर-उधर दौडनेवाले इन लोगो को देखते ही इल्या रोमानोविच पर रोब हावी हो जाता और आत्म-विश्वास उनका साथ छोड देता।

उन्हे यह सोचकर बडा क्षोभ होता कि कभी गाव मे हर आदमी उनकी इज्जत करता था और वे अपने को गाव का लगभग सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति समझते थे। अब अचानक यह सब कुछ बदल गया था। लोग पहले जैसे उत्साह के साथ उनका अभिवादन नही करते थे, उन्हे उनमे पहले सी दिलचस्पी नही रह गयी थी। कुल मिलाकर वे अब पीछे की ओर धकेल दिये गये थे। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह थी कि किनके कारण ऐसा हुआ था? यो ही आते-जाते, इन अस्थायी लोगो के कारण!

"हा, ये है तो आते-जाते लोग ही," मन ही मन दुखी होते हुए इल्या रोमानोविच सोचते। "ये लोग इधर-उधर दौड-धूप करेगे, हो-हल्ला मचायेगे, रेगिस्तान के चक्कर काटेगे और फिर गायब हो जायेगे। तब पूछते फिरना कि वे कौन थे, कहा गये!"

और तो और अभियान-दल के क्लब की वजह से अनास्तास्या वसील्येव्ना के साथ बडी नहर के किनारे की सैर

भी बंद हो गयी थी। पचास साल से पत्नी उनके साथ थी और उसने पति की सलाह के बिना कभी कोई काम नही किया था। अब वह अक्सर क्लब मे सिनेमा देखने के लिए जाने लगी थी। इल्या रोमानोविच ने उसे यह समझाने की कोशिश की कि उसकी उम्र मे इस तरह की दिलचस्पी उसे शोभा नही देती। किन्तु अनास्तास्या वसील्येव्ना ने दुखी होते हुए गहरी सास ली और उत्तर दिया–

"तुम सठियाते जा रहे हो, इल्यूशा! अच्छा तो यही हो कि तुम भी मेरे साथ चलो! आज वहा 'कुबान के कज्जाक' फिल्म दिखायी जायेगी।"

जाहिर है कि इल्या रोमानोविच फिल्म देखने नही गये।

इल्या रोमानोविच के मन मे बेचैनी और एकाकीपन ने अपना डेरा डाल दिया।

* * *

तुर्कमानिया की लम्बी गर्मी खत्म हो रही थी।

अक्तूबर मे पहली बार हल्की-सी ठड हुई। खोजियो ने इल्या रोमानोविच से और अधिक मागे की। आखिर वह दिन आया जब "शिकायतो के लिए" डिब्बे मे अवाञ्छित पुर्जा भी नजर आ गया। इल्या रोमानोविच ने कापते हाथो से कागज को आखो के पास ले जाकर पढा। उसमे पार्सल के देर से मिलने की शिकायत की गयी थी। इल्या रोमानोविच

ने समझ लिया कि अब मारे गये   बस, हुई काम से छुट्टी।

"बडे मिया, यह लो मनीआर्डर! पत्नी को जाडे का कोट बनवाने के लिये रुपया भेज रहा हू।"

फिर वही मूछोवाला ड्राइवर येगोर माकारिच खिडकी के सामने खडा था। उसके साथ था उसका पुच्छलग्गा जेन्या जैत्सेव और उसके पीछे असाधारण रूप से भारी आवाज-वाला मुख्य बरमाईकर्त्ता क्रिनीत्सा। उसके पीछे सदा मुस्कराने वाला भू-मानचित्रक रुब्त्सोव था। उसके माथे पर बालो का एक गुच्छा लटकता रहता था।

इल्या रोमानोविच अब इन सब को काफी दिनो से अच्छी तरह जानते थे। वे सभी, सदा की भाति, मजाक कर रहे थे, ऊचे-ऊचे बातचीत करते थे और बडी बेफिक्री से सिगरेटो का धुआ उडा रहे थे।

इल्या रोमानोविच ने खिडकी के नजदीक एक अजनबी लडकी को भी खडे देखा। उन्हे यह देखकर हैरानी हुई कि अभियान-दल की अन्य कार्यकर्त्रियो की तुलना मे वह बिलकुल भिन्न थी। वह उनकी भाति पतलून नही, बल्कि एक साधारण-सा फ्रॉक पहने थी जिस पर नीले छल्ले बने हुए थे।

लडकी के चमकते हुए लाल बालो मे से सूरज की किरणे छन रही थी। वह दफ्ती की फाइल से ऐसे पखा झल रही थी मानो अपने सिर के गिर्द जलती हुई और परेशान करने वाली लपटो को बुझाने की कोशिश कर रही हो।

इल्या रोमानोविच ने देखा कि लडकी की आखो मे ऐसी उदासी झलक रही है जो खोज करनेवालो के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त है। उसकी आखे खोई-खोई-सी है। उन्होने अनुभव किया कि वह यहा किसी को नही जानती और पहली बार आयी है

"किस सोच मे डूबे हुए है, बडे मिया? फार्म दीजिए!"

इल्या रोमानोविच जब तक अपने पुराने ग्राहको को निपटाने मे व्यस्त रहे, उन्होने हठपूर्वक सिर ऊपर नही उठाया। उन्होने केवल इसी बात की चिन्ता करने की कोशिश की कि फार्म ठीक तरह से भरे जाये। फिर भी वे लाल बालो और खोई-खोई आखो वाली लडकी को किसी तरह भी नही भुला पा रहे थे। वह उनके दिल मे गहरी उतरती जा रही थी।

आखिर लडकी की बारी आयी और उसने धीरे से कहा—

"कृपया एक लिफाफा और हवाई डाक का टिकट दीजिए।"

इल्या रोमानोविच ने उसे लिफाफा दिया। लडकी खुलकर मुस्करा दी। उसके सुन्दर सफेद दात चमक उठे, जिनमे से सामने वाले एक दात का किनारा टूटा हुआ था। इस टूटे हुए दात ने इल्या रोमानोविच के हृदय को और भी अधिक छू लिया।

"जरूर अखरोट तोडते हुए टूटा होगा," उन्होने अनुमान लगाया। "बिलकुल बच्ची है! इसे यहा जलती हुई भट्ठी मे भेज दिया। क्या बदतमीजी है!"

लडकी सफरी मेज के गिर्द बैठ गयी। उसने अपनी फाइल खोली और लिखने लगी। उसके बाल बार-बार माथे पर आ जाते थे और उसकी आखो को ढक देते थे। वह बेचैनी से सिर हिलाकर उन्हे पीछे की ओर झटक देती थी, मगर हाथ से नही हटाती थी।

दरवाजा चरमराया और अभियान-दल के सचालक कोर्चेवोई ने इल्या रोमानोविच का अभिवादन करने के बाद लडकी से पूछा –

"कहिए, डेरा जमा लिया है न, डाक्टर? लोग तो भले है न?"

लडकी उठकर खडी हो गयी और उसके चेहरे पर शर्म की लाली दौड गयी। उसने झटपट फाइल बन्द कर दी।

"सब कुछ ठीक-ठाक है, व्लादीमिर मिखाइलोविच! धन्यवाद!"

"तो यह डाक्टर है! भई, वाह!" इस बात से इल्या रोमानोविच को कुछ ऐसी खुशी हुई जिसे वे व्यक्त नही कर सकते थे। पहली बार उन्होने मन ही मन यह स्वीकार किया कि यद्यपि कोर्चेवोई के बर्ताव मे कुछ रुखाई अवश्य है, तथापि वह भला आदमी है।

"ठीक है, ठीक है, जम जाइये। यहा के जीवन की अभ्यस्त हो जाइये," कोर्चेवोई ने मैत्रीपूर्ण ढग से मुस्कराते हुए कहा, "अगर किसी चीज की जरूरत महसूस हो, तो मुझसे कहियेगा।"

शीघ्र ही सब पुराने ग्राहक चले गये और कमरा खाली हो गया। सिर्फ लडकी ही मेज के गिर्द बैठी हुई खत लिखती रही।

"आपको मेरी वजह से रुकना पड रहा है न?" इल्या रोमानोविच की ओर देखते हुए उसने एक अपराधी की भाति कहा।

"नही, नही, अभी दफ्तर बन्द करने मे एक घण्टे की देर है," उन्होने उत्तर दिया। "कोई चिन्ता न करे।"

"मै बहुत देर नही लगाऊगी।"

लडकी ने जब खत लिखना बद किया तो डाकखाना बद करने का समय हो चुका था। कुर्बान अपने अफसर की वक्त की पाबन्दी का आदी था, इसलिए उसने अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिए खासना शुरू कर दिया था। उस समय लडकी ने लिखे हुए कागजो का एक मोटा-सा पुलिन्दा इल्या रोमानोविच की ओर बढाते हुए कहा—

"यह लीजिए, मेरा पत्र! लिफाफे मे तो यह आयेगा नही।"

इल्या रोमानोविच ने पुलिन्दे को अपने हाथ मे लेकर उसके वजन का अनुमान लगाया।

"यह तो बुक-पोस्ट से भेजा जायेगा," उन्होने अपना फैसला सुना दिया।

इल्या रोमानोविच ने एक साफ कागज लिया, पुलिन्दे को अच्छे ढग से रोल किया, कागज को उसके गिर्द चिपकाया और हथेली से जरा दबा दिया।

"कृपया, पता लिख दीजिए।"

लडकी ने बडे-बडे और गोल अक्षरो मे यह पता लिखा "गेग्रोर्गी सेम्योनोविच कजार्त्सेव, मार्फत पोस्टमास्टर, मास्को–६।" इसके नीचे उसने एक मोटी-सी लकीर खीची और अभियान-दल का पता और अपना नाम "नीना अलेक्सेयेव्ना शेवेल्योवा", लिखा।

इस दिन इल्या रोमानोविच बहुत खुश-खुश घर लौटे और उन्होने सीटी तक बजाने की कोशिश की।

"क्या कोई नयी मुसीबत आ गयी है, इल्यूशा?" सदेह की नजर से पति को देखते हुए पत्नी ने पूछा।

इल्या रोमानोविच ने बहुत ध्यान से पत्नी की ओर देखा और यह प्रश्न पूछकर उसे आश्चर्यचकित कर दिया–

"तुम्हारी तबीयत कैसी है? कही कोई दर्द-वर्द तो नही?"

"हे भगवान! तुम तो अच्छी तरह से जानते हो कि इन पिछले पद्रह वर्षो मे मै एक बार भी बीमार नही हुई।"

"बडे दुख की बात है " इल्या रोमानोविच ने धीरे से कहा।

"क्या मतलब ?"

"अरे नही, मेरा ऐसा-वैसा मतलब नही था," उन्होने बौखलाते हुए कहा। "मै यह कहना चाहता था कि अभियान-दल के लिए एक डाक्टर भी भेजी गयी है।"

* * *

नीना शेवेल्योवा पाच दिन के बाद फिर हरे काउण्टर के सामने दिखायी दी। उसके नाम कोई पत्र नही आया था। इल्या रोमानोविच ने अपनी सीट से जरा उठते हुए मानो माफी मागने के अन्दाज मे कहा –

"आपने जो खत भेजा था, वह आज पहुचा है।"

लडकी की त्योरी चढ गई, उसने अटपटे ढग से होठो पर जबान फेरी और चुपचाप वहा से चली गयी।

इल्या रोमानोविच उसे देखते हुए झल्लाकर बोले – "यह तो बात भी नही करना चाहती ! और मै समझा था "

वे वास्तव मे क्या समझे थे, यह तो स्वय उन्हे भी स्पष्ट नही था। वे मन ही मन खीझ उठे। अकारण ही कुर्बान को समय पर पत्र पहुचाने के घिसे-पिटे विषय पर एक और भाषण सुनना पडा।

पाच दिन बाद नीना शेवेल्योवा फिर डाकखाने मे ग्रायी ग्रौर उसने इल्या रोमानोविच के हाथ से ग्रपना खत लगभग छीन ही लिया। उस समय इस बूढे व्यक्ति की बाछें खिल गयी।

वह खिडकी के पास जाकर छोटे-छोटे पृष्ठो को जल्दी-जल्दी पढने लगी। वह लगातार ग्रपने होठो पर जबान फेरती हुई ग्रधिकाधिक उदास होती जा रही थी। इल्या रोमानोविच टकटकी बाधकर उसे देख रहे थे। उन्हे पत्र लिखने वाले पर गुस्सा ग्रा रहा था –

"वह ग्रगर जरा ग्रौर बडा खत लिख देता तो उसका क्या बिगड जाता। इस बेचारी ने मोटा-सा पुलिन्दा लिख भेजा था ग्रौर उसने जवाब मे छोटे-छोटे कुछ पृष्ठ ही लिखे हैं।"

पत्र पढने के बाद नीना खिडकी की ग्रोर मुडी। इल्या रोमानोविच ने उसके दुख को ग्रनुभव किया ग्रौर हल्की-सी सास छोडी।

ग्राखिर वह सिर झटककर खिडकी से दूर हट गयी। पोस्टमास्टर की ग्रोर तनिक भी ध्यान न देते हुए वह फिर से मेज पर बैठ गयी ग्रौर जल्दी-जल्दी खत का जवाब घसीटने लगी।

"वह ग्राज फिर ढेर सारे कागज काले करेगी," इल्या रोमानोविच ने सोचा ग्रौर ग्रपनी ग्रादत के मुताबिक मूछो

पर ताव दिया। "जाने उस बाके ने किस बात से इसका मन दुखाया है ?"

नीना शेवेल्योवा दो महीने तक हर पाच दिन बाद डाकखाने मे आती रही। वह हमेशा उस समय वहा आती जब इल्या रोमानोविच लॉरी द्वारा पहुचायी गयी डाक को छाटते होते। अब तक उन्होने जिम्मेदारी का अपना यह काम पूरा करते वक्त किसी को भी भीतर आने की इजाजत नही दी थी। मगर एक दोपहर को नीना ने बद दरवाजे पर दस्तक दी। इल्या रोमानोविच की इस कडी चेतावनी के बावजूद कि बाहर के लोगो को अन्दर आने की इजाजत नही है, नीना ने आग्रह किया –

"यदि शेवेल्योवा के नाम कोई पत्र हो, तो कृपया दे दे।"

इल्या रोमानोविच उलझन मे पड गये, उन्होने इधर-उधर नजर डाली, अपनी कमीज ठीक की और कुर्बान की अवहेलना करते हुए दरवाजा खोल दिया।

"क्षमा कीजिए," नीना मिनमिनायी, "मगर मुझे खत की सख्त ज़रूरत है, बहुत सख्त जरूरत है "

"जरा रुकिए," इल्या रोमानोविच ने बुदबुदाकर जल्दी से उत्तर दिया और उन रस्सियो को खोलने लगे जिनसे पत्रो के पुलिन्दे बधे हुए थे। कुर्बान तो यह देखकर भौचक्का-सा रह गया।

नीना शेवेल्योवा पत्र लेकर चली गयी। इल्या रोमानोविच अपनी मेज पर उलटी-पलटी और बिखरी-बिखरायी पत्रो की ढेरियो को कई मिनट तक एकटक देखते रहे।

"हे भगवान!" अपना सिर हिलाते हुए उन्होने कहा। वे पचास सालो से काम की सफाई के लिए मशहूर रहे थे। उन्हे यह विश्वास ही न हो रहा था कि इस तरह की गडबडी उन्होने खुद अपने हाथो से ही कर दी है।

नीना शेवेल्योवा के नाम नियमित रूप से पत्र आते और वह उसी प्रकार नियमित रूप से उत्तर देती। हा, अब वह पहले से कम कागज रगती, उसकी आखो मे दुख की छाया अधिक गहरी हो गयी थी और वह पहले की तरह ही उदास दिखायी देती थी।

इल्या रोमानोविच का कई बार यह पूछने को मन हुआ कि बहुत फासले पर बैठा हुआ वह घृणित कजार्त्सेव किस तरह से उसके मन को ठेस लगा रहा था। उन्होने चाहा कि जीवन की सनको के बारे मे एक बूढे व्यक्ति के नाते अपने विचारो की चर्चा करके नीना का मन हल्का करे, मगर ऐन वक्त पर वे यह सोचकर चुप रह जाते—

"बडी परवाह पडी है उसे मेरी सहानुभूति की! वह मुझे एक अटपटा-सा खूसट समझेगी और सो ठीक भी होगा।"

अपना मन हल्का करने के लिए अन्त मे उन्होने अपनी पत्नी से नीना की चर्चा की। डाक्टर नीना की परेशानियो की

असम्बद्ध कहानी सुनने के बाद अनास्तास्या वसील्येव्ना ने पूरे विश्वास के साथ कहा—

"मामला बिलकुल साफ है, इल्यूशा। वह प्रेम-जाल मे फसी हुई है।"

"यह तो प्रेम नही, खासा मजाक है," इल्या रोमानोविच ने गुस्से मे कहा। "प्रेम करनेवालो को एक दूसरे का पत्र पाकर खुशी होनी चाहिए। कम से कम मै तो ऐसा ही समझता हू।"

"तुम्हे इस चीज का बहुत तजरबा नही है, इल्यूशा," पत्नी ने मुस्कराकर कहा, "तुमने तो मुझे कभी एक पत्र भी नही लिखा।"

"हो क्या हुआ?" उन्होने गर्म होते हुए कहा। "हमारे अलग होने का कभी अवसर ही नही आया। पर यदि ऐसा होता, तो "

"अब तो ऐसा अवसर आने से रहा," पत्नी ने दुखी होते हुए इल्या रोमानोविच को टोका और फिर कुछ देर तक चुप रहने के बाद कहा—"शायद वह यहा नही आना चाहता।"

"वह बहुत घटिया किस्म का आदमी है!" इल्या रोमानोविच बोले। "उसकी तो लिखावट मे भी घटियापन की झलक मिलती है। बायी ओर को कुछ झुकी हुई लिखावट है उसकी।"

एक सप्ताह बाद अनास्तास्या वसील्येव्ना का अनुमान सत्य सिद्ध हो गया।

एक और पत्र भेजते हुए नीना ने लिफाफे के पिछली ओर यह और लिख दिया—"फिर भी मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हू!"

इल्या रोमानोविच की अनचाहे ही इन शब्दो पर नजर पड गयी। वे देर तक छत को ताकते रहे और सध्या समय घर लौटकर उन्होने अपनी पत्नी से इसकी चर्चा की।

"वह उसको प्यार करती है और उसकी याद मे तडपती है," पत्नी ने आह भर कर कहा। "तुम मर्द लोग इस बात को नही समझ सकते!"

* * *

जाडे मे कुर्बान ने हरे काउटर वाले कमरे मे एक अगीठी लाकर रख दी। वह दिन भर उस मे लकडिया झोकता रहता। डाकखाने मे आनेवाले लोग अब देर तक वहा रुके रहते, खुशी से चटखारे भरते और अपनी ठिठुरी हुई उगलियो को गर्माते।

मगर इल्या रोमानोविच अब न तो उन्हे रोकते-टोकते और न ही वहा से हटाने की जल्दी करते। उन्होने भूगर्भशास्त्रियो के दल के लोगो को दो श्रेणियो मे बाट दिया था। एक श्रेणी मे थे "दयालु लोग" और दूसरी श्रेणी मे

"साधारण लोग"। दयालु लोगो मे वे उनकी गिनती करते थे जिन्होने उनके सामने नीना के प्रति आदर प्रकट किया था या उसकी तरफ ध्यान दिया था।

बूढे पोस्टमास्टर ने बरमाई करने वाले मिस्त्री क्रिनीत्सा को दयालु लोगो की सूची मे सबसे ऊपर जगह दी। एक दिन डाकखाने मे ही उसकी नीना से भेट हुई तो वह खुलकर मुस्कराया और उसने झट से अपनी जेब मे हाथ डाला।

"मै तो हर जगह आपको ढूढता रहा हू, डाक्टर। पुडियो के लिए धन्यवाद। अब मुझे बुखार से निजात मिल गयी है। यह लीजिये "

मोटर के तेल से सने हुए हाथ से उसने अपनी जेब मे से एक अजीब-सी और रग-बिरगी टॉफी निकाली।

"यह क्या है?" नीना ने सदेहपूर्वक उसकी चौडी हथेली की ओर देखकर पूछा।

"टॉफी " बरमाई करनेवाले मिस्त्री ने बुदबुदाकर उत्तर दिया।

"आप तो मुझे बिल्कुल बच्ची समझते है!" नीना हस दी, "और इसके अलावा आपकी यह टॉफी कुछ पिघल गयी है "

इस घटना के फौरन बाद इल्या रोमानोविच क्रिनीत्सा से घुल-मिलकर बाते करने लगे। जब उन्हे यह मालूम हुआ

कि क्रिनीत्सा उन्ही के इलाके का रहनेवाला है तो उन्होने उसे फौरन अपने घर चाय पीने की दावत दी।

इल्या रोमानोविच ने सुना कि भू-मानचित्रक रुब्त्सोव को लू लग गयी थी और नीना शेवेल्योवा के इलाज से ही उसकी जान बची थी। रुब्त्सोव ने नीना को गुलदस्ता भेंट किया था। इल्या रोमानोविच के लिए यह बात काफी थी। उन्होने रुब्त्सोव को उसके माथे पर लटकनेवाले बालो के गुच्छे और उसकी गुस्ताख आखो के लिये क्षमा कर दिया। इतना ही नही, उन्होने उसे किसी प्राविधिक पत्रिका का अगले छ महीनो के लिए आर्डर देने का वचन तक दिया। उस पत्रिका का नाम बहुत टेढा सा था।

नीना शेवेल्योवा के नाम अब देर से पत्र आने लगे। वह भी पहले की अपेक्षा कम पत्र लिखती, लगातार बहुत से दिन रेगिस्तान मे गुजारती, डाक्टरी निरीक्षण करती और टीके लगाती रहती।

इसी बीच यह अफवाह फैली कि अभियान-दल ने अपना काम खत्म कर दिया है और वह शीघ्र ही गाव से रवाना हो जायेगा।

इल्या रोमानोविच को शुरू मे तो इस खबर पर विश्वास ही न हुआ। वे बेचैन हो गये—"यह असम्भव है! वे सब के सब अचानक इस तरह यहा से नही जा सकते!"

मगर अफवाह सच निकली। अभियान-दल का सचालक कोर्चेवोई ही सबसे पहले विदा लेने के लिए आया।

अब भी अप्रैल का महीना था। अपनी पहली भेट की भाति उसने इस बार भी अपनी चाद को रूमाल से पोछा और आख से इशारा करके कहा—

"लीजिए, हमने तो बोरिया-बिस्तर गोल कर लिया, इल्या रोमानोविच! अब आप अधिक चैन से रह सकेगे।"

इल्या रोमानोविच की जबान तक यह बात आती-आती रह गयी कि अब तो आप लोगो से कुछ लगाव हो गया था और आपके जाने के बाद गाव बिल्कुल सूना हो जायेगा। मगर इसके विपरीत उन्होने अस्पष्ट ढग से बडबडाते हुए और कुछ खीझ के साथ यह कहा—

"आपकी यात्रा शुभ रहे!"

"अभियान-दल के सदस्यो ने आपके प्रति आभार प्रकट करने का निर्णय किया है, इल्या रोमानोविच," कोर्चेवोई ने कहा। इतना कहकर कोर्चेवोई ने अपना थैला खोला और उसमे से सुनहरे हाशियेवाला एक मोटा-सा कागज निकाला। "इतने बढिया ढग से कार्य सम्पन्न करने के लिए हम आपको यह मान-पत्र भेट करते है। इसे भेट करने के लिये तो एक विशेष समारोह होना चाहिए था, मगर अफसोस वक्त नही है। यह लीजिए!"

कोर्चेवोई ने इल्या रोमानोविच की हड्डीली उगलियो को जोर से दबाया और बाहर इन्तजार करती हुई कार की ओर जल्दी से बढ गया।

बरमाई करनेवाले बडे मिस्त्री क्रिनीत्सा ने विदा होते समय पूछा –

"चेर्नीगोव मे जाकर मरने का इरादा है या मिट्टी यही ठिकाने लगेगी ? "

"अभी मैंने तय नही किया," इल्या रोमानोविच ने ईमानदारी से जवाब दिया। उन्होने बरमाई करनेवाले मिस्त्री के इस अटपटे सवाल का जरा भी बुरा नही माना।

अभियान-दल के सभी सदस्य विदा लेने और इल्या रोमानोविच के स्वास्थ्य की शुभकामना करने के लिये आये। बुजुर्ग पोस्टमास्टर ने अन्यमनस्कता से सभी को विदा दी। उनकी नजर लगातार दरवाजे पर लगी रही। नीना शेवेल्योवा महीने भर से डाकखाने मे नही आयी थी। इसी बीच, जब वह रेतीले टीलो के आस-पास धूल फाकती फिर रही थी, उसके नाम पाच पत्र आ चुके थे।

वह उस दिन डाकखाने मे आयी जब अतिम मोटरे और ट्रके गाव से रवाना हो रही थी।

हमेशा की भाति इल्या रोमानोविच अपनी सीट से जरा ऊपर को उठ गये और उसका अभिवादन करने के बजाय उसे आश्चर्य से एकटक देखते रह गये। अब उसकी आखो

मे पहले वाली उदासी का नाम-निशान भी नही था। उसकी आखो मे साफ तौर पर खुशी चमक रही थी। धूल से अटे-अटाये और उसकी टोपी से बाहर निकले हुए लाल बालो के छोटे-छोटे घुघराले लच्छे हवा मे लहरा रहे थे।

उसकी बगल मे अभियान-दल का हवाबाज मीशा विखोर खडा था जो अजीब ढग से अपनी टोपी को हाथ मे फिराये जा रहा था। इल्या रोमानोविच इस हवाबाज के बारे मे सिर्फ इतना ही जानते थे कि उसके नाम शतरज-सम्बन्धी एक पत्रिका आती थी।

हवाबाज स्पष्टत गम्भीर और रोबदार सूरत बनाये रखने की कोशिश कर रहा था, मगर फिर भी उसके भरे हुए होठो पर खुशी को व्यक्त करती हुई मुस्कान झलक उठती थी।

नीना शेवेल्योवा ने अपने पत्रो के पतो को ध्यान से देखा, लापरवाही से चार पत्रो को मसल डाला और पाचवा पत्र विखोर की ओर बढाते हुए कहा—

"लो, पढो! मा का खत है।"

"बाद मे, नीना," हवाबाज ने फटी-सी आवाज मे उत्तर दिया। "लॉरी निकल जायेगी।"

"तो खेल खत्म हो गया," इल्या रोमानोविच के दिमाग मे यह बात कौध गयी।

"आपके पत्र किस पते पर भेजे जाये?" इल्या रोमानोविच ने पूछा।

"अब खत आयेगे ही नही!" लडकी ने लापरवाही से जवाब दिया। "चलो, भाग चले, मीशा!"

जब उन्होने दरवाजा खोला तो सूरज की बडी-सी किरण डाकखाने मे घुस आयी। आखिरी बार डाक्टर शेवेल्योवा के सिर पर कत्थई शोला-सा चमक उठा। बाहर मोटर का इजन गडगडाया। इल्या रोमानोविच काउण्टर के पीछे अपनी सीट पर बैठे न रह सके और बरबस उठकर ओसारे मे आ गये।

लॉरी धूल का बादल उडाती हुई धीरे-धीरे चल दी। इल्या रोमानोविच को नीना दिखाई न दी। वह लॉरी के केबिन मे बैठी हुई थी।

इल्या रोमानोविच सीढियो पर बैठ गये और धूल के बादल मे लिपटी जाती वीरान सडक को देखते हुए जवानी की बेदर्दी के बारे मे सोचने लगे – "हा, क्रिनीत्सा ने यदि यह पूछा था कि मै कहा दफनाया जाऊगा तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नही है। लगता है कि अब मेरा चलने का वक्त आ गया है "

वे सोच मे ही डूबे हुए थे कि किसी की अप्रत्याशित और जोरदार आवाज ने उन्हे चौका दिया –

"क्या हालचाल है, बडे मिया?"

एक नाटा और फुरतीला-सा व्यक्ति मोड मुडकर सामने आया और उसने इल्या रोमानोविच के हाथ मे एक कागज थमाते हुए कहा –

"यह लीजिये, भूमि-सुधार के एक्सकवेटर-मशीन केन्द्र का पता। हमारा मुख्य कार्यालय इसी गाव मे होगा। मै शीघ्र ही आपसे फिर मिलूगा!"

यह नाटा व्यक्ति बहुत ही हडबडी मे था, मगर इल्या रोमानोविच ने सीधे खडे होते हुए उसकी आस्तीन थाम कर कहा –

"जरा अन्दर चलिये। मुझे यह मालूम करना है कि आपके दल मे कितने लोग होगे।"

निकोलाई वोरोनोव (जन्म १६२६)—मेधावी युवा लेखक। उराल में जन्म हुआ और वही रहते है। कारीगरो के व्यावसायिक शिक्षालय और युवा कामगारो के स्कूल में शिक्षा पाकर साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया।

इस सग्रह में कहानीकार की एक सबसे अधिक प्रसिद्ध कहानी 'ख़ज़ाची' को स्थान दिया गया है।

निकोलाई वोरोनोव
ख़ज़ांची

१

काम पर पहुचने की जल्दी मे बैरक के बरामदे मे इधर-उधर दौडती-धूपती लडकियो के जूतो, ऊचे बूटो तथा फेल्ट बूटो की खट-पट बन्द हो चुकी थी। जिस कमरे मे सीमा रहती थी उसकी खिडकी के पाले से ढके हुए शीशे पर नीलिमा ग्रा गई थी ग्रौर भोर की हल्की-हल्की रोशनी छन रही थी।

सीमा गर्म बिस्तर से निकलना नही चाहती थी। रात भर मे कमरा बिल्कुल बर्फ हो गया था, खिडकी की सिटकिनियो पर पाले की परत जम गई थी। सीमा ने अलार्म घडी की मिनटवाली सूई पर नजर डाली और सोचने लगी कि कम्बख्त वक्त कितनी बेदर्दी से उडता चला जा रहा है। एक हफ्ते बाद वह छब्बीस वर्ष की हो जायेगी, जवानी बीतती जा रही है, मगर जीवन की नाव किसी किनारे नही लगी सीमा ने गहरी सास ली, कम्बल उतार फेका और ठण्डी दरी पर नगे पैर रख दिये।

सीमा कधे पर तौलिया डालकर बरामदे मे आई। गुसलखाने का फर्श पोछा जा चुका था और सफाई करनेवाली मौसी लीजा ने गीले झाडन को चूल्हे के करीब सूखने के लिये डाल दिया था।

"नमस्ते," सीमा ने सस्नेह कहा।

"क्या करू नमस्ते को, अपने लिये तो वही मुसीबत है!" मौसी लीजा ने फर्श पर साफ कपडा फेकते हुए कहा। "फिर उसी तरह फर्श पर पानी गिराया जाता है ताकि मुझे चैन की सास न मिले। आप तो मजे से बिस्तर मे घुसी रहती है और मै सफाई करती रहती हू।"

"अब बस भी कीजिये, मौसी लीजा। अगर पानी गिराऊगी तो खुद ही साफ भी कर दूगी। इस मे देर ही कितनी लगती है?"

"तो मै अपना साज-सामान तुम्हे सौपे जाती हू!" सफाई करनेवाली ने कुछ ऐसे अन्दाज मे यह बात कही मानो उसके झाड-पोछ के चिथडे मखमल के हो।

"यह बात है, तो खुद ही साफ कीजियेगा," सीमा इतना कह कर मुह हाथ धोने लगी। उसने कोशिश की कि फर्श पर पानी न गिरे।

सीमा ने मौसी लीजा की बातो का बुरा नही माना। उसे उसकी बहुत-सी बातो की ओर ध्यान न देने की आदत हो गई थी। बेचारी मौसी लीजा दिन-दिन भर फिरकी की तरह चक्कर खाती हुई काम करती रहती थी फर्श रगडती, कमरो की सफाई करती, कपडे धोती, रफू करती और अपने बच्चो के लिये खाना पकाती (वे चार थे और वह उन्हे "अपना झुण्ड" कहती)। फिर दो-चार पैसे और कमा लेने के लिये आधी-आधी रात तक शॉल और मेजपोश बुनती रहती।

"दूसरी बैरको मे लोग बर्फ से ही मुह हाथ धो लेते है," मौसी लीजा बडबडाती गई, "मेरी बैरक मे महारानिया रहती है, इन्हे झरने का पानी चाहिये!"

"दूसरी बैरको मे टकियो मे पानी जम गया है और वे फट गयी है। इसलिये वहा के लोग बर्फ से मुह हाथ धोते है," गालो पर साबून मलते हुए सीमा ने इत्मीनान से जवाब दिया।

"मगर मेरे यहा पानी नही जमता, बेडा गर्क जस्ते की बनी इस शैतान की नानी का!"

"लाते ही बाट दूगी।"

"हा, बाट देना," मौसी लीजा ने अनुमति दे दी। "लडकियो की तो तीन दिन से आलू-रोटी पर ही गुजर हो रही है। जवानी की उम्र ठहरी, सोच-समझ तो पास नही फटकती। उडाती है रुपये को! कही पेस्टरिया उड रही है, कही रेशमी कपडे पहने जा रहे है, लेकिन पेट मे चूहे दौडा करते है। फिर भी इन चीजो के बिना काम थोडे ही चलता है! मौज उडाना और बढिया कपडा पहनना तो हर कोई चाहता है," वह चुप हो गई और फिर बोली—"अच्छा धधा है तेरा—लोगो की जेबे गर्म करके जी खुश करती है। कोई मेरे जैसा काम थोडे ही है "

ठड जरा कम हो गई थी। बर्फ के गाले गिरने लगे थे—बिखरे-बिखरे, फूले-फूले और भारी-भारी। सीमा को बर्फबारी अच्छी लगती थी, मगर आज इससे उसका मन खुश नही हुआ। कारण कि उससे नदी के दूसरे किनारे पर स्थित निर्माण-कार्यालय का रास्ता बर्फ से ढक सकता था।

सीमा काम शुरू होने के वक्त से पन्द्रह मिनट पहले ही अकाउट्स के दफ्तर मे पहुच गई। सभी कर्मचारी अपनी सीटो पर बैठे हुए थे। बडे अकाउटेंट सीदोर इल्यीच ने सीमा के अभिवादन के उत्तर मे चुपचाप सिर हिला दिया और पहले से अधिक जोर से गिनतारे की गीटिया बजाने लगा।

सीमा ने गैराज मे टेलीफोन किया और ओवरकोट पहने-पहने ही लोहे की तिजोरी के पास अपने आड लगे कोने मे बैठकर मोटर का इन्तजार करने लगी। ठाली बैठे-बैठे उसने अकाउट्स के दफ्तर की तख्तो की बनी, बेरग और उखडे-उखडाये प्लास्टर वाली दीवारो पर नजर डाली। तभी उसके दिमाग मे यह ख्याल आया—जब बिजलीघर का निर्माण पूरा हो जायेगा तो बाये किनारे की इस बेढगी-सी इमारत को गिरा दिया जायेगा और उसकी जगह कई मजिलोवाला सुन्दर मकान बन जायेगा या फौवारोवाला बगीचा बना दिया जायेगा। नये नगर के वासियो मे से कभी कोई यह नही जान पायेगा कि किसी वक्त यहा अकाउट्स का ऊल-जलूल-सा दफ्तर था। लोगो को इजीनियरो और नक्शे बनानेवालो, फोरमैनो और विख्यात एक्सकवेटर तथा बुलडोजर चालको और कक्रीट बिछानेवालो के नाम याद रहेगे, मगर खजाचियो और हिसाब-किताब रखनेवालो को कभी कोई प्यार से याद नही करेगा

"तो यह है हकीकत हमारे अच्छे पेशे की! हम तो लोगो की सेवा करनेवाले है और बस!"

रात भर आराम करके ताजादम हुए अकाउट्स के कर्मचारी बडे रग मे अपने पेन घिस रहे थे और गिनतारे की गीटियो को खटखटा रहे थे। शायद इसीलिये कि सीमा ठाली बैठी थी, उसे अचानक ऐसे लगा कि उसके सहयोगी जो कुछ कर रहे थे, वह कुछ खास महत्त्वपूर्ण काम नही था।

कमरे मे कोजूरकिन नाम का ड्राइवर आया। वह बायें तट के ड्राइवरो मे से सबसे अधिक धीरे और सम्भालकर मोटर चलाता था। उसके बारे मे प्रसिद्ध था – "उस से खतरा नही हो सकता।" सीमा ने अपने कोट के बटन बन्द किये और अखबारी कागज मे लिपटी थैली को बगल मे दबाया। चलते वक्त, दस्ताने पहनते हुए उसने सोचा – अभी सीदोर इल्यीच अपनी आदत के मुताबिक कहेगा कि रुपये का मामला है, जरा सम्भलकर। मगर बडा अकाउटेट पहले की भाति नीरस ढग से और बहुत ध्यान से गिनतारे पर गीटिया बजाता रहा। ऐसा लगता था मानो उसे अपने इर्दगिर्द की सुध-बुध ही नही थी। सीमा ने अनचाहे अपनी चाल धीमी कर दी और दरवाजे के पास पहुचकर, हैरान होते हुए पीछे की ओर मुडकर भी देखा। तब सीदोर इल्यीच ने सिर झुकाये हुए ही कहा –

"जरा ध्यान से, रुपये का मामला है।"

२

सीमा अठारह वर्ष की हुई ही थी कि उसने शादी कर ली (उसकी बहन ओल्गा के शब्दो मे – शादी मे कूद पडी)। उसका पति ल्योन्या गोन्त्सोव कद मे उससे छोटा था। इसलिये सीमा नीची एडी के जूते पहनने लगी ताकि उसके पुरुष

सुलभ अभिमान को ठेस न लगे। ल्योन्या अपने माथे के दाग को छिपाने के लिये बालो का एक तिरछा लच्छा माथे पर गिराये रहता। बेशक उसकी नजर बहुत ही अच्छी थी तथापि जब वह सडक पर जाता होता तो चश्मा चढा लेता। वह मानता था कि चश्मा पहनने से आदमी के चेहरे पर रोब-दाब आ जाता है और वह खूब जचने लगता। सीमा प्यार से मजाक करती हुई कहती –

"ल्योन्या, ओ ल्योन्या! चश्मा पहनकर तो तुम महापडित लगते हो!"

"सच! महापडित?! यह तो अच्छी बात है!" ल्योन्या खुश होकर कहता। उसे इस बात का सन्देह तक न होता कि सीमा मजाक कर रही है। वह आश्चर्य की हद तक दूसरो पर विश्वास करता था।

सीमा अपने पति के गालो को हाथो मे लेकर ठोडी के छोटे-से गढे को चूमती और कहती –

"जाने तुम मे क्या है, सुन्दर नही हो, नाटे हो, मगर फिर भी मुझे दुनिया मे सबसे अधिक प्यारे हो। सबसे अधिक!"

वे एक तग-से कमरे मे रहते थे, जिस मे नीला दीवारी कागज मढा था और जो जगह-जगह से उभरा हुआ था। एक कोने मे बर्च की लकडी की दराजदार अलमारी और दूसरे मे किताबो की छोटी-सी अलमारी रखी थी। खिडकी

के पास लिखने की छोटी-सी मेज घुसेड दी गई थी। दराजदार अलमारी, किताबो की छोटी-सी अलमारी और लिखने की मेज को उन्होने कशीदा की हुई चीजो, कासे की राखदानियो, जाम-प्यालो और शतरज के मोहरो से सजा रखा था। पलग के ऊपर मेडोलिन लटका रहता था। ल्योन्या बहुत सम्भाल कर मेडोलिन को कील से उतारता, दिल की शक्ल वाली लाल मिजराब को उगली पर चढाता और बजाने लगता। सीमा पास बैठ जाती और उसके कधे पर सिर रख देती। उसकी आखे मस्ती मे झिप-सी जाती और वह नगमा सुनकर झूमती रहती। उसे लगता कि वह और ल्योन्या हमेशा इसी तरह जवान रहेगे और उनके जीवन मे सदा खुशियो के फूल खिले रहेगे।

शामो को, जब ल्योन्या को नौजवान मजदूरो के स्कूल मे पढने नही जाना होता था, वे अक्सर सडको पर चहल-कदमी करते रहते। सीमा बढिया फ्राक पहन लेती और अपने पति की मशीनी तेल से खुरदरी हुई हथेली मे अपना पतला-सा हाथ रख देती और वे धीरे-धीरे स्थानीय समाचारपत्र के छापेखाने, घडियो की मरम्मत की दूकान और उस मकान के आस-पास मटरगश्ती करते रहते जहा दरवाजे पर शीशे की प्लेट लगी थी और जिस पर यह लिखा था—"दतसाज अ० इ० एन्श, २ मजिल, फ्लैट २४"। राहगीर इनके पास से गुजरते हुए उन्हे कधा मारते, उनको घूरते, मगर वे

दोनो किसी की ओर भी ध्यान न देकर अपनी ही दुनिया मे खोये हुए चलते जाते।

ल्योन्या को अपनी इज्जत का बहुत ध्यान रहता था। वह चाहता था कि सीमा अच्छे से अच्छे कपडे पहने। वेतन मिलने पर वह हर बार उसके लिये कपडे का कोई टुकडा, टोपी या ऐसी ही कोई दूसरी, सब से सुन्दर और महगी चीज, जो उसे दूकान मे नजर आ जाती खरीद लाता। पैसे वह काफी कमा लेता था। चुपचाप रहनेवाला ल्योन्या कारखाने का सब से अच्छा हरफन मौला खरादी था। अपने लिये वह योही कोई बेकार-सी चीज – टाई, बनियाइन, या रूमाल खरीद लेता। जब सीमा उसे डाटती कि मेरी सज-धज पर क्यो रुपया बरबाद करते रहते हो और खुद पुराना-धुराना और खस्ताहाल सूट पहने फिरते हो तो ल्योन्या मजाकिया ढग से जवाब देता –

"तुम तो मुझे योही प्यार करती हो, मगर यदि तुम पुराने फ्राक पहनोगी तो मेरे प्यार का नशा घडी भर मे हवा हो जायेगा। समझी, ऐसा हवाई प्यार है मेरा!"

उनकी खुशी की यह दुनिया एक साल से कुछ अधिक समय तक कायम रही। दुर्भाग्य के एक ही झटके ने उसे खण्ड-खण्ड कर डाला। हुआ यह कि जून महीने की एक सुबह को ल्योन्या की वर्कशॉप के नौजवान लोग नगर से बाहर सैर-

सपाटे के लिये गये। ये दोनो भी उनके साथ थे। झुटपुटे के वक्त वापिसी हुई। कुछ देर पहले बारिश हुई थी और इसलिये सडक फिसलनी हो गई थी। लॉरी फिसल गई और बाईं ओर का पिछला पहिया गढे मे जा गिरा। बाईं ओर बैठे हुए सभी लोग बाहर जा गिरे। सीमा और दूसरे लोगो को छोटी-मोटी चोटे आई या हड्डी के जोड उखड गये, मगर ल्योन्या की कनपटी एक बडे-से सफेद पत्थर से जा टकरायी। उसके कधे पर लटकती हुई मेडोलिन सही-सलामत रही और लाल मिजराब बाहर निकलकर अपने मालिक के गतिहीन हाथ के पास अनाथिनी की भाति जा गिरी।

अस्पताल मे पहुचाये जाने पर ल्योन्या को होश आया और उसने पूछा कि सीमा जिन्दा है या नही। उसने सीमा को सिसकते हुए यह कहते सुना–"हा, मेरे प्यारे, मै जिन्दा हू।" इसके बाद वह फिर बेहोश हो गया।

आधी रात को ल्योन्या चल बसा।

घर की हर चीज सीमा को ल्योन्या की याद दिलाती। वह मा-बाप के घर आ गई और उसी छोटे-से बगलवाले कमरे मे रहने लगी जहा वह शादी से पहले रहती थी। कभी-कभी उसे ऐसी अनुभूति होती मानो वह इस कमरे को छोड-कर कभी गई ही नही थी।

इर्दगिर्द के सभी लोग या तो काम करते थे या पढते थे। सीमा का पढने को मन नही हुआ और जो सब से पहले

हाथ मे आ गई, उसने वही नौकरी कर ली। वह परचून की दूकान पर खजाची का काम करने लगी।

काम के बाद सीमा घर लौटती, खाना खाती और अपने बगलवाले कमरे मे चली जाती। वह बहुत सोती, घटो योही लुटी-लुटी-सी बिस्तर पर पडी रहती, पागलो की तरह पढती और पुस्तकालय के अतिरिक्त न कही आती न जाती। छुट्टी के दिन, जब काम पर न जाना होता, तो वह बाल तक न सवारती। मा-बाप ने उसे "अक्ल देने, रास्ते पर लाने" की बहुत कोशिश की, मगर बेसूद। आखिर उन्होने भी यह समझ लिया कि वह दीन-दुनिया के काम की नही रही और हाथ झटक कर रह गये।

दिल का अथाह दर्द और दुख सीमा के चेहरे पर झलकने लगा। जान-पहचान के लोगो के लिए वह गहरे चिन्तन और गम्भीर सौन्दर्य की जीती-जागती मूर्ति बनकर रह गई। शायद इसी कारण या इसलिए कि वह बिल्कुल तरुणी दिखाई देती थी, बहुत-से लोग उसके आगे-पीछे फिरे। डिपो से माल लानेवालो और उन ग्राहको ने उस पर डोरे डालने की कोशिश की जिन्हे कही जाने की जल्दी नही होती थी। मगर सीमा को न तो वे लोग अच्छे लगे जिन्होने प्यार की हल्की-फुल्की आख-मिचौनी खेलनी चाही और न ही वे मर्द रुचे जो उसकी भलाई की गम्भीर भावना लेकर आये।

बरस बीतते गये, मगर ल्योन्या की तस्वीर दिल पर ज्यो की त्यो ही अंकित रही। उसकी याद सब से प्यारी याद बनकर रह गई, बचपन और पढाई के जमाने की यादो मे घुल-मिलकर दिल मे गहरी उतर गई।

सीमा के वैधव्य का छठा वर्ष चल रहा था जब उसने सहसा यह अनुभव किया कि जिस छोटे-से कमरे मे वह रहती है, वह उसे काटने को दौडता है और उसकी नपी-तुली तथा निरुद्देश्य जिन्दगी बोझ बन गई है।

इसी वक्त उसकी बडी बहन ओल्गा और उसके पति वसीली वसील्येविच को, जो मीगेचाऊर मे काम करते थे, साइबेरिया के एक बडे पनबिजलीघर के निर्माण-स्थल पर भेजा जा रहा था। साइबेरिया जाते वक्त ओल्गा और उसके पति ने बुजुर्गो से विदा लेने के लिये इधर का "रुख" कर लिया। उस समय सीमा ने उन्हे राजी कर लिया कि वे उसे भी साथ ले जाये।

वे जब निर्माण-स्थल पर पहुचे तो काम आरम्भ हुआ ही था। नदी के दोनो किनारो पर बडे-बडे और मटमैले रग के तबू खडे हो गये थे। तबुओ के करीब ही बढइयो ने लकडी की बैरके खडी कर दी थी। वहा एक्सकवेटरो के डोल चमकते रहते थे—कोई रेत खोदने मे लगा था, तो कोई उस जगह की काईदार मिट्टी पर काम कर रहा था जहा जहाजो के आने-जाने के योग्य नहर बनायी जानेवाली थी।

नदी चौडी थी और बीच मे रेतीला उभॉर था मानो कोई शक्ति गहराई से नदी को ऊपर की ओर फेक रही हो। बजरे खीचनेवाले स्टीमर अपने लाल-लाल पहिये घुमाते हुए और पानी की तेज धार काटते हुए आगे बढते जाते और बजरो को घाट पर पहुचा देते। इन बजरो मे माल की ढुलाई करनेवाले ट्रक, लकडी के शहतीर, इस्पाती तार, खराद तथा ईंट-पत्थर लदे होते।

निर्माण-स्थल पर पहुचकर सीमा का मन हुआ कि वह अपने जीवन को नया मोड दे ताकि अतीत की किसी स्मृति की कोई छाया बाकी न रहे। मगर उसे कोई दिलचस्प और मन को लुभानेवाला काम न मिला। कर्मचारियो के विभाग के सचालक को जैसे ही यह मालूम हुआ कि सीमा पाच सालो तक काउटर पर काम कर चुकी है, उसने उसे झटपट बाये किनारेवाले दफ्तर की बीमार पडी हुई खजाची की जगह काम करने के लिये भेज दिया। सीमा ने लाख समझाया कि मैंने दूकान के काउटर पर काम किया है और अकाउट्स से मेरा कोई वास्ता नही, मगर उसका समझाना-बुझाना बेकार रहा।

बीमार खजाची जल्द ही स्वस्थ हो गई, उसने एक भू-मानचित्रक से शादी कर ली और उसी के साथ एक अभियान मे चली गई जिसे एक नये पनबिजलीघर के लिये जगह ढूढनी थी। रवाना होने के पहले वह अकाउट्स के

दफ्तर मे आई और उसने लोहे की तिजोरी पर यह लिख दिया – "अलविदा, खजाची के कक्ष" और खिडकी पर ये शब्द लिखे – "कम्युनिज्म मे खजाची नही रहेगे"। खिडकी पर लिखे हुए शब्दो पर सीदोर इल्यीच की उसी दिन नजर पड गई। उन्हे बहुत गुस्सा आया और उन्होने खुद अपने हाथो से इन शब्दो को मिटा दिया। काली तिजोरी पर लिखे हुए शब्द उन्हे नजर न आये और वे पहले की तरह साफ तौर पर नजर आते रहे। सीमा के लिये यही शब्द इस आशा की किरण बन गये कि कभी तो उसे भी यहा से छुट्टी मिलेगी, वह इस ऊब पैदा करनेवाले काम को छोडकर बुलडोजर चलाने-वाली मरूस्या रेप्किना के समान कोई अधिक दिलचस्प और बाइज्जत काम कर सकेगी।

सीमा ने कई बार सीदोर इल्यीच को यह समझाने की कोशिश की कि कर्मचारी विभाग के सचालक आपके पुराने मित्र हैं। आप उन पर दबाव डालकर, उन्हे कह-सुनकर मुझे कोई दूसरा काम दिलवा दें। और कुछ नही तो बरमाई का काम ही सही। मगर अकाउटेंट के कान पर जू ही नही रेगी।

"देखो सेराफीमा," उन्हे पूरा नाम लेना पसन्द था, "गिनतारे की गीटिया बजाते हुए मेरा सारा जीवन बीत गया है। वैसे मै बचपन से ही कुत्ते सधाने के सपने देखता आया हू।"

सीमा ने जान-बूझ कर बुरा काम करने की कोशिश की ताकि उसे अकाउट्स के दफ्तर से निजात मिले। मगर सीदोर इल्यीच ने इसकी ओर ध्यान नही दिया। सीमा की जगह लेनेवाला कोई दूसरा आदमी नही था, इसलिये काम के प्रति उसकी उपेक्षा से भी कुछ हासिल नही हुआ।

वसीली वसील्येविच को बाये किनारे का मुख्य मिस्त्री नियुक्त किया गया और ओल्गा को निर्माण-स्थल के मोटर-व्यवस्था-कार्यालय की सचालिका की नौकरी मिली। सीमा उन्ही के साथ रहने लगी।

वसीली वसील्येविच सुबह ही काम पर जाता और अन्धेरा होने पर घर लौटता, थका-हारा और गुस्से से भुनभुनाता हुआ। वह पलग की टेक पर बरसाती फेकता, दहलीज पर कीचड और कक्रीट से लथपथ बूट उतारकर पटकता और हुक्म देता हुआ सीमा से कहता—

"धो डालो!"

वह खाने की मेज पर जा बैठता और इस बात का इन्तजार करते हुए कि सीमा कब खाना लाती है, दोनो मुट्ठियो मे कनपटिया दबाकर चौडे माथेवाला सिर थामे बैठा रहता। वसीली वसील्येविच कभी यह न पूछता कि खाना तैयार है या नही। पल दो पल मेज के गिर्द बैठने के बाद वह नाक-भौ सिकोड कर दाये-बाये पहलू बदलने लगता और अपनी हर चेष्टा से यह जाहिर करने लगता कि सीमा का

देर लगाना उसे अखर रहा है। अच्छी तरह से खा-पीकर वह जोर से बर्तनो को दूर हटाता, उठता और सीमा की ओर देखे बिना ही आदेश देता —

"बिस्तर लगा दो!"

सीमा चुपचाप बिस्तर लगाती और चूल्हे की ओर चली जाती। वह पलग पर फैल जाता, जो भी हाथ मे आ जाती, अलमारी मे से वही किताब निकाल लेता, कुछ पक्तिया पढता और सो जाता।

सीमा को वसीली वसील्येविच का यह नवाबी रग-ढग बुरा लगता, मगर शुरू मे तो उसने इसे चुपचाप सहा और बाद मे भी विरोध करने मे शर्म और झेप अनुभव हुई। उसने सोचा — "बहुत थक जाता है बहनोई मेरा, काम उसका बहुत कठिन और जिम्मेदारी का है, मेरे जैसा तो नही "

ओल्गा ने न केवल पति के इस बुरे बर्ताव की ओर ध्यान न दिया, बल्कि खुद भी वैसे ही करने लगी। फर्क सिर्फ इतना था कि उसने अपनी हरकतो पर प्यार का पर्दा डाल लिया था। सुबह को वह बडे इत्मीनान से बिस्तर पर पडी रहती और खुशामदी आवाज मे उसे धीरे-से कहती —

"प्यारी सीमा, गुडिया रानी, जल्दी से नाश्ता नही तैयार कर लोगी? जरा कर लो तैयार, मेरी चिडिया!"

अगर पलग के नीचे मैले कपडो का ढेर लग जाता तो

वह सीमा को बाहो मे भर लेती और मानो शिकायत करती हुई कहती –

"आज फिर दर्द से सिर फटा जा रहा है और यहा ढेर-से कपडे पडे है गर्दन पर धोने के लिये! मेरी अच्छी बहन, मेरा नीचे पहनने का जोडा और वसीली के दो-चार कपडे नही धो डालोगी क्या?"

सीमा समझ जाती थी कि बडी बहन के इस अनुरोध, इस मिन्नत-समाजत का वास्तव मे यह अर्थ है कि वह सारे मैले-कुचैले कपडे धो डाले। एक-दो बार तो वह पूरी शाम कपडे धोने के टब पर झुकी रही और मन ही मन ओल्गा के खुशामदी ढग को भला-बुरा कहती और अपनी इसलिये निन्दा करती रही कि मै इतनी नर्मदिल और दब्बू क्यो हू। उसके दिल मे रिश्तेदारो से अलग होकर तबू मे जा रहने की इच्छा अधिकाधिक जोर पकडती गई।

इस इच्छा की पूर्ति का वक्त भी जल्द ही आ गया। सदा की भाति बहन ने फिर कपडे धो डालने का अनुरोध किया। सीमा ने पलग के नीचे जमा हुए कपडो के ढेर मे से जान-बूझ कर सिर्फ थोडे-से कपडे धोये। ओल्गा ने जब यह देखा तो उसके होठ सिकुड गये, बायी भौह ऊपर को चढ गई और दायी नीचे को हो गई। उसने बिगडते हुए कहा –

"तुम अपने को समझती क्या हो? लुक्सेमबर्ग की राजकुमारी! अगर दो-चार कपडे और धो डालती तो क्या तुम्हारे

हाथ टूट जाते? परचून की दूकान से निकाल कर यहा लाये, अच्छा काम दिलवा दिया और यह इनाम दे रही हो तुम हमारी भलाई का!"

सीमा दुखी होती हुई बहन की बात सुनती रही। उसे आशा थी कि घडी भर को तो उसकी आत्मा उसे धिक्कारेगी। उसे यह उम्मीद नही थी कि वह एकदम अन्याय करने पर आयेगी।

घृणा, पीडा, क्रोध और खीझ—सीमा ने एक ही वाक्य मे इन सभी चीजो को इस तरह कह डाला—

"ओह, तुम! इन्सान कहती हो अपने को!"

आध घण्टे के बाद उसने सूटकेस मे अपना सारा सामान रख लिया, ल्योन्या का मेडोलिन, जिस पर सफेद गिलाफ चढा हुआ था, अपने कधे पर लटका लिया और बैरक से बाहर आ गई। बरामदे मे उसके दिमाग मे यह ख्याल आया—"क्या लौट जाना ठीक नही होगा?" तभी हवा का झोका आया जिसने उसके चेहरे, वक्षस्थल और केशराशि को लपेट लिया। सीमा ने दिल मजबूत किया और बरामदे से बाहर भाग गई।

लगभग एक महीने तक सीमा तबू मे ही रही और बुलडोजर-चालिका मरूस्या रेप्किना के साथ एक ही पलग पर सोई। इसके बाद उन दोनो को नई बैरक मे एक छोटा-सा कमरा दे दिया गया।

झगडे के बाद सीमा की अपनी बहन ओल्गा से केवल एक बार ही निर्माण-स्थल के कार्यालय मे मुलाकात हुई। उन्होने एक साथ सिर झुकाकर एक दूसरी का अभिवादन किया और फिर इस तरह अलग हो गई मानो बहुत मामूली जान-पहचान हो।

३

यद्यपि इस मार्ग की लीक पर बहुत कम बर्फ पडी हुई थी तथापि यहा मोटर अक्सर फिसलती रही। उसके टायर इतने घिस गये थे कि उनके उभरे हुए किनारे नजर नही आते थे, उनका केवल अनुमान लगाया जा सकता था।

जमी हुई नदी पर से गुजरनेवाला मार्ग, चीड वृक्षो का छोटा-सा जगल और कुछ उठा हुआ मैदान, पीछे छूट गये। 'पोबेदा' गाडी बर्च वृक्षो के रुड-मुड झुरमुट के बीच से गुजरती हुई एक दोमजिले बगले के सामने जाकर रुकी। निर्माण-स्थल का कार्यालय अस्थायी रूप से वही स्थित था।

बगले के दरवाजे तक जाने के थोडे-से फासले मे ही सीमा की शॉल, उसका कोट और फेल्ट बूट बर्फ से लथपथ हो गये। बरामदे मे दाये किनारेवाली खजाची बेल्स्काया से उसकी भेंट हो गई। उसने सीमा को बताया कि बडा खजाची अभी तक रुपया लेकर बैंक से नही आया है। वह उसे अकाउट्स और परिवहन के कार्यालयो के बीच पडी हुई बेंच के पास ले गई।

बेल्स्काया के शरीर से इत्र की हल्की खुशबू के लहरे आ रहे थे। वह बडे रग मे थी और उसने खजाची के आने मे देर होने की बात ऐसे कही मानो यह कोई खुशखबरी हो। बहुत पहले ही सीमा का इस बात की ओर ध्यान गया था कि बेल्स्काया घर से दूर रहकर बहुत खुश रहती है। शायद उसका अपने पति से बहुत मन नही मिलता था और बच्चे मुसीबत लगते थे।

"प्यारी सीमा, तुम्हे एक बढिया बात बताऊ?" उसने कहा।

"हा, बताओ।"

"हमारे दाये किनारे के इजीनियरिग विभाग का लुहार स्तूपिन तो तुम पर लट्टू हो गया है।"

"मै तो उसे नही जानती।"

"परिचय करा दू?"

"नही, रहने दो।"

बेल्स्काया का अनुरोध सीमा को बुरा लगा, उसका मन हुआ कि वहा से उठकर चली जाये, मगर बडे खजाची के आने तक उसे किसी न किसी तरह वक्त तो काटना ही था।

मोटर-व्यवस्था-कार्यालय से अचानक ओल्गा बाहर निकली। उसने सीमा को देखा तो खिल उठी। उसने उसे गले लगाया और पीठ थपथपायी। फिर उसने दरवाजे की ओर इशारे करते हुए कहा—

"जाओ, अन्दर जाकर बैठो। मै अभी आती हू।" ओल्गा के बढिया जूतो की एडिया बरामदे मे ठक-ठक बजने लगी।

सीमा को भी बहन से मिलकर खुशी हुई, मगर उसके दफ्तर मे जाकर बैठने को उसका मन न हुआ। उसे डर था कि उनकी भेट से जो मैत्रीपूर्ण भावना पैदा हुई है, वह कही खो न जाये। ओल्गा जरूर कॉटेज मे दिये गये अपने नये फ्लैट की डीग हाकेगी और मुझे अपने पास आकर रहने को कहेगी। मै इन्कार करूगी तो वह नाराज हो जायेगी और पिता जी को खत लिखने की धमकी देगी। पिता जी को अभी तक यह मालूम नही था कि दोनो बहनो के बीच अन-बन हो गई है।

सीमा बाहर ओसारे मे चली गई। हवा ने अपने पख समेट लिये थे और गहरी नीरवता मे अधिकाधिक घनी बर्फ गिर रही थी। खुश्क बर्फ के गाले अब अधिक फूले-फूले थे और हल्की-हल्की सरसराहट पैदा कर रहे थे।

"रग-ढग कुछ अच्छा नही है," दरवाजा खोलते हुए कोजूरकिन ने कहा। "ओह, कितने जोरो से बर्फ पड रही है! सभी जगह बर्फ के ढेर लग रहे है। हम वापिस नही जा सकेंगे   हमे रास्ता साफ करने के लिए उनसे कहकर बुलडोजर या ट्रैक्टर भिजवाना चाहिये। अगर वे ऐसा नही करेगे तो रात यही काटनी होगी।"

"आप क्यो नही कहते जाकर, मोटरो की सचालिका से!"

"बेहतर यही है कि आप जायें। आखिर वह आपकी बहन है।"

सीमा ने सोचा कि अगर मै नही जाती हू तो यह समझ जायेगा कि ओल्गा से मेरी खटपट हो गयी है। इसके अलावा पारिवारिक झगडे के कारण लोगो की तनख्वाह भी तो नही रुकनी चाहिये।

ओल्गा टेलीफोन का चोगा हाथ मे लिये हुए स्विच बोर्ड के सामने खडी थी। उसने सिर हिलाकर सीमा को एक कुर्सी पर बैठने का सकेत किया। किसी महत्वपूर्ण विचार मे खोयी हुई वह गभीर हो गयी थी। उसकी पक्षाकृति (जिसे उसका पति यूनानी कहता था) बर्फ से ढकी हुई खिडकी की पृष्ठभूमि मे बहुत ही साफ तौर पर नजर आ रही थी। सीमा ने एक अजीब-सी भावना अनुभव करते हुए ओल्गा को बहुत ध्यान से देखा, उसे लगा कि गहरा लाल ऊनी फ्राक पहने हुए यह सुन्दर नारी उसकी बहन नही थी, बल्कि यह कि बेल्स्काया की तरह उसकी भी उससे मामूली जान-पहचान थी।

"देखो सीमा," आखिर ओल्गा ने कहा, "मै अपनी और वसीली की भर्त्सना करती रहती हू। हमने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नही किया था मगर तुमने भी तो दिल को बात लगा ली। हम लोग काम पर बहुत थक जाते थे, इसलिये ऐसा "

"क्या केवल इसीलिये!" सीमा कहे बिना न रह सकी।

"क्या मतलब तुम्हारा?" ओल्गा की बायी भौह हमेशा की भाति ऊपर को चढ गयी।

"चलो हटाओ, हम इस वक्त इसकी चर्चा नही करेगी, मै किसी दूसरे काम से तुम्हारे पास आयी हू। रास्ते को साफ करने के लिये कोई ट्रैक्टर या बुलडोजर अवश्य ही भेजा जाना चाहिये, वरना मै रुपया लेकर नदी के दूसरे किनारे पर नही जा सकूगी।"

"मै यह जानती हू, मगर इस समय इस सिलसिले मे कुछ भी नही कर सकती। ट्रैक्टर पत्थरो की खान की ओर गया हुआ है। वहा एक के बाद एक भारी ट्रके रास्ते मे ही रुकती जा रही है। बर्फ साफ करने वाली दोनो मशीने मरम्मत के लिये गयी हुई है। रही बुलडोज़र की बात, तो निर्माण-स्थल का सचालक भी उसे नदी पार भेजने का खतरा मोल नही लेगा। बर्फ की सतह बहुत ही पतली है।"

सीमा परिवहन के कार्यालय से बाहर आ गयी। खिडकी के पास पडी हुई बैंच पर बैठकर वह खुद अपने को ही दोषी ठहराती हुई यह सोचने लगी कि बेकार ही बहन के पास अपनी प्रार्थना लेकर गयी। मुझे खिजाने के लिये ओल्गा बायें किनारे की ओर जानेवाली सडक पर जरूर देर से ही बर्फ साफ करने की मशीन भेजेगी। कोई न कोई बढिया बहाना वह हमेशा ही गढ लेती है। कह देगी कि काम की दृष्टि से इस सडक

की कोई महत्ता नही है, क्योकि यह केवल हल्की-फुल्की कारो के ग्राने-जाने के लिये इस्तेमाल होती है।

सीमा ग्रपने विचारो मे उलझी हुई थी कि तभी उसे चीड के पतले से दरवाजे मे से ग्रोल्गा की ग्रावाज सुनायी दी। सीमा की विचार-शृखला टूटी। ग्रोल्गा ऊची ग्रावाज मे ग्रधिकारपूर्ण ढग से कह रही थी—

"मै दाये किनारे से बोल रही हू। बाये किनारे के मोटरो के सचालक को बुलवा दो। कौन? साथी सेवेर्त्सेव बोल रहे है? क्या हाल है? बर्फ साफ करनेवाली मशीनो की क्या ग्रभी तक मरम्मत हो रही है? ऐसे ही जवाब की उम्मीद थी मुझे! ग्रापके इन ढीले-ढाले तरीको से मै तग ग्रा गयी हू, ग्रब इस तरह की ढील-ढाल खत्म हो जानी चाहिये। ट्रैक्टर जैसे ही लौटे, वैसे ही उसे यहा भेज दीजिये। ग्रापको यह तो समझना चाहिये कि चार सौ लोग वेतन की प्रतीक्षा कर रहे है!"

सीमा ने सुना तो उसे ग्रपने कानो पर विश्वास न हुग्रा। "बहुत खूब ग्रोल्गा! ग्रौर इधर मै सोच रही थी कि वह मुझसे बदला ले रही है। ग्रोह कितनी बुद्धू हू ग्रभी मै!"

"बडा खजाची ग्रा गया है," कोजूरकिन ने फुसफुसाकर सीमा को सूचना दी।

बडा खजाची, उचायकिन, झुके कधो वाला ग्रादमी था। वह ग्रपनी ग्रनामिका मे सोने की ग्रगूठी पहने रहता था।

"क्या केवल इसीलिये!" सीमा कहे बिना न रह सकी।

"क्या मतलब तुम्हारा?" ओल्गा की बायी भौह हमेशा की भाति ऊपर को चढ गयी।

"चलो हटाओ, हम इस वक्त इसकी चर्चा नही करेगी, मै किसी दूसरे काम से तुम्हारे पास आयी हू। रास्ते को साफ करने के लिये कोई ट्रैक्टर या बुलडोजर अवश्य ही भेजा जाना चाहिये, वरना मै रुपया लेकर नदी के दूसरे किनारे पर नही जा सकूगी।"

"मै यह जानती हू, मगर इस समय इस सिलसिले मे कुछ भी नही कर सकती। ट्रैक्टर पत्थरो की खान की ओर गया हुआ है। वहा एक के बाद एक भारी ट्रके रास्ते मे ही रुकती जा रही है। बर्फ साफ करने वाली दोनो मशीनें मरम्मत के लिये गयी हुई है। रही बुलडोजर की बात, तो निर्माण-स्थल का सचालक भी उसे नदी पार भेजने का खतरा मोल नही लेगा। बर्फ की सतह बहुत ही पतली है।"

सीमा परिवहन के कार्यालय से बाहर आ गयी। खिडकी के पास पडी हुई बैंच पर बैठकर वह खुद अपने को ही दोषी ठहराती हुई यह सोचने लगी कि बेकार ही बहन के पास अपनी प्रार्थना लेकर गयी। मुझे खिजाने के लिये ओल्गा बायें किनारे की ओर जानेवाली सडक पर जरूर देर से ही बर्फ साफ करने की मशीन भेजेगी। कोई न कोई बढिया बहाना वह हमेशा ही गढ लेती है। कह देगी कि काम की दृष्टि से इस सडक

की कोई महत्ता नही है, क्योकि यह केवल हल्की-फुल्की कारो के ग्राने-जाने के लिये इस्तेमाल होती है।

सीमा ग्रपने विचारो मे उलझी हुई थी कि तभी उसे चीड के पतले से दरवाजे मे से ग्रोल्गा की ग्रावाज सुनायी दी। सीमा की विचार-शृखला टूटी। ग्रोल्गा ऊची ग्रावाज मे ग्रधिकारपूर्ण ढग से कह रही थी—

"मै दाये किनारे से बोल रही हू। बाये किनारे के मोटरो के सचालक को बुलवा दो। कौन? साथी सेवेर्त्सेव बोल रहे है? क्या हाल है? बर्फ साफ करनेवाली मशीनो की क्या ग्रभी तक मरम्मत हो रही है? ऐसे ही जवाब की उम्मीद थी मुझे! ग्रापके इन ढीले-ढाले तरीको से मै तग ग्रा गयी हू, ग्रब इस तरह की ढील-ढाल खत्म हो जानी चाहिये। ट्रैक्टर जैसे ही लौटे, वैसे ही उसे यहा भेज दीजिये। ग्रापको यह तो समझना चाहिये कि चार सौ लोग वेतन की प्रतीक्षा कर रहे है!"

सीमा ने सुना तो उसे ग्रपने कानो पर विश्वास न हुग्रा। "बहुत खूब ग्रोल्गा! ग्रौर इधर मै सोच रही थी कि वह मुझसे बदला ले रही है। ग्रोह कितनी बुद्धू हू ग्रभी मै!"

"बडा खजाची ग्रा गया है," कोजूरकिन ने फुसफुसाकर सीमा को सूचना दी।

बडा खजाची, उचायकिन, झुके कधो वाला ग्रादमी था। वह ग्रपनी ग्रनामिका मे सोने की ग्रगूठी पहने रहता था।

बेशक वह सीमा को अच्छी तरह जानता था, फिर भी उसने उसका परिचय-पत्र मागा, उसके नाम और कुलनाम की अच्छी तरह से जाच की और तभी काउटर पर नोटो की गड्डिया रखनी शुरू की। नोटो की गड्डिया हरी रेखावाली चौखानी कागजी कतरनो मे लिपटी हुई थी। सीमा को दो लाख इकसठ हजार पाच रूबल मिले। उसने रुपये अपनी थैली मे डाले और बैठकर ट्रैक्टर का इन्तजार करने लगी। सभी बातो की खबर रखनेवाले कोजूरकिन ने खबर दी कि ट्रैक्टर कोई एक घटा पहले इस तरफ को रवाना हो चुका है, मगर अभी तक इसका कोई अता-पता नही। वेतन के बारे मे लोगो के एक के बाद एक टेलीफोन आ रहे थे। किसी ने तो बडे खजाची को कुछ खोटी-खरी भी सुना दी। बडे खजाची ने झटपट चोगा नीचे रख दिया, उसके होठ बाहर को निकल आये और वह बडबडाया—

"बहुत गर्म मिजाज का आदमी है यह! इस मे भला मेरा क्या दोष है? मौसम ही खराब है!"

अकाउट्स के दफ्तर मे बैठे-बैठे सीमा को ऊब अनुभव होने लगी। रुपयो की थैली हाथ मे लिये हुए वह बाहर निकल आई। कोजूरकिन किसी नौजवान से बातचीत कर रहा था जो भेड की खाल का छोटा कोट पहने था। उसकी पोस्तीन की टोपी आखो तक झुकी हुई थी। उसकी काली आखो मे दिलेरी और शरारत की चमक थी। कोट की जेबो से ऊनी

दस्ताने बाहर झांक रहे थे। सीमा को देखकर नौजवान चुप हो गया। ड्राइवर सीमा के पास आया।

"यह आदमी पूछ-ताछ कर रहा था कि हम कौन है, कहा से आये है और क्या हम जल्दी ही वापस जानेवाले है। कार मे कितने लोग है। मुझे तो यह गडबड आदमी दिखाई देता है। अच्छा यही है कि आप रुपया लेकर इसके नजदीक मत घूमिये। बहुत मुमकिन है कि यह आदमी रुपये की थैली झपट ले, आखो मे मुट्ठी भर तम्बाकू झोक दे और नौ दो ग्यारह हो जाये! बहुत आसान बात है यह!"

"बेकार डराओ नही, कोजूरकिन।"

सीमा ने खिडकी के निकट होकर बाहर देखा। खिडकियो के शीशो पर सफेद बर्फ जोरो से बज रही थी। कही पास ही बर्फ के झक्कड मे दिखाई न देनेवाला कोई वृक्ष ऐसे जोर से झकझोरा गया मानो दो टुकडे होकर रह गया।

बर्फ से लथपथ बूढा चौकीदार बरामदे मे आया, उसने अपने कपडे झाडे और सिगरेट लपेटने लगा।

"यह भी कोई तूफान है? योही कहने भर को है! तूफान तो आते थे हमारे वक्तो मे वाह, वाह! अब वह बात ही नही रही!"

सीमा ने मोटर-व्यवस्था-कार्यालय मे झाककर देखा। ओल्गा परेशान थी—ट्रैक्टर का कही कुछ पता नही था। वह या तो रास्ते मे ही रह गया था या कही बर्फ मे धस गया था।

सीमा ने कोजूरकिन से कहा कि आओ हम पैदल चलते है, रास्ते मे कही ट्रैक्टर मिल जायेगा। मगर कोजूरकिन ने साफ इन्कार कर दिया—

"मै कार को यहा छोडकर नही जा सकता। जब तक रास्ता साफ नही होगा, मै यहा से नही हिलूगा।"

सीमा ने केटीन मे बेल्स्काया को जा ढूढा और उससे भी यही बात कही।

"तुम क्या पागल हुई हो!" सैडविच खाते हुए बेल्स्काया ने चिल्लाकर कहा। "हम तो मामूली खजाची है, कोई ध्रुवी हवाबाज थोडे ही है। अगर सडक साफ नही होगी तो यही रात गुजारेगी।"

"आप को लोगो का ध्यान नही है," सीमा ने धीरे से कहा।

"एक आदमी सभी के दर्द की दवा नही हो सकता," बेल्स्काया ने दूसरा सैडविच शुरू करते हुए बहुत दृढता के साथ कहा।

सीमा इस बगले के ओसारे मे आ कर खडी हो गई। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह क्या करे। चमकती बर्फ भवर बनाती हुई सीढियो पर सिर पटक रही थी, सीमा की आखो और नाक मे घुसी जा रही थी, उसके गालो को काटे दे रही थी। वह ठड से और यह सोचकर सिहरी जा रही थी कि अगर यहा यह हाल है तो खुले मे हवा जाने कैसी तेज और तन को

काटती हुई होगी। दफ्तर मे आराम था, गर्माहट थी। उसका मन हुआ कि वही लौट जाये। मगर तभी उसे थकी-हारी मौसी लीजा की याद आयी। जाने इस वक्त वह क्या कर रही होगी? शायद बर्फ के तूफान को कोसती हुई बायलर गर्म कर रही होगी ताकि "महारानिया" घर आने पर चाय पी सकें। बेचारी अच्छे दिल की झगडालू औरत है! जाने अपने "झुण्ड" को खिलाने-पिलाने का उसने कुछ प्रबन्ध कर लिया या नही?

सीमा ने यन्त्रवत् अपनी थैली के बन्दो को कधे पर कस लिया, पीठ पर उसके बोझ को हिलाकर देखा और धीरे-धीरे सीढियो से नीचे उतर गई। मकान के कोने से तेज हवा का एक झोका आया और उसे झकझोर कर चला गया। कही गिर न पडे, यह सोचकर सीमा ने जल्दी से एक कदम आगे बढा दिया, फिर एक और कदम बढाया। इस तरह वह अहाते के फाटक को लाघ कर बाहर पहुच गई।

४

सख्त पाले के कारण बर्फ जमकर शीशे जैसी हो गई थी और उस पर पाव फिसलता था। छोटे-छोटे टीलो पर बर्फ की एक सख्त परत चढ गई थी। बर्च वृक्षो के झुरमुट मे साय-साय हो रही थी। बार-बार इसके बीच से तेज हवा

के झोके ऐसा शोर मचाते हुए गुजर रहे थे मानो समुद्र की बडी-बडी लहरे तट से टकरा रही हो।

सीमा जब वहा पहुची, जहा जमीन जरा ऊपर को उठी हुई थी, तो उसे चलने मे और भी अधिक कठिनाई महसूस हुई। तेज हवा उसकी शॉल और कोट को चीरती जा रही थी और उसके छोर फडफडा रहे थे।

सीमा को इस बात की चिन्ता नही थी कि वह कही रास्ते से भटक जायेगी या ठड से ठिठुर कर रह जायेगी। उसे पूरा विश्वास था कि वह तूफान से मोर्चा ले लेगी – वह अभी जवान है, हाथो-पैरो मे खून की गर्मी है। उसे फिक्र तो इस बात की थी कि अगर रास्ते मे किसी बुरे आदमी से वास्ता पड गया, तो?

निर्माण-स्थल पर देश के हर कोने के आदमी काम करने के लिये आये हुए थे। उन मे बहुत-से अगर भले थे तो कुछ चोर और लफगे भी हो सकते थे। मर्दों के होस्टल मे कोई न कोई घटना होती रहती थी – आज एक चीज गायब है तो कल दूसरी। जाडे के शुरू मे जब सीमा को यहा पहुचे बहुत दिन नही हुए थे, खाने-पीने की चीजो की दूकान लूट गई थी और पहरेदार का खून कर दिया गया था।

सीमा बार-बार हवा के रुख की ओर पीठ कर लेती और बर्फ से जमे हुए अपने घुटनो को मलती। दो जोडे मोजे और गेटर भी बदन को चीरती हुई हवा के सामने कुछ काम

नही दे रहे थे। ऐसे ही वह जब एक बार रुकी तो उसे बर्फ मे कोई चीज हिलती-डुलती नजर आई। उसने कुछ देर इन्तजार किया और नजर जमाकर इस चीज को देखा। वह पहचान गई कि यह तो भेड की खाल का छोटा ओवरकोट पहने वही नौजवान था जिसे उसने कुछ देर पहले दफ्तर मे देखा था। वह घुटनो तक के फेल्ट बूटो की नोक से बर्फ उडाता और दृढ कदम रखता हुआ तेजी से बढा आ रहा था। फौरन कोजूरकिन के शब्द दिमाग मे घूम गये। इसके साथ ही उसकी टागे जवाब दे गईं और उसे अपने सारे बदन मे झुरझुरी महसूस हुई। उसने सोचा—"बस, अब मै मारी गयी!"

"उफ आखिर आ ही पकडा मैंने आपको!" नौजवान ने एक अजीब खुशी भरी आवाज मे चिल्लाकर कहा और अपने कोट की फूली हुई जेब को थपथपाया। शायद वह टटोलकर देख रहा कि चाकू कही गिर तो नही गया। "आप बुत बनी क्यो खडी है? पाव जम जायेंगे! ठड खा जायेगी!"

"मेरा मजाक उडा रहा है," सीमा ने घृणा से सोचा। "मेरी हत्या करने को तैयार हो रहा है और बात करता है ठड खा जाने की।"

इस हट्टे-कट्टे नौजवान के प्रति उसके दिल मे नफरत की गहरी भावना जाग उठी। उसने सोचा कि कितना बुरा है यह नौजवान जो मेहनत से जी चुराता है और मुझ औरत

की हत्या करके मजदूरो की तनख्वाह का पैसा अपनी ऐयाशी मे उडाना चाहता है।

सीमा तनकर सीधी खडी हो गई और उसने सिर आगे की ओर बढा दिया। वह इस डाकू को यह दिखाना चाहती थी कि मैं तुमसे जरा भी डरती नही हू, तुमसे नफरत करती हू। नौजवान अपनी फूली हुई जेब मे हाथ डाल कर जरा इत्मीनान से खडा हो गया।

"किस चीज का इन्तजार है? क्या बात है?" सीमा ने गुस्से से पूछा।

"आपका इन्तजार है," उसने बुदबुदाते हुए जवाब दिया। "इकट्ठे चलने मे ज्यादा मजा रहेगा।"

"इसका दिल काप गया है," सीमा ने सोचा। "इसका मतलब है कि अभी उसमे आत्मा नाम की कोई चीज बाकी है।"

सीमा ने उससे कहा कि वह अपने रास्ते चलता जाये। कहने के बाद उसे खुद भी आश्चर्य हुआ कि मुझ मे उसे इस तरह हुक्म देने की हिम्मत कहा से आ गई। नौजवान ने हैरत से अपने कधे झटके और आगे चल दिया। सीमा कुछ देर रुकी रही और फिर उसके पीछे-पीछे चल दी।

इस नौजवान की हर गतिविधि को ध्यान से देखते हुए सीमा को विश्वास हो गया कि इसकी नीयत अच्छी नही है। वह जरूर यह जानता है कि मैं बहुत बडी रकम लिये जा

रही हू। इसने जो मुझे चीड के वृक्षो के झुण्डो मे आकर पकडा है, यह कोई सयोग की बात नही है। मुझ पर चाकू से वार करेगा, घसीटकर कही जगल मे ले जायेगा और बर्फ मे दाब कर अपनी राह लेगा। बर्फ पिघलने पर ही किसी को मेरी लाश मिलेगी।

न जाने क्यो, सीमा के दिल मे यह ख्याल आया कि यह आदमी बचकर निकल नही सकेगा, पकडा जायेगा। वह लूट की रकम का दसवा हिस्सा भी न उडा पायेगा कि इसे धर दबा लिया जायेगा। निश्चय ही वह बचकर तो नही जा सकेगा। मगर आज मजदूरो को तो तनख्वाह नही मिल सकेगी। मौसी लीजा मेरा नाम ले लेकर न जाने क्या कुछ बुरा-भला कहेगी। उसे तो बाद मे ही इस बात का पता चलेगा कि सीमा की हत्या कर दी गई है। चीड के वृक्षो के झुण्डो मे मेरी लाश का पता तो लगते-लगते ही लगेगा। इस बीच शायद कुछ लोग तो यह भी सोचेगे कि मै रुपया लेकर रफूचक्कर हो गई। किसी ने भी तो नही देखा कि मै कब दफ्तर से निकली, किधर को गई।

सीमा के दिमाग मे यह बात भी आई कि वैसे तो मरने के बाद उसके लिये सभी कुछ बराबर होगा, मगर दुख इस बात का रहेगा कि जिन लोगो की खातिर मैने ऐसे भयानक तूफान मे रास्ता तय करने की ठानी, वही लोग मेरे बारे मे बहुत बुरी-बुरी बाते सोचेंगे।

हवा का रुख बदल गया था। हवा के झोके अब सामने की ओर से न आकर बगल से आ रहे थे। नौजवान की चौडी पीठ अब सीमा को हवा से न बचा सकती थी।

नौजवान अचानक रुका और झटके के साथ मुडा। सीमा एक कदम पीछे हट गई और उसने चिन्तित होते हुए अपना सिर ऊपर को उठाया। उसने चाहा कि वह उससे आखे चार करे और फिर एक बार उसके इरादे को डगमगा दे।

"अपने गाल मल लीजिये। आपकी नाक भी एक ओर से सफेद हो गई है," नौजवान ने खुशमिजाजी, यहा तक कि अपनत्व के ऐसे अन्दाज मे ये शब्द कहे कि सीमा के दिल से डर एकदम निकल गया।

"मै कैसी बुद्धू हू! एक भले आदमी के बारे मे सभी तरह की ऊटपटाग बाते सोच रही हू। वह भी केवल उस कायर कोजूरकिन की बातो के कारण!"

सीमा का मन हुआ कि अपने साथी से कोई अच्छी बात कहे। मगर उसे कुछ सूझा ही नही।

बर्फ के तूफान मे से कुछ दूरी पर चीड के वृक्षो की गहरी हरी रेखा झलक दिखाने लगी थी। सीमा बर्फ के एक ऐसे ढेर पर चढ रही थी जिसकी नोके निकली हुई थी। उसका पाव फिसला और वह गिर पडी। उसकी कोहनिया बर्फ की परत मे धस गईं। उसे सुनाई दिया कि थैली का एक बन्द

चटक कर टूट गया है। उसकी पीठ का भार एकबारगी धप-धप करने लगा और अधिक भारी हो गया।

सीमा ने हडबडाकर थैली को झटके के साथ पीठ पर से उतारा, पचास रूबल के नोटो की बाहर गिर गई एक गड्डी को फिर से उस मे ठोसा और थैली के टूटे हुए बन्द के सिरो को जोडने लगी। बन्द के सिरे पाले से सख्त हो गये थे और उसकी सुन्न हुई उगलियो मे से निकले जा रहे थे। बन्द के सिरो को गाठ लगाने की उतावली मे उसे अपने साथी का बिलकुल ध्यान नही रहा था। सहसा उसने अपने सिर के ऊपर उसकी आवाज सुनी—

"ढेरो-ढेर रुपया! जाहिर है कि आप खजाची है।"

सीमा के दिल मे बैठे हुए सन्देहो ने फिर से सिर उठाया। नौजवान उसके पास ही घुटनो के बल बैठ गया, उसने चुपचाप टूटा हुआ बन्द हाथ मे लिया, उसके सिरो को बढिया-सी गाठ लगाई और बन्दो को खीचकर उनकी मजबूती की तसल्ली कर ली। सीमा ने थैली की ओर हाथ बढाया, मगर नौजवान झटपट उछलकर खडा हुआ और उसने थैली को अपने कधे पर लटका लिया।

सीमा का मन हुआ कि चीखकर उससे कहे कि यह सरकारी रुपया है और उसे किसी दूसरे को सौपने का हक नही है। मगर अजनबी उसकी चिन्ता भापते हुए मुस्करा दिया मानो कह रहा हो कि फिक्र मत करो! वह लम्बे-लम्बे

डग भरता हुआ तेजी से आगे बढ गया। सीमा उछल कर खडी हुई और उसके पीछे-पीछे भागने लगी।

हवा और भी तेज हो गई थी। उसके पाव उखड-उखड जाते थे। सीमा ने चलते-चलते ही अपने घुटनो को हाथ लगाकर देखा। उसके मोजो और गेटरो पर बर्फ जमी हुई थी। उसे याद आया कि बन्द बाधते समय उसने बर्फ पर अपने घुटने टिका दिये थे। उसी वक्त बर्फ चिपक गई थी, वह पिघली थी और फिर से तह बनकर जम गई थी।

नौजवान पर अपनी नजर टिकाये हुए वह दौडती-दौडती अपने घुटनो को मलती जाती थी। किन्तु वे लगातार अधिकाधिक सुन्न होते जाते थे। फिर वह हवा की ओर पीठ करके खडी हो गई और अपने दस्तानो से हर घुटने को बारी-बारी से मलने लगी।

सीमा के घुटनो मे दर्द होने लगा और उसे अपनी टागो मे गर्मी महसूस हुई। सीमा को इस बात से खुशी हुई। वह घूमी, पर नौजवान कही नज़र न आया।

तूफान तो मानो मजाक उडाता हुआ सीटिया बजा रहा था। उसने इस नौजवान के फेल्ट बूटो द्वारा बनाये गये निशानो को भी मिटा दिया। सीमा ने हर दिशा मे दृष्टि दौडाई, मगर इस व्यक्ति को तो जैसे जमीन निगल गई थी। चारो ओर बर्फीले तूफान के उन्मादी बगूलो के सिवा और कुछ नही था। हवा मे बर्फ ऊची-ऊची लहरो की तरह उठती

थी और टीलो, उठी हुई जगहो और चढाइयो पर बगूले बनाती थी। सभी ओर तूफ़ान था, भयानक और असीम तूफ़ान

५

सीमा ने दौडना शुरू किया। उसकी आखो मे बर्फ के गाले घुस गये और आन की आन मे आसुओ मे बदल गये। वह रुकी, उसने दस्तानो से अपनी आखें साफ की और उचक्के को ढूढने की कोशिश की। किन्तु फिर से उसकी आखे भर आईं। उसके दिमाग मे विचार कौधा कि जब तक मै यहा खडी अपना समय बरबाद कर रही हू तब तक वह इतनी दूर निकल जायेगा कि मै उसे कभी नही पकड पाऊगी। वह अधाधुध दौडने लगी। कुछ ही देर बाद उसके फैले हुए हाथ चीड की कटीली शाखा से टकराये। अब उसने इस निर्मम सत्य को समझा कि वह रास्ता भूल गई है। उस नौजवान को ढूढ निकालने की आशा न खोते हुए वह वापस दौडी। उसकी ताकत जवाब देने लगी थी, मगर उस नवचन्द्राकार टीले का अभी तक कही नाम-निशान नही था जहा उसने अपने घुटने मले थे। सीमा ने यही सोचा कि हडबडी मे उसकी ओर मेरा ध्यान नही गया होगा। वह लौटी और फिर चीड के झुण्डो के बीच जा पहुची।

वह दूसरी दिशा मे मुडी, मगर टागो ने साथ न दिया।

वह कठोर और अनुभूतिशून्य बर्फ पर मुह के बल गिर पडी। गिरते समय दफ्तर के बरामदे का स्पष्ट चित्र उसकी आखो के सामने घूम गया। उसने देखा कि उसकी केबिन की खिडकी के सामने मजदूर रेल-पेल कर रहे है और चीड की गाठदार छत के नीचे सभी ओर तम्बाकू का धुआ फैला हुआ है।

इन मेहनती, खून-पसीना एक करनेवाले भले लोगो से मै कैसे आखे चार करूगी? क्या जवाब दूगी मै इस सवाल का कि रुपया कहा गया? सीमा यह बात साफ तौर पर समझ गई कि रुपये के बिना मै कभी उन्हे अपना मुह नही दिखाऊगी। यही रह जाऊगी, चीड के झुण्ड के बीच ही। जल्द ही पाले मे मेरा शरीर जम जायेगा, बर्फ की ढेरी हो जायेगा। यही हाल होना था मुझ सिरफिरी का!

सीमा को अपने पर तरस आया और वह बर्फ मे अपना सिर छिपाकर रोने लगी। उसे अपने पति की याद हो आयी। अगर ल्योन्या जिन्दा होता तो आज इस मुसीबत का मुह क्यो देखना पडता। वे अपने ही शहर मे सुख-चैन की बसी बजाते होते। शामो को ल्योन्या मेडोलिन बजाता या वे दोनो उन बीते दिनो की भाति ही बडी सडक पर चहलकदमी करते फिरते, मस्ती मे टहलते रहते।

किसी के मजबूत हाथो ने सीमा को ऊपर उठाकर खडा कर दिया। उसने आखें खोली तो भेड के पोस्तीन के छोटे ओवरकोट वाले उसी नौजवान को सामने पाया। रुपयो की

थैली पहले की भाति उसके कधे पर लटकी हुई थी। उसका चिन्तित और क्रोधपूर्ण चेहरा इस समय सीमा को दयालु और प्यारा भी लगा।

"तो आप यहा फसी पडी है! बहुत मुश्किल से ढूढ पाया हू आपको!"

"मै मै रास्ता भूल गई थी "

"मैने कहा तो था कि मेरे पीछे-पीछे चली आइये। कही पाला तो नही मार गया आपको? तो अब मेरा सहारा लीजिये और बस, चलिये यहा से!"

"नही, मै खुद "

"गोली मारिये अपनी इस नही को! जरा जल्दी-जल्दी कदम बढाइये। शरीर मे गर्मी आ जायेगी।"

नौजवान ने झिझके बिना सीमा को आगे की ओर धकेल दिया। वह तेजी से चलने लगी, मगर इससे उसे सन्तोष नही हुआ। वह और जल्दी करने के लिये शोर मचाने लगा—

"जरा बडे-बडे कदम उठाइये, खजाची जी! आप दफ्तर मे चूल्हे के सामने बैठी आग नही सेक रही है।"

नौजवान ने अपना गुलूबन्द उतारा, उसे सीमा के गले के गिर्द लपेट दिया और उसके कोट के कालर को भी बीच मे ही ले लिया। उसने मजाक करते हुए कहा—

"देखिये, वक्ती तौर पर दिया है।"

वे जिस तेज चाल से चल रहे थे, उससे सीमा का दम

याद ताजा करती है। बहुत सम्भव है कि उस मे ल्योन्या जैसा कुछ भी न हो, मगर वह इस व्यक्ति मे अपनी दिलचस्पी की सफाई देने के लिये अनजाने ही कुछ आधार ढूढ रही थी। वह इस परिणाम पर पहुची कि यही वह व्यक्ति है जिसकी उसे इतने अर्से से प्रतीक्षा थी। उसे याद आया कि नौजवान ने जिस रूमाल से मुह पोछा था, वह साफ नही था। इससे उसने यह निष्कर्ष निकाला कि वह—बिन ब्याहा है।

नदी के बीच मे पहुचे तो बर्फ साफ करनेवाला ट्रैक्टर मिला। वह अपने निशान छोडता और अगल-बगल बर्फ के टीले खडे करता हुआ बढा आ रहा था।

"इतनी देर क्यो कर दी?" सीमा ने चीखकर ड्राइवर से कहा।

ड्राइवर ने शीशे वाले केबिन का पट खोला और अफसोस जाहिर करते हुए हाथ झटक कर कहा—

"बेडा गर्क हो इस कम्बख्त का! इसका एक पुर्जा टूट गया था। सोचा कि रात यही गुजारनी पडेगी, लेकिन फिर जैसे-तैसे काम चल गया।"

अधेरा तेजी से गहराता जा रहा था। बर्फीली धुध की चादर पतली होती जा रही थी और जहा-तहा सफेद आकाश झलक दिखाने लगा था। बर्फ के झक्कड का जोर कम होता जा रहा था। बर्फ के ऊपर उभरे हुए जग लगे इस्पाती खम्भो की पात इसके थपेडो के जोर को कम कर रही

थी। ट्रेंच मे से गुजरती हुई शक्तिशाली लॉरियो की भयानक और ऊची घरघराहट सुनाई दे रही थी। नीची और दूर-दूर तक फैली पहाडी पर बसी बस्ती के घरो मे बत्तिया जगमग करने लगी थी।

सीमा के साथी ने सिगरेट खत्म की और बचा हुआ टुकडा दूर फेक दिया। बर्फ मे उसके बुझने के पहले हवा उस मे से एक बडी-सी चिगारी निकाल कर ले उडी। सीमा का मन सहसा यह सोचकर टीस उठा कि शीघ्र ही वे जुदा हो जायेंगे और यह अजनबी उसी तरह दुनिया की भीड मे खो जायेगा जैसे यह चिगारी बर्फ के बगूले मे गायब हो गई थी।

"किसके प्रति मै अपना आभार मानूगी?" सीमा ने लापरवाही से पूछा। वह अपनी यह जानने की उत्सुकता पर पर्दा डालना चाहती थी कि वह कौन है और कहा से आया है।

"मै निर्माण-स्थल पर काम करने के लिये आया हू," नौजवान ने उसी के अन्दाज मे जवाब दिया। "पेशे से एक्सकवेटर-चालक हू। सचालक को अपने आने की सूचना देने जा रहा हू। मेरा नाम मिखाईल है। कुलनाम सुन्दर तो नही, मगर बहुत चटपटा है—पेचेन्किन*। कहिये, आपको भुनी हुई कलेजी अच्छी लगती है न?"

---

*रूसी धातु 'पेचेन' से बना हुआ शब्द जिसका अर्थ है 'कलेजी'।—स०

"हा, अच्छी लगती है।"

"तो ठीक है!"

"एक्सकवेटर-चालक," सीमा ने सोचा। "मै हिसाब-किताब का झझट छोड दूगी और इसी के साथ एक ही एक्सकवेटर पर काम करूगी।"

"यहा रहने-सहने की कैसी व्यवस्था है?" मिखाईल ने पूछा।

"पुरुषो के होस्टल मे चारपाई मिल जायेगी।"

"अगर बीवी-बच्चो का साथ हो, तो?"

"क्या शादी करने का इरादा है?"

"इरादे से क्या मतलब है आपका? मै तो ढाई साल से विवाहित हू। मेरी पत्नी और बेटा शहर के रेलवे-स्टेशन पर इन्तजार कर रहे है। यहा मामला जमा कर मै उन्हे ले आऊगा।"

"ओ ह," सीमा ने खीच कर कहा। इस ख्याल से कि मिखाईल कही उसके दिल के भावो को ताड न जाये उसने झटपट यह और जोड दिया—"एक्सकवेटर-चालक के लिये तो अवश्य ही कमरे का इन्तजाम हो जायेगा।"

प्रबन्ध-कार्यालय से कुछ इधर ही वे रुक गये। नौजवान ने कहा—

"लीजिये, सभालिये अपनी दौलत! वरना लोग कुछ दूसरा ही मतलब समझेगे—आखिर रुपयो का मामला है।

हा, और लाइये मै अपना गुलूबन्द उतार लू। मेरी पत्नी बहुत ईर्ष्यालु है।"

सीमा मुस्करा दी और उसने थैली लेकर अपनी बाह मे लटका ली।

"नमस्ते! बहुत धन्यवाद आपको!"

"इसकी कोई जरूरत नही।"

सीमा ने चुपचाप उस के साथ हाथ मिलाया और प्रबन्ध-कार्यालय की ओर चल दी। कार्यालय के पासवाली बैरको मे से मजदूरो ने सीमा को देखा और कार्यालय की ओर भाग चले। भागते हुए वे अपनी पैडवाली जाकेटे पहनते गये। कोई दूसरा दिन होता तो शायद सीमा को यह सोचकर खुशी होती कि इन सब लोगो को मेरी जरूरत है, मगर इस समय उसने उदारता से केवल इतना ही सोचा – "मजदूर वर्ग के सब्र का प्याला छलका जा रहा है।"

मौसी लीजा ओसारे मे खडी थी। जैसे ही सीमा दरवाजे मे दाखिल हुई वैसे ही उसने मौसी लीजा को किसी अन्य नारी से जोर से फुसफुसाकर यह कहते सुना –

"क्यो, कहा था न मैने कि वह पैदल ही आ जायेगी? कहा था न! कैसा भी तूफान उसके आडे नही आ सकता! मेरी बैरक मे ऐसी ही दिलेर लडकिया रहती है। उनके तो साथ रहते हुए डर लगता है!"

दफ्तर मे पहुच कर सीमा ने थैली कुर्सी पर रख दी।

कठोर सीदोर इल्यीच अभी तक गिनतारे की गीटिया खटखटाये जा रहे थे। सिर झुकाये-झुकाये ही उन्होने पूछा —

"इतनी बडी रकम लेकर अकेले ही आने की हिम्मत कर ली आपने ?"

"कोई मेरे साथ आया है।"

"एतबार के लायक आदमी था ?"

"एक एक्सकवेटर-चालक "

सीदोर इल्यीच ने सन्तोष से सिर हिलाया और फिर से हिसाब मे जुटने के पहले कहा —

"आपकी बहन ने नाक मे दम कर रखा है। हजार बार टेलीफोन करके पूछ चुकी है कि सीमा पहुची या नही ?"

सीमा ने ओवरकोट उतारे बिना ही सुराही से पानी का गिलास भरा और एक ही सास मे उसे गले से नीचे उतार गई। फिर वह रुपया बाटने वाली खिडकी के पीछे अपने केबिन मे गई। वहा उसने अपनी शॉल और कोट उतारा और बर्फ के कारण भीगे हुए अपने चेहरे को पाउडर लगाकर खुश्क किया।

सीमा ने इस बात का बुरा नही माना कि इतनी दूर पैदल चलकर आ जाने से किसी को कोई आश्चर्य नही हुआ। कारण कि निर्माण-स्थल पर साहस की ऐसी बाते तो हर दिन ही होती रहती थी। इसके विपरीत उसने सोचा कि ऐसा ही होना भी चाहिये था। ज़िन्दगी, यह कोई बच्चो का खेल नही। यह अच्छी बात है कि लोगो से वाहवाही हासिल करना

ग्रासान नही है। इससे जिन्दगी ज्यादा दिलचस्प हो जाती है। मिखाईल विवाहित निकला, मगर इसके लिये मै ग्रासू थोडे ही बहाऊगी। बेशक मै बेहद थक टूट गई हू, फिर भी तनख्वाह तो बाटनी ही है। ग्राधी रात गये तक काम करना होगा। सीदोर इल्यीच पाई-पाई का हिसाब ठीक होने तक गिनतारे की गीटिया बजाते रहेगे। मौसी लीजा, जो ग्रभी ग्रभी बढ-चढ कर मेरी प्रशसा कर रही थी, भूल-भाल जायेगी ग्रौर सुबह के वक्त मै जब हाथ-मुह धोऊगी तो सदा की भाति फिर बडबडायेगी. हर चीज ग्रपने ढर्रे पर ठीक-ठाक ही चल रही है।

सीमा कुछ देर तक ग्रपने को गर्माती रही ग्रौर उसने ग्रपनी थकी हुई टागो को फैलाकर जरा ग्राराम किया। फिर उसने लोहे की तिजोरी के खानो मे ढग से नोटो की गड्डिया ग्रौर मेज पर वेतन की सूचिया रखी। सूचियो के पास ही उसने एक लाल पेसिल भी रख दी ताकि जिसे वेतन मिल जाये, वह उसके नाम के सामने लाल निशान कर दे।

बरामदे मे रेल-पेल ग्रौर शोर-शराबे के साथ मजदूरो की कतार लम्बी होती जा रही थी।

सीमा ने खिडकी खोली ग्रौर जोर देकर कहा—

"धक्कम-धक्का नही करो। हर किसी को तनख्वाह मिल जायेगी।"

यूरी नगीबिन (जन्म १६२०) – सबसे अधिक लोकप्रिय सोवियत कहानीकारो में से एक। आपके २० से अधिक कहानी-संग्रह प्रकाश में आ चुके हैं। 'पाइप', 'शीतकालीन बलूत-वृक्ष' और कई अन्य कहानियो का भारतीय भाषाओ में अनुवाद हो चुका है। 'प्रतिध्वनिया', यह लेखक की एक नवीनतम कहानी है।
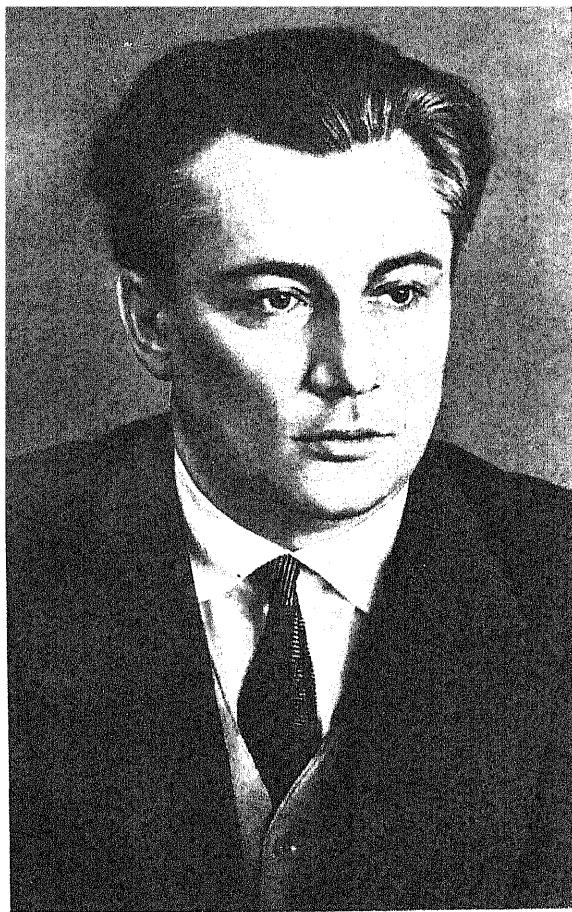
यूरी नगीबिन
प्रतिध्वनियां

सिनेगोरिया नामक सागर-तट पर, जो दोपहर के बाद सुनसान पडा है, एक छोटी-सी लडकी सागर से बाहर आती है   यह तीस से कुछ कम साल पहले की घटना है।

मै सुनसान तट पर पत्थर खोज रहा था। तूफान आकर गुजर चुका था और बडी-बडी लहरो ने तट को सेनीटोरियम की सफेद दीवारो तक धो डाला था। अब सागर शान्त था और अपनी सीमा मे लौट चुका था। उसने लौटते हुए चाकलेट के से गहरे कत्थई रग की बालू बिखरा दी थी और बीच

मे ककड-पत्थरो का एक टीला सा बना दिया था। यह रेत इतनी सख्त और नम थी कि उसपर पैरो के चिन्ह भी बाकी नही रहते थे। समतल सतह पर हरे-नीले और गोल-गोल पत्थर बिखरे हुए थे, कुछ अन्य ककड मिसरी की डलियो, शीशे के टुकडो और अच्छी तरह से चूसी हुई मीठी गोलियो जैसे लग रहे थे। मरे हुए केकडो और सडे हुए समुद्री शैवालो से आयोडीन की सी तेज गध आ रही थी। मुझे मालूम था कि ऊची-ऊची लहरे अपने साथ सागर-तट पर सुन्दर पत्थर लेकर आती है। इसलिए मै बहुत धीरज से रेत और नवनिर्मित टीले पर उनकी खोज कर रहा था।

"ए, मेरे जाघिये पर क्यो बैठ रहे हो?" मुझे एक पतली-सी आवाज सुनायी दी।

मैंने नजर ऊपर उठायी और अपने निकट एक छोटी-सी लडकी को खडे पाया। वह नग-धडग थी, उसकी हड्डिया उभरी हुई थी, पसलिया नज़र आ रही थी और उसके हाथ-पाव बहुत दुबले-पतले थे। उसके गीले और लम्बे बाल चेहरे पर फैले हुए थे और उसके पीले से बदन पर पानी चमक रहा था। धूप ने उसके शरीर पर अभी तक कोई प्रभाव नही डाला था, ठड के कारण उसका शरीर नीला हो गया था और उसके रोगटे खडे हुए थे।

लडकी झुकी, उसने मेरे नीचे से नीली-पीली धारियो वाला जाघिया निकाला, उसे झाडा और पत्थरो पर फैला दिया।

वह खुद धम से सुनहरी रेत पर ढह पडी और अपने अगल-बगल रेत जमा करने लगी।

"कुछ पहन ही लिया होता " मैने जरा बिगडते हुए कहा।

"इसकी क्या जरूरत है? इस तरह धूप सेकना ज्यादा अच्छा रहता है," लडकी ने जवाब दिया।

"तुम्हे शर्म नही आती?"

"मा कहती है कि छोटे बच्चो के ऐसा करने मे कोई बुराई नही। वे मेरे जाघिया पहन कर नहाने के हक मे नही है, ऐसा करने से ठड लग जाती है, बुखार हो जाता है और मेरी देखभाल के लिए उनके पास समय नही है "

काले और खुरदरे पत्थरो के बीच मुझे अचानक मद-मद चमकती हुई कोई चीज दिखायी दी। यह छोटा-सा निर्मल आसू था। मैने अपनी कमीज के अन्दर से सिगरेटो वाली गत्ते की एक डिबिया निकाली और उस आसू को अपने सग्रह मे शामिल कर लिया।

"ज़रा दिखाओ तो!"

लडकी ने अपने गीले बालो को कानो के पीछे कर लिया। अब उसका चेहरा साफ दिखाई देने लगा। उसका नाक-नक्शा तीखा था, चेहरे पर काली चित्तिया थी, हरी और बिल्ली जैसी आखें थी, उठी हुई नाक और बहुत बडा मुह था। वह मेरे पत्थरो को देखने लगी।

रूई के एक टुकडे पर एक छोटा-सा अडाकार तथा गुलाबी रग का पारदर्शी पत्थर रखा था, एक उससे बडा था जिसपर सागर ने अभी तक अपनी कारीगरी नही दिखायी थी। इसलिए वह अभी तक आकारहीन था और प्रकाश मे चमकता भी नही था। कई छोटे-छोटे ककड थे जिनपर तरह-तरह के अजीब से नमूने बने हुए थे। एक ककड स्टारफिश जैसा था, दूसरे पर एक छोटे-से केकडे की शक्ल बनी हुई थी और एक अगूठी जसा गोल ककड था। मेरे सग्रह मे सबसे बढ-चढकर था धुए के समान एक पुखराज जिसके धुधले शीशे मे से कोहरे का एक हल्का-सा टुकडा नजर आता था।

"यह सब क्या आज ही जमा किये है?"

"अरे, नही तो पिछले कई दिनो मे!"

"तब तो कोई खास बात न हुई।"

"तो तुम ही जमा करके देख लो!"

"मुझे क्या जरूरत पडी है?" लडकी ने खाल उधडा हुआ अपना हडीला कधा झटक दिया। "कौन भला इन बेकार पत्थरो के लिए दिन भर गर्मी मे मारा-मारा फिरेगा!"

"तुम तो बिल्कुल पगली हो!" मैंने कहा, "नग-धडग पगली!"

"तुम खुद पागल हो! तुम टिकट भी जरूर इकट्ठे करते होगे।"

"करता हू, तो क्या हुआ!" मैंने चुनौती के अदाज मे जवाब दिया।

"और सिगरेट की डिब्बिया भी?"

"जब छोटा था तब जमा करता था।"

"तो तुम और क्या जमा करते हो?"

"बहुत पहले मैंने तितलिया भी जमा की थी "

मैने सोचा था कि मेरी यह बात उसे अच्छी लगेगी। न जाने क्यो मै यह चाहता था कि उसे यह बात अच्छी लगे।

"थू, थू! यह तो बडी भद्दी बात है!" उसने अपने ऊपर वाले होठ मे बल डाला और इस तरह उसके दूध जैसे सफेद और तेज दात दिखाई दिये। "तुम उनका सिर कुचलकर उनको गत्ते पर ठोक देते होगे?"

"बिल्कुल नही! मै उन्हे ईथर मे सुला दिया करता था।"

"खैर कुछ भी हो, है यह घिनौनी बात किसी जीव की हत्या तो मै सहन ही नही कर सकती।"

"जानती हो, मैंने और क्या जमा किया था?" मैंने सोचते हुए कहा। "साइकलो के मार्के।"

"अरे, सच!"

"बिल्कुल सच कहता हू। मै हर साइकल चलाने वाले के पीछे दौडता और पूछता—कहिए तो आपकी साइकल किस मार्के की है? कोई उत्तर देता—'डक्स', कोई कहता 'लतवेला' और यहा तक 'ओपेल' भी। मगर मुझे 'रायल

एण्डफील्ड' का मार्का नही मिल सका।"—मै जल्दी-जल्दी अपनी बात कहता गया ताकि वह कही बीच मे ही कोई चुभता-सा वाक्य चुस्त न कर दे। मगर अब उसका चेहरा गभीर था, वह मेरी बात मे दिलचस्पी ले रही थी और उसने अपनी अगुलियो के बीच से रेत को छानना भी बद कर दिया था। —"मै हर दिन भागता हुआ लुब्यान्स्काया चौक मे पहुचता। एक बार तो मैं ट्राम के नीचे आने से बाल-बाल बचा! आखिर मैंने 'रायल एण्डफील्ड' का मार्का भी हासिल कर लिया। यह बैंगनी रग का मार्का होता है और उसपर लातीनी वर्णमाला का बडा-सा 'आर' लिखा रहता है।"

"खैर, तुम कुछ बुरे लडके नही हो . " लडकी ने कहा और अपना बडा-सा मुह खोलकर हस दी। "सुनो, मै तुम्हे एक रहस्य की बात बताती हू। मै भी सग्रह करती हू "

"किस चीज का?"

"प्रतिध्वनियो का मै बडा-सा सग्रह कर भी चुकी हू। कुछ ऐसी प्रतिध्वनिया होती है जिनमे शीशे की सी छनक सुनाई पडती है, कुछ ऐसी होती है जिनमे ताबे के पाइप की सी टनटनाहट होती है, कुछ मे तीन आवाजें मिली-जुली रहती है, कुछ मे ऐसा लगता है मानो किसी ढोल पर मटर के दाने गिर रहे हो, कुछ ऐसी होती "

"बस, बस बेपर की न उडाओ!" मैंने बिगडते हुए उसे टोका।

उसकी हरी और बिल्ली की सी आखो मे गुस्से की चमक झलक उठी।

"चाहो तो मै तुम्हे दिखा सकती हू।"

"हा, दिखाओ "

"सिर्फ तुम्हे ही दिखाऊगी और किसी को नही। तुम्हारी मा इजाजत दे देगी? इसके लिए 'बडे जीन' पर चढना होगा।"

"दे देगी।"

"तो हम कल सुबह ही वहा जायेगे। तुम कहा रहते हो?"

"प्रिमोरस्काया सडक पर, बुलगारियो के यहा।"

"और हम ताराकानिखा के यहा रह रहे है।"

"तब तो मैने तुम्हारी मा को देखा है। लम्बे कद की और काले बालोवाली, वही है न?"

"हा, वही है, मगर मुझे अपनी मा को देखने का कभी मौका ही नही मिलता।"

"वह क्यो?"

"मा को नाच बहुत पसद है " लडकी ने अपने सन जैसे भूरे और अब तक सूख चुके बालो को पीछे की ओर झटक दिया। "आओ घर लौटने से पहले एक डुबकी और लगा ले।"

वह उछल कर खडी हुई। उसके सारे शरीर पर रेत लगी हुई थी। वह सागर की ओर भाग चली और उसकी पतली-पतली गुलाबी एडिया चमक उठी

अगली सुबह को धूप खिली हुई थी। हवा बन्द थी, मगर गर्मी नही थी। सागर मे तूफान आने के बाद हवा मे अभी तक ठडक कायम थी जो सूरज की गर्मी से डटकर मोर्चा ले रही थी। जब सिगरेट के धुए जैसा पतला-सा कोई बादल सूरज की किरणो को काटता हुआ और रोडी बिछी हुई पक्की सडको, सफेदी की हुई दीवारो और खपरैल की छतो पर से दक्षिणी धूप की चमक को खतम कर देता तो मौसम के खराब होने के पूर्व दिखायी देने वाले सभी चिन्ह सामने आ जाते और सागर की ओर से आनेवाले हवा के ठडे झोके अधिक तेज हो जाते।

'बडे जीन' की ओर जाने वाली पगडण्डी, शुरू मे तो छोटे-छोटे टीलो पर से गुजरती थी और फिर एकदम सीधी चढाई थी। वहा वह अखरोट के घने और तेज गध वाले जगल के बीच मे से होकर जाती थी। एक जगह पर एक तग और पथरीले खड्ड ने उसे बीच मे से चीर डाला था। यह खड्ड एक ऐसे ही नाले का पाट था जो मूसलाधार बारिश होने पर जोरो से कल-छल करते हुए पहाड से नीचे बहते है, मगर वृक्ष की पत्तियो पर बरसात की बूदो के सूखने से भी कम समय मे गायब हो जाते है।

हम काफी सफर तय कर चुके थे, जब मैंने इस लडकी से उसका नाम पूछने की बात सोची।

"ए," नीली-पीली धारियो वाला जाघिया पहने, और वृक्षो के बीच तितली की तरह दिखाई देने वाली इस लडकी को मैने पीछे से पुकारा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

लडकी ठहर गयी और मै उसके बराबर जा पहुचा। यहा जगल कम घना था और वृक्षो के बीच खाडी और हमारी बस्ती नजर आ रही थी। हमारी बस्ती क्या थी, बस, छोटे-छोटे कुछ घरौदे ही थे। विराट् और गम्भीर सागर क्षितिज तक फैला हुआ था और उसके बाद धुध थी, धुधली नीली धारिया थी जो एक के बाद एक आकाश पर चढती चली गयी थी। खाडी के बीच सागर बिल्ली के बच्चे की तरह छोटा-सा और सिमटा-सिमटाया पडा था। वह तट पर कभी तो सफेद फीते की तरह फैल जाता और फिर कभी उसे चाट कर वापस चला जाता

"नही जानती, कि कैसे तुम्हे बताऊ अपना नाम!" लडकी ने सोचते हुए कहा, "बडा ही अटपटा-सा है मेरा नाम – वीकतोरीना। वैसे सब मुझे वीत्का बुलाते है जैसे कि मै लडकी न होकर लडका होऊ।"

"तो तुम्हे वीका के नाम से क्यो न बुलाया जाये? लडकी के लिए यह नाम ठीक भी है।"

"थू, बहुत गदा है!" फिर से उसके तेज दात झलक उठे।

"वह क्यो? वीका का अर्थ है जगली मटर।"

"लेकिन उसका एक और भी अर्थ है चुहिया मटर। चुहिया तो मुझे फूटी आखो नही भाती।"

"खैर तो वीत्का ही सही, मेरा नाम सेर्योजा है। क्या हमे अभी बहुत दूर जाना है?"

"क्यो, दम निकल गया क्या? जब हम वन-रक्षक की चौकी के पास से गुजरेगे तो वहा से 'बडा ज़ीन' नजर आने लगेगा "

हम काफी देर तक चलते रहे, चक्कर काटते और घने वृक्षो के बीच मे से गुज़रते हुए, जिनमे से हवा नही छनती थी और जहा बहुत तेज और शहद जैसी गध फैली हुई थी। आखिर पगडण्डी खतम हुई और हम एक चौडी और पथरीले रास्ते पर पहुचे। यहा पिसी चीनी की तरह बारीक और चमकती हुई रेत बिछी थी। इसी पर चलते हुए हम एक चौडी और अपेक्षाकृत कम ढालू ढाल पर पहुचे। वही वन-रक्षक का घर था—चूने के पत्थर वाला एक छोटा-सा मकान, जिसके सभी ओर खूबानियो के घने पेड खडे थे।

हम इस घर के निकट पहुचे ही थे कि कुत्तो के जोर से भौकने की आवाज ने वातावरण की नीरवता को भग कर दिया। दो बडे-बडे झबरीले कुत्ते, जिनके सफेद रोए गन्दे हुए पडे थे, हम पर झपटे। मगर वे एक तार के साथ बधी जजीरो से बधे हुए थे। जब उनकी ज़जीरो की लम्बाई खतम

हो गयी तो उनकी टागें ऊपर को उठ गयी, गले भिच गये और उनकी लाल-लाल जबाने दिखाई देने लगी। उन्होने हम पर झपटने की कई बार कोशिश की, मगर सफल न होकर हाफते हुए जमीन पर गिर गये।

"डरो नही। वे हम तक नही पहुच सकते," वीत्का ने इत्मीनान से कहा।

हमसे सिर्फ एक कदम की दूरी पर कुत्ते अपने दात दिखा रहे थे। मैने देखा कि उनके कधो के घने बालो मे काटेदार घास उलझी हुई थी और उनकी गुद्दियो पर चिचडिया लगी हुई थी जो उनका खून पी-पीकर मोटी हो गयी थी। कुत्तो के मोटे घने बालो मे से आखे नजर नही आ रही थी। अजीब बात यह थी कि उनका भौंकना सुनकर कोई भी उन्हे चुप कराने के लिए घर से बाहर नही निकला था। जब मैने यह महसूस किया कि उनके उछलने-कूदने और जजीरो को झटके देने के बावजूद वे हम तक नही पहुच पाये तो मुझे अपने अन्दर गुदगुदाती-सी खुशी अनुभव हुई। हम रहस्यपूर्ण आवाज़ो को सुनने के लिए टीलो और गुफाओ मे से गुजरेंगे। इस प्रकार के अभियान मे निश्चय ही हम यह आशा कर सकते है कि भयानक राक्षस हमारे रास्ते मे खडे दिखाई देंगे और ये राक्षस अब हमारे सामने थे—झबरे बालो वाले कुत्ते जिनकी आखे नज़र नही आती थी और जो अपनी लपलपाती जबाने बाहर निकाले हुए थे।

हम जिस रास्ते पर चल रहे थे वह अब बहुत सकरा हो गया था। यहा अखरोट की झाडिया पहले की तरह घनी नही थी। उनमे से कुछ तो सूख कर ठूठ ही बन गयी थी, कुछ बिल्कुल मुरझा चुकी थी। कुछेक के पत्ते छोटे-से चमकते हुए काले कीडो द्वारा खाये जा चुके थे और वे मकडी के जाले की तरह दिखाई देते थे।

मै चलता-चलता थक चुका था और मुझे वीत्का पर गुस्सा आ रहा था। वह अपनी तकली जैसी दुबली-पतली टागो पर, जिनके घुटने जरा भीतर को दबे हुए थे, उछलती-कूदती चली जा रही थी। तभी अचानक उजाला नजर आया और मैंने अपने सामने एक ढाल देखी, जिसपर छोटी-छोटी और भूरी घास उगी हुई थी। उसके आगे सुरमई रग की चट्टान थी।

"यह शैतान की उगली है!" पहले की तरह ही उछलती-कूदती और आगे जाती हुई वीत्का ने कहा।

जैसे-जैसे हम इस चट्टान की ओर बढते गये, वह अधिकाधिक ऊची होती गयी। वह तो मानो हमारी आखो के सामने ही ऊची होती चली जा रही थी। जब हम उसकी धुधली और ठडी छाया मे पहुचे तो वह बहुत ही विराट् हो गयी। अब वह शैतान की उगली नही, बल्कि शैतान की मीनार जैसी लगती थी। वह एकदम वीरान, रहस्यपूर्ण और ऐसी थी कि जिस पर चढने की हिम्मत न हो सके।

वीत्का ने मानो मेरे विचारो का उत्तर देते हुए कहा—

"जानते हो कि बहुत-से लोगो ने इसपर चढने की कोशिश की है, मगर सभी असफल रहे है। कोई तो मौत के मुह मे जा पहुचा और किसी ने अपने हाथ-पाव तोड लिये। पर एक फ्रासीसी जैसे-तैसे ऊपर तक जा ही पहुचा था।"

"वह यह कैसे कर पाया?"

"किसी तरह सफल हो ही गया मगर नीचे न आ सका। वह वही पागल हो गया और बाद मे भूख से मर गया फिर भी शाबाश है उसे!" वीत्का ने सोचते हुए इतना और जोड दिया।

हम शैतान की उगली के दामन मे पहुचे और वीत्का ने धीमी सी आवाज मे कहा—

"यह है वह जगह" वह कुछ कदम पीछे हटी और फिर उसने धीरे से पुकारा—"सेर्योजा!"

"सेर्योजा!" मजाक उडाती हुई एक पतली-सी आवाज़ ने मानो फुसफुसाकर इसी शब्द को दुहराया। वह आवाज मानो शैतान की उगली के अन्दर से आई और मुझे सीधी अपने कानो मे उतरती हुई सी अनुभव हुई।

मै चौका और अनचाहे ही चट्टान से कुछ पीछे हट गया। तभी सागर की ओर से ऊची और गूजती हुई एक आवाज सुनाई दी—

"सेर्योजा!"

मेरी यह हालत कि काटो तो खून नही। तभी कही ऊपर की ओर से एक कराहती और जानलेवा सी आवाज मे सुनायी पडा –

"सेर्योजा!"

"यह तो शैतान है!" मै बौखला कर कह उठा।

"यह तो शैतान है!" कोई मेरे कानो के ऊपर आकर फुसफुसाया।

"शैतान!" सागर की ओर से गूजती हुई आवाज आयी।

"शैतान!" चट्टान के ऊपर से कराहती हुई आवाज मे सुनायी दिया।

इन अदृश्य मसखरो मे से हर एक की आवाज मे कोई दृढ और डरावनी चीज थी। फुसफुसाने वाली आवाज धीमी-सी थी, मगर बहुत ही जहर बुझी और चुभती हुई। सागर से आने वाली आवाज शात और शरारत भरी थी। ऊपर वाली कराहती आवाज को सुनकर लगता था मानो कोई सचमुच विलाप कर रहा हो, मगर उसमे धूर्तता का पुट रहता था।

"तुम्हे क्या साप सूघ गया है? चिल्लाकर कुछ कहते क्यो नही?" वीत्का ने मुझसे पूछा।

मगर वह अभी अपना वाक्य पूरा भी न कर पायी थी कि मुझे एक विषैली-सी फुसफुसाहट सुनायी दी, "तुम्हे क्या साप सूघ गया है?" तभी सागर की ओर से मजाक उडाती हुई ऊची आवाज सुनायी दी, "चिल्लाकर कुछ कहते क्यो

नही ? " तभी कराहती-सी आवाज मे सुनायी दिया "क्यो नही? "

जैसे-तैसे अपने डर पर काबू पाते हुए मै ऊची आवाज मे चिल्लाया –

"सिनेगोरिया ! "

मुझे बारी-बारी से वे तीनो आवाजे सुनाई दी

इसके बाद मैने चीख-चीख कर, धीरे से और फुसफुसाकर अन्य बहुत-से शब्द कहे। प्रतिध्वनियो ने मेरा हर शब्द दुहराया। कुछ शब्द तो मैने इतने धीरे से कहे कि जो स्वय मुझे भी बहुत मुश्किल से सुनायी दिए। मगर प्रतिध्वनियो ने उन्हे ज्यो का त्यो दुहरा दिया। अब तक मै अपने डर पर काबू पा चुका था, मगर फुसफुसाती हुई आवाज से मेरे सारे शरीर मे झुरझुरी सी होती और विलाप करने वाली आवाज की सिसकिया सुनकर मेरा दिल डूबने लगता।

"अलविदा ! " वीत्का चिल्लायी और शैतान की उगली नामक चट्टान से आगे चल दी। मै भी उसके पीछे-पीछे हो लिया, मगर फुसफुसाती आवाज ने विदा के इस शब्द मे भी अपना जहर भर दिया, सागर से आनेवाली आवाज ने इसका मजाक उडाया और कराहने वाली आवाज ने इसे जुदाई की दर्द भरी घडी का रग दे दिया।

सागर की ओर जाते हुए हम शीघ्र ही एक ऐसे पथरीले कगार पर पहुचे, जो पहाडी छज्जे की तरह गहरी खोह के

ऊपर आगे की ओर निकला हुआ था। हमारे दाये-बाये सिर्फ ऊची-ऊची चोटिया थी और नीचे इतना गहरा खड्ड कि शुरू मे तो मुझे वहा कुछ भी दिखायी न दिया। अगर शैतान की उगली धरती मे बिल्कुल सीधी उतर गयी होती, तो उसने इसी तरह का एक भयानक खड्ड बना दिया होता। कुछ क्षण बाद मैने नीचे की ओर बहुत दूरी पर स्याही जैसा काला सागर लहराता देखा। वह दैत्य के बडे-बडे दातो की तरह तेज और नुकीली चट्टानो पर अपना सिर पटक रहा था। इस भयानक गहराई मे कोई पक्षी अपने पख फैलाये हुए इस तरह धीरे-धीरे चक्कर काटता हुआ उड रहा था मानो उसमे जान ही न हो।

जो कुछ मैने देखा, उसे देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो वहा कोई चीज अधूरी रह गयी थी, जैसे कि वे प्रबल शक्तिया जिन्होने पृथ्वी की गहराई मे से यह अतिकाय पथरीली उगली काट कर बनायी थी, जिन्होने एक ठोस पहाड को एक ऐसे भयानक खड्ड मे बदल दिया था, जिन्होने इतनी गहराई पर दैत्य के से दात बना दिये थे और सागर को इनके नुकीले किनारो पर अपनी कोमल और नर्म-नर्म जबान फेरने के लिए विवश किया था, वे कोई सतुलन स्थापित न कर पायी थी। हमारे इर्द-गिर्द और नीचे हर चीज अस्थायी-सी लग रही थी और ऐसा अनुभव होता था मानो अन्दर की उन शक्तियो के दबाव के कारण, जो इन्हे एक अन्य शक्ल देने की कोशिश

कर रही थी, यह सभी चीजे हिचकोले खा रही थी। हम 'बडे जीन' के किनारे खडे थे और मै अपने हृदय मे भावनाओ की एक अनबूझ-सी ज्वार अनुभव कर रहा था। निश्चय ही मै नही जानता था कि उसे शब्दो मे कैसे बयान किया जा सकता है

वीत्का खड्ड के सिरे पर पेट के बल लेट गयी और उसने हाथ के इशारे से मुझे भी ऐसा ही करने के लिए कहा। मै ठोस और गर्म चट्टान पर उसकी बगल मे लेट गया। खड्ड का दहशत पैदा करने वाला डर अब गायब हो गया और मुझे उसकी गहराई मे झाकना बहुत मामूली बात मालूम पडने लगा। अपनी गर्दन फैला कर और सिर आगे की ओर बढाकर वीत्का चिल्लायी –

"हो-हो-हो!"

पल भर को खामोशी रही और फिर एक भारी-भरकम, गम्भीर और गूजती आवाज ने दुहराया –

"हो-हो-हो!"

इस आवाज मे बहुत जोर भी था और गहराई भी, पर इसके बावजूद यह डरावनी नही थी। स्पष्ट था कि वहा नीचे कोई दयालु दैत्य रहता था जो हमे किसी प्रकार की हानि नही पहुचाना चाहता था। वीत्का ने उससे पूछा –

"आदम के साथ कौन था?"

दैत्य ने घडी भर के लिए सोचा और फिर जवाब दिया –

"हव्वा!"

"तुम्हे मालूम है," अपने सिर को ऊपर उठाये हुए वीत्का ने कहा, "'बडे जीन' से कोई भी सागर तक नीचे नही उतर पाया है। एक आदमी ने कोशिश की, मगर वह आधे रास्ते मे ही अटक गया "

"और फिर भूख से मर गया?" मैने मजाक उडाते हुए झटपट पूछा।

"नही। उन्होने रस्सी फेककर उसके सहारे उसे ऊपर खीच लिया था मगर मै यह समझती हू कि नीचे उतरा जा सकता है।"

"तो आओ हम कोशिश करे!"

"आओ," उसने बडे शात भाव से जवाब दिया। उसके अन्दाज से मुझे यह विश्वास हो गया कि वह ऐसा करने को तैयार है।

"किसी और वक्त," मैने मजाकिया अन्दाज मे वीत्का से कहा। वैसे मेरे मन की हालत कुछ और थी।

"ठीक है, तो आओ अब आगे चले।" फिर उसने खड्ड की ओर कुछ अधिक ऊची आवाज मे कहा—"अलविदा!"

"अलविदा!" उदार देव ने अपनी गरजती हुई आवाज मे जवाब दिया।

मै तो इस देव से बाते करने के लिए और अधिक देर तक ठहरना चाहता था, परन्तु वीत्का मुझे घसीट कर ले गयी।

वीत्का ने मुझे बताया कि एक और प्रतिध्वनि है जिसकी आवाज छनछनाते शीशो की तरह हृदय को चीरती हुई और पतली है। इस प्रतिध्वनि को एक तग से दर्रे मे सुना जा सकता है। इस दर्रे को देखकर ऐसा लगता है मानो किसी बहुत बडे चाकू से उसे काट दिया गया हो। यह प्रतिध्वनि अत्यधिक भारी और गम्भीर आवाज का उत्तर भी बहुत ऊची और बारीक आवाज मे देती है। इतना ही नही, वह एक बार ही उसका उत्तर देकर शात नही हो जाती। उसकी दरारो मे से देर तक चूहे की सी ची-ची सुनायी देती रहती है।

हम उस आवाज को सुनने के लिए नही रुके और आगे बढ गये।

अब हमे एक खडी ढाल पर चढना था। इस ढाल पर जगह-जगह सख्त और धूप मे झुलसी हुई कत्थई घास और काटेदार पौधे उगे हुए थे और कही-कही पर इसकी सतह बिल्कुल नगी और फिसलनी थी।

आखिर हम एक समतल भाग मे पहुचे, जहा सभी ओर बडे-बडे पत्थर पडे हुए थे। प्रत्येक पत्थर की कोई न कोई शक्ल थी – कोई जहाज जैसा लगता था तो कोई टैक, साड, राक्षस के सिर, कोई मरे हुए कवचधारी सूरमा के समान, तो कोई भारी तोप जैसा लगता था जिसका मुह टूटा हुआ हो, कोई ऊट और कोई दहाडते शेर से मिलता-जुलता था।

कुछ पत्थर तो किसी देव के बिखरे हुए हिस्सो जैसे लगते थे – रोम निवासियो जैसी नाक, कान और दाढी समेत नीचे का जबडा, जबरदस्त घूसा, नगा पैर, माथा और उस पर लहराते हुए घुघराले केश-कुडल।

पत्थर के इन प्राणियो तक जो भी शब्द पहुचता, वे उन्हे एक गेद की तरह उचक लेते और फिर एक दूसरे की ओर या अपने अगल-बगल फेकते जाते। यह सब कुछ आन की आन मे होता। यही वह जगह थी जहा वील्का की "बजते हुए मटरो वाली" प्रतिध्वनि सुनी जा सकती थी।

किन्तु सबसे विचित्र ध्वनि तो वह थी जिसके बारे मे वील्का ने मुझे कुछ भी नही बताया था। इस प्रतिध्वनि तक पहुचने के लिए हमे सूखी झाडियो या जो कुछ भी हाथ मे आ गया उसका सहारा लेते हुए पेट के बल रेग कर बढना पडा। हमारे हाथो या पैरो के स्पर्श से जो भी पत्थर लुढक जाता, उसी के साथ बडे पत्थरो का एक कारवा सा चल पडता। इस तरह हमे अपने नीचे से निरन्तर पत्थरो की गडगडाहट सुनायी देती रही। मैने जब सिर पीछे मोडा तो यह देखकर हैरान रह गया कि सागर के ऊपर छायी हुई विराट चट्टान कितनी छोटी-सी नजर आ रही थी। इस जगह से सागर एक समतल मैदान जैसा नही लगता था, वह बहुत ही विराट दिखायी दे रहा था, जिसका न कोई ओर था न छोर और जो फैलता हुआ आकाश से जा मिला था। इस तरह

मिल कर एक हो गये आकाश और सागर ने नजर आने वाले दृश्य पर छाये हुए एक गुम्बज का रूप धारण कर लिया था। हम अब कितनी अधिक ऊचाई पर थे, यह बताने के लिए सिर्फ इतना कह देना ही काफी है कि यहा से शैतान की उगली एक छोटी-सी सलाख जैसी लग रही थी।

वीत्का पहाड के एक अन्धकारपूर्ण और अर्धचक्राकार सूराख के पास जाकर ठहर गयी। मैंने भीतर झाक कर देखा। जब मेरी आखे अधकार की अभ्यस्त हो गयी तो मुझे वहा मेहराबदार छत वाली एक गुफा दिखायी दी, जहा से पत्थर की दाढी जैसे नुकीले दाते बाहर निकले हुए थे। दीवारो से लाल, हरी और नीली रोशनी की झलक मिल रही थी और उसकी सडी हुई हवा मे किसी मुर्दे की सी ऐसी तेज गध थी कि मैंने झटपट अपना सिर पीछे हटा लिया।

वीत्का आगे की ओर झुकी और उसने ऊची आवाज मे कहा –

"हैलो!"

इस मेहराबदार छत के नीचे से कुछ ऐसी आवाज सुनायी दी मानो खाली पीपे कानो के पर्दे फाडने वाला धमाका करते हुए एक दूसरे से टकरा रहे हो। फिर सबसे दूर वाले कोने से खडखडाहट सुनायी दी और अन्त मे एक लम्बी और जोरदार "आह" हम तक पहुची। इस "आह" को सुन कर ऐसे लगा मानो पर्वत ने अपनी रोकी हुई सास छोड़ी हो।

मेरे मन मे वीत्का के प्रति बरबस ही आदर की भावना पैदा हो गयी और मै उसे आश्चर्यचकित-सा देखता रह गया। चेहरे पर चित्तियो, उभरी हुई हड्डियो, सन जैसे बालो, छोटे-छोटे तेज दातो और चमकती हुई हरी आखो वाली यह लडकी मुझे इस रहस्यपूर्ण दुनिया की भाति ही, जहा वह मुझे ले आयी थी, रहस्यमयी प्रतीत हुई।

"अब तुम चिल्लाओ," वीत्का ने आदेश दिया।

मै आगे की ओर झुका और मैने पहाड के छोटे-से काले मुह मे चिल्लाकर कहा – "हे!" फिर से जोर का धमाका हुआ, खडखडाहट हुई और किसी मृत ससार से आने वाली एक ठडी-सी सास मेरे चेहरे को छू गई। अचानक पहाडो, कगारो, खड्डो और गुफाओ की इस दुनिया मे, जहा जगली और रहस्यपूर्ण आवाजो का डेरा था, मुझे एकाकीपन और विवशता की सी अनुभूति हुई।

"आओ चले!" अपनी भावनाओ पर काबू पाने मे असफल रहते हुए मैने कहा। "आओ चले यहा से!"

लौटते हुए हम अन्तहीन ढाल से उतरते ही चले गये। हम फिर से पथरीले कब्रिस्तान के पास से, शैतान की उगली, अखरोट की मुरझाई और सूखी हुई झाडियो, वन-रक्षक के भौकने और जजीरो को झटकने वाले कुत्तो के निकट से गुजरे। फिर हमने अखरोट के एक और जगल को पार किया, जहा जीवन की चहल-पहल थी। हमारा यह सारा रास्ता नीचे की

ग्रोर ढालू होता चला गया था। ग्राखिर हम उस सूखे नाले के पाट मे पहुचे जो हमारे गाव के गिर्द अर्धचक्र बनाता था।

"कहो क्या ख्याल है? मजा ग्राया?" जब हम गाव की सडक पर पहुच गये तो वीत्का ने पूछा।

ग्रब जब मै हर दिन के साधारण वातावरण मे पहुच गया था, तो वीत्का मुझे पहाडी ग्रात्माग्रो की रहस्यपूर्ण स्वामिनी नही, बल्कि तेज दातो ग्रौर उभरी हुई हड्डियो वाली छोटी-सी बदसूरत लडकी प्रतीत होने लगी। मुझे इस बात का दु ख हो रहा था कि ऐसी एक लडकी के सामने मैने ग्रपने डर को जाहिर हो जाने दिया था!

"कुछ बुरा नही रहा," मैने यू ही लापरवाही से जवाब दिया। "मगर इस तरह के सग्रह से भला लाभ ही क्या है?"

"तो इसका मतलब यह है कि जब तक डिबिया मे बन्द करके जेब मे न रखी जा सके, तब तक हर चीज बेकार है?"

"नही, मेरा यह मतलब नही था किन्तु प्रतिध्वनि तो हर एक की ग्रावाज का जवाब देती है — वह सिर्फ तुम्हारी ही नही है।"

वीत्का ने ग्रजीब-सी दृष्टि से देर तक मुझे देखा ग्रौर कहा —

"तो तो क्या हुग्रा? मुझे इसकी परवाह नही है!" वह ग्रपना हाथ झटक कर घर की ग्रोर चल दी।

मेरी और वीत्का की अच्छी दोस्ती हो गयी। हमने एक साथ ही 'तेमरुक-काय' और 'विवाह पर्वत' के चक्कर लगाये। एक छोटी-सी गुफा मे हमे मेढक की तरह टरटराने वाली प्रतिध्वनि सुनायी दी। मगर खडी ढालो, आकाश को छूती हुई चोटियो और उसके दामन मे पाये जाने वाले अनेक खड्डो के बावजूद 'तेमरुक-काय' पर्वत पर हमारी आवाजो का किसी ने जवाब न दिया।

हम तो ऐसे हो गये मानो दो तन और एक प्राण। मै वीत्का के नगी नहाने का आदी हो गया। वह एक अच्छी मित्र थी और मै लडकी के रूप मे उसके बारे मे कुछ भी नही सोचता था। यह बात कुछ-कुछ मेरी समझ मे आने लगी थी कि क्यो वह कपडे पहनने की परवाह नही करती थी। वीत्का समझती थी कि वह बहुत ही बदसूरत लडकी है। उसके समान खुले तौर पर, सरलता और शान से अपनी बदसूरती को स्वीकार करने वाले किसी व्यक्ति से अभी तक मेरी भेंट नही हुई थी। अपने स्कूल की सहेलियो की चर्चा करते हुए वह एक के बारे मे बडी लापरवाही से इस तरह कहती—

"वह भी लगभग मेरी तरह ही बदसूरत है "

एक दिन हम मछुओ के घाट के पास नहा रहे थे। तभी पहाडी पगडण्डी के मोड पर लडको की एक टोली नजर आयी। मेरी उनसे थोडी-सी जान-पहचान थी, किन्तु उनका साथी

बन जाने की मेरी झिझक भरी सभी कोशिशें असफल रही थी। ये लडके सिनेगोरिया मे कई गर्मिया बिता चुके थे और अपने को गाव के पुराने वासी मानते थे। वे नये आनेवाले किसी भी लडके की ओर कोई ध्यान नही देते थे। एक लम्बा और हट्टा-कट्टा लडका ईगोर, इस टोली का मुखिया था।

मै नहा चुका था और तौलिये से अपना बदन पोछ रहा था। वीत्का अभी तक पानी से खिलवाड कर रही थी। वह आती हुई लहर की प्रतीक्षा करती, उसके साथ ऊपर को उछलती, फिर पेट के बल लहर की छाती पर सवारी करती और उस समय उसके छोटे-से चूतड चमकते हुए दिखाई देते।

लडको ने बडी लापरवाही से मेरे अभिवादन का उत्तर दिया। वे शायद अपने ही रास्ते चलते जाते, मगर तभी लाल रग के जाघिये वाले लडके की नजर वीत्का पर पडी और उसने चिल्लाकर कहा –

"अरे देखो तो, नग-धडग लडकी!"

बस फिर क्या था, तमाशा शुरू हो गया उन्होने जोर से सीटिया बजायी, आवाजें कसी और बिल्ली की तरह म्याऊ-म्याऊ की। मुझे यह तो कहना ही होगा कि वीत्का ने उनकी आवाजो और शोर की तरफ ध्यान नही दिया, मगर इससे स्थिति और भी अधिक बिगडी। पहले वाले लडके ने ही चिल्लाकर कहा –"आओ इसे पानी मे डुबकिया दे।" बाकी लडको ने इस बात का उत्साह से समर्थन किया

ग्रौर वह लडका मटकता हुग्रा पानी की ग्रोर ग्रा गया। वीत्का एक दरिंदे की भाति तेजी से हिली-डुली, नीचे झुकी ग्रौर पानी के नीचे कुछ टटोलती रही। जब वह तन कर खडी हुई तो उसके हाथ मे बहुत बडा पत्थर था।

"ग्राग्रो तुम! जरा करो, हिम्मत!" ग्रपने तेज दात दिखाते हुए उसने कहा। "ग्राग्रो मेरे पास ग्रौर देखो कैसा मजा चखाती हू!"

लडका वही रुक गया ग्रौर उसने पैर के ग्रगूठे से पानी को छुग्रा।

"ग्रोह, यह तो बहुत ही ठडा है!" उसने कहा। उसके कान उसके जाघिये से भी ग्रधिक लाल हो गये थे।

ईगोर इस लडके के पास ग्राया ग्रौर पानी के पास बैठ गया। ग्रपने मुखिया के पैतरो को समझते हुए वह लडका भी उसकी बगल मे बैठ रहा। बाकी लडको ने भी वैसा ही किया। लडको की यह कतार वीत्का ग्रौर तट, उसके कपडो ग्रौर तौलिये के बीच एक दीवार बन गयी।

वीत्का ने कोशिश की कि लडको के सब्र का प्याला छलक जाये। वह तैरती हुई ग्रागे की ग्रोर गयी, पीछे की ग्रोर लौटी, उसने गोते लगाये, पानी से खिलवाड किया ग्रौर पानी मे डूबी हुई एक चट्टान पर बैठकर ग्रपने इर्द-गिर्द छीटे उडाये। पर ग्रन्त मे ठड ने बाजी जीत ली।

"सेर्योजा!" वह चिल्लायी, "मेरा जाधिया ले ग्राग्रो!"

इस सारे वक्त के दौरान मै तौलिये से अपना बदन रगडता रहा था। बदन के सूख जाने के बहुत देर बाद तक भी मै उसे रगडता जा रहा था मानो मैं अपनी खाल उधेड डालना चाहता था। असमजस की इस दयनीय स्थिति मे मेरी केवल एक इच्छा स्पष्ट थी कि वीत्का की मुसीबत से मेरा कोई वास्ता न हो।

"सेर्योजा, अपनी देवी जी को उनका जाघिया दे आओ!" उसी पहले वाले लडके ने पतली-सी बनावटी आवाज मे मजाक उडाते हुए कहा।

ईगोर ने मेरी ओर मुडकर चेतावनी दी—

"जरा हिम्मत तो करो और फिर देखना कि क्या होता है!"

चेतावनी अनावश्यक थी। मै यो भी अपनी जगह से हिलनेवाला नही था। वीत्का ने जब यह देखा कि उसे मुझसे कोई मदद नही मिल सकती थी तो वह बडे ही दुखद ढग से झुकी, उसने अपने दुबले-पतले और ठड से नीले पडे चित्तियो भरे शरीर को जितना भी सम्भव हुआ, हाथो से ढक लिया। वह अपने चेहरे पर बल डाले हुए लडको के ठहाको और म्याऊ-म्याऊ की आवाज़ के बीच से जल्दी-जल्दी अपने कपडो की ओर बढी। कभी जो चीज केवल उसके हृदय की स्वच्छता के रूप मे महत्त्वहीन प्रतीत होती थी, वही अब लज्जाजनक, घटिया और घिनौनी बन गयी थी।

एक टाग मे जाघिया फसा कर और दूसरी पर कूदते हुए उसने जैसे-तैसे उसे पहन लिया। उसने अपना तौलिया उठाया और भागने को तैयार हुई, मगर अचानक मुडी और उसने चिल्लाकर मुझसे कहा –

"कायर! कायर! कमीना और कायर!"

मेरे दिल को बहुत ही गहरी चोट लगी। मैंने अनुभव किया कि मेरे साथ ज्यादती हुई है। वीत्का को इतना तो समझना चाहिए था कि मै ईगोर के घूसो से नही डरा था। पर वह स्पष्टत मुझे हमेशा के लिए इन लडको की नजरो मे नीचे गिराना चाहती थी।

टोली के मुखिया ने अपने साथियो के उदाहरण का अनुकरण न किया। इस तरह शायद उसने अपने को जरा धीर-गम्भीर जाहिर किया या शायद किसी कारणवश उसे वीत्का मे कुछ दिलचस्पी अनुभव हुई। उसने बहुत ही मैत्रीपूर्ण ढग से पूछा –

"क्या इसके कुछ पेच ढीले है?"

"हा, सो तो है ही," बातचीत के शुरू होने के अवसर का उत्सुकता से लाभ उठाते हुए मैंने उत्तर दिया।

"तब तुम क्यो उसके साथ गोद की तरह चिपके रहते हो?"

वीत्का की सफाई देने के लिए नही, बल्कि केवल अपने को ईगोर की नजर मे ऊचा उठाने की कोशिश करते हुए मैंने कहा –

चीरता हुआ, नीचे उतर रहा था। वह अपने साथ ककड-पत्थर बहाकर ला रहा था। अखरोट के जगल मे से अब कुछ-कुछ कडवाहट लिए हुए शहद जैसी मीठी गध नही, बल्कि सडते हुए पत्तो और सीली जमीन की गध आ रही थी, मानो पत्तियो के नीचे कोई सिरके जैसी चीज सड रही हो। चलने मे बहुत कठिनाई हो रही थी, गीली भूमि और चट्टानो के चिकने टुकडो पर सभी दिशाओ मे पाव फिसल-फिसल जाते थे।

वन-रक्षक के घर के पास भौक-भौक कर अपना गला बिठा लेने वाले कुत्तो ने फिर से हमारा स्वागत किया। किन्तु सीली हवा मे उनकी आवाज भी सील ुर कोमल हो गयी थी। खुद कुत्ते भी कम भयानक लग रहे थे। बरसात मे उनके झबरे बाल चिपक गये थे और उनकी जैतून-पल सी काली आखे बालो के गुच्छो मे छिपी न रहकर साफ नजर आने लगी थी।

हम एक बार फिर मुरझायी और कीडो से खायी हुई अखरोट की झाडियो के बीच से गुजरे। हवा और बरसात ने उनके बचे-बचाये पत्ते भी साफ कर दिये थे और उनकी उदास और निपत्ती शाखाओ मे से सागर की कालिमा की झलक मिलती थी।

हम काफी देर तक चलते रहे और तब कही हमे बादलो के बीच से शैतान की उगली दिखाई दी। घडी

भर के लिए हमे इसका काला सिरा नजर ग्राया, मगर फौरन ही वह बल खाती हुई धुध मे गायब हो गया। ग्रजीब बात यह थी कि हवा का रुख सागर की ग्रोर था, फिर भी पालेवाले दिन मे हल्की सास के समान हल्के बादल उल्टी दिशा मे जा रहे थे। घडी भर के लिए वे भूमि पर उतर ग्राते ग्रौर हमारे कपडे सील जाते। ग्रगले ही क्षण वे गायब हो जाते ग्रौर केवल कुछ ग्रोस कण ही बाकी रह जाते।

ग्रन्त मे इस भूल-भुलैया मे से शैतान की उगली हमारे सामने ग्राकर खडी हो गयी।

"ग्रब जरा दिखाग्रो तो ग्रपने करतब," ईगोर ने गभीरता से कहा।

"तो सुनो!" मैने गभीरता से उत्तर दिया ग्रौर फिर से ग्रपने सारे बदन मे झुरझुरी सी ग्रनुभव की। मैने ग्रपनी दो हथेलिया जोडकर मुह पर रखी ग्रौर जोर से चिल्लाया—

"ग्रो-हो-हो!"

मगर कोई उत्तर न मिला। मुझे कोई डरावनी-सी खुसर-फुसर सुनायी न दी। सागर की ग्रोर से मजाक उडाता हुग्रा कोई ठहाका भी सुनाई नही दिया। ऊपर की ग्रोर से कराहती, बिलखती ग्रावाज भी न ग्रायी। एकदम खामोशी रही।

"ग्रो-हो-हो!" चट्टान के मुखडे के नजदीक जाकर मैं

फिर से चिल्लाया। लडके भी एक के बाद एक मेरे पीछे चिल्लाये।

शैतान की उगली मूक रही। हमने बार-बार कोशिश की, किन्तु एक भी ध्वनि सुनायी न दी। मै भागता हुआ दर्रे की ओर बढा। लडके भी मेरे पीछे-पीछे हो लिए। वहा पहुचकर मैने गहरी सास ली और चक्कर खाती हुई धुधली गहराइयो के बीच अपनी पूरी ताकत से आवाज लगायी। किन्तु खुशमिजाज देव ने भी मेरी आवाज का उत्तर न दिया।

मै बौखलाया हुआ, शैतान की उगली, फिर दर्रे के सूराख और फिर चट्टान के कगार की ओर दौडता हुआ गया। मैने और सभी जगह भी जोर-जोर से आवाजे लगायी, मगर पहाड मौन साधे रहे

मैने रुआसी आवाज मे गिडगिडा कर लडको से कहा कि वे मेरे साथ ऊपर, पहाड की गुफा तक चले। वहा निश्चय ही प्रतिध्वनि सुनायी देगी। मगर वे मेरे गिर्द पहाडो की तरह गुम-सुम और मुह फुलाये हुए खडे रहे। तब ईगोर ने मुह खोला और सिर्फ इतना कहा—

"शेखीखोर!"

वह मुडा और वहा से चल दिया। उसकी टोली के लडके भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

मै उदास और बुझा-बुझा सा, धीरे-धीरे कदम रखता हुआ उनके पीछे-पीछे चलता रहा। मै यह समझने की कोशिश

करता रहा कि आखिर मामला क्या है। मेरे लिए लडको के सामने लज्जित होने की तुलना मे अपनी असफलता के रहस्य को जानना कही अधिक महत्त्वपूर्ण था। कही ऐसी बात तो नही थी कि प्रतिध्वनिया केवल वीत्का की आवाज का उत्तर देती थी? नही, ऐसा नही हो सकता था। कारण कि जब हम दोनो साथ थे तो हमे दोनो की आवाजो के उत्तर मिले थे शायद उसके पास कोई चाबी थी जिससे वह इच्छानुसार इन पहाडो मे आवाजो को बद कर देती थी!

दिन गुजरने लगे, उदासी भरे। वीत्का अब मेरी मित्र नही रही थी। इतना ही नही, मा ने भी मेरी निदा की। जब मैंने मा को मूक प्रतिध्वनियो की अक्ल चकरा देने वाली घटना सुनायी तो उसने मुझे सिर से पाव तक ऐसे देखा मानो किसी अजनबी को जाच रही हो और कहा—

"यह तो बहुत सीधी-साधी बात है पहाड केवल अच्छे और सच्चे लोगो की आवाज का जवाब देते है।"

मा के इन शब्दो से बहुत-सी बातो पर से पर्दा हट गया, मगर प्रतिध्वनियो की पहेली ज्यो की त्यो बनी रही।

बरसात होती रही। सागर दो हिस्सो मे विभाजित हुआ सा प्रतीत होने लगा। चढे हुए नद-नालो द्वारा बहा कर लायी गयी रेत से खाडी के पानी का रग धुधला-पीला सा हो गया था और उसके आगे के हिस्सो मे वह साफ और पारदर्शी

दिखायी दे रहा था। तेज हवा निरन्तर चलती रहती। दिन के समय वह बरखा के सुरमई पर्दे को इधर-उधर हिलाती जाती। रात के समय आकाश साफ हो जाता और तारे झिलमिला उठते, उस समय हवा खुश्क और काली हो जाती। काली इसलिए कि वह हिलती-डुलती काली टहनियो, शाखाओ और वृक्षो के तनो और अपेक्षाकृत कुछ उजले स्थानो मे दिखायी देने वाली एकदम काली परछाइयो मे इसी रूप मे दिखायी देती थी।

कई बार मुझे वीत्का की झलक मिली। वह हर तरह के मौसम मे सागर-तट पर जाती थी और कभी-कभी चमक उठने वाली धूप सेक-सेक कर उसने अपने बदन को सवला भी लिया था। ऊब से तग आकर मै प्रतिदिन अपनी मा के साथ बाजार चला जाता जहा सब्जिया, खूबानिया, बकरी का दूध और दही आदि स्थानीय पदार्थ बिकते थे। एक दिन मैने वीत्का को बाजार मे देखा। वह अकेली थी, उसके हाथ मे थैला था। वह अपना वही पीली-नीली धारियोवाला जाघिया पहने, दूध के कनस्तरो और खवाचो के बीच घूमती हुई डटकर खरीदारी कर रही थी। मैने उसे मास का टुकडा चुनकर तराजू पर रखते और बडे कामकाजी ढग से टमाटर चुनते देखा। इस चेतना से मेरा हृदय कसक उठा कि मैने एक अच्छा मित्र खो दिया था।

बरसात के बाद जब पहले दिन धूप खिली तो मै खूबानियो

के बगीचे मे जा पहुचा और हवा द्वारा गिरायी हुई खूबानिया बटोरने लगा। उनमे से कुछ तो सडने भी लगी थी। तभी किसी ने मुझे मेरा नाम लेकर पुकारा। हमारे फाटक के निकट जहाजियो के से नीले कालर वाला सफेद ब्लाउज और नीला स्कर्ट पहने हुए एक छोटी-सी लडकी खडी थी। घडी भर बाद मैने उसे पहचान लिया। वह वील्का थी। उसके सन जैसे बाल ढग से सवरे हुए थे और पीछे की ओर उनका गुच्छा सा बनाकर उन्हे रेशमी फीते से बाध लिया गया था। सवलाई हुई गर्दन मे मूगे के मनको का हार था और वह पैरो मे बारहसिगे की खाल के सेडल पहने थी। मै लपक कर उसकी ओर गया।

"देखो हम आज यहा से जा रहे है," वील्का ने मुझे बताया।

"क्यो?"

"मा का मन यहा की हर चीज से ऊब गया है इसलिए जानते हो कि मै तुमसे क्या कहना चाहती थी? मै अपना सग्रह तुम्हे सौपना चाहती हू। मुझे उसकी जरूरत नही। तुम उसे लडको को दिखाकर उनसे दोस्ती कर लेना।"

"मुझे जरूरत नही किसी को दिखाने की!" मैने गर्म होते हुए कहा।

"खैर, वह जैसा तुम्हारा मन चाहे। मगर तुम उसे ले तो लो। जानते हो तुम्हे क्यो सफलता नही मिली थी?"

"तुम्हे कैसे मालूम हुआ कि मै असफल रहा था?"

"मैने ऐसे सुना है   जो भी हो, तुम इसका कारण जानते हो?"

"नही   "

"मै तुम्हे बताती हू। चिल्लाने के समय सबसे प्रमुख बात तो यह होती है कि तुम खडे किस जगह होते हो।" वीत्का ने इस तरह से अपनी आवाज धीमी कर ली मानो वह कोई रहस्य बता रही हो। "शैतान की उगली पर तुम्हे सागर की ओर से चिल्लाना चाहिए। अवश्य ही तुमने किसी दूसरी जगह पर खडे होकर आवाज लगायी होगी, जहा कोई प्रतिध्वनि नही है। फिर पहाड के कगार पर तुम्हे आगे की ओर काफी झुककर सीधे दीवार की ओर मुह करके चीखना चाहिए। तुम्हे याद है न कि कैसे वहा मैने तुम्हारा सिर झुका दिया था? फिर दर्रे मे तुम्हे सीधे उसकी गहराई मे चीखना चाहिए ताकि तुम्हारी आवाज अन्दर तक पहुच जाये। गुफा मे से तो हमेशा ही उत्तर मिलता है, मगर तुम वहा गये ही नही। यही बात उन पत्थरो के बारे मे सही है जहा मटर के दानो के गिरने की आवाज सुनायी देती है।"

मेरा मन बहुत कुछ कहने को हुलस पडा, मगर मै केवल "वीत्का!" कह कर ही रह गया। अपने पतले-से मुह पर बल डालते हुए उसने कहा—

"अच्छा तो अब मुझे भागना चाहिए वरना बस निकल जायगी "

"मास्को मे भेट होगी?"

वीत्का ने अपना सिर हिलाया–

"हम लोग तो खारकोव मे रहते है "

"क्या तुम फिर यहा नही आओगी?"

"मालूम नही अच्छा, अब विदा!" वह किसी उलझन मे उलझी हुई घडी भर के लिए अपना सिर झुकाये रही और फिर भाग गयी।

मैने देखा कि मा मेरी बगल मे फाटक पर खडी थी और दूर जाती हुई वीत्का को टकटकी बाध कर देख रही थी।

"कौन है वह?" मा ने पूछा। मैने मा की आवाज मे एक अजीब-सी खुशी अनुभव की।

"वह वीत्का है वह ताराकानिखा के घर मे रहती है।"

"कैसी प्यारी, नन्ही-सी लडकी है!" अपनी आवाज़ मे बहुत-सा स्नेह उडेलते हुए मा ने कहा।

"ओह, नही!" मैने मा की बात काटते हुए कहा। "यह तो वीत्का है! मै तुम्हे उसके बारे मे बता चुका हू।"

"हा-हा, मैं बहरी नही हू।" मा ने फिर उसी तरफ देखा, जिधर वीत्का जा रही थी। "कैसी कमाल की लडकी है! छोटी-सी हल्की-फुल्की नाक, प्यारे-प्यारे धुआरे बाल, मन

को मोहनेवाली आखे, छोटा-सा सुघड शरीर, सुन्दर हाथ-पाव ”

“मगर मा, यह ठीक नही है!” मैने मा के प्रशसा के इस अजीब अन्दाज का खीझ कर विरोध किया। मुझे लगा कि यह प्रशसा वील्का के लिए उपयुक्त नही थी। “तुमने उसके बडे से मुह की ओर तो ध्यान दिया होता!”

“मैने ध्यान दिया था—बहुत ही कमाल का, बहुत ही सुन्दर मुह है उसका! तुम कुछ भी तो नही समझते।”

मा घर के अन्दर चली गयी। मै कुछ क्षण तक उसे जाते हुए देखता रहा। तब मै अपनी पूरी ताकत लगाकर बस के अड्डे की ओर भाग चला।

बस अभी अड्डे पर खडी थी। आखिरी मुसाफिर अपने सूटकेसो और थैलो से लदे-फदे किसी तरह अन्दर घुस रहे थे। मैने वील्का को उस ओर बैठे हुए देखा जिस ओर की खिडकिया बन्द थी। उसके पास गदराये हुए शरीर और काले बालो वाली एक नारी लाल पोशाक पहने बैठी थी। यह उसकी मा थी।

वील्का ने भी मुझे देखा और खिडकी का शीशा नीचे गिराने की भरसक कोशिश करने लगी। उसकी मा ने उससे कुछ कहा और उसे मना करने के लिए कधे पर हाथ रखा। वील्का ने अपनी मा का हाथ झटक दिया।

बस का इजन गडगडाया और वह सुनहरी धूल का बादल पीछे छोडती हुई कच्ची सडक पर धीरे-धीरे चल दी। मै बस के साथ-साथ चल रहा था। वीत्का ने अपना होठ काटते हुए खिडकी के चौखटे पर जोर दिया और शीशा झटके के साथ नीचे हो गया। वीत्का जब आखो के सामने नही थी तो एक सुन्दर लडकी के रूप मे उसकी कल्पना करना कितना आसान था! मगर सामने आने पर उसके तेज दातो और चित्तियो ने उसका वह रूप खतम कर दिया जो मा ने मेरे सामने चित्रित किया था और जिसे मैंने स्वीकार कर लिया था।

"सुनो वीत्का!" मैने जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया—"मा कहती है कि तुम सुन्दर हो! तुम्हारे बाल सुन्दर है, तुम्हारी आखे, तुम्हारा मुह, तुम्हारी नाक " बस ने अपनी रफ्तार बढा दी और मैने भी भागते हुए कह डाला—"तुम्हारे हाथ, पाव मै सच कह रहा हू, वीत्का!"

वीत्का ने खुश होते हुए केवल मुस्कान द्वारा इसका उत्तर दिया। उसके बडे-से मुह पर चौडी और विश्वासपूर्ण मुस्कान खिल उठी जो उसके हृदय के सौन्दर्य को प्रकट करती थी। उस क्षण मैंने अपनी आखो से देखा कि वीत्का वास्तव मे ही दुनिया की सुन्दरतम लडकी थी।

बस धचके खाती हुई नाले पर बने लकडी के उस पुल को पार कर रही थी, जो सिनेगोरिया की सीमा था। मै रुक गया। पुल चरमराया, तख्ते ऊपर नीचे हुए और तभी बस

के अगले पहिये सडक पर जा पहुचे। खिडकी मे से फिर वीत्का का सिर बाहर निकला। उसके धुआरे बाल हवा मे लहराये और उसकी सवलाई हुई कोहनी दिखायी दी। वीत्का ने मेरी ओर इशारा किया और पूरे जोर से चादी का एक सिक्का नाले के पार फेंक दिया। यह सिक्का हवा मे चमक दिखाता हुआ मेरे पैरो के पास आकर धूल मे गायब हो गया। ऐसा माना जाता है कि जिस जगह पर इस तरह सिक्का फेका जाता है, सिक्का फेकने वाला व्यक्ति उस जगह पर अवश्य कभी न कभी लौटता है

मैं अब यही चाहता था कि हम लोग भी जल्द से जल्द यहा से चल दे। चलते हुए मैं भी यहा सिक्का फेकूगा और इस तरह फिर एक बार वीत्का से मेरी मुलाकात होगी।

मगर भाग्य मे ऐसा नही लिखा था। एक महीने बाद जब हम सिनेगोरिया से रवाना हुए तो मै सिक्का फेकना भूल गया।

यूरी कज़ाकोव (जन्म १९२७)—प्रतिभाशाली युवा कहानीकार। आपने मास्को के साहित्य-सस्थान में शिक्षा पाई। कजाकोव की कहानियो में बारीक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और गहरी दार्शनिक सूझ-बूझ पाई जाती है।

'शिकारी कुत्ता' यह कज़ाकोव की एक श्रेष्ठतम कहानी है।
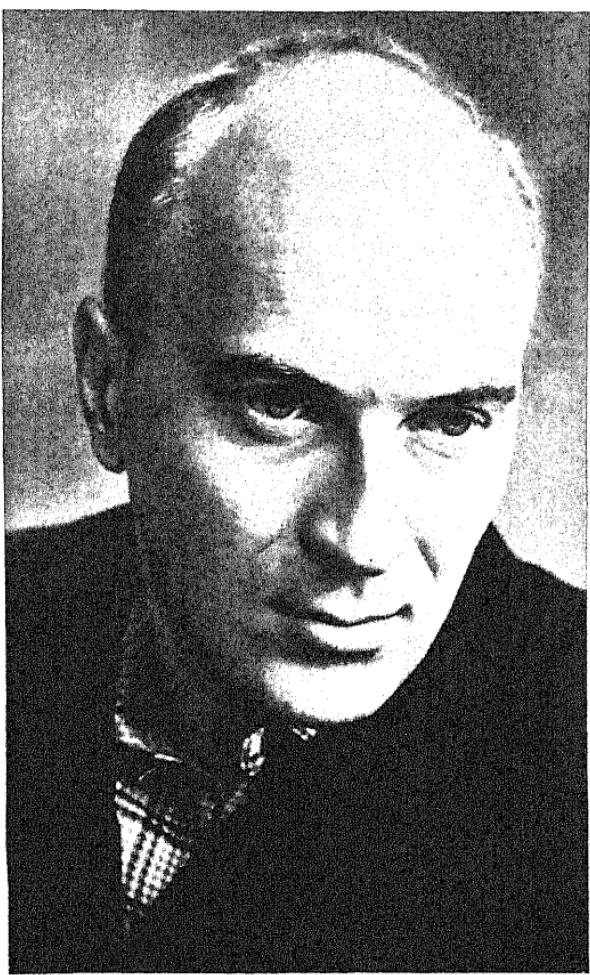
यूरी कज़ाकोव
शिकारी कुत्ता

१

वह शहर मे कैसे आया, यह बात अभी तक एक पहेली बनी हुई है। वसन्त मे वह कही से आ गया और यही रह गया। उसने किसी को परेशान नही किया, कोई उस से तग नही हुआ और उसने किसी की भी आधीनता स्वीकार नही की—वह स्वतत्र था। कुछ लोगो का कहना था कि जगह-जगह भटकनेवाले बजारे वसन्त मे उसे यहा छोड गये।

अजीब लोग है ये बजारे भी! जाडा खतम होता है और वे अपने सफर पर निकल पडते हैं।

कुछ दूसरे लोगो का यह कहना था कि वसन्त मे नदी मे जब बर्फ टूटी तो वह बर्फ के एक तूदे पर कही से बहता हुआ आ गया। इधर-उधर बहती हुई बर्फ की खिचडी के बीच, नीलिमा लिये हुए बर्फ के सफेद विस्तार के बीच वह एक निर्जीव काले धब्बे की भाति खडा रहा था। उसके सिर के ऊपर से हसो के झुड "क्लिक-क्लाक" करते हुए उडते रहे थे।

लोग हमेशा बेसब्री से हसो के आने की प्रतीक्षा करते है। और जब वे आ जाते है, जब वे उषाकाल मे पानी मे डूबे हुए चरागाहो से उडते हुए आते है और वसत के दिनो का अपना "क्लिक-क्लाक" का महान राग छेडते है तो लोग उन्हे टकटकी बाध कर देखते है और उनकी रगो मे खून तेजी से दौरा करने लगता है। तब वे समझ जाते है कि वसत आ गया है।

नदी मे बर्फ बही आ रही थी, जोर की आवाज से टूटती और शोर मचाती हुई। हस ऊची आवाज मे चीख रहे थे। उस समय वह बर्फ के तूदे पर खडा था, टागो के बीच अपनी दुम दबाये, परेशान और अनिश्चित-सा, अपने इर्द-गिर्द की गध को पहचानता और सभी चीजो पर अपने कान लगाये हुए। बर्फ का तूदा जब किनारे से लगा तो उसने उत्तेजित

हो कर अटपटे ढंग से छलांग लगायी और पानी में जा गिरा। मगर वह जल्द ही पांव मारता हुआ किनारे पर पहुंच गया, उसने अपने शरीर को झटका और लट्ठों के ढेर के बीच छिप गया।

ख़ैर जो भी हो, आया था वह वसंत में ही। उन दिनों में, जब धूप ख़ूब चमकने लगती है, नद-नालों में पानी की कल-छल सुनायी देने लगती है और वातावरण में छाल की गंध फैल जाती है। तभी वह आया और नगर में ही रह गया।

रही उसके अतीत की बात तो उसके बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। शायद किसी ओसारे के नीचे घास-फूस के किसी ढेर पर उसका जन्म हुआ था। उसकी मां–असली कोस्त्रोमा नस्ल की नाटे और लम्बे शरीर वाली शिकारी कुतिया थी। जब उसके 'महान् कार्य' करने का समय आया होगा तो उसे लुक-छिपकर पूरा करने के लिए वह ओसारे के नीचे जाकर ग़ायब हो गयी होगी। उसे आवाज़ें दे देकर बुलाया गया होगा, मगर वह बाहर न आयी होगी और उसने कुछ खाया-पिया भी नहीं होगा। वह गुड़ी-मुड़ी सी बनकर पड़ी रही होगी, उस घटना के घटने की प्रतीक्षा में, ऐसी चीज़ के इन्तज़ार में जो उसके लिए दुनिया की हर चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण थी। शिकार का पीछा करने और इन्सानों – उसके मालिकों और अन्नदाताओं – से भी अधिक महत्वपूर्ण!

सभी पिल्लों की भांति जन्म के बाद उसकी आंखें भी बंद

थी। मा ने झटपट उसे चूमा-चाटा और अपने गर्म पेट के पास लिटा लिया। मा का पेट प्रसूतिकाल के दर्द के कारण उस समय भी ऐंठा हुआ था। वह जब वहा लेटकर सास लेना सीख रहा था तब उसके भाई-बहन भी आ पहुचे। वे धीरे-धीरे हिले-डुले, उन्होने कू-कू और पी-पी करने की कोशिश की। यह सभी धुआरे रग के पिल्ले थे जिनके पेट नगे थे और जिनकी छोटी-छोटी पूछे काप रही थी। कुछ ही देर बाद उनमे से हर एक को मा का स्तन मिल गया और वे शात हो गये। अब केवल उनकी नाक से सू-सू की, ललचाये हुए होठो से चप-चप करने की और मा की गहरी सासो की आवाज सुनायी देने लगी। सो इस तरह इनके जीवन का श्रीगणेश हुआ।

वक्त आने पर सभी पिल्लो ने अपनी आखे खोली। उन्हे यह देखकर खुशी हुई कि अब तक वे जिस दुनिया मे रहे थे, उसकी तुलना मे वास्तविक दुनिया बडी है। आखे तो उसने भी खोली, मगर प्रकाश को देख पाना उसके भाग्य मे नही लिखा था। वह अन्धा था और उसकी आखो पर जाले की मोटी सुरमई पर्त पडी हुई थी। बहुत-सी कठिनाइयो और मुसीबतो से उसे दो-चार होना था। अगर उसे यह चेतना होती कि वह अधा है तो उसे यह बात स्पष्ट हो जाती कि उसकी जिन्दगी बहुत ही भयानक रहेगी। मगर वह यह नही जानता था कि वह अधा है, वह यह बात

जान ही नही सकता था। उसने जीवन को जैसे पाया था, उसी रूप मे स्वीकार कर लिया था।

ऐसा हुआ कि उसे न तो किसी ने डुबोया ही और न जान से मारा ही। यदि कोई ऐसा कर देता तो एक असहाय और ऐसे पिल्ले पर, जिसकी दुनिया मे किसी को जरूरत नही थी, वह निस्सदेह बहुत रहम करता। मगर उसे तो दुखद और कटु अनुभवो के कडवे घूट पीते हुए जिदा रहना पडा। इसके परिणामस्वरूप छोटी ही उम्र मे उसका तन-मन मजबूत हो गये और उसमे कठोरता भी आ गई।

उसका कोई मालिक नही था जो उसे सिर छिपाने को जगह देता, उसे खिलाता-पिलाता और एक मित्र की भाति उसकी देखभाल करता। वह बेघर, आवारा और उदास, भद्दा और शक्की कुत्ता हो कर रह गया। उसकी मा ने उसे पाला-पोसा और उसके बडे होते ही उसके भाई-बहिनो की तरह वह शीघ्र ही उसे भी भूल गयी। वह भेडियो की तरह रोना सीख गया और उन्ही की भाति लम्बी, ऊची और दर्दनाक आवाज मे हूकता रहता। वह गदा-मदा और अक्सर बीमार रहता। वह भोजनालयो के सामने कूडे-करकट के ढेरो मे मुह मारता फिरता, अन्य बेघर और भूखे कुत्तो की तरह उसे भी दुतकारा जाता और उस पर गन्दे पानी की बाल्टिया फेकी जाती।

वह तेजी से नही दौड सकता था। सच तो यह है कि

उसकी मजबूत टागे उसके किसी काम नही आती थी। उसके मन मे हर समय यह ख्याल बना रहता था कि अब किसी नुकीली और तेज चीज से उसकी टक्कर हुई, कि अब टक्कर हुई। जब उसने अन्य कुत्तो से लडाइया लडी—और उसे लडाइया बहुत-सी लडनी पडी—तो वह अपने दुश्मनो को देख नही पाता था। वह उनकी सासो, उनके गुर्राने और भौकने तथा जमीन पर उनके पजो की रगड से पैदा होने वाली आवाज पर झपटता और अपना वार करता। अक्सर वह हवा मे ही अपना वार करके रह जाता।

यह कोई नही जानता कि जन्म के समय उसकी मा ने उसका क्या नाम रखा था। वैसे हर मा, यहा तक कि कुतिया भी अपने बच्चो को अवश्य किसी न किसी नाम से पुकारती है। लोगो के लिए वह बेनाम था। हो सकता है कि वह उसी नगर मे ही रहता, या कही जाकर किसी खड्ड मे गिरकर मर जाता, पर तभी उसके जीवन मे एक इन्सान आ गया, जिसने उसकी जिन्दगी का सारा ढर्रा ही बदल दिया।

२

उस गर्मी मे मै एक छोटे-से उत्तरी नगर मे रह रहा था। वह नगर एक नदी के तट पर स्थित था। सफेद स्टीम-बोट, गन्दे-मन्दे बादामी रग के बजरे, लट्ठो के लम्बे-लम्बे

बेडे और चौडे मुह वाली नावे, जिनके पहलू तारकोल से सने रहते थे, नदी मे से गुजरते रहते। घाट पर चटाइयो, रस्सियो, सीलन के कारण सडनेवाली चीजो और मछलियो की गध फैली रहती। जिस दिन बाजार खुला होता, उस दिन आसपास रहनेवाले किसान और प्रादेशिक केन्द्र से आरा मिल मे जब-तब आने वाले सरकारी मेहमान ही इस घाट का इस्तेमाल करते। इनके अतिरिक्त बहुत ही कम लोग वहा पर नजर आते।

नगर के गिर्द की छोटी-छोटी ढालू पहाडिया अछूते घने जगलो से ढकी हुई थी, क्योकि पेड वहा से नही, बल्कि नदी के उद्गम के पास से काटे जाते थे। जगल मे बडे-बडे मैदान और अलग-थलग झीले थी जिनके किनारो पर चीड के पुराने और ऊचे-ऊचे वृक्ष लहराते रहते थे। ये वृक्ष हर समय धीरे-धीरे अपना मर-मर का राग अलापते रहते। मगर जब आर्कटिक महासागर की ओर से बादलो को उडाती हुई तेज और नम हवा आती तो चीड के वृक्ष बहुत जोर की आवाज करते हुए सरसराते और अपने फल नीचे गिराते जो धमाके के साथ जमीन पर गिरते।

मैने नगर के छोर पर एक कमरा किराये पर ले लिया। यह कमरा एक पुराने मकान की दूसरी मजिल पर था। मकान-मालिक एक डाक्टर थे जो अक्सर चुपचाप और हमेशा व्यस्त रहते थे। कभी उनका बडा-सा परिवार था, मगर उनके

दो बेटे लडाई मे मारे गये थे, पत्नी का देहान्त हो गया था और बेटी मास्को चली गयी थी। अब वे अकेले रहते थे और बच्चो का इलाज करते थे। एक खास बात थी उनमे – उन्हे गाने का बहुत शौक था। वे बारीक से बारीक आवाज वाले और तार सप्तक के गानो को मस्ती मे झूम-झूम कर गाते रहते। नीचे वाली मजिल मे तीन कमरे थे, मगर वे कभी-कभार ही उनका इस्तेमाल करते। वे बरामदे मे खाना खाते और वही सोते। कमरे अधेरे और उदासीभरे थे और उनसे धूल-मिट्टी, दवाइयो और सडे हुए दीवारी कागज की गध आती रहती।

मेरे कमरे की खिडकी उस बगीचे मे खुलती थी जिसकी कोई सुध-सार नही लेता था। वहा सभी ओर रसभरी की झाडिया उगी हुई थी और बाड के साथ-साथ बिच्छू-बूटी खडी थी। सुबह के वक्त चिडिया खिडकी के सामने शोर मचाती और बेरिया चुगने के लिए पक्षियो के झुड जमा हो जाते। डाक्टर न तो पक्षियो को उडाते और न ही बेरिया बटोरते। कभी-कभी पडोस का मुर्गा और मुर्गिया भी बाड के ऊपर आकर बैठ जाती। मुर्गा अपनी गर्दन अकडा कर और पूछ हिलाते हुए खूब जोर से बाग देता और कौतूहलभरी नजर से बगीचे मे इधर-उधर देखता। आखिर लालच के वश मे होकर वह बाड से नीचे कूदता और उसके पीछे-पीछे मुर्गिया आती। वे सभी हडबडाये-से झाडियो के गिर्द चोच

मारना शुरू कर देते। बिल्लिया भी उस बगीचे मे घुस आती। वे चिडियो की ताक मे झाडियो के बीच छिप कर बैठी रहती।

मुझे इस नगर मे रहते हुए दो हफ्ते हो गये थे, मगर मै वहा की चुपचाप सडको, पटरियो के बीच उगी हुई घास, सीढियो की चरमर और रात के समय कभी-कभी गूज उठने वाले स्टीम-बोट के भोपू की आवाज का आदी नही हो पाया था।

यह एक अजीब-सा नगर था। यहा लगभग पूरी गर्मी मे दूधिया राते रहती। इसके नदी-तट और सडको पर चितनमग्न शाति का साम्राज्य रहता, रात के समय घर के बाहर से आने वाली पैरो की चाप साफ तौर पर सुनायी देती। यह आवाज होती रात की पाली से लौटने वाले मजदूरो के पैरो की। घरो मे सोये हुए लोगो को रात भर प्रेमियो के पैरो की आवाज और ठहाके सुनायी देते रहते। ऐसे लगता था मानो मकानो की दीवारो के कान बहुत तेज थे और नगर स्वय दम साधे रहता था ताकि उसके जागते हुए लोगो के पैरो की आवाज अच्छी तरह से सुनायी दे सके।

रात के समय बगीचे मे से रसभरी की झाडियो और ओस कणो की गध आती रहती। बरामदे मे से डाक्टर के हल्के-हल्के खर्राटे सुनायी देते। नदी मे से जाते हुए किसी स्टीम-बोट का भोपू गूज उठता—"टू-टू "

एक दिन इस घर मे एक नया मेहमान आया। घटना कुछ इस तरह घटी। डाक्टर अपने काम से लौट रहे थे कि उन्हे एक अधा कुत्ता दिखायी दिया जो लट्ठो के ढेर के बीच छिपकर बैठा हुआ काप रहा था। उसके गले मे रस्सी का एक छोटा-सा टुकडा भी बधा हुआ था। डाक्टर कई बार पहले भी इसे देख चुके थे। इस बार वे रुक गये, उन्होने बहुत ध्यान से कुत्ते को देखा, चटकारा भरा, सीटी बजायी, और फिर उसकी रस्सी पकडकर उसे घसीटते हुए घर ले आये।

घर लाकर डाक्टर ने कुत्ते को गर्म पानी और साबून से मल-मल कर नहलाया और उसे खिलाया-पिलाया। कुत्ता अपनी आदत के अनुसार खाते समय सिकुडा-सिमटा हुआ और कापता रहा। वह खाने पर बुरी तरह टूटा। उसने उसे इतनी जल्दी-जल्दी गले से नीचे उतारने की कोशिश की कि वह गले मे फस फस गया। उसके माथे और कानो पर सूखे हुए घावो के सफेद निशान थे।

"जाओ, अब भाग जाओ।" कुत्ता जब पेट भरकर खा चुका तो डाक्टर ने कहा। डाक्टर ने उसे धकेल कर बरामदे से बाहर करने की कोशिश की, मगर कुत्ता कापता हुआ, जहा का तहा बना रहा।

"हु-हु " डाक्टर बडबडाये और अपनी झूलती हुई कुर्सी पर बैठ गये। साझ घिरती आ रही थी। आकाश

धुधला चुका था, मगर कुछ-कुछ उजाला बाकी था। बडे-बडे सितारे चमकने लगे थे। कुत्ता बरामदे मे लेटा हुआ ऊघ रहा था। उसकी हड्डिया उभरी हुई थी और अगल-बगल की पसलिया साफ नजर आ रही थी। जब-तब वह अपनी अधी आखे खोलता, कान खडे करता और हवा को सूघता हुआ इधर-उधर सिर घुमाता। इसके बाद वह फिर मे अपना सिर पजो पर रखकर आखे बन्द कर लेता।

डाक्टर उलझन मे उलझे हुए से अपनी कुर्सी पर हिल-डुल रहे थे। वे अपने दिमाग पर जोर देते हुए सोच रहे थे कि कुत्ते का नाम क्या रखा जाय, उसे कैसे बुलाया जाये। या शायद अभी उससे इसी वक्त पिड छुडा लेना बेहतर होगा? उन्हे क्या जरूरत है कुत्ते की! डाक्टर ने आकाश पर अपनी नजर गडा दी। क्षितिज के पास बहुत नीचे ही एक बडा-सा सितारा अपना उजला नीला प्रकाश फैला रहा था।

"आर्कटूरस," डाक्टर बडबडाये।

कुत्ते के कान हिले-डुले और उसने अपनी आखे खोली।

"आर्कटूरस!" डाक्टर ने दुहराया, उनके हृदय की धडकन तेज हो गयी थी।

कुत्ते ने अपना सिर उठाया और अनजाने ही अपनी दुम हिला दी।

"आर्कटूरस! इधर आओ, आर्कटूरस!" डाक्टर ने अब उसे एक स्वामी के खुशी भरे अन्दाज मे पुकारा। कुत्ता उठा,

अपने मालिक के निकट गया और बहुत सावधानी से उसने अपनी थूथनी उसके घुटनो पर रख दी। डाक्टर हस दिये और उन्होने उसका सिर थपथपाया। इस तरह इस कुत्ते का वह नाम जो उसकी मा ने रखा था और जो कभी किसी को मालूम नही हो सका था, हमेशा के लिए खतम हो गया और उसके बजाय उसे इन्सान द्वारा दिया गया एक नया नाम मिल गया।

इन्सानो की तरह कुत्ते भी कई किस्म के होते है। कुछ भिखमगे और भुखमरे होते है, कुछ आजाद, उदास तथा आवारा, कुछ मूर्ख और उत्साह से भौकने वाले। ऐसे कुत्ते भी है जो खुद अपने को दूसरो की नजरो मे गिराते है, भीख के लिए गिडगिडाते है और जो कोई भी सीटी बजा देता है, उसी के पास रेगते हुए चले जाते है। कुछ कुत्ते दब्बू, दुम हिलाने वाले और चाटुकार होते है। ऐसे कुत्तो को जब डराया जाता है या ठोकर मारी जाती है तो वे चीख उठते है और डर कर दूर भाग जाते है।

मैने बहुत ही वफादार, आज्ञाकारी, सनकी, अभिमानी, अडिग, चापलूस, उदासीन, चालाक तथा ओछे कुत्ते देखे है। आर्कटूरस इन सभी से भिन्न था। वह अपने स्वामी के प्रति बहुत ही अद्भुत और ऊची भावनाये रखता था, उसके प्यार मे बहुत उत्साह और एक प्रकार की कविता भी थी। शायद

वह अपने जीवन से भी अधिक अपने मालिक को प्यार करता था। उसकी यह भावनाये बहुत ही पवित्र और पावन थी, उनको पूर्णत प्रकट नही किया जा सकता था।

मालिक का कभी-कभी मूड खराब होता, कभी वे उदास होते और अक्सर उनसे यूडीक्लोन की तेज गध आती रहती जो प्रकृति मे कभी नही पायी जाती। पर आम तोर पर वे दयालु रहते और उस समय आर्कटूरस प्यार की लहरो मे गहरे गोते लगाता, उसका रोया-रोया फूल जाता और उसे अपने सारे शरीर मे गुदगुदी सी अनुभव होती। उसका मन होता कि वह उछले-कूदे और खुशी से दीवानावार भोकता हुआ दौड लगाये। मगर वह सयम से काम लेता, उसके कान नर्म हो जाते और उसकी पूछ झुक जाती। उसके शरीर मे एक तरह की जडता आ जाती और केवल उसके हृदय की धडकन ही तेज हो जाती। जब डाक्टर उसे इधर-उधर धकेलते, उसे गुदगुदाते, थपथपाते और दबे-दबे हसते तो उस समय उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहता। उस समय उसे अपने मालिक की आवाज रगारग आवाजो – छोटी ओर लम्बी, गले से निकलती और फुसफुसाती हुई आवाजो – का मधुर सगीत-सी लगती। उसमे बहते हुए पानी की कल-छल भी होती और वृक्षो की सरसराहट भी। वह दुनिया की हर आवाज से अलग-थलग होती। इसे सुनकर उसके सामने स्मृतियो की फुलझडिया सी चमकने लगती, किसी चीज की हल्की-हल्की गध आने लगती।

आर्कटूरस को ऐसा लगता कि यही सब कुछ पहले भी हो चुका है, बहुत पहले, इतना पहले, कि याद करना भी सम्भव नही, कि कहा और कब हुआ। शायद उसने इसी तरह की ख़ुशी तब महसूस की थी, जब वह छोटा-सा अधा पिल्ला था और अपनी मा का स्तन चूसता था।

३

कुछ समय बाद मुझे आर्कटूरस को निकट से जानने-समझने का अवसर मिला और मुझे बहुत-सी अजीब बातो की जानकारी प्राप्त हुई।

जब मै बीती हुई बाते याद करता हू तो मुझे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अपनी हीनता के प्रति सजग था। देखने मे वह अच्छा-खासा, बडा और मजबूत टागो वाला कुत्ता था, जिसकी पीठ तारकोल की तरह काली थी और उसके पेट तथा थूथनी पर गहरे लाल धब्बे थे। अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत ही ताकतवर और ऊचे कद का था, मगर उसकी सभी गतिविधियो मे दबी-छिपी झिझक और आत्मविश्वास की कमी की झलक मिलती थी। उसकी थूथनी और उसका सारा शरीर ही यह जाहिर करता था कि वह मानो हर समय चीजो की टोह लेता रहता है, उन्हे जानने-समझने की कोशिश मे रहता है। वह इस बात को अच्छी तरह से जानता

था कि उसके इर्द-गिर्द के सभी प्राणी अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक घूमते फिरते है और उनकी गतिविधि मे अधिक तेजी है। उसकी तुलना मे वे अधिक तेजी से और अधिक विश्वास से दौडते है, किसी चीज से ठोकर खाये या टकराये बिना आसानी से और सधे-सधाये कदम रखते हुए घूमते फिरते है। उनके पैरो की आवाज उसके अपने पैरो की आहट से भिन्न होती है। वह हमेशा धीरे-धीरे और सावधानी से तथा टेढा-तिरछा होकर चलता। बहुत ही अधिक बाधाए अनुभव होती उस अपने रास्ते मे। मुर्गे, कबूतर, कुत्ते, गौरैया, बिल्लिया, लोग और अनेक अन्य जानवर बेधडक दोडते हुए सीढिया चढते-उतरते थे, नालियो को फादते थे, मोड मुडते थे, आन की आन मे कही के कही जा पहुचते थे, मगर उसके भाग्य मे थी झिझक और सावधानी। मैने उसे कभी भी आजादी और तेजी से चलते और दोडते नही देखा था। उस समय के सिवा जब वह किसी बहुत चौडी सडक पर, चरागाह, या हमारे घर के बरामदे मे होता। जानवरो और इन्सानो को तो वह पहचान लेता था और सम्भवत अपने को भी उन्ही जैसा समझता था, लेकिन कारो, ट्रैक्टरो, मोटर-साइकलो और बाइसिकलो को वह कतई नही समझ पाता था और उनसे डरता था। स्टीम-बोटो और नावो मे शुरू मे उसने बेहद दिलचस्पी जाहिर की, मगर यह समझकर कि वह इन्हे कभी नही समझ पायेगा, उसने उनकी ओर ध्यान देना छोड दिया।

हवाई जहाजो के प्रति भी उसका ऐसा ही उदासी भरा रवैया था।

यह सही है कि उसे कुछ भी दिखायी नही देता था, लेकिन उसकी सूघने की शक्ति इतनी तेज थी कि कोई अन्य कुत्ता इस चीज मे उसका मुकाबला नही कर सकता था। धीरे-धीरे वह नगर की सभी गधो से परिचित हो गया और आसानी से आने-जाने लगा। वह रास्ते से कभी नही भटकता था और हमेशा घर पहुच जाता था। हर चीज की अपनी अपनी गध थी। बहुत-सी गधे थी और वे सभी अपने बारे मे मानो ऊची घोषणा करती थी। हर चीज की अपनी गध थी – कोई बुरी, कोई न अच्छी न बुरी और कोई बहुत प्यारी। आर्कटूरस अपना सिर ऊपर उठाता और चीजो को सूघता। सूघने के बाद वह फौरन यह जान जाता कि किस जगह कूडे-करकट का ढेर है, कहा गटर है, कौन से मकान लकडी के और कौन से पत्थर के बने हुए है, बाडे और छानिया कहा है, किस जगह लोग है और कहा घोडे और पक्षी। वह इन्हे ऐसे साफ तौर पर पहचान लेता था मानो अपनी आखो से देख रहा हो।

नदी के किनारे, गोदामो के पीछे, एक बडा-सा भूरा पत्थर था जो जमीन मे आधा धसा हुआ था। आर्कटूरस विशेष रूप से उसे सूघने का शौकीन था। उसकी दरारो और सूराखो मे से बहुत ही प्यारी और अनबूझ गधे आती

रहती थी। ये गधे कई बार हफ्तो तक कायम रहती और सिर्फ तेज हवा का झोका आने पर ही वहा से गायब होती। आर्कटूरस जब भी इस पत्थर के पास से गुजरता, उसकी जाच करने के लिए अवश्य ही ठहरता। वह इसके गिर्द बहुत-सा समय बिताता, नाक से सू-सू की जोरदार आवाज करता और अत्यधिक उत्तेजित हो जाता। फिर वह वहा से भाग जाता और कुछ और तफसीले जानने के लिए फिर से लौट आता।

आर्कटूरस ऐसी नाजुक से नाजुक आवाजे भी सुन लेता था जो किसी भी इन्सान को सुनायी नही देती थी। वह रातो को जाग उठता, अपनी आखे खोलकर और कान खड़े करके कुछ सुनता रहता। वह मीलो तक की दूरी से धीमी-धीमी मर-मर ध्वनि सुनता। उसे मच्छरो की भिन-भिन और अटारी पर लगे हुए ततैयो के छत्ते से आने वाली आवाज भी सुनायी देती। वह बगीचे मे चूहे के पैरो की आहट भी सुनता और छानी की छत पर दबे पाव चलने वाली बिल्ली के पैरो की चाप भी। हमारे लिए घर सुनसान और निस्तब्ध रहता था, मगर उसके लिए नही। उसके लिए तो मकान भी एक जीवित चीज था, मकान चरचराता, सरसराता, उसमे खटखटाहट होती और वह सर्दी के कारण बहुत धीरे से कापता भी। परनाले पर जमा होने वाली ओस की बूदे टप-टप करती हुई नीचे पत्थर पर आकर गिरती, नदी की ओर से हल्की-

हल्की कल-छल सुनायी देती रहती और आरा मिल के नजदीक लट्ठो की भारी-भारी तहे पानी मे हिलती-डुलती रहती। कडो मे चप्पुओ के धीरे-धीरे रगड खाने की आवाज सुनायी देती जिसका मतलब होता कि कोई नाव मे नदी को पार कर रहा है। दूरी पर स्थित गाव मे मुर्गो की हल्की-सी बागे सुनायी देती। यह वह दुनिया थी जिसे हम नही जानते थे, जहा की कोई ध्वनि हमे सुनायी नही देती थी, मगर उसके लिए यह सभी जानी-पहचानी आवाजे थी और वह उनका अन्तर समझता था।

आर्कटूरस के बारे मे एक और बात यह थी कि वह न तो कभी रू-रू करता था और न कभी हू-हू करके ऐसे रोता था कि लोगो को उसपर दया आये, कि वे उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करे, यद्यपि यह सही है कि जीवन उसके प्रति निर्मम और निठुर था।

एक दिन मै नगर से बाहर ले जाने वाली सडक पर जा रहा था। शाम घिरती आ रही थी। मौसम गर्म था और ऐसी शाति छायी हुई थी जैसी केवल गर्मी की शामो मे ही होती है। दूरी पर सडक के किनारे-किनारे धूल उड रही थी। टच-टच करके जानवरो को हाकने की ऊची-ऊची आवाजे और कोडो की सटकार सुनायी दे रही थी। चरागाहो से गाये हाक कर, वापस लायी जा रही थी।

अचानक एक कुत्ते पर मेरी नजर पडी जो मानो काम-काजी ढग से पशुओ के रेवड की ओर बढा जा रहा था। उसकी अजीब, तनाव और झिझक भरी चाल-ढाल से मैने फौरन पहचान लिया कि वह आर्कटूरस है। इससे पहले वह कभी नगर से बाहर नही गया था। "यह किधर चल दिया ?" मैने हैरान होकर अपने आप से पूछा। तब मैने निकट आते हुए रेवड मे अचानक असाधारण उत्तेजना के लक्षण देखे।

गायो को कुत्ते अच्छे नही लगते। उनमे कुत्तो की नस्ल से मिलते-जुलते भेडियो के प्रति जन्मजात घृणा पायी जाती है और वे उनसे डरती है। जब उन्होने एक काले कुत्ते को दौडते हुए अपनी ओर आते देखा तो आगे वाली गाये रुक गयी। एक मोटा-ताजा और भूरे रग का साड, जिसकी नाक मे नथ पडी हुई थी, रेल-पेल करता हुआ आगे आया। अपनी टागे चौडी किये हुए और सिर जमीन की ओर झुकाये हुए वह खूब जोर से गरजा। उसकी खाल तनी हुई थी और उसके खूनी दीदे इधर-उधर घूम रहे थे।

"ग्रीश्का!" कोई पीछे से चिल्लाया। "जल्दी से भागकर आगे जाओ, गाये रुक गयी है!"

आर्कटूरस को कुछ भी मालूम नही था। वह तो अपने अटपटे ढग से सडक पर बढता जा रहा था और रेवड के बिल्कुल निकट पहुच चुका था। मैने घबराकर उसे आवाज़

दी। वह जहा का तहा रुक गया और मेरी ओर मुडा। पलक झपकते मे साड उस पर झपटा और जोरो से फू-फा करते हुए उसने आर्कटूरस को सीगो पर उठा लिया। कुत्ते की काली परछाईं शाम के झुटपुटे मे नजर आयी और फिर वह रेवड के बीचोबीच धम से जा गिरा। उसके इस तरह गिरने का गायो पर ऐसा प्रभाव हुआ, मानो बम फट गया हो। गाये पाव पटकने, नथुने फडफडाने, बिदकने, और आपस मे सीग टकराने लगी। पीछे की गाये आगे आ गयी और वहा एक जमघट-सा हो गया। आकाश मे धूल का एक बादल-सा नजर आने लगा। मैंने अपने कानो पर जोर दिया कि अभी कुत्ते की दम तोडते वक्त की आखिरी चीख सुनायी देगी, मगर ऐसा न हुआ।

इसी बीच चरवाहे दौडते, अपने कोडे लहराते और चीखते-चिल्लाते आगे आ गये। सडक जब साफ हुई तो मुझे आर्कटूरस दिखाई दिया। वह धूल मे पडा हुआ, खुद भी धूल का एक ढेर या रास्ते मे फेक दिये गये एक फटे-पुराने चिथडे जैसा दिखाई दे रहा था। फिर वह हिला-डुला, कापता हुआ अपने पैरो पर खडा हुआ और धीरे-धीरे सडक के किनारे की ओर चल दिया। बडे चरवाहे ने उसे देखा।

"अरे, यह तो कुत्ता है!" वह व्यगपूर्ण खुशी से चिल्लाया। फिर उसने गाली दी और अपना लम्बा कोडा कसकर उसे रसीद किया। आर्कटूरस चीखा-चिल्लाया नही। वह केवल

सिकुड गया, उसने घडी भर के लिए अपनी आखे चरवाहे की ओर घुमायी, लडखडाता हुआ खाई तक पहुचा, फिसला और गिर गया।

साड अपने खुरो से जमीन को खोदता और फुकारता हुआ सडक के बीचोबीच खडा था। चरवाहे ने कसकर उस पर भी एक कोडा बरसाया। इसके फौरन बाद साड ठडा पड गया। गाये भी शात हो गयी और रेवड अपनी साधारण चाल से फिर आगे चल दिया। धूल मे गायो के बाडे की सी गध बस गयी और सडक पर जहा-तहा गोबर नजर आने लगा।

मै आर्कटूरस के पास गया। वह धूल से लथपथ अपनी जबान बाहर निकाले हुए जोरो से हाफ रहा था। उसके दोनो पहलुओ पर भीगी-सी लकीरे नजर आ रही थी। उसका पीछे वाला पजा काप रहा था—वह कुचला हुआ था। मैने उसका सिर थपथपाया, उससे कुछ कहा मगर उस पर इस चीज का कोई प्रभाव नही हुआ। उसके समूचे शरीर से यह जाहिर हो रहा था कि वह बहुत तकलीफ मे है, मामला उसकी समझ मे नही आ रहा है और उसे बहुत क्षोभ हो रहा है। वह यह नही समझ पा रहा था कि क्यो उस पर कोडा बरसाया गया और किस लिए उसे कुचला गया। ऐसी स्थिति मे कुत्ते अक्सर कू-कू करके रोते है, मगर आर्कटूरस ने ऐसा नही किया।

४

आर्कटूरस शायद एक साधारण घरेलू कुत्ता रहता, बहुत सम्भव है कि वह मोटा और सुस्त हो जाता, मगर एक सुखद घटना ने उसके बाकी जीवन को एक शानदार मोड दे दिया और उसमे सूरमा की सी आन-बान पैदा कर दी।

घटना कुछ इस तरह घटी। एक सुबह को मै जगल मे गया। गर्मी अपनी आखिरी घडिया गिन रही थी। मैने चाहा कि पत्तो के मुरझाने और झडने के पहले मे गर्मी के यौवन का कुछ मजा ले लू। आर्कटूरस मेरे पीछे-पीछे हो लिया। मैने उसे भगाने की कई बार कोशिश की, वह कुछ फासले पर रुक जाता और फिर मेरे पीछे दौडने लगता। मै उसके इस अटपटे हठ से तग आ गया और मैने उसकी तरफ ध्यान देना ही छोड दिया।

जगल मे पहुच कर आर्कटूरस बिल्कुल चकरा ही गया। नगर की हर चीज उसकी जानी-पहचानी थी। वह जानता था कि वहा लकडी की पटरिया, चौडी-चौडी सडके है, नदी-तट पर तख्ते बिछे हुए है और समतल फुटपाथ है। यहा सभी तरह की अनजानी चीजो ने उसे सभी ओर से घेर लिया यहा ऊची-ऊची घास थी, जो सख्त हो चुकी थी, काटदार झाडिया थी, सडते हुए ठूठ थे, कटे हुए वृक्ष थे, चीड के नौ उम्र और लचीले वृक्ष थे और पैरो के नीचे पत्ते

सरसराते थे। सभी ओर से चीजे उसे छूती थी, उसे सुइया-सी चुभोती थी और हैरान करती थी। ऐसा लगता था कि उन सभी ने उसे जगल से बाहर निकालने का षड्यत्र रचा हुआ था। और गधे, वहा तो गधे ही गधे थी! बहुत बडी सख्या थी उनकी, सभी अनजानी और घबरा देनेवाली थी। कुछ तेज और कुछ धीमी-धीमी थी। वह इनके अर्थ नही समझता था। आर्कटूरस इन महकती, सरसराती, चटकती और चुभती हुई चीजो से उलझता फिर रहा था। जब कोई चीज उसे छूती तो वह सिकुड जाता, सू-सू की आवाज करता और मेरे पैरो के निकट हो जाता। वह बुरी तरह बोखला उठा था और डर गया था।

"ओह आर्कटूरस!" मैने उसे धीरे से कहा, "बेचारे मासूम कुत्ते, तुम नही जानते कि दुनिया मे चमकता हुआ एक सूरज है, तुम नही जानते कि सुबह के समय वृक्ष और झाडिया कैसे हरे-भरे होते है और घास मे ओस की बूदे कैसे मोतियो की तरह चमकती है। तुम नही जानते कि यह दुनिया फूलो से भरी है—उन फूलो से जो सफेद है, पीले, नीले और लाल है! तुम नही जानते कि भूरे देवदार के वृक्षो और पीले पडते हुए पत्तो के बीच बेरियो और जगली गुलाब की बेरियो के गुच्छे चमकते हुए कितने प्यारे लगते है! अगर तुम रात के समय चाद और सितारे देख सकते तो शायद तुम खुशी से दीवाने होकर भोकने लगते। तुम भला यह

ग्रा रहा हू। वह मेरी ग्रोर देखता ग्रौर फिर से टोह लेने लगता।

ग्रब हम एक खुले मैदान मे ग्रा गये ग्रौर झाड-झखाड के बीच मे से गुजरने लगे। ग्रार्कटूरस तो उत्तेजना के कारण ग्रापे मे ही न रहा। वह झाडियो मे से ग्रपना रास्ता बनाता हुग्रा निकलता, घास पर मुह मारता ग्रौर उठी हुई जमीन पर ठोकरे खाता। ग्रागे बढता हुग्रा वह जोर से सास ले रहा था ग्रौर ग्रब न तो मेरी ग्रोर ध्यान दे रहा था ग्रौर न काटेदार झाडियो की ग्रोर ही। ग्राखिर वह ग्रपने ग्रापको काबू मे न रख सका, उसने ग्राखे भीच ली, एक लम्बी छलाग लगायी ग्रौर तेजी से सीधा झाडियो मे घुसता चला गया। वहा से उसकी नाक की सू-सू ग्रौर इधर-उधर छानबीन करने की ग्रावाज सुनायी देती रही। "उसने जरूर कोई चीज खोज ली है," मैने सोचा ग्रौर रुक गया।

झाडियो मे से उसके भौकने की टनटनाती-सी ग्रावाज ग्राती रही, ऐसी भौ-भौ, जिसमे ग्रात्मविश्वास की कमी थी।

"ग्रार्कटूरस!" मैने चिन्ता करते हुए उसे पुकारा। उसी समय कोई खास बात हो गयी। ग्रार्कटूरस ऊची ग्रावाज मे चिल्लाया ग्रौर गुर्राता हुग्रा तेजी से झाडियो मे घुस गया। उसकी चीख जल्दी से उत्तेजनापूर्ण भौ-भौ मे बदल गयी। झाडियो के हिलते हुए सिरो से मुझे उसकी गतिविधि का पता

चल रहा था। मै उसके पास हो जाने के लिए तेजी से आगे बढा और ऊची आवाज मे उसे निरन्तर पुकारता रहा। मगर मेरी चीख-पुकार से केवल उसका उत्साह और बढता ही गया। ठोकरे खाता और हाफता हुआ मै एक मैदान मे से गुजरा, फिर मैंने दूसरा मैदान पार किया, एक खाई मे उतरा और उसे रोकने के लिए जान छोडकर भागा। मै एक खुले मैदान मे पहुचा और वहा मुझे आर्कटूरस दिखायी दिया। वह झाडियो मे से उछलता-कूदता हुआ सीधा मेरी तरफ आ रहा था। इस समय उसे पहचानना कठिन था, वह ऊची-ऊची छलागे लगाता हुआ ऐसे दौड रहा था कि देखकर हसी आये। उसके दौडने का ढग साधारण कुत्तो से बिल्कुल भिन्न था। फिर भी वह विश्वास के साथ गध का पीछा कर रहा था और लगातार ऊची आवाज मे भौकता जा रहा था। जब-तब उसकी आवाज पिल्ले की सी ऊची चीख मे बदल जाती थी।

"आर्कटूरस!" मै चिल्लाया। मेरी ऊची आवाज सुनकर वह अपने रास्ते से भटक गया और इस तरह मुझे दौडकर उसके पास जाने और पट्टे से पकड लेने का समय मिल गया। उसने छूटने की कोशिश की, मुह फाडा, और बस इतनी ही कसर रह गयी कि मुझे काटा नही। उसकी आखो मे खून उतरा हुआ था। काफी देर बाद ही मै उसे शात कर पाया। उसके शरीर पर बहुत-सी खराशे और खरोचे नजर आ रही

थी, और वह अपना बाया कान जमीन की ओर झुकाये हुए था, जो यह जाहिर करता था कि वह जख्मी हो गया था। मगर वह इस हद तक जोश मे आया हुआ था, उत्तेजित था कि कुछ भी महसूस नही कर रहा था।

५

उस दिन से उसके जीवन ने एक नयी करवट ले ली। हर सुबह वह जगल की ओर भाग जाता और शाम होने तथा कभी-कभी अगले दिन तक घर न लौटता। वह हमेशा बेहद थका-हारा घर आता, उसके शरीर पर जहा-तहा खरोचे होती और आखो मे खून उतरा हुआ। इस समय के दौरान वह काफी बडा हो गया था—उसकी छाती चौडी हो गयी थी, आवाज मे ज्यादा जोर आ गया था और उसके पजे इस्पाती कमानियो की तरह मजबूत तथा सख्त हो गये थे।

कैसे वह शिकार का पीछा करता था और जिन्दा घर लौट आता था, यह बात मेरी समझ मे नही आती थी। वैसे अवश्य ही वह यह अनुभव करता होगा कि अकेले शिकार पर जाने मे वह बात नही बनती, जो बननी चाहिए, कि वहा किसी चीज की कमी रहती है। शायद उसे कमी महसूस होती थी बढावा देने वाली, उसकी हिम्मत बढाने

वाली इन्सानी आवाज की, जो कि हर शिकारी कुत्ते के लिए बहुत जरूरी होती है।

वह अपना पेट भर कर जगल से लौटा हो, ऐसा कभी नही हुआ था। वह एक अधे की सी धीमी और अटपटी गति से दौडता था, उसमे आवश्यक फुर्ती नही थी, विश्वास नही था। वह कभी भी अपने शिकार को दबोच नही पाता था, उसके शरीर मे अपने दात गडाने मे उसे सफलता नही मिलती थी। जगल उसका मूक शत्रु था। वह उसके चेहरे और आखो पर बार-बार चोटे लगाता, उसके पैरो मे उलझ-उलझ जाता और जब वह दोडता तो उसके रास्ते मे बाधा बनता। जगल मे उसके लिए सिर्फ गध थी, बहुत तेज गध, उसे उत्तेजित करने वाली, उसे अपनी ओर खीचने वाली, सदैव प्यारी लगने वाली गध जो उसकी शत्रु बनी रहती थी। हजारो चीजो मे से उसे आगे खीचने वाली, उसे हमेशा आगे ही आगे बढाने वाली यही एक चीज थी – यही गध।

पागलो की तरह दौड लगाने के बाद जब उसे होश आता, जब उसका उन्माद भरा सपना टूटता, तो वह घर का रास्ता कैसे ढूढ लेता था? जगह और जमीन की बनावट की कैसी अद्भुत समझ थी उसे! कितनी शक्तिशाली सहज अनुभूति की आवश्यकता होती होगी उसे, होश मे आने पर घर का रास्ता ढूढने के लिए! वह भी तब, जब वह

थका-हारा होता था, भौक-भौक कर उसकी आवाज बैठी हुई होती थी और वह हाफता हुआ, घर से कई मीलो की दूरी पर घने जगल मे होता था जहा उसके गिर्द सरसराती घास और नम खड्डो की गध के सिवा कुछ भी नही होता था।

हर शिकारी कुत्ते को मनुष्य के बढावे की जरूरत होती है। शिकार का पीछा करते हुए वह अपने जोश मे सभी कुछ भूल जाता है, मगर यह नही भूलता कि उसी के समान जोश से ओत-प्रोत उसका स्वामी यानी शिकारी भी कही उसके निकट ही मौजूद है और वक्त आने पर उसकी एक गोली सारे मामले को तय कर देगी। ऐसे क्षणो मे मालिक की आवाज जोश के कारण वहशी हो जाती है और कुत्ता इसे महसूस करता है। शिकारी भी झाडियो के बीच दौडता, गला फाड-फाड कर चिल्लाता और शाबाशी देता हुआ कुत्ते को शिकार का पीछा करने मे मदद देता है। जब शिकार हो चुकता है तो मालिक खरगोश की एक टाग उसके सामने फेकता है, उसे खुशी से चमकती और नशे मे चूर वहशी आखो से देखता है और खुशी से चिल्ला कर कहता है, "वाह रे पट्ठे! कमाल कर दिया तूने तो!" और उसके कान थपथपाता है।

इस दृष्टि से आर्कटूरस एकाकी था और दुखी रहता था। वह तो मानो अपने मालिक के प्यार और शिकार के शोक

के दोराहे पर खडा था । अनेक बार मैंने सुबह के समय उसे बरामदे के नीचे से, जहा उसे सोना पसन्द था, रेंगकर बाहर आते देखा था। बगीचे मे कुछ देर दौड लगाने के बाद वह अपने मालिक की खिडकी के नीचे बैठ जाता और उसके जगने का इन्तजार करता। वह हमेशा से ही ऐसे करता आया था। डाक्टर साहब अगर अच्छे मूड मे होते तो अपनी खिडकी से झाककर पुकारते "आर्कटूरस!" तब कुत्ते की खुशी का पारावार न रहता। वह खिडकी के पास जाता, सिर ऊपर को उठा लेता, उसके गले की नसे उभर आती और वह पाव बदल बदल कर अपने शरीर को झुलाता रहता। तब वह भीतर जाता, वहा रगारग और खुशी भरी आवाजो के वातावरण मे मौज मनाता। डाक्टर तरह-तरह के गाने गाते रहते और कुत्ता कमरो मे चक्कर लगाता रहता।

आर्कटूरस अब भी डाक्टर के जगने का इन्तजार करता, मगर बेचैनी जाहिर करता हुआ। उतावली के कारण उसका शरीर अकड-अकड जाता, वह अपने को खुजाता और तन झटकता, ऊपर की ओर देखता, उठ कर खडा होता, फिर बैठ जाता और धीरे-धीरे कू-कू करने लगता। तब वह बरामदे के गिर्द चौडे-चौडे चक्कर काटता हुआ दौडने लगता, फिर खिडकी के नीचे बैठ जाता और बेचैनी से धीरे-धीरे भौकता। उसके कान तनकर खडे हो जाते, वह अपने सिर

को कभी एक तरफ और कभी दूसरी तरफ झुकाता और आहट लेता। आखिर वह उठता, बेचैनी से अगडाई और जम्हाई लेता और पक्के इरादे के साथ बाड की सेध की ओर चल देता। घडी भर बाद वह मुझे खेत मे दिखाई देता — झिझक भरे और तनावपूर्ण ढग से भागा जाता हुआ। उसका रुख जगल की तरफ होता।

६

एक दिन मै अपनी बन्दूक लिए हुए, एक तग सी झील के ऊचे किनारे के साथ-साथ जा रहा था।

उस साल बतखे असाधारण रूप से मोटी और काफी बडी सख्या मे थी। ढालू जगहो पर ढेरो कुनाल नजर आते थे। शिकार करना आसान भी था और दिलचस्प भी।

एक सुविधाजनक ठूठ देख कर मै आराम करने के लिए बैठ गया। हवा का हल्का झोका जब बन्द हुआ और चिन्तनपूर्ण नीरवता छा गयी तो अचानक कही दूर से मुझे एक अजीब-सी आवाज सुनायी दी। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई लगातार चादी की घटी बजा रहा हो। यह दिलकश आवाज देवदार के वृक्षो के झुरमुट मे से गुजरती, चीड के वृक्षो के बीच रुककर सास लेती और सारे जगल

मे गूज जाती। वह इर्द-गिर्द की हर चीज को उत्सव के रग मे रगे दे रही थी। धीरे-धीरे यह आवाज अधिक स्पष्ट और सकेन्द्रित हो गयी। तब मैने अनुभव किया कि कही कोई कुत्ता भौक रहा है। यह आवाज झील के मुकाबिल वाले किनारे के चीड के घने जगल से आ रही थी। यह साफ तौर पर, मगर धीमी और दूर से आने वाली कुत्ते के भौकने की आवाज थी। कभी-कभी यह आवाज बिल्कुल खो जाती, मगर फिर यह पहले की तरह लगातार सुनायी देने लगती और हर घडी निकट और अधिकाधिक ऊची होती जाती।

मै ठूठ पर बैठा हुआ भोज वृक्षो के विरले और पीले पडते हुए पत्तो, भूरी पडती हुई काई और उस पर दूर से दिखते हुए पतझर के लाल पत्तो को देख रहा था। घटी की तरह गूजती हुई कुत्ते की यह भौ-भौ सुनते हुए मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सारी दुनिया – छिपी हुई गिलहरिया और जगली मुर्गिया, भोज वृक्ष, एक दूसरे से सटे हुए हरे चीड के वृक्ष और नीचे की ओर स्थित झील तथा मकडियो द्वारा बुने गये हिलते हुए जाले – सभी इस आवाज को सुन रहे है। तभी उस मधुर और सगीतपूर्ण भौ-भौ मे मुझे एक जानी-पहचानी आवाज का आभास हुआ। मुझे अचानक यह एहसास हुआ कि यह तो आर्कटूरस है जो शिकार का पीछा कर रहा है।

हा, तो आखिर मुझे उसकी आवाज सुनने को मिली ही! चीड के वृक्ष हल्की-सी मधुर प्रतिध्वनि पैदा करते और इस तरह ऐसे लगता मानो एक ही साथ कई कुत्ते भौक रहे हो। आर्कटूरस अचानक चुप हो गया—स्पष्ट था कि वह अपनी राह से भटक गया था। यह खामोशी कई मिनटो तक कायम रही और मुझे ये मिनट बहुत लम्बे लगे। जगल फौरन सूना और वीरान हो गया। मै अपनी कल्पना मे देख रहा था—चक्कर काटते, अपनी सफेद आखो को झप-झपाते और केवल अपनी नाक पर विश्वास करने वाले आर्कटूरस को। हो सकता है कि वह किसी वृक्ष से टकरा गया हो? बहुत सम्भव है कि वह इस समय कही पडा हुआ हो, उसकी छाती पर बहुत बडा घाव हो, खून बह रहा हो, वह दर्द से तडप रहा हो और उठने मे असमर्थ हो?

आर्कटूरस ने पहले से कही अधिक जोश के साथ फिर शिकार का पीछा करना शुरू किया। इस बार उसकी आवाज झील के कही अधिक निकट थी। यह झील कुछ इस तरह से स्थित थी कि सभी रास्ते और पगडडिया इसकी ओर आती थी और पास से कोई नही गुजरती थी। इस झील के निकट मैने बहुत-सी दिलचस्प चीजे देखी थी। अब भी मै इस इन्तजार मे था कि देखे क्या होता है। कुछ समय बाद एक छोटी-सी खुली जगह मे छलागे लगाती हुई एक

लोमडी नजर आयी। यह खुली जगह खट्टे-मीठे पत्तो वाली झाडियो के कारण बादामी रग धारण किये हुए थी। लोमडी मटमैले रग की थी और उसकी दुम पतली और लसलसी थी। लोमडी क्षण भर के लिए ठहरी, उसने आगे का पजा ऊपर उठाया और कान खडे करके पीछा करने वाले के पैरो की आहट ली। फिर वह बडे इत्मीनान से इस खुली जगह को पार करती हुई जगल के सिरे पर पहुची, एक खड्ड मे कूदी और झाड-झखाड मे गायब हो गयी। आर्कटूरस पूरी रफ्तार से दौडता हुआ इसी खुली जगह मे पहुचा। वह पगडण्डी से कुछ हटकर दौड रहा था, लगातार बहुत जोर और गुस्से से भौक रहा था और सदा की तरह भागता हुआ, ऊची अटपटी छलागे लगा रहा था। उसने लोमडी के पीछे खड्ड मे छलाग लगायी, झाड-झखाड मे घुसा, चीखा-चिल्लाया, किसी कठिन जगह से चुपचाप सघर्ष करके बाहर निकला और फिर से नीची और नपी-तुली आवाज मे इस तरह भौकने लगा मानो कोई घटी बजा रहा हो।

एक दूसरे के जन्मजात शत्रु अर्थात् शिकारी कुत्ता और शिकार किसी अजीब से नाटक के दृश्य की भाति घडी भर के लिए मेरे सामने आये और फिर गायब हो गये। मै फिर से दूरी पर सुनायी देने वाली कुत्ते की भौ-भौ और खामोशी का एकाकी साक्षी बन कर रह गया।

७

इस अनूठे शिकारी कुत्ते की ख्याति नगर भर मे और देहात मे भी फैल गयी। लोगो ने उसे दूरवर्ती लोसवा नदी के किनारे, जगलो से ढकी हुई पहाडियो के पार खेतो मे और जगल की वीरान पगडडियो पर देखा था। लोग गाव मे, घाट पर और नावो मे उसकी चर्चा चलाते। मल्लाह और आरा मिल मे काम करने वाले मजदूर बीयर का गिलास सामने रखकर इसके सम्बन्ध मे बातचीत करते।

अब हमारे घर शिकारी आने लगे। ये लोग आम तौर पर ऐसी अफवाहो पर विश्वास नही करते। वे शिकारियो से सम्बन्धित किस्से-कहानियो को कभी सच नही मानते। वे आर्कटूरस को खूब अच्छी तरह से जाचते, उसके कानो और पजो पर विचार करते, उसके शरीर की बनावट और मजबूती का जिक्र करते और शिकारी कुत्ते की अन्य खूबियो की ओर ध्यान देते। वे उसमे तरह-तरह के दोष ढूढ निकालते और मालिक को उसे बेचने के लिए राजी करने की कोशिश करते। आर्कटूरस की मास-पेशिया टटोलने के लिए, उसकी छाती और पजो को हाथ लगाकर देखने के लिए वे बहुत ही बेचैन रहते, मगर आर्कटूरस ऐसी गम्भीर और क्रोधपूर्ण मुद्रा बनाये हुए डाक्टर के पैरो के पास बैठा रहता कि उन्हे उसकी ओर हाथ बढाने की हिम्मत न

होती। डाक्टर आग-बबूला होकर, गुस्से से लाल-पीले होते हुए उनसे कहते कि कुत्ता बिकाऊ नही है और यह बात अब तक सभी शिकारियो को मालूम हो जानी चाहिए। शिकारी निराश होकर लौट जाते और कुछ समय बाद कुछ और लोग यही रट लगाते हुए आ पहुचते।

एक दिन आर्कटूरस शिकार के अपने शौक के सिलसिले मे बहुत-सी खरोचो के साथ घर लौटा। वह बरामदे के नीचे लेटा हुआ था कि तभी बगीचे मे एक बूढा आदमी आया। उसकी एक आख गायब थी और ततारियो की सी छोटी-सी तिकोनी दाढी थी। वह फटी पुरानी टोपी और शिकारियो वाले ऊचे बूट पहने हुए था। मुझे देखकर बूढे ने आख झपकाना शुरू किया, अपनी टोपी उतारी, सिर खुजलाया और आकाश को ताका।

"आजकल मौसम, मेरा मतलब मौसम " उसने अस्पष्ट ढग से कहा, फिर खासा और चुप हो गया। मैने अनुमान लगा लिया कि वह क्या चाहता है।

"तुम कुत्ते के सिलसिले मे बात करने आये हो?" मैने पूछा।

"हा, हा," फिर से अपनी टोपी सिर पर रखते हुए उसने झटपट कहा। "अब तुम ही बताओ यह कहा का इन्साफ है? क्या करना है डाक्टर को कुत्ते का? उन्हे कुत्ते की जरूरत नही, मगर मुझे जरूरत है, मुझे बेहद

जरूरत है कुत्ते की। जल्द ही शिकार के दिन ग्रा रहे हैं। वैसे कुत्ता तो मेरे पास है, मगर किसी काम का नही—बिल्कुल बुधू कुत्ता है, न उसकी नाक तेज है, न ग्रावाज मे जोर है। बिल्कुल किसी काम का नही। ग्रौर जरा ख्याल करो, यह कुत्ता ग्रधा है। मगर बहुत कमाल का है। तुम मेरी बात सच मानो हजारो मे से एक है, कसम खुदा की।"

मैने उसे सलाह दी कि वह मालिक से उसके बारे मे बातचीत करे। उसने गहरी सास ली, नाक बजायी ग्रौर ग्रन्दर गया। पाच मिनट बाद वह बाहर ग्राया, निराश-सा ग्रौर उसका चेहरा तमतमाया हुग्रा था। वह मेरे पास ग्राकर खडा हो गया, गले से भारी ग्रावाज निकाल कर उसने ग्रपना गुस्सा जाहिर किया ग्रोर सिगरेट जलाने मे बहुत समय लगा दिया। फिर उसने त्योरी चढा ली।

"क्या डाक्टर साहब ने इकार कर दिया?" मैने पूछा। वैसे मै पहले से ही जानता था कि डाक्टर का क्या जवाब होगा।

"बस, कुछ न पूछो!" उसने क्षुब्ध होते हुए कहा। "बडी शर्म की बात है, मै कहता हू बहुत ही शर्म की बात है। मै बचपन से शिकार करता ग्राया हू। देखो इसी फेर मे एक ग्राख से भी हाथ धो बैठा। मेरे बेटे भी शिकारी

है। मै तुमसे कहता हू कि मुझे इस कुत्ते की बेहद जरूरत है। मगर वह कहता है—नही बेचूगा। मैने पाच सौ रूबल तक लगा दिये—अहा—कितनी बडी कीमत है। वह तो बात ही नही करना चाहता। उसकी आखो मे आसू आते-आते रह गये। वैसे रोना तो मुझे चाहिए, उसे नही। शिकार का वक्त आ रहा है और मेरे पास कुत्ता नही है।"

उसने बगीचे मे इधर-उधर नजर घुमायी और बाड की ओर देखा, उसकी नजर मे कुछ उलझन-सी थी। फिर अचानक उसके चेहरे पर चालाकी झलक उठी। वह फौरन ठडा पड गया।

"कहा रखते हो तुम इस कुत्ते को?" उसने आख झपकाते हुए सरसरे अन्दाज मे पूछा।

"क्यो, क्या उडाने का इरादा है?" मैने कहा।

बूढे को धक्का-सा लगा। उसने अपनी टोपी उतारी, टोपी के अस्तर से अपना मुह पोछा, और ध्यान से मेरी ओर देखा।

"अल्लाह बचाये!" उसने जरा हस कर कहा। "क्या बात कह दी तुमने, अल्लाह तुम्हारा भला करे। अब तुम ही बताओ, क्या करना है उसे कुत्ते का? मै तुम्ही से पूछता हू।"

वह दरवाजे की ओर बढा, फिर रुका और उसने खुश होते हुए मेरी ओर देखा।

"वाह, वाह, क्या आवाज है! मै तुमसे कहता हू, बहुत खूब आवाज है उसकी! बिल्कुल ऐसी मानो घटी बजती हो!"

इसके बाद वह लौट आया और मकान की खिडकियो की ओर आख से इशारा करते हुए उसने फुसफुसाकर मुझसे कहा –

"तुम जरा देखते जाओ, यह कुत्ता मेरा होकर रहेगा। उसे क्या अचार डालना है कुत्ते का? वह तो पढा-लिखा आदमी है, कोई शिकारी थोडे ही है। मै तुमसे कहता हू कि अल्लाह ने मदद की तो वह उस कुत्ते को मेरे हाथ बेच ही देगा। अभी शिकार पर जाने के दिन दूर है, कोई न कोई तदबीर निकल ही आयेगी। आह, मर्जी उसकी!"

बूढे के जाते ही डाक्टर जल्दी से कदम बढाते हुए बगीचे मे आये।

"क्या कह रहा था वह आपसे?" उन्होने चिन्तित होते हुए पूछा। "कैसा भयानक खूसट है! आपने ध्यान दिया, उसकी आख कैसी डरावनी है? वह जरूर कोई न कोई गुल खिलायेगा!"

डाक्टर ने घबराहट मे अपने हाथ मले। उनकी गर्दन

लाल थी और उनके माथे पर सफेद बालो का एक गुच्छा ढलक आया था। डाक्टर की आवाज सुनकर आर्कटूरस बरामदे के नीचे से रेंगकर बाहर निकला और लगडाता हुआ हमारे पास आया।

"आर्कटूरस!" डाक्टर ने कहा। "तुम तो मुझसे बेवफाई नही करोगे न?"

आर्कटूरस ने अपनी आखे बन्द कर ली और थूथनी डाक्टर के घुटनो पर टिका दी। वह बहुत कमजोर था, खडा नही रह सकता था, इसलिये अपनी पिछली टागो पर बैठ गया। उसका सिर नीचे को झुक गया और वह लगभग सो गया। डाक्टर ने खुशी से मेरी ओर देखा, हसे और आर्कटूरस का सिर थपथपाया। वे नही जानते थे कि यह शिकारी कुत्ता उनसे बेवफाई कर भी चुका था। जिस दिन वह मेरे साथ जगल मे गया था उसी दिन उनसे बेवफाई कर चुका था।

८

अगर सभी बढिया कहानियो का अन्त सुखद होता तो कितनी अच्छी बात होती! क्या नायक को, बेशक वह शिकारी कुत्ता ही क्यो न हो, लम्बे अर्से तक सुखी जीवन बिताने का अधिकार नही है? दुनिया मे कोई भी बिना उद्देश्य के पैदा नही होता, शिकारी कुत्ता इसलिए जन्म लेता

है कि वह अपने शत्रु यानी शिकार का पीछा करे। वह शिकार का पीछा इसलिए करता है कि वह कुत्ते की तरह इन्सान के पास आकर उसका दोस्त नही बना, हमेशा की तरह जगली ही रहा है। अधा कुत्ता अधे इन्सान की भाति नही होता। कोई उसकी मदद नही करता, अधकार मे वह एकदम एकाकी होता है। सर्वथा असहाय और प्रकृति की ओर से अभिशापित। उस प्रकृति की ओर से जो हमेशा दुर्बल के प्रति क्रूर होती है। ऐसे कुत्ते के लिए इससे बढकर और क्या बात हो सकती है कि वह भयानक परिस्थितियो मे भी पूरे उत्साह के साथ अपनी किस्मत के लिखे को पूरा करता है। मगर आर्कटूरस के भाग्य मे तो ऐसा जीवन भी बहुत ही सक्षिप्त था।

अगस्त का महीना खतम होने को था और मौसम अधिक बिगड गया था। मै जाने की तैयारी कर रहा था कि आर्कटूरस गायब हो गया। वह सुबह के वक्त जगल मे गया और शाम तक न लौटा, अगले दिन और फिर तीसरे दिन भी घर न आया।

जब कोई ऐसा दोस्त जिसके साथ आप बहुत समय से रह रहे हो और कोई विशेष ध्यान दिये बिना जिसे अक्सर देखते हो, यदि वह अचानक गायब हो जाता हे ओर फिर कभी नही लौटता है तो आप केवल उसकी स्मृतिया सहेज कर ही रह जाते है।

आर्कटूरस के साथ बिताये गये सभी दिन अब मुझे याद हो आये। मुझे याद आयी उसमे पायी जानेवाली विश्वास की कमी की, उसकी उलझन, उसकी टेढी और अटपटी चाल, उसकी गूजती हुई आवाज, उसकी मनमोहक आदतो और मालिक के प्रति उसके प्यार की। मुझे तो उसकी गध की भी याद आयी, ऐसी गध की जो एक साफ-सुथरे और स्वस्थ कुत्ते मे पायी जाती है। मुझे यह सब कुछ याद हो आया और इस बात का अफसोस हुआ कि वह मेरा कुत्ता नही था, कि मैने उसे उसका नाम नही रखा था, कि वह मुझसे प्यार नही करता था और घर से मीलो की दूरी पर पागलो की तरह शिकार के पीछे दौडने के बाद, जब उसे होश आता था, तो वह अधेरा गहराने के बाद जिस घर मे लौटता था, वह घर मेरा नही था।

इन आखिरी दिनो के दौरान डाक्टर बुझे-बुझे से नजर आते। उन्हे फौरन उस एक आखवाले बूढे के बारे मे सन्देह हुआ। हमने बहुत समय तक उसकी खोज की और आखिर खोज ही लिया। मगर बूढे ने कसमे खा कर कहा कि उसने आर्कटूरस को नही देखा। उसे तो इस बात का गुस्सा भी आया कि हमने ऐसे अच्छे कुत्ते की ढग से देखभाल न की और उसकी खोज मे हाथ बटाने का भी वायदा किया।

आर्कटूरस के गायब होने की खबर बहुत तेजी से सारे नगर मे फैल गयी। मालूम यह हुआ कि बहुत-से लोग

आर्कटूरस को जानते थे, उसको प्यार करते थे और हर कोई उसकी खोज मे डाक्टर की मदद करने को तैयार था। सभी ने अपनी-अपनी अक्ल लडायी। जितने मुह उतनी बाते। किसी ने कहा कि उसने आर्कटूरस से मिलता-जुलता एक कुत्ता देखा है, दूसरो ने कहा कि उन्होने जगल मे उसके भौकने की आवाज सुनी है

डाक्टर जिन बच्चो का इलाज करते थे, उन्होने और ऐसे बच्चो ने भी जिन्हे वे जानते तक नही थे, जगलो को छान मारा, वे चीखते-चिल्लाते और पुकारते फिरे, उन्होने गोलिया चलायी और जगल की हर पगडण्डी को देखा-भाला। वे दिन मे दस बार यह मालूम करने के लिए डाक्टर के पास आते कि कुत्ता लौटा या नही।

मैने खोज मे हिस्सा नही लिया। न जाने क्यो मुझे यह विश्वास ही नही होता था कि आर्कटूरस गुम हो सकता है – मुझे उसकी तेज नाक पर बहुत विश्वास था। और फिर वह अपने मालिक को बहुत ही प्यार करता था। इसलिए यह भी नही हो सकता था कि वह अपने प्यारे मालिक को छोडकर किसी शिकारी के साथ भाग गया हो। हो न हो, जरूर वह जान से हाथ धो बैठा है मगर कैसे, कहा – यह मै नही जानता था। रही मौत की बात, तो वह तो कही भी आ सकती है।

कई दिन बीत जाने पर डाक्टर भी इस बात को समझ गये। वे बहुत मुरझाये-मुरझाये से और अचानक बहुत उदास रहने लगे। वे अब गाने नही गाते थे और रातो को देर तक उनकी आख नही लगती थी। आर्कटूरस के बिना घर सूना-सूना और वीरान-सा हो गया। बिल्लिया अब बगीचे मे मनमानी करने लगी। अब कोई भी नदी के किनारे पड़े हुए पत्थर को नही सूघता था। अब वह काला-सा पत्थर उदास और बेकार पडा हुआ खाली हवा मे बेकार अपनी गधे उडाता रहता।

जब मेरे विदा होने का दिन आया, तो हमने यह कोशिश की कि हम आर्कटूरस की चर्चा न करे। डाक्टर ने केवल एक बार ही इस बात के लिए दुःख प्रकट किया कि वे जवानी के दिनो मे शिकारी क्यो न बन गये।

६

कोई दो वर्ष बाद मै फिर इस इलाके मे गया और डाक्टर के घर पर ही ठहरा। वे अब भी अकेले ही रहते थे। फर्श पर अब कोई इधर-उधर नही दौडता था, सूघा-साघी और कू-कू की आवाज नही करता था तथा बेंत के फर्नीचर पर अपनी दुम नही मारता था। घर मे सन्नाटा था और कमरो मे से धूल-मिट्टी, दवाइयो

और पुराने दीवाली कागज की गध पहले की तरह ही आती थी।

बसन्त के दिन थे, इसलिए सुनसान घर बहुत उदास नही लगता था। बगीचे मे कलिया चटक रही थी, गौरैया बेहद शोर मचाती थी और शहर के पार्क मे कौवो ने शोर मचाते हुए अपने घोसले बनाने शुरू कर दिये थे। डाक्टर बहुत ही बारीक आवाज मे तरह-तरह की धुने गुनगुनाते थे। सुबह के समय नगर के ऊपर नीली-सी धुध छायी रहती, दृष्टि की सीमा तक चढी हुई नदी दूर-दूर तक फैली थी, बाढ वाले क्षेत्रो मे हस डेरा डाले हुए थे और वे सदा की तरह "क्लिक-क्लाक" का अपना राग अलापते हुए सुबह के समय जागते थे। छोटी-छोटी मोटर-बोटे यदि नकियाती-सी आवाज मे अपने भोपू बजाती, तो माल ढोने वाली नावे पतली-सी आवाज मे लगातार सीटिया बजाती रहती। ये सभी दृश्य सुन्दर थे और आवाजे बहुत लुभावनी थी।

यहा पहुचने के एक दिन बाद मै शिकार के लिए बाहर गया। जगल सुनहरी धुध की चादर मे लिपटा हुआ था और उसमे टपटप, छन-छन और छल-छल की आवाजे गूज रही थी। बर्फ पिघलने के बाद की नम धरती से ऐसी जोरदार गध आ रही थी कि ऐस्प वृक्ष की छाल की गध, सडती

हुई लकडी और गीले पत्तो तथा जगल की अन्य सभी गधे उसी मे डूबकर रह गयी थी।

शाम बहुत सुहानी थी और डूबते हुए सूर्य के कारण आकाश लपटो का सागर सा बना हुआ था। जगली मुर्गे ढेरो थे। मैने चार मुर्गे मारे और पत्तो के काले ढेरो के बीच से उन्हे बहुत कठिनाई से ढूढा। जब सूर्यास्त की लालिमा हरे रग मे बदली और आकाश मे पहले सितारो ने पलके खोली, तो मै धीरे-धीरे एक जानी-पहचानी और कम इस्तेमाल होने वाली राह पर घर की ओर चल दिया। मैने उन चौडे-चौडे पोखरो से बच कर निकलने की कोशिश की जिनमे आकाश, निपत्ते भोज के वृक्ष और सितारे प्रतिबिम्बित हो रहे थे।

ऐसे ही एक पोखर के गिर्द एक टीले पर चक्कर लगाते हुए मैने अचानक अपने सामने कोई चमकती हुई चीज देखी। शुरू मे तो मैने यह सोचा कि वह बर्फ का एक ऐसा टुकडा है जो अभी तक नही पिघला। मगर नजदीक पहुचकर मैने देखा कि वे एक कुत्ते की हड्डिया थी जो जमीन पर बिखरी पडी थी। मैने धडकते हुए दिल से इन हड्डियो को ध्यान से देखा, मुझे एक जाना-पहचाना गले का पट्टा दिखायी दिया, जिसमे पीतल का बकसुआ लगा हुआ था और जो अब हरा पड चुका था। हा, यह आर्कटूरस की हड्डिया थी।

मैंने गहराते हुए अधकार मे इस स्थान का बहुत ही अच्छी तरह से निरीक्षण किया और इस बात को स्पष्ट तौर पर समझ लिया कि वहा क्या घटना घटी थी। एक कम उम्र, मगर सूख चुके देवदार के वृक्ष की नीचे वाली एक डाल आगे को बढी हुई थी। वृक्ष की भाति यह डाल भी सूख चुकी थी, उसके काटे झड चुके थे, वह टूट चुकी थी और एक तेज डडा बनकर रह गयी थी। शिकार की गध का पीछा करते हुए, जब आर्कटूरस को न तो कुछ सुनायी देता था, न किसी ओर की तरफ उसका ध्यान जाता था और वह अधाधुध उस शिकार का पीछा करता जाता था, वह सिर के बल इस डडे से आ टकराया था। दिन के प्रकाश को देखे बिना ही वह शिकार का पीछा करते हुए इस दुनिया से चल बसा था। बहुत ही शानदार जिन्दगी बितायी थी उसने!

मै घुप अधेरे मे अपनी राह पर चलता हुआ जगल के सिरे तक आ पहुचा। वहा गीली जमीन पर पाव छपछपाते हुए मैंने घर की ओर जाने वाली सडक खोज ली। मगर बार-बार मुझे उस टीले पर खडे सूखे और टूटे हुए देवदार के वृक्ष का ध्यान आता रहा।

शिकारियो मे यह चीज आम पायी जाती है कि वे अपने कुत्तो को बडे ही शानदार नामो से पुकारते है। उनके शिकारी कुत्तो मे आपको सभी तरह के नाम मिल जायेंगे।

वहा डियाना भी है ग्रौर ग्रन्तिया भी, फोबस भी ग्रौर नैरो भी, वीनस भी ग्रौर प्रमूलस भी। मगर शायद ही कोई ग्रन्य कुत्ता हमेशा चमकते रहने वाले नीले सितारे 'ग्रार्कटूरस' का नाम पाने का इतना ग्रधिक ग्रधिकारी रहा हो, जितना कि यह कुत्ता।

वलेरी ओसिपोव (जन्म १९३०) – पत्रकार की शिक्षा पाई। आप कई लघु उपन्यास और सिनेरियो लिख चुके हैं।

आपकी वृत्तात्मक कहानी 'खत, जो भेजा न गया', बहुत प्रसिद्ध हुई। यह लेखक की प्रारम्भिक रचनाओ मे से एक है।

वलेरी ओसिपोव

खत, जो भेजा न गया

१९५६ की शरद मे मुझे 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' के सम्वाददाता के रूप मे याकूतिया जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहा मैने हीरो के उद्गम-स्थानो की सबसे पहले खोज करनेवाले युवा सोवियत भूगर्भशास्त्रियो के बारे मे अनेक मनोरजक कहानिया सुनी। उन्ही मे से एक के आधार पर यह कहानी लिखी गई है।

लेखक

हम याकूतिया के दुर्गम तैगा की एक छोटी-सी बस्ती मे हवाई जहाज का इन्तजार कर रहे थे। इन्तजार करते हुए हमे दो सप्ताह हो गये थे। हम कुल सात जने थे—तीन भूगर्भशास्त्री, तीन भूभोतिकी और एक पत्रकार।

हर सुबह हम सूर्योदय के पहले ही नदी पार करके उस बडे और पथरीले अन्तरीप पर पहुच जाते थे जो हवाई अड्डे का काम देता था। वहा उल्टी पडी हुई नौवो पर बैठकर हम उदास मन से क्षितिज को ताकते रहते थे।

अधेरा गहराता था तो हम बुझे-बुझे-से पत्थरो पर जूते फटफटाते हुए वापस आ जाते थे।

रात को सफरी बिस्तर मे लेटकर हम मास्को, अपने मित्रो और रिश्तेदारो, जान-पहचान की लडकियो और पत्नियो के बारे मे देर-देर तक, लम्बी-लम्बी बाते करते रहते। यो कहना चाहिए कि ध्रुवीय प्रदेश के इस काले कोसो की दूरी वाले तैगा से जो कुछ भी दूर था, जिसकी हमे रह रहकर याद सताती थी, जिससे मिलने को हमारे मन बहुत बेचैन रहते थे, हम उन सभी चीजो की चर्चा करते थे।

ऐसी ही एक शाम का जिक्र है। हम थैलो से मिलते-जुलते और रगड के कारण चिकने हुए अपने सफरी बिस्तरो मे लेटकर टीन के पुराने डिब्बो मे से गाढी-गाढी चाय पी रहे थे। अचानक आत्म-बलिदान के सम्बध मे बातचीत चल पडी।

अब मुझे याद नही कि बातचीत का सिलसिला शुरू कैसे हुआ। किसी ने अनजाने ही बात छेड दी, किसी ने उसे आगे बढाया और कुछ ही मिनटो मे सभी उसमे उलझ गये। हा, मकान मालिक और हमारे एक साथी—अधेड उम्र के गुम-सुम भूगर्भशास्त्री ने इस बातचीत मे हिस्सा न लिया। इस भूगर्भशास्त्री के चेहरे पर पुराने तैगा-वासियो की तरह झुर्रियो का गहरा हल चला हुआ था।

कुछ ही क्षणो मे लोगो ने अपनी अलग-अलग राये जाहिर की। कुछ लोगो ने कहा कि कोई व्यक्ति केवल तभी आत्म-बलिदान कर सकता है जब उसके सामने उसका लक्ष्य स्पष्ट हो। उसी लक्ष्य के लिए वह अपने प्राणो की बलि दे सकता है। दूसरे लोगो ने इस बात का विरोध किया और कहा कि आत्म-बलिदान तो भावावेश का परिणाम होता है। केवल तरग और जोश मे ही आत्म-बलिदान किया जा सकता है। हिसाब-किताब जोडकर या नाप-तोलकर आत्म-बलिदान नही किया जाता। कहा जा सकता है कि आत्म-बलिदान तो केवल प्रेरणा की लहर मे ही सम्भव है। इस दृष्टिकोण का खूब जोरदार समर्थन किया कोई पचीस वर्ष के एक नौजवान ने, झबरे और काले बालो वाले भूभौतिकी ने।

गुम-सुम भूगर्भशास्त्री (उसका कुलनाम तर्यानोव था) ने शुरू मे तो हमारी बहस की ओर कान ही न दिया। मगर बाद मे जब झबरे बालो वाला भूभौतिकी "बहस की झोक

मे" कमरे के बीचोबीच जाकर खडा हो गया और हाथ हिला-हिलाकर चीखने-चिल्लाने लगा तो तर्यानोव अपने बिस्तर मे उठकर बैठ गया। पाठ के समय हाथ उठानेवाले बालक की तरह अपना हाथ ऊचा करके उसने धीरे से कहा –

"मुझे भी अपनी बात कहने के लिए एक मिनट की इजाजत दीजिए "

हम सभी उत्सुकता से उसकी ओर घूमे।

"मै आप मे से किसी से भी बहस नही करूगा। मै आपको सिर्फ एक किस्सा सुनाना चाहता हू, जो मेरे ख्याल मे आपकी इस समय की बातचीत से कुछ सबध रखता है।"

तर्यानोव ने अपनी थैली उठायी और उसमे से एक बहुत ही मुडी-मुडायी हुई कापी बाहर निकाली।

"दो साल पहले की बात है कि पतझड की भारी बारिश के दिनो मे तैगा मे खोज करनेवाले भूगर्भशास्त्रियो की एक टोली कही खो गयी। बहुत समय तक इन लोगो की खोज की गयी, मगर कुछ पता न चला। वसन्त मे जब बर्फ पिघल गई तो बारहसिगो को पालनेवाले एवेन्की जाति के कुछ लोग अचानक इस टोली के अतिम पडाव के निकट जा निकले। इस पडाव से दस कदम की दूरी पर एक व्यक्ति मरा पडा था। यह भूगर्भशास्त्रियो की टोली का मुखिया कोस्त्या सबीनिन था।

"एवेन्कियो को सबीनिन की छाती पर रखा हुआ कागजो का एक पुलिन्दा मिला। इस पुलिन्दे मे भूगर्भशास्त्रियो की टोली द्वारा

खोजे गये हीरो के उद्गम-स्थानो का नक्शा था और लिखे हुए कई अन्य कागज थे। यह एक पत्र था जो सबीनिन ने अपनी पत्नी के नाम लिखा था।

"खत को मास्को के पते पर और नक्शे को जाच के लिए भूगर्भशास्त्रियो के पास भेज दिया गया। भूगर्भशास्त्रियो ने इस बात की पुष्टि की कि सबीनिन की टोली द्वारा खोजे गये किम्बरलिट पाइप मे हीरे मौजूद है। पत्र को भेजने के पहले किसी ने उसे टाइप कर डाला। उसकी नकल याकूतिया मे खोज-कार्य करनेवाली टोलियो के हाथो मे बहुत समय तक घूमती रही। भूगर्भशास्त्रियो ने इस पत्र के कुछ स्थलो को प्रार्थना की तरह बार-बार पढा। बाद मे यह प्रति मेरे हाथ लग गयी।

"कोस्त्या कई महीनो तक अपनी पत्नी को यह पत्र लिखता रहा था। यह पत्र एक लम्बी शृखला के रूप मे लिखा गया था जो खत्म नही हुआ था और भेजा भी नही गया था। पत्र यह था—

"' तुम्हारे यहा मास्को मे अभी शाम होगी, मगर हमारे यहा सुबह हो चुकी है। तुम अभी रेडियो से हल्का-फुल्का सगीत सुन रही होगी और हमारे यहा मुर्गे बाग दे रहे है। हम बहुत सवेरे उठते है ताकि वक्त रहते हवाई अड्डे पर पहुच जाये और जहाज पकड ले। तुम जब बिस्तर मे लेटी हुई धीरे-धीरे पलक मूदने लगोगी, तब हम हवा

मे उडते होगे। तुम जब प्यारे-प्यारे सपने देखती होगी तब हम एक दूसरे के साथ सटे हुए हवाई जहाज की गोल-गोल और छोटी-छोटी खिडकियो मे से इधर-उधर छितरे हुए और सुरमई बादलो को गुप-चुप देखते होगे जो हमारे हवाई जहाज के पखो के नीचे तैर रहे होगे। तुम्हारे गर्म और आरामदेह कमरे मे मेज पर रखे हुए छोटे-से रात्री-लैम्प से कोमल और हल्की-हल्की गुलाबी रोशनी छनती होगी और तब हमारे हवाई जहाज के शीशे के केबिन मे से उत्तरी ध्रुवीय प्रकाश की पहली बैगनी झलक मिलने लगेगी

"'प्यारी वेरा! इस वक्त हम एक दूसरे से कितने दूर है! मै जानता हू कि तुम्हे मेरी चिन्ता रहती है, तुम मेरी परेशानहाल और खानाबदोशी की जिन्दगी के बारे मे बेचैन रहती हो। हमे एकसाथ रहने का बहुत कम मौका मिलता है। रेल के डिब्बे के पायदान या हवाई जहाज के दरवाजे के पास ही तुम मुझे अक्सर देखती हो और इसी रूप मे ही तुम्हे मेरी अधिकतर याद भी आती होगी—सदा जुदा होते, अलविदा कहते हुए

"'ठीक इस समय जब तुम बहुत दूर मास्को मे सो रही हो और मै अल्पभाषी भूगर्भशास्त्रियो के साथ उत्तर की ओर उडा जा रहा हू, मेरा बहुत मन हो रहा है कि तुम सपने मे धूप-नहाये एक प्यारे दक्षिणी नगर को देखो। मै पाच वर्ष पहले की एक घटना की तुम्हे याद दिलाना

चाहता हू। उस दिन हमने जीवन-भर साथ रहने का निर्णय किया था।

"'उसी दिन मैने तुमसे कहा था कि मै अपने जीवन मे कोई बहुत ऊचा काम, अपनी मातृभूमि के लिए बहुत ही लाभदायक और महत्त्वपूर्ण काम करना चाहता हू। तब तुमने जवाब मे कहा था कि जुदाई हमारे प्यार की चिर-सगिनी रहेगी। तुम्हे याद होगा कि इन शब्दो के बाद हम बहुत देर तक चुप रहे थे। हम जानते थे कि यह बात सच थी, मगर हमारा प्यार इस सच से कही अधिक शक्तिशाली था।

"'प्यारी वेरा, हम बहुत ही कम इकट्ठे रहते है। हर बार जुदा होते समय हम विरह के वर्षो और मिलन के क्षणो की याद मे जाम उठाते है। हम जानते है कि हमारे जीवन मे मिलन के इन क्षणो की कीमत साथ-साथ रहने के वर्षो के बराबर है।

"'जब तुम्हारी आख खुलेगी तो हम तैगा की तूफानी नदी द्वारा धोये हुए पीले बालू पर उतर चुके होगे। हम उत्तरी ध्रुवीय वृत्त के निकट ही पडाव डालेगे। जब तुम उठोगी, हाथ-मुह धोओगी और बाल सवारोगी तो उस समय हम दक्षिण की ओर जानेवाले हवाई जहाज को विदा करके उत्तर की तरफ और आगे बढ जायेंगे। हमारे भूगर्भशास्त्रियो के हथौडे प्राचीन पहाडी चट्टानो पर गूजने लगेगे। हम कुदाले

ग्रौर फावडे लेकर स्थायी रूप से जमी हुई भूमि को खोदेंगे, उत्तरी ध्रुव के ठडे सितारो की छाया मे दलदल ग्रौर धसाऊ भूमि पर सोयेंगे ग्रौर उनके बारे मे सोचेंगे, जो हमारी प्रतीक्षा कर रहे है।

"'बहुत-बहुत दिनो के बाद हम फिर तैगा से बाहर निकलेगें – बढी हुई दाढियो के साथ, गदे-मदे ग्रौर थके-हारे। हवाई जहाज हमारा इन्तजार करता होगा। हम विजयी होकर लौटेंगे – इस बात का मुझे पूरा विश्वास है। जब हम फिर से हवाई जहाज मे उडान करेंगे तो मै खिडकी से बाहर देखता हुग्रा तुम्हारी याद की कसक से तडपता रहूगा।

"'मगर यह सब कुछ बहुत जल्द नही होगा। फिलहाल तो तुम तुम झपकी लो, इन्तजार की घडिया गिनो ग्रौर हमारी विजय मे विश्वास करो!

"'प्यारी वेरा, नमस्ते! तुम मुझसे नाराज नही होना! देखो हुग्रा यह कि हवाई जहाज मे मैने जो खत लिखा था वह हवाबाजो के हाथ भेज नही पाया। हमारा हवाई जहाज ठीक जगह पर नही उतरा। बर्फ पिघलने के बाद का पानी ग्रभी तक सूखा नही था ग्रौर हमारा हवाई जहाज जिस जगह उतरा वहा काफी पानी था, लगभग जहाज के पखो की ऊचाई तक। हम लोग नदी मे कूद गये ग्रौर हमने कमर-कमर तक पानी मे खडे होकर सामान किनारे पर पहुचाया। इस गडबडी मे मै हवाबाजो को खत देना भूल गया। खत

मेरे पास ही रह गया और अब दूसरा महीना जा रहा है कि मै उसे तैगा मे अपने साथ-साथ लिये फिर रहा हू। मैने अपनी कल्पना मे यह समझ लिया है कि खत तुम्हारे पास पहुच चुका है और तुमने उसे पढ लिया है।

"'नमस्ते, वेरा! फिर से तम्बू लग चुके है। फिर से रात हो गयी है, अलाव जल गया है और फिर से तुमसे बाते करने को मेरा मन हुलस रहा है। शायद यह पत्र मै जाडे मे अपने साथ लेकर ही तुम्हारे पास पहुचूगा। इससे पहले वह तुम्हारे पास नही पहुच सकेगा। मै जब लौटूगा तो तुम्हे अपने बारे मे कुछ भी नही बताऊगा। मै चुपचाप कमरे मे दाखिल हूगा, फर्श पर अपना सूटकेस रखूगा और तुम्हे यह खत दे दूगा। तुम इसे पढोगी और मै तुम्हारे सामने बैठकर तुम्हे देखता रहूगा, तुम्हारे मुखडे को, तुम्हारे बालो और तुम्हारे हाथो को। तुम खत पढोगी और सब कुछ समझ जाओगी। इसके बाद मेरे बारे मे कोई बातचीत नही होगी, मै कुछ भी दोहराने की कोशिश नही करूगा। तब हम सिर्फ तुम्हारी चर्चा करेगे, तुम्हारे जीवन, तुम्हारे काम-काज और तुम्हारी प्रगति की।

"'इसीलिए इस समय मै अपने पत्र मे हर चीज के सम्बन्ध मे लिखता जा रहा हू। मै लिख रहा हू अपने काम, अपनी असफलताओ और निराशाओ और हमारी छोटी-छोटी खुशियो के बारे मे। हम हीरो वाले किम्बरलिट पाइप की खोज कर

रहे है। इसे खोजे बिना छोड देने का हमे अधिकार नही है– इस काम की तैयारी के लिए बहुत ही अधिक समय, शक्ति और साधन खर्च किये जा चुके है।

"'हम से केवल एक ही बात की आशा की जाती है कि हम पाइप की खोज करे, उसमे से नमूने निकाले और हीरो के जन्मस्थानो को रेखाओ के रूप मे नक्शे पर अकित कर दे। हमारे बताये हुए स्थानो पर निर्माणकर्त्ता पहुचेगे। वे पाइप की खानो की खुदाई शुरू करेगे और बस्ती की नीव रखेगे। इसका मतलब यह है कि हम इस पतझड मे पाइप के नक्शे के बिना अभियान के केन्द्रीय स्थल पर नही लौट सकते। हमे मालूम है कि दक्षिण मे अन्य कई टोलिया इस पाइप की खोज कर रही है। इससे हम मे जोश पैदा होता है और हम चाहते है कि हम ही बाजी मार ले जाये।

"'मै तुम्हे अपनी टोली के सदस्यो के बारे मे बताना तो बिल्कुल भूल ही गया। हमारी टोली मे चार व्यक्ति है। सेर्गेई हमारे सभी साज-सामान का जिम्मेदार, बावर्ची और मजदूर भी है। थोडे मे यह कि वह हमारा मैनेजर है। वह उम्र मे हम सबसे बडा और सबसे ज्यादा अनुभवी है। उत्तरी ध्रुव मे वह मुझसे दो साल अधिक काम कर चुका है। मै उसे नाम लेकर केवल इसीलिए पुकार सकता हू कि मै टोली का मुखिया हू।

उसे देर तक साफ करता रहा, मगर मुह से कुछ नही कहा। कुल मिलाकर वह बहुत ही अच्छे दिल का नौजवान है, यह गेर्मन! तान्या का कहना है कि वह कुछ हद तक डाक्टर 'आइबोलित'* से मिलता-जुलता है और वह उसे इसी नाम से पुकारती भी है। (शायद गेर्मन तान्या की ओर कुछ-कुछ आकर्षित है और इसीलिए वह उससे छेड-छाड करती रहती है।)

"' हम इस नाले के किनारे-किनारे उत्तर की ओर अधिकाधिक बढते जा रहे हैं। तैगा धीरे-धीरे तुन्द्रा के विरल जगल मे परिणत होता जा रहा है। कही-कही तो ऐसी जगहे भी आती हैं जहा जमीन एकदम जगलहीन और सपाट होती है, वहा लहराती हुई सूखी घास नजर आती है और काई के गहरे लाल रग के मोरचे जैसे धब्बे दिखाई देते हैं।

"'नाले के एक किनारे पर मै चला जा रहा हू और दूसरे पर तान्या और गेर्मन। सेर्गेई हमारी रबड की नावे लेकर हमेशा हमसे पहले ही नक्शे मे दिखाये गये हमारे अगले पडाव के स्थान पर पहुच जाता है। वह वहा तम्बू लगाता है, खाना तैयार करता है और सभी तरह की व्यवस्था करके हमारा इन्तजार करता है।

---

*एक रूसी कहानी का दयालु डाक्टर जो जानवरो का इलाज करता फिरता है। – स०

"'खुशखबरी प्यारी वेरा! कल सेर्गेई को किम्बरलिट का एक टुकडा मिला। हा, हा, असली किम्बरलिट का! हमने नाले के दोनो किनारो पर बहुत-सी खुदाइया की और अब कुदाले और फावडे लेकर खूब जोर से खुदाई मे जुटे हुए हैं। पत्र लिखने का समय नही है। दिन-रात मे सिर्फ तीन घण्टे सोते हैं

"'कई दिनो से तुम्हे कुछ भी नही लिख पाया। बेहद थका हुआ हू। हम लगभग बीस खुदाइया कर चुके है, मगर किम्बरलिट का कही कोई निशान नही मिला। बहुत निराशा हो रही है। तान्या रो रही है और गेर्मन की आखो मे भी जब-तब आसू छलक आते हैं। अकेला सेर्गेई ही भला-बुरा कहकर फिर से जमी हुई धरती की खुदाई करने लगता है। वह तो लगभग बिल्कुल नही सोता।

"'ठड बढ चली है, आखिर तो सितम्बर का महीना आ गया है। मगर हम इसे महसूस नही करते। गेर्मन और सेर्गेई तो सिर्फ बनियाइन पहनकर काम करते रहते हैं। जमी हुई मिट्टी की बडी मुश्किल से खुदाई होती है, खोदे गये गड्ढो मे आग जलानी पडती है। ये गड्ढे भूमिगत पानी से भरे रहते है और इसलिये हमे कभी-कभी तो घुटनो तक बर्फीले कीचड मे घण्टो खडे रहना पडता है। हम गड्ढो से बाहर निकलते है तो कीचड-गारे से लथपथ, थके-हारे, हाल-बेहाल और बढी हुई दाढी के साथ। यो कहना चाहिये कि

सोलह आने भूत बने हुए होते हैं। तान्या सभी के बराबर काम करती है। अपने को अपेक्षाकृत साफ-सुथरी रखने के लिये उस बेचारी को बहुत ही मेहनत करनी पडती है।

"'लानत हे इन कमबख्त पाइपो पर! कही नाम-निशान ही नही मिलता इनका!

"'प्यारी वेरा, आखिर हमने बाजी मार ली! कल मैंने तान्या के साथ नयी जगह पर खुदाई शुरू की तो फौरन ही हमे नीली जमीन मिल गयी! हम कोई एक मीटर आगे बढे कि सुरमई-नीली मिट्टी का एक ढेला हमारे हाथ लगा, इसके बाद ऐसे ही कई और ढेले निकलते आये। दो मीटर की गहराई पर ये ढेले अधिकाधिक ठोस होते गये और आखिर लगभग चट्टान मे बदल गये। सेर्गेई और गेर्मन ने भी हमारे नजदीक ही खुदाई शुरू की और ऐसे जी तोडकर काम किया कि दो घटे मे हमसे आगे निकल गये। उन्हे भी नीली मिट्टी लगातार मिलती गयी। गेर्मन को ठोस और बिना साफ किये हुए हीरे का एक टुकडा मिल गया! इसके बाद दो अष्टभुज हीरे तान्या के हाथ लगे।

"'हमारे यहा तो आजकल जशन मनाया जा रहा है! और तो और, सेर्गेई के होठो पर भी मुस्कान खिली हुई है। हम लोगो ने अपनी विजय के उपलक्ष्य मे एक बढिया

दावत कर डाली। हमने सारे सूखे फलो को एक ही बार उबाल कर शरबत बना लिया और सेर्गेई ने बडी होशियारी दिखाते हुए मछलियो तथा सब्जियो के डिब्बे खोल कर बड़ा मजेदार नाश्ता तैयार कर डाला। सकट के समय के लिये सहेजे हुए स्पिरिट के अछूते भडार मे से हमने कुछ स्पिरिट निकाली। आधा-आधा गिलास सभी के हिस्से आयी। हमने भावी पाइप और हीरो की भावी खानो के नाम पर जाम पिये। हमे इसी जगह पर इनके मिलने की आशा है जहा इस समय हमारे छोटे-छोटे और बरसात के कारण सिकुड़े हुए तम्बू खडे है।

"'गेर्मन को तो पीते ही चढ गयी और वह समारोही ढग से ऊची शैली मे बातचीत करने लगा। अलाव के पास खडे होकर उसने यह घोषणा की कि आज के बाद से वह अपने जीवन को निरर्थक नही समझेगा, क्योकि उसने अपनी मातृभूमि और सारी मानवजाति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण खोज मे हिस्सा लिया है।

"'तान्या ने उसका मजाक उडाया, सेर्गेई ने भौहे चढायी, कुदाल ली और खुदाई करने चला गया। हा, कुल मिलाकर गेर्मन और तान्या अभी बच्चे ही तो है। उन दोनो की उम्र मिलाकर भी तो पचास वर्ष नही होती। यह बडे, वयस्क और साहसी बच्चे है!

"'हा, तो हमे पाइप का पता मिल ही गया! तीन दिन

पहले हम इसके पास ही खुदाई कर रहे थे और आज हम नक्शे मे उसके मिलने की जगह को पूरी तरह अकित भी कर चुके हैं।

"'वेरा! जिस चीज की मुझे तलाश थी वह मुझे मिल गयी। यहा सिर्फ पाइप की ही बात नही है। तुम तो जानती ही हो कि मुझे अपने जीवन मे रौदी हुई पगडडियो पर चलना अच्छा नही लगता। मैने हमेशा यही कहा है कि वास्तविक जीवन तो सघर्ष है, कठिनाइयो पर काबू पाना और बहुत बडी मुश्किलो से दो-चार होने के बाद विजय के मीठे रस का पान करना। याकूतिया के इस सुनसान तैगा मे मेरे मन की बात पूरी हुई है, मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस सौभाग्य मे तैगा के अलावो के धुए की गध है। इस सौभाग्य की हवा के झोके अनजाने देशो से आ रहे है। इस सौभाग्य मे प्राचीन पहाडी देशो का रोमास घुला-मिला हुआ है और इन प्राचीन प्रदेशो के खण्डहरो मे भूगर्भीय रहस्य छिपे पडे है। हर कोई ऐसा सौभाग्य नही चाहता। बहुत मुश्किल से हासिल होती है ऐसी खुशी, यह कमर तोड डालती है। लेकिन तुम तो जानती हो कि जीवन के पथ पर खाली थैला लेकर चलने का मै अभ्यस्त नही हू।

"'मेरे जीवन की एक और खुशी है—वह हो तुम। तुम्हारे जलाये हुए दीप के प्रकाश मे मै सागरो और पर्वतो, जगलो और नदियो को लाघता हुआ चला जाता हू। कुछ

पल को तुम्हारे निकट रहने के लिए, मै महीनो और वर्षों तक जुदाई के कडवे घूट पी सकता हू

"'प्यारी वेरा! जिस चीज की तलाश थी वह मिल गयी, जो कुछ सोचा था वह पूरा हो गया! अब तो बस वापसी है। हम सभी के मूड बहुत अच्छे है। गेर्मन तो खास तौर पर बहुत खुश है—वह देर-देर तक तान्या के साथ खुसुर-फुसुर करता रहता है। सेर्गेई सदा की भाति कुछ उदास-सा नजर आता है। लगता है कि किसी भी चीज से उसके सतुलन का सिहासन नही डोल सकता।

"'अब तो बस एक ही रट है—वापसी, वापसी, वापसी! जल्द ही अब वह सब कुछ पूरा हो जायेगा जिसके बारे मे हम पिछले साल के जाडे मे सपने देखते थे। मै छुट्टी लूगा, हम दक्षिण मे जायेगे, करने-धरने को कुछ नही होगा, केवल सागर मे डुबकिया लगायेगे और तुम्हारे मनपसन्द सरो के वृक्षो के नीचे मटरगश्ती किया करेगे

"' नमस्ते, वेरा! बहुत दिनो से मै तुम्हे कुछ भी नही लिख पाया। ऐसा इसलिए हुआ कि हम बहुत बडे दुर्भाग्य के शिकार हो गये है। ऐसे दुर्भाग्य के जिस से मोर्चा लेना किसी प्रकार भी सम्भव नही। यह बात बिल्कुल ही सच है कि सुख और दुख के बीच केवल एक कदम का फासला होता है।

"'हमने नक्शे पर हीरो के जन्मस्थान की सभी तफसीले

अच्छी तरह से इंगित कर दी, नमूनो के कई थैले भर लिए और नाले के दहाने की ओर बढने लगे। हमने अपना आखिरी पडाव उस जगह से कोई डेढ किलोमीटर की दूरी पर बनाया जहा नाला नदी मे जाकर गिरता है।

"'हमे तो किसी चीज का सान-गुमान भी नही था। हमने तम्बू खडे किये, नावो को किनारे पर लाये, खाना खाया और सोने के लिए लेट गये। उस शाम को मौसम हर दिन जैसा ही था सदा की भाति नदी के ऊपर कोहरा छाया हुआ था, हल्का-हल्का पाला पड रहा था। हम बेहद थके हुए थे और इसलिये नावो से खाने-पीने की चीजे, बन्द डिब्बे और पाइपो के नमूने तम्बुओ मे लाने को मन नही हुआ। उन्हे वही पर छोड कर, हमेशा की तरह हमने उन्हे तिरपाल से ढक दिया।

"'हम सभी गहरी नीद सो रहे थे। हमे कुछ सुनायी ही न दिया और लगभग रात के बारह बजे पतझर के मौसम की मूसलाधार बरसात शुरू हो गई।

"'सबसे पहले सेर्गेई की आख खुली। सुबह के छ बजे थे। सेर्गेई ने शोर सुना तो यह समझ कर कि तेज हवा अपना जोर दिखा रही है फिर से सोने को तैयार हो गया। मगर तभी उसके कान खडे हुए और उसने महसूस किया कि यह तो बारिश है! उसने हम सब को जगाया। तम्बुओ से कदम बाहर रखना असम्भव था। हम ठड से कापते और वही

बैठे हुए देखते रहे कि हमारे सामने पानी की दीवार खडी होती जा रही है। तुम तो इस दृश्य की कल्पना तक भी नही कर सकती! ऐसा लगता था कि मानो आर्कटिक महासागर की सारी बर्फ बादलो मे बदल कर बारिश के रूप मे हमारे सिरो पर फट पडी थी। 'नावे!'–सेर्गेई अचानक चिल्ला उठा।

"'हमने तट पर नजर डाली, वहा कुछ भी नही था। जिस जगह पर हमारी नावे बधी हुई थी, वहा अब किनारे तोड कर बह निकलने वाले नाले का पानी शोर मचा रहा था। अब वह नाला नही था, तूफानी पहाडी नदी बन चुका था। टूटे हुए वृक्ष उसमे तेजी से बहे जा रहे थे।

"'हम खामोश, उनीदे और अधनगे ही बाहर निकल कर मूसलाधार बारिश मे नाले के दहाने की ओर दोड चले। यह तो बहुत यातनाप्रद काम था। बर्फीले कीचड मे हमारे पाव अकडे जा रहे थे। मैंने तान्या को लौट जाने का आदेश दिया, मगर नही, वह सभी के साथ भागती चली गयी।

"'नाले के दहाने पर बहुत बडा ढेर सा जमा हो गया था। नदी अपने साथ हर घडी अधिकाधिक तने बहा कर ला रही थी। उन्हे आगे जाने का रास्ता नही मिलता था और इसलिए वे एक दूसरे के ऊपर चढते जा रहे थे।

"'–वह देखो, वह री नाव!'–मेरा हाथ थामते हुए सेर्गेई ने कहा।

"'हमे पानी मे कोई पीली-सी चीज दिखायी दी। यह हमारी रबड की नावो मे से एक थी। उसमे ख़ुराक के बन्द डिब्बे और किम्बरलिट थे। उनके मिल जाने से हमारा बहुत भला हो सकता था। मगर नाव को हासिल किया जाय तो कैसे ?

"'सेर्गेई अप्रत्याशित ही तनो के ढेर पर कूद गया और कुदो पर अपने को सतुलित करते हुए नाव की ओर बढा। उसी क्षण सारा मामला गडबड हो गया। लट्ठे तो मानो इस इन्तजार मे थे कि कोई उन्हे जरा हिला-डुला दे। वे एक आदमी का बोझ न सहन कर सके और फोरन बिखर गये। तनो का पूरे का पूरा ढेर रास्ता खुल जाने से पानी की ओर खिचा और शोर मचाता हुआ नदी के विस्तृत प्रवाह के साथ बह चला। अन्त मे हमे दिखाई दिया सिर्फ सेर्गेई का हाथ, जिसने लट्ठे को पकडने की कोशिश की थी। मगर तभी उसके ऊपर कई मोटे-मोटे तने गिरे

"'अब जब कि कई दिन गुजर चुके है तो मै इस घटना की सभी तफसीले याद करके लिख सकता हू। मगर उस समय तो डर के मारे हमारे होश ही हवा हो गये थे। तान्या जोर से चीख उठी थी, गेर्मन का गला रुध गया था और मेरे अन्दर जैसे कोई चीज फट गयी थी। सेर्गेई की मृत्यु से हमारी तो बहुत ही बुरी हालत हुई थी। हमे तो जैसे काठ मार गया था। सुध-बुध खोकर बिल्कुल टूटे-लुटे और हारे

से हम अडरवियर पहने मूसलाधार बारिश मे जहा के तहा खडे रह गये थे।

"'आखिर हम वापिस आये। लौटते हुए हमने न तो कीचड की ओर ध्यान दिया और न ठड की ओर। पानी ने हमारे तम्बुओ को हिला दिया था और वे बस गिरने ही वाले थे। हम बडी कठिनाई से सफरी बिस्तर, कपडे, दो बन्दूके, भीगे हुए कारतूस और सयोगवश तम्बू मे ही रह जाने वाले कुछ बन्द डिब्बे (खुश-किस्मती ही कहिये उस शाम को उन्हे नावो मे पहुचाने के सिलसिले मे हम मे से कोई सुस्ती कर गया था) लादकर किसी सूखी जगह पर लाये। निश्चय ही हम कुछ और चीजे भी बचा कर ला सकते थे, मिसाल के तौर पर कुल्हाडी, जिसकी इस समय हमे बेहद जरूरत है, मगर सेर्गेई की हृदय-विदारक मृत्यु से हमे तो किसी चीज का होश ही नही रहा था।

"'कोई दो घटे बाद ही जब दिमाग कुछ ठिकाने हुआ तो हमने अपनी स्थिति की गभीरता को समझा। याकूतिया के वीरान तैगा मे हम तीनो अकेले रह गये थे। न तो कुल्हाडी थी, न नक्शे और न कुतुबनुमा—सब कुछ पानी की नजर हो चुका था।

"'बारिश का जोर पहले की तरह बना रहा। वह जरा-सी हल्की हुई, मगर आकाश और भूमि के बीच पहले की भाति पानी का तार बधा रहा। हमने चौबीस घटे तक इन्तजार

किया, किन्तु झडी लगी ही रही। तब हमने चलने का फैसला किया।

"'पहले कदम बढाते समय ही हमे इस बात की पूरी चेतना थी कि हम हवाई जहाज के उतरने की जगह तक नही पहुच पायेगे। नदी दोनो ओर कोई बीस किलोमीटर तक फैल गयी थी। बाढ वाली नदी को तैर कर पार करने की बात सोचने मे कोई तुक नही थी। कही-कही पर पानी इतनी तेज रफ्तार से बह रहा था कि वहा भवर बन गये थे और तनो के ढेर जमा हो गये थे। दूसरी जगहो पर पानी इस तरह से रुका खडा था जैसे कि पोखरो मे होता है। इसके अलावा अगर हम बेडा भी बनाते तो किस चीज से और किस तरह? इर्द-गिर्द के सभी वृक्ष पानी मे डूबे हुए थे।

"'अन्तरीप तक पैदल पहुचने की बात भी हवाई किला बनाने के बराबर थी। निरन्तर किनारे-किनारे और बाढ से बचकर चलते जाने की जरूरत थी। ऐसा करने से हमारा रास्ता कई गुना लम्बा हो जाता था।

"'आखिर जैसे-तैसे हमने गीली और मोटी-मोटी टहनियो को तोडा-मरोडा, एक तम्बू फाडा और इस तरह बेत की पुरानी टोकरी की तली जैसी कोई चीज बना ली। हम इसी बेडे पर बह चले। हम डडो के सहारे उसे कीचड मे से आगे निकाल ले जाते। यह बहुत ही यातनापूर्ण कोशिश थी। जब यह पत्र लेकर मै तुम्हारे पास पहुचूगा और तुम इसे पढोगी तो

हमने यहा जो यातना सहन की हे, तुम उसका तनिक अनुमान भी न लगा पाओगी।

"'पहले दिन हम 'चप्पुओ' के सहारे नदी की मुख्य धारा की ओर बढते चले गये। रात हमने पानी पर ही गुजारी। दूसरे दिन हम नदी के प्रवाह के साथ-साथ बह चले। हमे हर समय बहुत सावधान रहना पडता था ताकि हमारा बेडा नदी मे बहते हुए बडे-बडे तनो से न टकरा जाये। टकरा जाने पर हमारा कमजोर-सा बेडा तो पलक झपकते मे उलट-पलट जाता। शुरू मे तो हमने अपने इस 'जहाज' को कुछ और तने जोडकर मजबूत बनाना चाहा। मगर तनो के ढेरो मे उलझ जाने के डर के कारण ऐसा करना उचित नही था। ऐसे ढेर हर दो-तीन किलोमीटर के फासले पर सामने आ जाते थे। हम इनके बीच से रास्ता बनाकर, अपने बेडे को नीचा करके निकाल ले जाते थे। स्पष्ट है कि भारी बेडा होने पर इस तरह आगे निकल जाने की बात सोचना असम्भव था।

"'दूसरी रात घिर आयी। बरखा घडी भर को भी न रुकी। हमारे कपडे चिथडे-चिथडे हो गये थे। घुप अधेरे मे तनो के ढेरो से बच निकलने की बात सोचना भी बेकार था। इसका मतलब तो सीधे मौत के मुह मे जाना था। हमने सोच-समझकर मुख्य धारा को छोड देने और अपने बेडे को किनारे-किनारे ले चलने की कोशिश की। यहा

हमारे बेडे पर एक बडा-सा ठूठ आ गिरा और हमारा कमजोर बेडा टुकडे-टुकडे हो गया।

"'अब मुझे याद नही है कि हम छिछले जल तक कैसे पहुचे। कल्पना करो, वेरा, हम कमर को छते हुए बर्फ जैसे ठडे पानी मे खडे थे (सितम्बर महीने का मध्य आ गया था), हमारे सभी ओर अधेरी रात की चादर फैली हुई थी और हम बिल्कुल नही जानते थे कि जाये तो कहा। हम लोग इस तरह से काप रहे थे मानो हमे जोर का बुखार चढा हुआ हो। वैसे भी कुल मिलाकर ऐसी मुसीबतो का सामना मुझे पहले कभी नही करना पडा था। मुझे यह तो कहना ही होगा कि गेर्मन और तान्या ने बडे हौसले से काम लिया। उनमे से किसी ने एक बार भी शिकायत नही की। हा, एक बार बहुत जोर की ऐंठन होने पर तान्या चीख जरूर उठी थी।

"'हम आगे चल दिये। हमने नदी के शोर के साथ अपने सफर का तार जोड दिया। हमने लगातार इस तरह चलते जाने की कोशिश की कि नदी का शोर हमारी पीठ के पीछे सुनायी देता रहे। रात भर हम घुटने-घुटने और कभी-कभी कमर तक पानी मे चलते रहे। जोर की ऐंठन हम सभी को परेशान करती रही। आखिर सुबह होते-होते हम गाढे कीचडवाले एक दलदल मे जा पहुचे। इसे हमारा सौभाग्य ही समझो। हम मुह के बल नम काई पर

पड रहे और लगभग बीस मिनट तक इसी तरह पडे रहे। बाद मे मैने तान्या और गेर्मन को उठाया। हम 'सूखी' जगह की तलाश मे आगे चल दिये। 'सूखी' इस शब्द का मै एक विशेष अर्थ मे प्रयोग कर रहा हू। इसका कारण यह है कि हमारे इर्द-गिर्द कई सौ किलोमीटरो के घेरे मे कोई सूखी चीज ढूढ लेना तो बिल्कुल असम्भव था।

"'लगता है कि भाग्य को हम पर दया आ गयी। हमने महसूस किया कि हम ऊचाई की ओर बढते जा रहे है – यहा से खुश्की का आरम्भ होता था। हम कुछ और आगे बढे तो एक खड्ड के सिरे से पाव टकराया। इसके एक किनारे पर कई वृक्ष पडे हुए थे और इस तरह वहा एक मचान-सी बन गयी थी। हमने राहत की सास ली।

"'नीद से आखे घुटी जा रही थी। हमे न तो अपने हाथो की सुध थी और न पैरो की। बस सिर्फ यही चाहते थे कि जितनी जल्दी हो सके, सो जाये। नमी के कारण हड्डियो मे दर्द हो रहा था। सिहरन और कपकपी महसूस हो रही थी। जी यही चाहता था कि सभी कुछ भूल-भालकर, हर चीज पर लानत भेजकर, सो जाये। लेकिन ऐसा करने का मतलब था सीधे मौत के मुह मे पहुच जाना। मैने गेर्मन और तान्या को अलाव जलाने का आदेश दिया।

"'अलाव बडी मुश्किल से जला। (इस वक्त हमे सेर्गेई की बहुत याद आयी। वह तैगा के मामलो मे बहुत

होशियार जो था।) हम चीजे सुखाने लगे। खाने-पीने की चीजो मे हमे स्पिरिट के दो डिब्बे भी मिल गये। उन्होने हमे निमोनिये से बचा लिया। हमने कपडे उतारे, सभी चीजें अपने इर्द-गिर्द सूखने के लिये बिखरा दी और पानी मे स्पिरिट घोलकर एक दूसरे के शरीर पर रगडने लगे। तान्या शुरू मे कपडे उतारने को तैयार न हुई। उसके बदन से गीले चिथडो को लगभग जबरदस्ती उतारना पडा। मैंने गेर्मन से कहा कि वह दूसरी ओर मुह कर ले और खुद, बडे होने के नाते, तान्या के शरीर पर सिर से पाव तक मालिश कर दी। इसके बाद उस पर तम्बू का कपडा लपेट कर उसे आग के पास बिठा दिया। कहा जा सकता है कि हमारी सभी चीजो मे से सिर्फ तम्बू ही सूखा बच गया था। वह भी ऐसे कि जब हम नदी के किनारे-किनारे रात भर चलते रहे थे तो गेर्मन (शाबाश है उसे!) उसे अपने हाथो मे ऊपर उठाये रहा था।

"'इसके बाद हमने स्पिरिट का एक-एक प्याला पिया (मुझे डर है कि फिर भी इन दोनो मे से कोई न कोई बीमार न हो जाये) और कारतूसो को सुखाने लगे। कुल मिलाकर अब हमारे पास उन्नीस कारतूस, खुराक के सत्तरह डिब्बे, एक राइफिल (दूसरी हमे फेकनी पडी), तीन सफरी बिस्तर और एक तम्बू है। खैर कोई बात नही, कुछ खास बुरी हालत नही है हमारी (बेशक यह सच है

कि अब तक मुझे कभी भी ऐसी स्थिति का सामना नही करना पडा था)।

"'मै तुम्हे सभी चीजो के बारे मे विस्तारपूर्वक इसलिये लिख रहा हू कि किसी तरह दिल-दिमाग पर छाये हुए और परेशान करनेवाले विचारो को भूल सकू, उन्हे दूर खदेड सकू। देखो न, हमने अभी तक यह फैसला नही किया कि हवाई जहाज तक कैसे पहुचेगे–पैदल, या फिर से बेडा बना कर (मै सोचता हू कि बेडे के बारे मे कोई भी सहमत नही होगा)। इधर जाडा सिर पर खडा है। जाडा भी कोई ऐसा-वैसा नही, याकूतिया का जाडा है। उन्नीस कारतूस और खुराक के डेढ दर्जन डिब्बे –यहा के सनकी और उन्मत्त जाडे से बचने के लिये ये काफी नही है।

"'गेर्मन लौट आया है –वह जाच-पडताल करने के लिये गया था। बारिश अभी तक रुकी नही, लेकिन उसका जोर पहले से कम हो गया है। गेर्मन ने बताया है कि हम नदी के बाये तट के साथ-साथ फैली हुई टीलो की शृखला के एक टीले पर आ पहुचे है। यहा से हवाई जहाज के अड्डे तक पहुचना बिल्कुल असम्भव है। टीलो के बीच की सभी ऊची-नीची जगहे जलमग्न है। इसके अलावा हम नक्शे के बिना उस जगह की तलाश भी नही कर सकेगे इस कम्बख्त बाढ के कारण यहा का रग-ढग ही बिल्कुल

बदल गया है। सभी कुछ जल-थल हुआ पडा है। किया जाये तो क्या ?

"'आखिर हमने यही सोचा कि रात की बात सच नही होती। सुबह उठ कर कोई तदबीर सोचेगे। अब सोना चाहिये। कल सोच-विचार कर यह फैसला करेगे कि आगे क्या करना चाहिये। शुभरात्रि, प्यारी वेरा! जब इकट्ठे इस पत्र को पढेगे तो मुझे आज की शाम की इसी तरह से याद आयेगी। इसको भुलाया ही कैसे जा सकता है

"'जब हम डेरा डाले हुए थे तभी मैने पत्र के इस हिस्से को लिखा। हम तैगा मे से बढते जा रहे हैं। कल सुबह हमने सारी स्थिति पर अच्छी तरह से विचार किया, अच्छे और बुरे पक्षो की ओर ध्यान दिया और इस नतीजे पर पहुचे कि हवाई जहाज तक पहुचना बिल्कुल सम्भव नही और अन्तरीप से दो सौ किलोमीटरो की दूरी पर उस का इन्तजार करने मे कोई तुक नही। नदी पर यात्रा करने का कोई सवाल ही बाकी नही रह गया था। पहले तो इसलिये कि उस पर यात्रा करना सम्भव नही था और दूसरे इसलिये कि नदी तैगा के बीच से कई सौ किलोमीटरो का चक्कर काटती है। ऐसी हालत मे यह बहुत मुमकिन है कि पाला हमे वीरान तैगा के मध्य मे ही कही धर दबाये। इसमे कोई सन्देह नही कि हमारी खोज की जायेगी। हमे ढूढने के लिये हवाई जहाज भेजे जायेगे, मगर हो सकता

है कि हवाबाजो की नजर चूक जाये, हम उन्हे दिखाई न दे।

"'सक्षेप मे यह कि जब तक खुराक के डिब्बे, कारतूस और शरीर मे जान बाकी है, हमने अपनी ही हिम्मत से तैगा मे से निकलने का निर्णय किया है। बैठकर प्रतीक्षा करना तो सबसे बुरी बात होगी। हमारी जैसी स्थिति मे अपने ही बल-बूते पर भरोसा करना सबसे अधिक अच्छा होगा। हो सकता है कि हम गलती कर रहे हो, किन्तु हमारे लिये हाथ पर हाथ रखकर और अधिक बैठे रहना सम्भव नही।

"'हमारी योजना बिल्कुल सीधी-सादी है—लोगो की किसी बस्ती मे पहुचने तक हम लगातार दक्षिण की ओर चलते जायेगे। मै समझता हू कि कडाके की सर्दी पडने से पहले ही हम किसी ऐसी बस्ती मे जा पहुचेगे।

"'बडे बहादुर है गेर्मन और तान्या! हा, मुझे ऐसा लगता है कि रात के वक्त ठडे कीचड मे गोते खाने के बाद गेर्मन का टेम्प्रेचर गडबड रहने लगा है। हम पर जो कुछ बीती है उस सब के बाद तान्या बहुत बुझ सी गयी है, मगर वह यह जाहिर नही होने देती। वह हर समय हसती-मुस्कराती और मजाक करती रहती है।

"'अच्छा तो अगले पडाव तक नमस्ते! अब मै कम लिखा करूगा, कागज खत्म होने को आ रहे है।

"'हम तैगा मे से बढते चले जा रहे है। स्पष्ट है कि हमसे पहले यहा कभी किसी इन्सान की छाया नही पडी। ठड हर दिन बढती जा रही है, मगर बर्फ अभी तक एक बार भी नही पडी। तिरपाल की जाकेटो से अब काम नही चलता, ठड लगती है। खाते हम नाम मात्र को है, पेट मे हर वक्त चूहे कूदते रहते है।

"'हमारा राशन यह है—तीनो के लिये दिन भर मे खुराक का आधा डिब्बा और लगातार उबला हुआ पानी। इसके अलावा कुछ जगली बेरिया भी चुन लेते है, मगर वे बिलकुल बेजायका होते है और उन्हे चुनने मे शक्ति भी बहुत खर्च करनी पडती है।

"'हम सोते बहुत ज्यादा है, बातचीत बहुत कम करते है। ये मेरे युवाजन तो कुछ मुरझा गये है। इनमे चचलता और ताजगी लाने के लिये कुछ तो करना ही होगा। अच्छा अब नमस्ते, प्यारी वेरा! मै फिर से तुम्हारे सौभाग्य की कामना करता हू

"'कल जो कुछ लिखा था, आज उसे फिर से पढा तो शर्म आयी। हमारा काम बहुत मजे मे चल रहा है! राह चलते हुए आज हमने एक झील के किनारे पर एक बतख के बच्चे का शिकार कर लिया। उसका एक पख टूटा हुआ था। लगता है कि उसके झुड के साथी उसे यही छोडकर खुद दक्षिण की ओर उड गये थे। हम पूरे का पूरा बतख

का बच्चा खा गये—खूब बढिया दावत रही। गेर्मन दो छोटी-छोटी मछलिया पकड लाया—हम उन्हे भी हडप गये। अब एक ही बार हम मे कई दिनो के लिए ताकत आ गयी है।

"'लगता है कि हम जाडे के चुगल मे फस ही जायेगे सुबह के वक्त पैरो के नीचे बर्फ की पतली-पतली तह कचकचाने लगी है। रात के समय सम्भवत दस-बारह दर्जे सेटीग्रेड की सर्दी होती है। मुझे गेर्मन की बहुत चिन्ता रहने लगी है। उसे बहुत जोर का बुखार रहता है—बुखार जाचे तो कैसे ? थरमामीटर नही है। किन्तु इतना स्पष्ट है कि वह बहुत तकलीफ उठा रहा है। तान्या उसकी देखभाल करती है।

"'खुराक के डिब्बे ले-देकर ग्यारह रह गये है। यह सच है कि कल मैने एक पक्षी मार लिया, मगर दो कारतूस खर्च हो गये। यह तैगा का विशेष पक्षी है, कुछ-कुछ गौरैया और कुछ-कुछ कौवे जैसा। हम उसे पूरे का पूरा खा गये, हड्डिया तक भी नही छोडी।

"'आज एक और नयी मुसीबत आ गयी। हम टीले से उतरते हुए पत्थर के लम्बे-लम्बे टुकडो पर से गुजर रहे थे कि गेर्मन गिर पडा। उसके पैर मे बहुत जोर की मोच आ गयी। वह फौरन खडा भी न हो सका। मै और तान्या उसे दोनो ओर से सहारा देकर धीरे-धीरे नीचे लाये।

"'आज हमने वक्त से पहले ही पडाव डाल दिया—

गेर्मन का पाव सूज गया है। मैने रात के समय उसके पांव पर बहुत-सी पट्टिया बाध दी ताकि वह गर्म रहे। मै आज फिर एक पक्षी मार लाया, किन्तु इसके लिए तीन कारतूसो से हाथ धोना पडा। खुराक के डिब्बो को (हर एक के हिस्से मे सिर्फ तीन-तीन डिब्बे बाकी रह गये है) हमने फिलहाल एक तरफ रख छोडा हे। बहुत मुश्किल के वक्त ही उन्हे काम मे लायेगे। काश कोई बारहसिगा हाथ लग जाय! तैगा मे तो मानो हर चीज मर गयी है

"'हमने गेर्मन के लिए एक डडा तोड दिया हे। वह बेहद लगडाता है, मगर फिर भी चलता रहता है। तान्या उसकी ओर देखकर चुपके-चुपके आसू पोछ लेती है। बहुत कमाल की है यह लडकी, तान्या!

''आज गेर्मन को ऐसी कपकपी चढी, उसके दात इस तरह से बजते रहे कि हम रात भर नही सो पाये। तान्या अपने बिस्तर मे से निकलकर गेर्मन के बिस्तर मे जा लेटी और इस तरह उसने उसे गर्मी पहुचायी – गर्म होने से उसकी तबीयत जरा सभली और वह सो गया। मुझे डर था कि तान्या को भी बीमारी की छूत लग जाएगी और वह भी बीमार हो जाएगी। मगर नही, सब ठीक-ठाक ही रहा।

"' गेर्मन बहुत मुश्किल से चल पाता है उसके पाव की सूजन बहुत बढ गयी है। गेर्मन का सारा सामान मैने ले लिया है। आज फिर हमने दोपहर को ही पडाव डाल

दिया – गेर्मन को बहुत जोर की कपकपी चढी। मैने मुसीबत के वक्त के लिए अलग रखे हुए खुराक के डिब्बो मे से एक डिब्बा खोलने की गेर्मन को इजाजत दे दी। मगर उसने इकार कर दिया।

"'आज फिर मैने एक पक्षी का शिकार किया है। सिर्फ सात कारतूस बाकी रह गये हैं। आज शाम को जब हम अलाव के निकट बैठे थे तो पहली सफेद 'मक्खिया' उडती दिखायी दी यानी बर्फ पडने लगी। तान्या की आखो मे आसू छलक आये। न जाने क्यो गेर्मन ने मुझसे पाइप का नक्शा मागा। मैने उसे नक्शा दिया। वह उसे अपने कापते हुए घुटनो पर रख कर देर तक देखता रहा, फिर उसने गहरी सास ली और नक्शा मुझे लौटा दिया।

"'हम बुझते हुए अलाव के पास मुह लटकाये बैठे हैं। मेरा मन बहुत भारी है। कुछ समझ मे नही आता कि कैसे अपने इन जवान साथियो को तसल्ली दू।

"'आज सुबह से तो गेर्मन एक कदम भी नही चल पा रहा। डडे के सहारे भी नही। उसके पैर पर जिस जगह सूजन थी, वहा खराश आ गयी और उसमे पीप पड गयी। दोपहर तक इसी जगह रहे और हमने गेर्मन के लिए बैसाखी तैयार की। बर्फ फिर से गिर रही है।

"' शुरू मे तो गेर्मन बैसाखी के सहारे तेजी से चलता रहा, मगर बाद मे पिछडने लगा। उसने बहुत जोर के

झोक खाये और कई बार गिरा। आज फिर हमने वक्त से पहले पडाव डाल दिया। मै गेर्मन को हाथो पर उठाकर तम्बू मे लाया। वह बेहोश हो गया था। वह सरसाम की हालत मे बडबडा रहा हे। तान्या रो रही है। और नदी– उसका कही नाम-निशान नही

"'मै समझता हू कि कल हम अपनी यात्रा बिल्कुल ही जारी न रख सकेगे। मैने यह सुझाव रखा हे तान्या सारा समान सम्भाले, यह कोई एक मन के करीब होगा और मै स्ट्रेचर बनाकर गेर्मन को उसपर लिटाकर खीच ले चलूगा। गेर्मन बहुत हल्का-फुल्का है, कुल पचहत्तर किलोग्राम वजन है उसका। तान्या सहमत है और गेर्मन (हम उसे उबला हुआ पानी पिलाते है तो उसकी तबीयत कुछ ठीक हो जाती है) के दात बजते रहते है और वह किसी बात का उत्तर नही दे पाता।

"'मै और तान्या स्ट्रेचर बनाने के लिए जगल की ओर जा रहे है। गेर्मन ने मुझसे एक कागज मागा है। मै नही जानता कि उसे इसकी क्या जरूरत है

"' प्यारी वेरा! कल रात को जो कुछ हुआ उसको शब्दो मे बयान नही किया जा सकता। ऐसा कर पाना मेरे बस की बात नही है। मैने बहुत दुनिया देखी-भाली है, मगर उस समय तो मै भी अपने को न सम्भाल सका और फूट-फूट कर रो पडा।

"'रात के समय गेर्मन यहा से चला गया। हम स्ट्रेचर बनाकर थके-हारे हुए तैगा से लौटे और सोने के लिये लेट गये। जोर से बर्फ पडने लगी। गेर्मन हम दोनो के बीच लेटा हुआ था। किन्तु सुबह जब हमारी आख खुली तो उसे गायब पाया। तम्बू के साथ ही एक पुर्जा लटका हुआ था—'कोन्स्तानतीन पेत्रोविच! मुझे एक मर्द की तरह हिम्मत से काम लेना चाहिए। यहा हिसाब बिल्कुल सीधा-सादा है—तीन के बजाये एक का मर जाना बेहतर है। मेरे हिस्से के खुराक के डिब्बे मेरे सफरी बिस्तर मे हैं—उन्हे मत भूल जाइयेगा। मै जा रहा हू। मुझे ढूढियेगा नही, बेकार अपनी शक्ति मत खर्च कीजियेगा। बर्फ हर चीज पर अपनी चादर डाल देती है। गेर्मन। पुनश्च—आपको अवश्य ही मजिल पर पहुचना चाहिए—पाइप के नक्शे का अभियान-दल के मुख्य कार्यालय मे इन्तजार हो रहा है। तान्या का ध्यान रखियेगा।'

"'बहुत ही मजबूत इरादे का, बहुत ही गजब का आदमी था गेर्मन! ओह, कैसे तुमने अपने साथ इतना जुल्म किया! हम तो जरूर ही तुम्हे अपने साथ मजिल तक खीच ले जाते, हम तम्बू फेंक देते, सफरी बिस्तर फेंक देते

"' शाम होने तक गेर्मन को ढूढते रहे। मगर चूकि पिछली रात लगातार बर्फ पडती रही थी और सुबह हल्की-

सी हवा चल गई थी, इसलिये कही कोई निशान बाकी न रह गया था। हमारी ढूढ-तलाश बिल्कुल बेकार रही। अगले दिन बारह बजे हमने तम्बू लपेटा और आगे चल दिये।

"'तान्या को अब किसी बात की सुध-बुध ही नही है। वह तो चलती जा रही है—गुम-सुम, जमीन पर आखे गडाये हुए। स्पष्ट है कि गेर्मन के जाने से उसे बहुत ज़ोर का धक्का लगा है। कैसी दु खद यात्रा हे यह! दो इन्सानो की बलि दी जा चुकी है। बहुत बडी कीमत चुकानी पडी है हमे पाइप को खोज लेने की।

"'दिन भर मे हमने कोई पन्द्रह किलोमीटर का रास्ता तय किया। न जाने क्यो, मै आज यह बात समझ गया हू कि हमारी जानो से कही ज्यादा मूल्यवान है कागजो का यह पुलिदा—पाइप का नक्शा। इसी के लिए तो सेर्गेई और गेर्मन ने अपने प्राण दिये। अब हमे अपनी चिन्ता करने का अधिकार नही रहा—नक्शे को हर हालत मे पहुचाना ही चाहिये।

"'लगता है कि तान्या को भी अब इसी बात की फिक्र रहती है। शाम के खाने के वक्त हमने मास का आधा डिब्बा खा डाला—ताकत की जरूरत है ताकि अगले दिन कम से कम बीस किलोमीटर तो चला ही जाय। अब जल्दी करनी चाहिये। ठड बढती जा रही है।

"' दिन भर मे कोई साढे बत्तीस हज़ार कदम चले।

थककर चूर-चूर हो गये है। आधा डिब्बा और खा लिया है। पक्षी का शिकार करना चाहा, मगर निशाना चूक गया। अब और नही लिख सकता। मगर नदी – उसका कही अता-पता नही

"' आज छत्तीस हजार कदम चले। मुह अधेरे रवाना हुए और रात होने पर ही पडाव डाला। नदी नजर नही आयी, तो नही आयी। लगता है कि हम भटक गये है – दायी ओर को बहुत ही अधिक मुड गये है। कही हम बेकार चक्कर ही न काट रहे हो!

"' हमारी ताकत जवाब देने लगी हे – शायद हमने बहुत ही तेज रफ्तार से चलना शुरू कर दिया था। आज तान्या सात हजार कदम चलने के बाद बेहोश होकर गिर पडी। वह तो बहुत ही दुबली-पतली हो गयी है – बिल्कुल जान नही रही उसमे। बेचारी तान्या दो दिन तक मेरे पीछे-पीछे घसिटती रही, मगर जाहिर है कि आज उसमे ताकत न रही। पर उसने मुझसे एक शब्द भी नही कहा, एक बार भी धीरे चलने का अनुरोध नही किया।

"'मै उसे हाथो पर उठा कर ले चला। डेरा लगाने के लिए कही कोई अच्छी जगह नही थी, इसलिए कई किलोमीटरो तक चलते जाना पडा। तान्या तो बहुत ही हल्की-फुल्की है – इस भयानक यात्रा मे बेचारी बिल्कुल सूख कर काटा हो गयी है।

"'अलाव पर पानी उबाल कर मैंने उसे पिलाया, कुछ खिलाया, और सुला दिया। प्यारी वेरा! अब बैठा हुआ तुम्हे खत लिख रहा हू। लगता है कि जाडा हमे धर दबायेगा। हमने उससे दूर भागने की बहुत कोशिश की, मगर वह कदम-कदम हमारे पीछे-पीछे आता गया। वह आर्कटिक महासागर के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बढता चला आया है और आज हमने वास्तव मे पहली बार अपनी पीठ पर उसकी ठडी सास का स्पर्श अनुभव किया है। भयानक ठड है, नाक और कानो का बुरा हाल है। रबड के बूटो मे पाव बर्फ हुए जा रहे हैं।

"'आज पहली बार बादल छटे है। हमारे ऊपर दूर-दूर तक फैला हुआ नीलाकाश अपनी झलक दिखा रहा है। हा अब सचमुच जाडा आ गया है। याकूतिया मे ऐसा नीलाकाश सिर्फ तभी होता है, जब बहुत जोरो का पाला पडने वाला हो

"'हम तान्या के साथ एक ही बिस्तर मे लेटे हुए हैं। (दूसरा बिस्तर हमने कल फेंक दिया था।) तान्या अनुरोध कर रही है कि मैं उसे तुम्हारे बारे मे बताऊ। मैं उसे बताऊ कि तुम्हारे बाल कैसे है, आखे कैसी है, तुम्हारे बदन की गठन कैसी है, तुम किस तरह के कपडे पहनती हो और तुम्हारा मिजाज कैसा है। मै उसे तुम्हारे बारे मे बताता हू और वह और अधिक बताने की प्रार्थना करती

है और रोती है। न जाने क्यो हम धीरे-धीरे फुसफुसाकर बाते कर रहे है

"'दोपहर को तूफान का जोर कम हुआ और हम आगे चल दिये। लगता है कि आज तान्या की तबीयत कुछ अच्छी है। हमने कोई पाच किलोमीटरो का फासला तय किया। फिर से हमने पडाव डाल दिया हे —फिर से बर्फ का तूफान आ रहा है। मैने तम्बू के अन्दर ही अलाव जला दिया है। हाथ-पाव जमे जा रहे है। फिर से हम बिस्तर मे लेटे हुए है और फिर से तान्या तुम्हारी चर्चा करने के लिये कह रही है—वह जानना चाहती है कि कैसे हमारी पहली मुलाकात हुई, किसने पहले अपना प्रेम प्रगट किया

"'तान्या को अचानक नक्शे का ध्यान आ गया। उसने चिन्तित होते हुए पूछा कि मैने उसे कही खो तो नही दिया। मैने उसे नक्शा दिखाया और वह शात हो गयी।

"'मेरे पास दो कारतूस रह गये है। मै तान्या को बिस्तर मे ही छोडकर तैगा की ओर जा रहा हू। हो सकता है कि किस्मत साथ दे दे और कोई बारहसिगा हाथ लग जाय

"'वेरा, वेरा! कितना बुरा है यह साल! कितनी मौते हो चुकी है सिर्फ इन्ही दो महीनो मे, कितने शानदार लोगो की जानो से हाथ धोना पडा है!

"'मुझ मे खत लिखने की हिम्मत नही!

"'कल मै बहुत देर तक तँगा मे रहा। एक पक्षी के फेर मे मै कोई दो किलोमीटर आगे निकल गया। फिर से बर्फ का तूफान आ गया और उसके बाद मै कुछ भटक गया। मतलब यह कि मै तीन घटे तक धूल छानता फिरता रहा। मै जब तम्बू मे लौटा तो तान्या को गायब पाया। वह मेरे लिये यह पुर्जा लिखकर रख गयी थी—'प्रिय कोन्स्तानतीन पेत्रोविच! मै गेर्मन के पास जा रही हू। ऐसा ही करना जरूरी है। आप मुझसे नाराज नही होइयेगा। मै पूरी तरह होश-हवास मे यह सब कुछ लिख रही हू। हम दोनो नही पहुच पायेगे, दोनो ही जान से हाथ धो बैठेगे। अभियान-दल मे पाइप के नक्शे की प्रतीक्षा हो रही है। हममे से किसी को तो जीवित रहना ही चाहिये। और जीवित रहना चाहिये आपको। आप ही सबसे ज्यादा मजबूत है। मै जानती हू कि मै और गेर्मन आपके लिये कैसे भार बने रहे है। अगर हम न होते तो आप कभी के केन्द्रीय अड्डे पर पहुच गये होते। आपने हमारे लिये बलिदान किया और अब हमारे बलिदान करने की बारी है। गेर्मन ने यह बात पहले समझी और मैने बाद मे। वैसे सच तो यह है कि मै भी बहुत पहले ही यह बात समझ गयी थी, मगर मुझमे इसे अमली जामा पहनाने की हिम्मत न हुई, क्योकि मै डरपोक हू। अब मैने ऐसा करने का पक्का इरादा कर लिया है। मै तूफान की प्रतीक्षा मे थी, वह आ गया और अब मै जा

रही हू। मै बहुत ही जल्द गेर्मन के पास पहुच जाऊगी। आप मेरी खोज नही कीजियेगा । बर्फ सभी चिह्नो को ढक देगी। मैने मुसीबत के वक्त के लिये खुराक का एक डिब्बा बचा रखा है, वह थैले मे है। आपने मेरे लिये जो कुछ किया, उसके लिये यह मेरी कृतज्ञता की तुच्छ भेट है। आपको नक्शा अवश्य ही पहुचाना चाहिये। अच्छा, विदा। तान्या। पुनश्च – कोन्स्तानतीन पेत्रोविच, आपको अवश्य ही अपनी वेरा के पास पहुचना चाहिये। आप तो उसे बेहद प्यार करते है न। मै और गेर्मन भी एक दूसरे से प्यार करते थे (हम कई सालो से एक दूसरे को जानते थे) मगर हमने यह जाहिर न होने दिया ताकि काम मे बाधा न पडे। हमारी जिन्दगी, हमारे सभी अरमान, सभी सपने अधूरे रह गये। मै चाहती हू कि आपको वह सौभाग्य प्राप्त हो। आपको अवश्य ही अपनी पत्नी के पास पहुचना चाहिये। मेरी एक और प्रार्थना है, कोन्स्तानतीन पेत्रोविच, मेरी मा को एक पत्र लिख दीजियेगा। मा का पता आपको अभियान-दल मे मिल जाएगा। तान्या।'

"' मैने दिन भर उसकी खोज की, किन्तु तूफान आने के बाद तैगा मे यह खोज बिल्कुल बेकार थी। गेर्मन ने उसे रास्ता दिखा दिया था कि कब उसके लिये जाना सबसे अच्छा रहेगा।

"'प्यारी वेरा, अब मेरा जीवन, मेरा अपना नही रहा।

शायद बात इसके बिल्कुल विपरीत है – मुझे हर कीमत पर नक्शे को पहुचाना चाहिये। मैने तम्बू को फाडकर अपने लिये कई पट्टिया बना ली है। अब सबसे महत्त्वपूर्ण चीज तो मेरे पाव है। मेरे पास खुराक के चार डिब्बे, सफरी बिस्तर, एक कारतूस और बारह दियासलाइया है। समझता हू कि पहुच ही जाऊगा!

"'आज मै पचास हजार कदम चला। ये कोई बीस किलोमीटर के बराबर होते है। अब मै ऊचे-ऊचे श्रीदारु की छाया मे बैठा हुआ चाय के लिये पानी उबाल रहा हू। जब तक पानी उबलता है, मै तुम्हे खत लिख रहा हू – खत लिखने के लिये यही सबसे अच्छा वक्त होता है। मै तुम्हे हमेशा इसी वक्त खत लिखता हू। मेरे इर्द-गिर्द बर्फ से ढके हुए ऊचे-ऊचे सफेद वृक्ष खडे है। बर्फ के ढेर काफी ऊचे हो गये है। अभी तक पाला बहुत जोर का नही पडता है। ओह, कैसे जबर्दस्त प्राकृतिक दृश्य है यहा!

"'आज मै तिरपन हजार कदम चला। हम सचमुच ही भटक गये है। लगता है कि नदी के समानान्तर ही चलते गये है और इसलिये नदी तक नही पहुच पाये। अब मै पहली बार यह अनुभव कर रहा हू कि ढाल शुरू हो गयी है। इसका अर्थ यह है कि आखिर मै जल-विभाजन के दूसरी ओर आ पहुचा हू। अब तो मजिल तक पहुच ही जाऊगा। यह मेरा कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य को पूरा करना

ही चाहिये जैसे गेर्मन और तान्या ने किया। हमारे पेशे मे, जैसा कि शायद और किसी भी पेशे मे नही होता, जीवन और कर्त्तव्य के बीच बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। और कर्त्तव्य अक्सर जीवन की बलि माग लेता है

"'मै काफी समय से दिनो का हिसाब भूल चुका हू, मगर लगता है कि अब नवम्बर शुरू हो गया है। आज सुबह मैने यह अनुभव किया। कोई तीस दर्जे का पाला था। बहुत देर तक अलाव के पास बैठे रहना पडता है। सोना भी मुश्किल हो गया है—बहुत अधिक शाखाए तोड कर लानी पडती है। मगर इसके लिये पर्याप्त शक्ति नही है। सास लेने मे कठिनाई हो रही है

"'दो दिन से कुछ भी नही लिखा। बहुत ही जोर का पाला पड रहा है। लगता है कि मुह को पाला मार गया है। कल रात घबराकर जागा तो ठडे पसीने आ रहे थे। मैने सपने मे देखा कि पाइप का नक्शा गुम हो गया है। मैने सरसाम की सी हालत मे कमीज के नीचे टटोल कर देखा—नक्शा वहा कायम था।

"'न जाने क्यो, गेर्मन और तान्या के लिये आज खास तौर पर मन कसक रहा है। वे एक दूसरे को प्यार करते थे और मेरा इस ओर ध्यान ही न गया। कितना कसा-बधा, उद्देश्य के प्रति कितना सजग था उनका प्यार! अगर उन्होने उसे प्रकट नही होने दिया, तो इसी ख्याल से कि

काम मे बाधा न पडे। और कितना अधिक महत्त्वपूर्ण था उनके लिये काम, उनका कर्त्तव्य, जिसे उन्होने जीवन की आखिरी सास तक पूरा किया

"'फिर वे तो बिल्कुल जवान थे। शायद मै इतने सयम से काम न ले पाता

"'हा, तो आखिर मै नदी तट पर पहुच ही गया। वह बिल्कुल जमी पडी है। बर्फ की मोटी-मोटी परते एक दूसरी के ऊपर चढी हुई है। हवा के झोके बर्फ को उडा रहे है। क्या हमारे लिये वही पर इन्तजार करना अधिक अच्छा न होता? हम लोगो की बहुत देर तक खोज की गयी होगी। यह नही हो सकता कि हमारी खोज न की गयी हो। हमारे यहा आदमी को तैगा मे फेक कर भुला नही दिया जाता। जो कुछ हुआ, उस सबके लिये हम खुद ही जिम्मेदार है।

"' लगता है कि अब सब कुछ खतम हो गया—मेरी दायी टाग को पाला मार गया। सिर्फ तीन दियासलाइया रह गयी है। अब मेरा केवल एक ही कार्यभार है—जैसे भी हो नक्शे को किसी बस्ती के निकटतम पहुचा दू।

"'अगर हमारे द्वारा खोजे गये किम्बरलिट पाइप का नक्शा भी हमारे साथ ही खत्म हो गया, तो इसके लिये कोई भी दोषी नही होगा। परिस्थितियो ने कुछ ऐसी दु खद करवट ही ले ली है। किन्तु प्रमुख बात यह नही है। इस यात्रा मे

मैंने पाइप के अतिरिक्त, अपने लिये एक अन्य बहुत ही महत्त्व-पूर्ण खोज की है मैं यह समझ गया हू कि अब तक का जीवन मैंने सही ढग से नही बिताया हे। मैं यह मानता रहा हू कि सच्चा प्यार वही है जिसे छोडकर जाया जा सके और जिसके पास फिर से लौटा जा सके। मैं यह समझता रहा हू कि हमारे पति-पत्नी के सम्बन्ध, नारी और पुरुष के लिये आदर्श सम्बन्ध हैं। मगर न जाने क्यो अब मुझे गेर्मन और तान्या से ईर्षा होती है। उन्होने एक साथ रहते हुए सुख-दु ख देखे, सहे। वे जीवन के पथ पर एक साथ बढे और उनका प्रेम इतना महान था कि उसे किसी प्रकार की अभिव्यक्ति की भी आवश्यकता अनुभव नही हुई। वे आखिरी क्षण तक साथ-साथ रहे—प्रेम ने उनके कर्त्तव्य-पालन मे बाधा नही डाली।

"'मगर मेरी स्थिति इसके विपरीत है। मैं हर दिन तुम्हे पत्र लिखता रहा, मैंने हर किसी से तुम्हारी चर्चा करने की कोशिश की, मैंने अपने इर्द-गिर्द के समूचे वातावरण मे तुम्ही को देखा। मगर नही, यह सुख नही था, केवल मन को सान्त्वना देनेवाली बात थी।

"'वेरा, मैंने बहुत बार तुम्हे पुकारा, यहा उत्तर मे, अपने पास। मेरा बहुत मन हुआ कि तुम तक का फासला कम हो जाये। मगर तुम नही आयी, तुम मास्को मे ही रही। इस बात का ध्यान आने पर अब मुझे कितना दु ख होता

है! बहुत दु ख होता है और बहुत तकलीफ होती है मुझे! यही विचार अब मेरी रही-सही शक्ति को सोखते जा रहे हैं।

"'प्यारी वेरा! तुम्हारी मुझे यहा जरूरत है, यहा अपने निकट और किसी भी दूसरी जगह नही! मुझे तुम्हारी छाया की नही, वास्तविक वेरा की आवश्यकता है। मै चाहता हू कि मेरी प्यारी वेरा अलाव के पास मेरे पास बैठी होती, ताकि मै उसे हीरो के जन्मस्थान के निशानो का नक्शा देकर, चैन की मौत मर सकता। यह समझता हुआ कि मेरी प्रियतमा लोगो तक इस नक्शे को पहुचा देगी।

"'मगर नही, मेरे पास ऐसा कोई नही है, जिसे मै यह नक्शा दे सकू। न जाने क्यो मुझे फिर से गेर्मन की याद आ रही है। मुझे उससे ईर्ष्या होती हे।

"'लगता है कि मै बेहोश होता जा रहा हू नही, मुझे फिर से होश आ गया है और मै तुम्हे फिर से पत्र लिख रहा हू। मै अब और कुछ कर भी तो नही सकता— लिखते रहने के सिवा। हा, मुझे गेर्मन से ईर्ष्या होती है। मै गेर्मन और तान्या की बहुत ही प्रशसा करता हू। उन्होने हमारे साझे लक्ष्य के लिये अपनी जवान जानो की दिलेरी से बलि दे दी। क्या यह उनके आत्म-बल, उनकी आत्मा के विस्तार, उनके प्यार की गहराई का प्रमाण नही है?

"'नही, नही, मुझे अभी से हिम्मत नही हारनी चाहिये।

मुझे चलते ही जाना चाहिये, धीरे-धीरे, घसिटते हुए, उठते और गिरते हुए, बढते ही जाना चाहिये

"'शायद आज मै आखिरी बार ये पक्तिया लिख रहा हू

"'नही, आखिरी बार नही। मै अभी जिन्दा हू। मै इस नक्शे का क्या करू? अभियान-दल मे इसकी प्रतीक्षा हो रही है। किसे सौपू इसे, किसे?

"'नक्शे का क्या करू? सम्भवत यही अब मेरे जीवन का अतिम प्रश्न बन कर रह गया है

"'बहुत ही सख्त जान होता है आदमी! मै घसिटता हू, घुटनो के बल खडा होता हू, गिरता हू और फिर से रेंगने लगता हू—हो सकता है कि मजिल तक पहुच जाऊ। हाथ बहुत ही मुश्किल से पेंसिल को चला पाता है। लिखता हू इसलिये कि यह आदत हो गयी है। दो पक्तिया घसीटता हू और फिर घसिटने लगता हू। खुराक से भी ज्यादा मै इस पत्र को लिखने का अभ्यस्त हो चुका हू। अगर लिखना बन्द कर दू, तो शायद बिल्कुल ही नही उठ पाऊगा

"'मैने एक छोटी-सी कुटिया बना ली है। इस कुटिया को देख कर शायद मुझे और इस नक्शे को अधिक जल्दी ढूढ लिया जायेगा

"'मुझे आवाजे सुनायी दे रही है, कुत्ते भौक रहे है। मैने कुटिया से बाहर निकल कर देखा—नही, यह तो भ्रम

था। फिर से कुटिया मे पडा हुआ हूं। पाला कम है। कल शाम को आखिरी दियासलाई द्वारा जलाया गया अलाव बुझता जा रहा है। हा, वेरा, कितनी सख्त जरूरत है मुझे इस जगह तुम्हारी! कितनी जरूरत है मुझे हाथ बटानेवाले प्यार की, न कि खिलवाड करने वाले प्यार की! नही, मेरे भाग्य मे यह नही है

"'आखिरी बार मैंने नक्शे की जाच कर ली है। सब कुछ ठीक-ठाक है, नक्शा अपनी जगह पर है।

"'वेरा, अभियान-दल से तान्या की मा का पता हासिल कर लेना उसे खत लिख देना और गेर्मन के बारे मे भी

"'हमारी टोली के लोगो की मृत्यु के लिये मेरे सिवा और कोई भी दोषी नही है '"

तर्यानोव ने अन्तिम पृष्ठ उल्टा और कापी को एक ओर रख दिया। खिडकी मे से सुबह का उजाला बहुत देर पहले से ही झाक रहा था। हमे पता भी न लगा कि रात कैसे पख लगा कर उड गयी थी।

"कुत्तो का भौकना और लोगो की आवाजे क्या उसने सचमुच सुनी थी?" झबरे बालो वाले भूभौतिकी ने पूछा।

"हा सचमुच ही," तर्यानोव ने उत्तर दिया। "कोस्त्या की लाश खानाबदोश एवेन्की जाति के लोगो की बस्ती से सिर्फ बीस किलोमीटर के फासले पर वसत मे मिली। इसलिये

जा चुके थे। खोज करने वाले अन्य दल अधिक सौभाग्यशाली रहे थे।"

तर्यानोव ने थैली मे कापी रख दी और कहा—

"बाद मे सबीनिन की टोली द्वारा खोजे गये पाइप के इर्द-गिर्द पाइपो के और भी कई जन्मस्थान मिल गये। इस समय वहा बहुत बडा औद्योगिक निर्माण हो रहा है "

अप्रत्याशित ही छत के ऊपर इजनो की जानी-पहचानी आवाज की गूज सुनायी दी और खिडकी पर एक बहुत बडी परछाई झलक उठी। यह ध्रुवीय प्रदेश के हीरो के क्षेत्र से इर्कूत्स्क लौटनेवाला हवाई जहाज था जो नीचे उतर रहा था। हमे मालूम था कि हवाबाज वहा हीरो के कारखाने के निर्माण के लिये इस्पात के ढाचे लेकर जाते है और हमेशा खाली वापस आते है। इसलिये रास्ते मे मुसाफिर मिल जाने पर हवाबाजो को बहुत खुशी होती है।

हम हवाई अड्डे पर पहुचने की तैयारी करने लगे।

अनातोली कुज्नेत्सोव (जन्म १९३०) — सुप्रसिद्ध युवा कहानीकार। आपने अपनी किशोरावस्था में काखोव्का पनबिजलीघर के निर्माण-स्थल पर काम किया। यहा आप मामूली मज़दूर, कारीगर और बढई रहे। आपने बहुत-से पेशे बदले — आखिर मज़िल मिल गई और साहित्य के क्षेत्र में आ गये। युवा इमारतसाजो के जीवन से सम्बन्धित आपके लघु-उपन्यास 'दास्तान चलती रही' का पाठको ने ज़ोरदार स्वागत किया।

इस सग्रह में आपकी एक नवीनतम कहानी 'यूर्का, नग-धडग', शामिल की गई है।

अनातोली कुज़नेत्सोव
यूर्का, नंग-धड़ंग

१

बरसात मे बुरी तरह भीगी हुई सडक पर एक ट्रक चली जा रही थी। ट्रक के खुले हिस्से मे चटाई तथा खाली बोरियो से अपने आपको ढके हुए और एक-दूसरी से सटी हुई सामूहिक फार्म की चार किसान नारिया बैठी थी। ट्रक की केबिन मे ड्राइवर गोर्लोव और सात वर्षीय मुसाफिर यूर्का बैठे थे। वे दोनो अलग-अलग किस्म के व्यक्ति थे, एक दूसरे को पसन्द नही करते थे और इसलिए मौन साधे बैठे थे।

मौसम बहुत ही खराब था। गर्मी के अंत मे वह खास तौर पर बिगड गया था। दो सप्ताह से लगातार एक ही तरह की झडी लगी हुई थी और हवा चल रही थी। इलाके के लोग अकसर इस बात की चिन्ता करते थे कि फसल का क्या होगा।

कीचड से लथपथ पहियोवाली ट्रक इधर-उधर धचके खाती और टीलो पर से फिसलती हुई दाये-बाये हो रही थी ताकि फिर से किसी गड्ढे मे न चली जाये। ट्रक के सामनेवाले शीशे को साफ करनेवाला काटा बुरे ढग से काम कर रहा था और मैल-कुचैल को सिर्फ इधर-उधर फैलाता ही जाता था। गोर्लोव ने बगल वाला शीशा खोल लिया, ताकि झुक-झुककर आगे देखता जाये।

रास्ते ने मोड लिया। वह लम्बी-चौडी जल-आप्लावित भूमि के गिर्द फदे की तरह घूम गया था। मुसाफिरो को अब राजकीय फार्म नजर आ रहा था, वह जल-आप्लावित भूमि और वह सडक दिखाई दे रही थी जिससे वे गुजर रहे थे।

खुली जगह मे, जहा सभी ओर से हवा के झोके आते थे, छोटे-छोटे कच्चे मकान एक-दूसरे से सटे हुए नजर आ रहे थे। उनके बीच विरले वृक्ष खडे थे। मकानो की चिमनियो से धुआ निकल रहा था जो हवा मे एक धार की भाति लहरा रहा था। गाये उस तालाब के किनारे-किनारे घूम रही थी जो डबरे के समान लग रहा था।

यह बात समझ मे नही आ रही थी कि सबसे पहले किस के दिमाग मे स्तेपी के इस अटपटे से मैदान मे आकर बस्ती बसाने का ख्याल आया। किस चीज की तलाश मे प्राचीन समय के लोग यहा आये वे यहा कोई छिपा हुआ खजाना ढूढने आये थे या खस्ताहाली से तग आकर आ बसे थे? पर जो भी हो, वे सदियो तक यहा रहे, दूधो-पूतो फले, जिये-मरे और पुरानी झोपडियो के स्थान पर यहा नये घर खडे होते गये। गर्मी और सूखे के कारण जब कम उम्र के बगीचे सूख गये, तो लोगो ने समझ मे न आनेवाली हठधर्मी से काम लेते हुए फिर नये बाग-बगीचे लगा दिये। लोग कही भी जाकर बस सकते है, सिर्फ यह बात समझ मे नही आती कि वे ऐसा क्यो करते है। ड्राइवर गोर्लोव भी ऐसे ही लोगो मे से एक था। उसने परेशानी और ऊब के कारण बगलवाला शीशा बद कर दिया और इजन के सामने वाले टेढे-मेढे रास्ते पर अपनी नजर जमा दी। उसका शराब पीने को बहुत ही मन हो रहा था।

ड्राइवर गोर्लोव उलटी खोपडी का आदमी था। सभी लोग बहुत पहले से ही यह जानते थे कि वह शराबी, गुस्ताख और झक्की है। तैंतीस की उम्र हो चुकी थी, मगर वह अभी तक न तो गम्भीर हुआ था, न उसे अक्ल आयी थी और न उसने शादी करके घर-बार ही बसाया था।

हा, उसने जब-तब कई औरतो के साथ वक्तकटी की थी। वह अपने से दस साल बडी उम्र वाली एक विधवा के साथ छ महीने तक रहा। मगर इसे घर-गृहस्थी का जीवन नही कहा जा सकता था। इसके साथ रहने से तो अच्छी-खासी जग-हसायी हुई। एक शाम को विधवा जोर से चीखी-चिल्लायी और उसने गोर्लोव का बिस्तर-बोरिया खिडकी से बाहर फेंक दिया। वह शमीज पहने हुए ही शोर सुनकर इकट्ठे हो जानेवाले लोगो के सामने आ गयी और उसने जोर-शोर से यह कसम खायी कि अब कभी किसी मर्द से शादी करने का नाम नही लेगी। मगर एक ही महीने बाद एक अकाउण्ट क्लर्क उसके साथ रहने लगा। खैर हटाइये, हमे इस किस्से से क्या लेना-देना है। गोर्लोव खुद भी यह समझता था कि उसके साथ किसी का गुजारा कर लेना टेढा काम है। मगर उसे इससे क्या, परवाह करे उसकी जूती।

हा, पहले की बात और थी! वह अच्छा-खासा जवान था, बहुत ही मस्त और मिलनसार। वह राजकीय फार्म के मनमौजी छोकरो का मुखिया होता था। वर्ष बीते और ये मनमौजी छोकरे अपनी बीवियो के घाघरो से चिपक कर बैठ गये। गोर्लोव तकनीकी स्कूल मे दाखिल हुआ, मगर छोड कर भाग गया। फिर उसे काम सीखने के लिए भेजा गया, मगर वहा से लडाई-झगडा और मार-पीट करने के लिए निकाल दिया गया। वह जब फौज मे चला गया तो राजकीय

फार्म के बहुत-से भले लोगो ने चैन की सास ली। फौज से अपने गाव मे लौटा, तो ड्राइवर बनकर। अब उसके मिजाज का टेढापन और बढ गया था। इतना ही नही, वह गुस्सैल, लालची और उद्दद हो गया था।

वह जैसे-तैसे बहुत-से रूबल झटक लेता और दोस्तो के साथ बैठकर शराब पीता। जाम सामने रखकर वह खूब लम्बी-चौडी हाकता और कहता कि कोई पढा-लिखा हो या अनपढ, इससे कोई फर्क नही पडता। असली चीज तो है रुपया! जेब गर्म हो तो सब ठीक है। बेशक मै ड्राइवर हू, मगर किसी इजीनियर से कुछ कम नही कमाता हू। यार-दोस्त भी हा मे हा मिलाते और खरी खरी बात कहने के लिए उसे दाद देते।

यहा इस बात पर जोर देना जरूरी है कि राजकीय फार्म मे गोर्लोव को लोग नापसद करते थे, फिर भी बडे चाव से उसे रखे हुए थे।

गोर्लोव को जहा पैसा मिलता दिखाई देता वहा वह गधे की तरह जुटकर काम करता। अपने स्वार्थ को वह कभी न भूलता और अपना मतलब पूरा करने के लिए दूसरे की आख तक निकालने को तैयार हो जाता। वह हेरा-फेरी करता, शहर के हर फेरे मे औरतो से झगडता और जैसे-तैसे पैसे बना लेता। कुल मिलाकर यह कि जो कोई जेब गरम करने को तैयार होता, वह उसका भूसा, लकडी या अलमारी,

सभी कुछ ट्रक मे लाद कर उसके घर पहुचा देता। झगडा करने मे तो कोई उसकी बराबरी कर ही नही सकता था, मगर अपनी जिम्मेदारिया पूरी करने के मामले मे भी वह बडा ही चुस्त था। वह जब भी डायरेक्टर के सामने पड जाता, तो डायरेक्टर जरूर ही किटकिट करता, अवश्य ही बडबडाता। बेशक डायरेक्टर को गोर्लोव फूटी आखो नही भाता था, तथापि वह अपने काम मे बहुत होशियार इस ड्राइवर से जैसे-तैसे निबाह करने की कोशिश करता था। सभी लोग यह बात अच्छी तरह से जानते थे और खुद गोर्लोव को तो यह बहुत ही अधिक स्पष्ट था। मगर उसकी बला से, परवाह करे उसकी जूती!

सात वर्षीय मुसाफिर यूर्का अचानक और कुछ अजीब ढग से गोर्लोव के साथ हो गया था।

किस्सा यो हुआ कि गोर्लोव किसी के नामकरण के समारोह मे मौज मनाने के लिए घर से चला। मगर उसे रास्ते मे से पकडकर डायरेक्टर के सामने ले जाया गया। बिजलीघर का ट्रासफार्मर जल गया था और राजकीय फार्म मे अधेरा हो गया था। शहर से फौरन ही नया ट्रासफार्मर लाने की जरूरत थी। नये ट्रासफार्मर के लिए आर्डर दिया जा चुका था और वह डिपो मे रखा था। गोर्लोव जाना नही चाहता था और इसलिए उसने खूब हगामा किया। तब उसे नौकरी से निकाल देने की धमकी दी गयी। वह साप की तरह फुकारता और

लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ दफ्तर से निकला और अध्यापिका दीमोवा से लगभग टकरा ही गया। गुस्से की झोक मे शुरू मे तो वह यह भी न समझ पाया कि दीमोवा उससे क्या चाहती है।

अध्यापिका ने उससे अनुरोध किया कि वह उसके बेटे को अपने साथ शहर ले जाये और उसके लिए सूट खरीद दे। गोर्लोव उसकी बात को न समझते हुए उसे बस एकटक देखता रह गया।

"मीशा, मै आपकी मिन्नत करती हू," दीमोवा ने मिनमिनाकर कहा। "मुझे फुरसत नही है, छुट्टिया खत्म हो गयी है, लडके ने अपना आखिरी पतलून फाड लिया है और पहली सितम्बर को उसे स्कूल जाना है। आप तो जानते ही है कि लडके के लिए पहली बार स्कूल जाने का क्या मतलब होता है मै आपका हक नही रखूगी "

"मै न तो टैक्सी हू और न कोई सहकारी दूकान!" गोर्लोव ने चीखकर ऐसे बुरे ढग से जवाब दिया कि अध्यापिका सहम कर रह गयी।

"आपको तो कुछ ही मिनट लगेगे " उसके पीछे-पीछे जाते हुए अध्यापिका ने धीरे-धीरे कहा। "दोष तो मेरा ही है, यही सोचती रही कि आज जाती हू, अब जाती हू आपको तो सिर्फ नापकर ही देख लेना होगा। मै आपका हक नही रखूगी "

गोर्लोव बुरी तरह खीझ उठा। वह उसी तरह गुस्से मे आकर रुका जैसे कि पीछा करनेवाले छोटे-से कुत्ते से तग आकर शेर रुकता है। उसने अध्यापिका को सिर से पाव तक कडी नजर से देखा और फिर गैराज की ओर चला गया। दीमोवा जहा की तहा खडी रह गयी।

वैसे इस घटना से गोर्लोव को कोई खुशी नही हुई। दीमोवा जवान थी और शक्ल-सूरत की भी अच्छी थी। वह वसत के दिनो मे बहुत दूर से स्कूल मे काम करने के लिए, पति के बिना, मगर बेटे को साथ लेकर आयी थी। जाहिर है कि उसे अभी मालूम नही था कि गोर्लोव किस खमीर का आदमी है, वरना भूल कर भी अपने बेटे को उसे न सौपती।

वह यह भी नही जानती थी कि गोर्लोव के शहर जाने का यह मतलब नही है कि वह जायेगा और वापस आ जायेगा। वह तो ऐसा ही समझती थी। मगर गोर्लोव तो पूरी रात बिताकर अगले दिन की दोपहर तक उन सभी शराबखानो का चक्कर लगायेगा जिन्हे वह जानता था। लम्बे और मुश्किल सफर के बाद इस तरह की मौज उडाने का हक उसने खुद ही अपने लिए निर्धारित कर लिया था। ऐसी स्थिति मे लडका, यदि अधिक बुरा नही, तो ट्रक का पाचवा पहिया जरूर था।

चलने के समय तक गोर्लोव इस घटना को भूल गया। जब वह गोदाम के सचालक से आखिरी बार लड-झगड

चुका और चलने के लिए इजन चालू कर दिया तो दीमोवा को फिर से सामने देखकर हैरान रह गया। दीमोवा उगली थामे हुए अपने छोटे-से बेटे को गैराज की ओर खीचे ला रही थी। उस के सिर पर लडकियो की तरह रूमाल बधा हुआ था। उस के छोर बगल मे से गुजरते थे और उन्हे पीठ पर गाठ लगाई गई थी।

"लो, हम ठीक वक्त पर ही पहुच गये!" दीमोवा ने खुशी से चिल्लाकर कहा और अपने लाडले को ट्रक के केबिन मे धकेल दिया। "यूरिक, चाचा मीशा की बात मानना, शरारत नही करना। चाचा मीशा तेरे लिए सूट खरीदकर वापस आ जायेगे। यह लो, रास्ते के लिए मीठे समोसे। आराम से बैठना, उछल-कूद नही करना! मीशा, मै आपसे बहुत-बहुत अनुरोध करती हू इसके बदन पर कोई कपडा नही टिकता! जितना भी हो सके, अधिक से अधिक मजबूत कपडे का सूट खरीद दीजिएगा। यह रही रकम! मै आपका बहुत आभार मानूगी!"

गोर्लोव ने बडी रुखाई से, यत्नवत् रकम ले ली जो ढग से अखबार के कागज मे लिपटी हुई थी। उसका मन हुआ कि वह नीचे कूद जाय, ट्रक का पीछेवाला पट खोल दे और जोर से चिल्लाकर कहे—"बिठा दो! बिठा दो! बालोद्यान के सभी बच्चे यहा लाकर! ले आओ, शिशु-सदन से सभी दूधपीते बच्चे, हम चुसनिया खरीदने जा रहे

है।" मगर तभी अध्यापिका की आखो से उसकी आखे चार हुई और उसे लगा कि मानो किसी ने उसे जादू-टोने मे बाध लिया। उसने रुपयो का बडल चुपचाप जेब मे रख लिया और बडबडाते हुए मुह ही मुह मे कोई गदी गाली दी। दीमोवा ने सम्भवत वह गाली सुन ली।

"आप बुरा बनने की कोशिश क्यो कर रहे है?" दीमोवा ने उसकी लानत-मलामत की।

गोर्लोव ने ट्रक तेजी से आगे बढाई। झटका लगने से यूर्का अपनी सीट से उछल पडा और दाये-बाये झटके खाने लगा। गोर्लोव का सारा गुस्सा इस निर्दोष बालक पर निकला—

"ठहर, मैं तुझे अभी तारे दिखाता हू!"

यूर्का फौरन यह बात समझ गया कि चाचा मीशा बडा गुस्से वाला आदमी है। उससे परेशानी के सिवा कोई और उम्मीद नही हो सकती और यह कि सफर मुसीबत मे ही कटेगा। यूर्का ने नाक सुडकी और मन ही मन गोर्लोव से घृणा करने लगा। उसने अपने मन की बात को बाहर इस तरह से जाहिर किया कि मीठे समोसो की पोटली सीट पर फेक दी। उसके चेहरे के भाव ने यह स्पष्ट कर दिया कि चूकि मा ने रास्ते के लिए ये समोसे दे दिये है, इसीलिए साथ है। ड्राइवर अगर चाहे तो रूमाल समेत उन्हे हडप सकता है, मगर मै उसके साथ मिलकर समोसे नही खाऊगा।

२

इस तरह से उनकी यात्रा चल रही थी। दोनो गुम-सुम थे और उदास थे, अपनी-अपनी चिन्ता मे उलझे हुए थे। ड्राइवर के सामने वाले शीशे पर बरसात की बूदे टपाटप गिर रही थी जिससे शीशा धुधला हुआ जा रहा था और उसमे से रास्ते को देख पाना मुश्किल हो रहा था। गोर्लोव को बहुत बुरा लग रहा था। वह मन ही मन यह सोचकर भुनभुना रहा था कि अध्यापिका के सामने उसे साप क्यो सूघ गया था।

अब मानो उसे चिढाने के लिए दसियो जवाब उसके दिमाग मे आ रहे थे। हर जवाब एक-दूसरे से बढ-चढकर और अधिक जोरदार था। मगर अब हो ही क्या सकता था, देर हो चुकी थी! उसे लगा कि ट्रक का इजन कुछ गडबड करनेवाला था। गोर्लोव स्टीयरिग घुमा रहा था, पैरो से पैडल दबा रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि उसकी जिन्दगी योही बेकार ही गयी। उसके अतीत मे कोई अच्छी बात नही थी और भविष्य मे रोशनी की कही कोई किरण नही थी।

वह क्या करे, क्या न करे, यह बात उसकी समझ मे नही आ रही थी। शायद बधन तोडकर यहा से भाग जाना चाहिए? यहा मेरे लिए रखा ही क्या है, किसी को भी तो मेरी जरूरत नही! जरूरत है सिर्फ मेरे सिर और हाथो की।

कोई भी तो मुझे प्यार नही करता। पर अगर कोई प्यार करता तो यह बडी अजीब-सी बात होती। इधर दौडाओ, उधर भगाओ, और दोड लगवाओ कल भी यही था, आज भी यही है और आगे भी यही होगा। और तो और, नामकरण के समारोह मे जाकर मौज मनाना भी नसीब न हुआ। और इसपर जहर का यह एक और कडवा घूट पीना पडा। अजीब जिम्मेदारी सौपी गयी है, सोचकर हसी आती हे। साहबजादे को सूट खरीद कर देना है! यह काम करने को मन हे या नही, कर सकता हू या नही कर सकता हू, क्या मजाल कोई मुझसे पूछे। ओह, तेरी ऐसी-तैसी!

गोर्लोव का बच्चो से कभी वास्ता नही पडा था। वह उन्हे पसद नही करता था और उनसे कन्नी काटता था। जब कभी कोई मा बच्चे का मन बहलाने के लिए गोर्लोव की ओर इशारा करके कहती—"यह देखो, यह रहे चाचा। कौन से चाचा है ये?"—तो गोर्लोव घबरा जाता, सहम उठता और वहा से किसी न किसी तरह खिसक जाने की कोशिश करता। इस मामले मे वह अपने आपको बिल्कुल बुद्धू अनुभव करता।

यह सही है कि यूर्का उस तरह का छोटा बच्चा नही था। मगर गोर्लोव यह नही समझ पा रहा था कि दूकान पर जाकर सूट कैसे खरीदेगा। भगवान बचाए इस मुसीबत से! अगर लडके को रास्ते मे ही उतार दू तो कैसा रहे! बच्चे

की चीजे खरीदने के बजाय तो यही अच्छा होता कि किसी के लिए गाय, ट्रैक्टर या कम्बाइन खरीद लाता!

शायद यही अच्छा रहेगा कि उसे शहर का चक्कर लगवाकर वापस ले जाऊ और झूठ बोल दू कि सूट नही मिला? बात बनाने की कला मे गोर्लोव उस्ताद था। मनपसद निर्णय करने के फेर मे गोर्लोव के विचार भटक गये थे। मगर तभी उसे याद आया कि दीमोवा ने जेब गर्म करने का वादा किया है। अब जब यह किस्सा हो ही गया है तो मेरी बला से! मै आती हुई रकम क्यो छोडू? मेरे लिए तो सब बराबर है

"अपनी मा से कहना कि शादी कर ले," गोर्लोव ने खीझकर कहा, "अपने पति को भेजा करे कपडे-लत्ते खरीदने के लिए।"

यूर्का चुप रहा, मानो उसने कुछ सुना ही न हो। रूमाल उसे बगलो मे तग कर रहा था, मगर यूर्का जैसे-तैसे बरदाश्त करता रहा। उसकी नाक बह रही थी।

"हु " गोर्लोव ने नाक-भौ सिकोड कर कहा, "तेरा असली बाप कहा है?"

यूर्का ऐसे चुप रहा मानो उसका इस बात से कोई सबध ही न हो। गोर्लोव क्रोध से पागल हो गया—जरा देखो तो, बालिश्त भर का छोकरा और अकड कितनी है!

"अरे, मै तुझसे पूछ रहा हू, कहा है तेरा बाप?" गोर्लोव ने गुस्से से गरजकर पूछा।

"मेरा बाप?" लडके ने चौककर ग्रोर सहमते हुए पूछा ग्रौर ग्रास्तीन से नाक साफ की। "नही है मेरा बाप।"

"यह तो मुझे मालूम हे कि नही हे," गोर्लोव ने सख्ती से कहा। "मगर था तो?"

"नही था।"

"था।"

"नही था," यूर्का ने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा ग्रौर चुपके से दूर हट जाने की कोशिश की।

"बहुत ग्रजीब हे रे तू तो," जरा नरम पडते हुए गोर्लोव ने कहा, "बाप तेरा जरूर ही रहा होगा।"

"मेरा बाप नही था," यूर्का ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"बिना बाप के बच्चे पैदा नही होते, समझा?" गोर्लोव ने बात साफ की ग्रौर मुसाफिर की ग्रोर देखा।

यूर्का चुप हो गया, सोच मे डूब गया।

"ऐसा भी होता है," यूर्का ने हठ करते हुए कहा।

"तू उल्लू है!" गोर्लोव ने बात खत्म की ग्रौर सिगरेट निकालने के लिए जेब मे हाथ डाल दिया।

मगर उसे सिगरेट पीना नसीब न हुग्रा। पीछे बैठी हुई ग्रौरतो ने केबिन खटखटाकर ग्रनुरोध किया कि वह उन्हे पेरेगोनोव्का गाव के मोड पर उतार दे। गोर्लोव केबिन से बाहर निकला, उसने उन्हे नीचे उतारा, सदा की भाति उनसे

पैसे बटोरे, एक रूबल के फटे हुए नोट के लिए झगडा किया और जब केबिन मे लौटा तो देखा कि यूर्का आखे बद किये हुए ऐसे बैठा है मानो सो रहा हो।

"बडा चालाक है, शैतान कही का!"

जेब मे पैसे रखने और सिगरेट सुलगाने के बाद गोर्लोव कुछ मेहरबान हो गया। उसने कल्पना की कि शहर पहुचते ही मै सबसे पहले 'चायका' जलपान-गृह मे पहुचूगा। वहा सगमरमर की मेज के गिर्द, जिसके चमकीले नलाकार पैर है, गर्म जगह पर बैठूगा। यह हुई न सभ्यता की बात! मेरे सामने एक गिलास मे फेन उगलती हुई, कडवी पीली बियर 'जिगुलेव्स्कोये' और दूसरे गिलास मे वोद्का होगी यह कल्पना करके उसके मुह मे पानी भर आया। जाहिर है कि मेज पर कुछ शराब पहले से ही गिरी हुई होगी और राखदानी मे सिगरेट के टुकडे पडे होगे। बैरा पाशा जल्दी से सफाई करेगी और मैं मजाक मे उसे गले लगाने की कोशिश करूगा। वह गुस्से से मेरा हाथ झटक देगी। वहा शोर और धुआ होगा और फौरन ही मुझे बातचीत करनेवाले मिल जायेगे। कुछ समय बाद जान-पहचान का एक आदमी दिखाई देगा जो बरसात मे भीगा हुआ और कोसोगोर्स्क का फेरा लगाकर लौटा होगा, जहा उसके दो टायर तबाह हुए होगे। वह पुकारकर कहेगा – "अरे यार, पाचवी कुर्सी खीच लो!" ड्राइवर की आधी दुनिया से जान-पहचान होती है रेल के

हर फाटक और हर खभे के पास उसे जान-पहचान का आदमी मिल जाता है।

गोर्लोव ने रफ्तार और तेज कर दी। उसे बुरा लग रहा था कि अभी बहुत देर तक ट्रक चलाना बाकी था। पेरेगोनोव्का गाव की चढाई उसे परेशान कर रही थी।

"ऐ, सो नही!" उसने यूर्का के कधे को झकझोरा। "यहा का रास्ता बहुत खराब हे। वे झटके लगेगे कि हड्डी-पसली टूट जायेगी। मुझे तो तेरी मा को जवाब देना होगा तुझे भी बाध दिया मेरे गले रो!"

यूर्का ने गहरी सास ली और कोने मे और भी अधिक सिकुड गया। गोर्लोव ने कनखियो से दरवाजे की ओर देखा कि ठीक तरह से बद हे या नही। कही ऐसा न हो कि यूर्का नीचे जा गिरे।

"तेरी मा तुझे दूसरा बाप क्यो नही ला देती?" उसने कडाई से पूछा। "क्या कोई रिश्ता-नाता नही आता?"

"रिश्ते-नाते तो आते थे "

"तो फिर?"

"मा शादी करना नही चाहती।"

"क्यो?"

"डरती है कि वह मेरे साथ बुरा बर्ताव करेगा," यूर्का ने गम्भीर होकर कहा और बहुत विश्वास के साथ इतना और जोड दिया "ठीक ही करती है।"

"क्या बहुत बुरे लोग थे ये?"

"तरह-तरह के थे "

"हु तूने अपना आखिरी पतलून कैसे फाड लिया?"

" नाशपातियो के फेर मे।"

"काटोवाले तार के बीच से तुम लोग नेफेदिच के बाग मे घुसे होगे?

"हु।"

"नाशपातिया अभी कच्ची है," गोर्लोव ने राय जाहिर की।

"कुछ बुरी नही है "

"तो क्या तुम लोग फार्म से होकर बाग मे गये थे?"

"हा," यूर्का ने लम्बी सास छोडी।

"मा ने खूब खबर ली?"

"हा-आ! "

"अरे जा रे नग-धडग!" गोर्लोव ने घृणा से कहा। "नाले की ओर से जाना चाहिए था। वहा झडबेरियो के बीच से नाली गई है। वही से रेगकर पहुचना चाहिये मैंने तो कभी अपना पतलून नही फाडा।"

यूर्का ने कोई जवाब न देकर नाक सुडक ली। गोर्लोव ने ज़रा अपनी शान महसूस की।

गोर्लोव ने एक्सेलेरेटर और दबा दिया ताकि चढाई से पहले रफ्तार और बढ जाये।

अब इजन के सामने पेरेगोनोव्का की तीर की तरह सीधी और सकरी पहाडी चढाई थी। खुश्क मौसम मे भी यह चढाई टेढी खीर होती थी। इजन कापने लगा। ट्रक बडे इत्मीनान से एक एक मीटर आगे बढ रही थी। यूर्का आखे फाड फाडकर और आगे झुककर दृश्य देखने लगा।

"बेचैन है लडका," ड्राइवर मन ही मन हसा और उसने यूर्का को आख मारी –

"जाडे मे यहा आना चाहिये स्लेज पर फिसलाने के लिए!"

"पहाड है क्या-आ! " यूर्का ने सास छोडी। आश्चर्य और खुशी से उसकी आखे चमक रही थी।

"और तू क्या समझा था?" गोर्लोव ने ऐसे गर्व से कहा मानो प्रकृति का यह अजूबा खुद उसी ने अपने हाथो से रचा हो।

ट्रक रुककर झटके खाने लगी। गोर्लोव ने अपना पूरा जोर लगाकर ट्रक को दाये-बाये किया और गियर बदला। मगर उसका हर जतन असफल रहा, पहिये एक ही जगह पर घूमते रहे। ट्रक धीरे-धीरे और एक ही दिशा मे पीछे की ओर जाने लगी, धीरे से डगमगायी और पिछले पहिये सडक के किनारे से नीचे उतरकर धस गये तथा इजन ने आकाश की ओर अपना मुह उठा दिया।

गोर्लोव ने गहरी सास ली और बडी-सी गाली दी। उसने यूर्का को गुस्से की नजर से देखा मानो वही इस दुर्भाग्य

के लिये जिम्मेदार हो। फिर वह सडक पर कूद गया और देर तक बरसात मे खडा हुआ अपनी छज्जेदार टोपी को कभी तो माथे और कभी गुद्दी पर आगे-पीछे करता रहा। उसने सीट के नीचे से कुल्हाडी निकाली और शाखाये काटने के लिये चल दिया।

अनेक ड्राइवरो ने चढाई के आस-पास की हर जिन्दा चीज पर अपनी कुल्हाडी चलाई थी। मगर वे हठपूर्वक फिर जल्दी से बढ गई थी और उन्हे और भी अधिक जल्दी से काट लिया गया था। इसीलिये गोर्लोव को इतनी अधिक दूर जाना पडा कि वह आखो से ओझल हो गया।

गोर्लोव ने जाते हुए केबिन का पट बन्द नही किया था। हवा के साथ छोटी-छोटी बूदे और नम धूल अन्दर आ रही थी। इजन धीरे-धीरे ठडा होता गया। यूर्का सिकुड-सिमट कर कोने मे बैठ गया। उसका मन हुआ कि वह रोये। उसे इस बात का बहुत सख्त पश्चात्ताप होने लगा कि क्यो बेकार नाशपातियो के फेर मे नेफेदिच के बाग मे घुसा। साथ ही उसे यह भी याद हो आया कि कैसे एक बार मा के मना करने के बावजूद तालाब पर नहाने चला गया था और फिर इसी तरह उसने पडोसी के कुत्ते को चिढाया भी था। हा, और अभी तीन दिन पहले लाल बालोवाली तान्या की पिटाई कर दी थी। वह बदतमीज योही छेड-छाड करती और अकडती रहती है। खैर, तान्या की मरम्मत करके तो

ठीक ही किया और आगे भी उसकी पिटाई होनी चाहिये। अपने इस आखिरी गुनाह को उसने हिसाब से निकाल दिया।

गोर्लोव धम से केबिन मे आकर बैठा और उसने ज़ोर से गियर का हेडल घुमाया। इजन घरघराया, मगर ट्रक आगे नही बढी। ड्राइवर अब भाग-भाग कर पिछले पहियो की ओर जाता, वहा शाखाये बिछाता, फिर धम से सीट पर आ बैठता, ट्रक फिर से घरघराती और जानवर की तरह जोर से हूकती। यूर्का कम से कम जगह मे सिमट गया। उसे ड्राइवर पर दया आने लगी – वह बेचारा हाफ रहा था और उसके माथे से पसीने की बूदे टपटप गिर रही थी। हर बार ऐसे लगता कि बस थोडी-सी कसर बाकी है, लो, बढ चली ट्रक आगे, वह बढी और ठप्प! टहनियो का दम निकल जाता और ट्रक जहा की तहा खडी रह जाती।

ड्राइवर जब तक नई शाखाये काटने गया, तब तक यूर्का ने हाथ हिला हिलाकर बगल से रूमाल को ढीला कर लिया। वह कूदकर केबिन से बाहर गया और उसने ट्रक के गिर्द चक्कर लगाया। पिछले पहियो के नीचे टूटी टहनियो और कीचड का ढेर-सा लगा हुआ था।

"लाइये, मैं डालता रहूगा शाखाये," यूर्का ने उदारता दिखाते हुए सुझाव पेश किया।

"अब यह शैतान अपने हाथ-पैर तोडेगा!" गुस्से से लाल-पीला होता हुआ गोर्लोव चीख पडा। मगर तभी मुह पोछते

हुए उसने धीरे-से कहा – "ले, कर कोशिश मगर दूर से फेकना, पहियो से परे रहना!"

ट्रक अपनी जगह से जरा-सी हिली-डुली तो यूर्का ने जोर से घूमते हुए दुष्ट पहिये के नीचे टहनिया फेकनी शुरू की। यह काम भयकर भी था, मगर दिलचस्प भी। टहनिया कुचली जाती, चटककर उछलती और यूर्का बडे जोश-खरोश के साथ ऐसे टहनिया फेंकता जाता मानो शेर के कठघरे मे हड्डिया फेक रहा हो।

"जरा और, जरा और हिलाओ, चाचा!"

ट्रक ने आखिरी बार जोर लगाया और आगे बढ चली। गोर्लोव ने यूर्का के आ जाने तक इन्तजार किया और उसकी चिन्ता करते हुए पट खोला।

"कहते है न, कि एक से दो भले!" गोर्लोव ने नसीहत के अन्दाज मे कहा मानो यूर्का इसके पहले ऐसा नही मानता था। "देख भैया, थोडी टहनिया आगे भी डाल दे वरना कबाडा हो जायेगा।"

यूर्का को और दो बार टहनिया बिछानी पडी। जब वे चढाई से निकल आये तो गोर्लोव ने उदास-सा मुह बनाते हुए आभार प्रकट किया –

"धन्यवाद!"

"कोई बात नही," यूर्का ने लापरवाही से उत्तर दिया। अब वह अकड मे आ गया था। उसे याद आ रहा था कि शुरू मे ड्राइवर उसपर कैसे गर्म हो रहा था।

"देख, तू कुछ पहन ले! भीग गया है, ठंड लग जायेगी।" गोर्लोव ने अपना कोट उतारा जिसकी जेबें कागजों के कारण फूली हुई थी।

"और आप?"

"मैं काम कर रहा हूं, मुझे गर्मी लग रही है, मगर तू ठंड खा जायेगा।"

ड्राइवर ने यूर्का को अच्छी तरह लपेट-लपाट दिया, पूरी तरह से ढक दिया। यूर्का ने यह दिखाने के लिये कि जो हुआ, सो हुआ, उसके दिल मे कोई गुस्सा-गिला नही है और सुलह करने को तैयार है, गोर्लोव से पूछा—

"चाचा मीशा, इस हेंडल से आप क्या करते है?"

"हु सुना है न कि ज्यादा जानने के चक्कर मे आदमी जल्द बूढा हो जाता है," गोर्लोव भडका, मगर फिर समझाते हुए बोला—"यह रफ्तार का हेंडल है जिसे गियर कहते है, समझे? यह पहला गियर है और यह दूसरा।"

"और अब?"

"अब तीसरा है। चौथा भी है!" ड्राइवर जरा शान मे आ गया। "चौथे गियर मे गाडी हवा से बाते करने लगती है।"

"तो कीजिये चौथे गियर मे।"

"अरे नही, भोले! यह तो तारकोल की पक्की सडक के लिये है।"

"अच्छा तो यह किसलिये है?"

"यह सामने की लाइट है।"

"ये पैडल किस काम आते है?"

कुछ ही देर बाद पेरेगोनोव्का गाव की सडक पर गायो को हाक कर ले जानेवाली दो बूढियो ने यह अजीब-सी मोटर देखी। ट्रक बहुत तेजी से बढी , फिर एकदम रुक गई, पीछे हटी और फिर बहुत ही धीरे-धीरे और टेढी-मेढी लकीरे बनाती हुई आगे की ओर चल दी। इस पागल-सी मोटर को देखकर बूढियो ने यह तय किया कि ड्राइवर पिये हुए है। शुरू मे तो उन्होने उसे गालिया दी और फिर उन्हे उसपर तरस आया।

इसी समय केबिन मे बैठा हुआ गोर्लोव बडे जोश मे और चिल्ला चिल्ला कर यह समझा रहा था—

"रोक! अब चालू कर! गियर बदलना नही भूलना! चला! चला! हा चला!" गोर्लोव यूर्का को गाडी चलाना सिखा रहा था।

"ओह, काश मा मुझे मोटर चलाते देखती!" खुशी से फूला न समाते और अपनी जगह पर सरकते हुए यूर्का ने कहा। "चाचा मीशा, राज्यीय फार्म मे मुझे मोटर चलाने देगे? मेरा मतलब आज नही, कभी, किसी और दिन!"

"हा, कभी किसी और दिन इजाजत दे दूगा," गोर्लोव ने हसते हुए कहा। "हा और तेरी मा को भी बिठाकर सैर करा देगे। ट्रक को हवा मे उडाते हुए, यूर्का, क्यो?"

"बडा मजा रहेगा! आप उनपर बिगडियेगा नही। वे बहुत भली है!"

"बिगडूगा भला किसलिये? वह गम्भीर नारी है," गोर्लोव ने सोचते हुए कहा। "हा, मगर यूर्का, यह बुरी बात है कि तेरा बाप नही है। ठीक हे न! तू मा से कहना कि शादी कर ले, बिल्कुल फिक्र न करे। बाप के बिना कुछ मजा नही! मै तो खूब अच्छी तरह यह जानता हू, बिना बाप के बडा हुआ हू। बहुत खराब जिन्दगी होती है! "

"हा मगर नही, पी-पिलाकर मारे-पीटेगा मुझे " यूर्का ने कहा।

"नही, सभी तो ऐसे नही होते," गोर्लोव ने उसकी बात काटी। "तेरा तो कोई ऐसा बाप होना चाहिये जैसा कि मसलन मै। क्यो, यूर्का मोटर वाला ड्राइवर बाप चाहता है?"

यूर्का सोच मे पड गया।

"नही," उसने अचानक जवाब दिया।

गोर्लोव के कान खडे हुए। उसके सधे हुए कानो ने इजन मे से आती हुई कुछ गडबड की आवाज सुनी। "पिस्टन

पुराने हैं, बिल्कुल फटीचर हुई पडी है, कूडे-कबाड मे फेकने के लायक! मगर डायरेक्टर है कि लटकाये चला जा रहा है—कुछ दिन और चलाते चलो, खीचते जाओ पैसे नही हैं ओह कम्बख्त जिन्दगी!"

उसे नामकरण के उत्सव का स्मरण हो आया जहा वह जा न पाया था और फिर उसे लानत-मलामत करती हुई दीमोवा की आखो और इन शब्दो की याद आयी—"आप बुरा बनने की कोशिश क्यो कर रहे है?" गोर्लोव बहुत परेशान हो उठा।

"बडी अजीब-सी बात है," यूर्का को कनखियो से देखते हुए उसने सोचा। "उसे सूझी क्या जो अपना बेटा मुझे सौप दिया? मुझे देखकर क्या किसी को मुझ पर विश्वास हो सकता है? पूरा घनचक्कर लगता हूगा मै उसे। हो सकता है कि मुझ मे कोई ऐसी बात हो . ध्यान देने के लायक? नही, वह बहुत अजीब ." उसका मन हुआ कि उसे "अजीब औरत" कहे, मगर न जाने क्यो उसने उसे "महिला" ही कहा।

यूर्का फिर से कोने मे सिकुड गया था। वह चुपचाप बैठा हुआ यह सोच रहा था— जाने मै क्या अट-शट बक गया कि ड्राइवर अचानक इस तरह नाराज हो गया। उसने देखा कि समोसो की पोटली पैरो के पास पडी है, केबिन के गदे-मदे और भीगे फर्श पर। उसे समोसो के लिये बहुत अफसोस होने लगा, बेहद अफसोस! झुककर उसे उठा ले,

वह यह तय न कर पाया, मगर मन ही मन अनुमान लगाने लगा—हो सकता है कि सभी समोसे खराब न हुए हो, शायद कुछ साफ बच गये हो?

३

डिपो पर पहुचे तो वहा बताया गया कि ट्रासफार्मर अगले दिन मिलेगा। जानी-पहचानी बडी सडको पर से गुजरने के बाद गोर्लोव ने तग और टेढी-मेढी गलियो के चक्कर काटे। वह सामूहिक फार्म के किसानो के होटल मे नही ठहरता था क्योकि वहा पैसे देने पडते थे। इसलिये किसी न किसी सेवा के लिये आभारी और जान-पहचान के व्यक्ति के घर रात बिताता था।

गोर्लोव ने छोटे और नीचे-से एक घर के सामने ट्रक रोकी। उसकी बाड के पीछे एक गुस्सैल कुत्ता जजीर से बधा हुआ था। कुत्ते ने जजीर को झटके दिये, उछला-कूदा और गुर्राया। तब एक मोटी और बेढग-सी औरत बरामदे मे आई और उसने कुत्ते को कोठरी मे बन्द कर दिया। जम्हाई लेते हुए उसने भारी फाटक खोला और गोर्लोव ने सावधानी से ट्रक आगन मे लाकर खडी कर दी।

"ऊई मा, यह किसकी छोकरी है?" औरत आश्चर्यचकित होकर बोली।

"जरा आख खोलकर देखो, इवानोव्ना, छोकरी नही, यह तो पट्ठा हे!" गोर्लोव ने चिढकर कहा।

"तेरा ही है न?"

"मेरा ही समझ लो। पसन्द हे न?"

"प्यारा लडका हे। अरे हा, दोनो एक ही साचे मे ढले लगते हो!"

"ये झूठ बोल रहे है," गोर्लोव की बात सुनकर शर्म से लाल होते हुए यूर्का ने कहा।

"देखा तुमने!" गोर्लोव ने हैरान होते हुए कहा। "मुझे बाप मानने को तैयार नही। अच्छा तो चलो, इवानोव्ना, हमे चाय-वाय पिला दो।"

"अरे जा रे निपूते!" मेज लगाते हुए घर की मालिकिन ने कहा। "मै तो सच ही मान बैठी थी। भूल गई थी कि तू तो छडा-छाड है, बेघर-घाट का कुत्ता है।"

"छडो के बडे मजे है, इवानोव्ना," गोर्लोव ने मजाक मे कहा।

"तू बुद्धू है, बिल्कुल बुद्धू है," इवानोव्ना ने गहरी सास लेकर कहा। "जिसके बाल-बच्चे नहीं, उसने जीवन का सुख ही नही देखा-जाना। बुढापे मे समझ आयेगी तुझे इस बात की। अगर मेरा बस चलता तो तेरे जैसे बेघरबार वाले दुमकटो पर पाबन्दी लगा देती!"

गोर्लोव ठहाके लगाता घर की मालिकिन से छेड-छाड करता और जल्दी-जल्दी शोरबा हडपता गया। मगर यूर्का का खाने को मन नही हो रहा था। गोर्लोव का चुटकिया लेना उसे अच्छा नही लग रहा था। वह उदास हो गया।

"तू इत्मीनान से खा रे, लडके ! इस मसखरे की बातो पर कान नही दे," मोटी औरत ने प्यार से उसकी आवभगत करते हुए कहा। "यहा तुझे कोई तग नही कर सकता, तू डर नही।"

"मै डरता नही हू," यूर्का ने कहा।

"तो चल, पहन कपडे," गोर्लोव ने अचानक खीझकर कहा। "तेरा भी झझट निपटा दू, फिर हल्के मन से जाऊगा शराबखाने मे।"

यूर्का ने चुपचाप कोट पहन लिया। उसने ठान ली थी कि आखिर तक सब कुछ सहन करेगा। वे चुपचाप बाहर निकले, डबरो पर छपछप करते फिरे, देर तक गलियो मे टागे तोडते रहे और फिर एक बेढगी-सी दूकान पर पहुचे। वहा लम्बी-लम्बी बरसातिया लटक रही थी, सेलूलाइड के खिलौने रखे थे, मगर बच्चो के सूट नही थे।

"ओक्त्याब्रस्काया मे जरूर होगे," कुढते और गुद्दी खुजाते हुए गोर्लोव ने कहा।

ओक्त्याब्रस्काया मे पहुचे। वहा सूट तो थे, मगर बडो के लिये। तीन दूकानो के और चक्कर लगाये। अब तक

गोर्लोव जजीर से बधे हुए कुत्ते की तरह बेचैन हो उठा था और यूर्का को ट्राम के स्टाप तक खीचता हुआ ले गया।

"बाध दिया मेरे गले, बाध दिया इसे!" लाल-पीला होते और यूर्का को हाथ से पकडकर खीचते हुए उसने कहा। "घर पहुचेगे तो कहना अपनी मा से कि सौ का नोट रख दे मेरी हथेली पर!"

शहर के केन्द्रीय भाग मे बडी रौनक थी, शोर-शराबा था। तारकोल की गीली सडक पर मोटरो, लोगो और घरो की परछाइया पड रही थी। सभी जगह लॉट्री के टिकट, आइसक्रीम, पेस्टरिया और गुब्बारे बिक रहे थे। बेचारे यूर्का को तो ढग से इन नजारो का मजा लेना भी नसीब नही हुआ। गोर्लोव घोडे की तरह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ यूर्का को हाथ से पकड कर खीचे लिये जा रहा था।

वे दो मजिलोवाली एक बडी-सी दूकान पर पहुचे जिसपर लिखा था 'बच्चो की दूकान'। उसकी प्रदर्शन-खिडकियो मे खूब बढिया नजारे थे। घुटनो तक के जूते पहने हुए बिल्ला झूला झूल रहा था, लकडी की रग-रगीली गुडिया रखी थी, मगरमच्छ रबड के जूते खा रहे थे और लकडी के लडके-लडकिया मानो त्योहार के कपडे पहने सजे-धजे खडे थे। मगर गोर्लोव यूर्का को खीचता हुआ दूसरी मजिल पर ले गया। वहा शोर-गुल नही था और लम्बी-लम्बी कतारो

मे ढग से ग्रोवरकोट, वास्कटे ग्रोर फ्राक लटक रहे थे ग्रौर तरह-तरह के बूटो ग्रोर सेडलों के ढेर टागे हुए थे।

"सब से मजबूत कपडे का सूट लाइये," गोर्लोव ने बेदिली से कहा।

दुबला-पतला ग्रोर बुजुर्ग माल बेचनेवाला दो सूट लाया। गोर्लोव ने उन्हे छू कर देखा, उल्टा-पलटा, रोशनी के नजदीक ले जाकर देखा। कोई ऐसी चीज थी जो उसे इन सूटो मे ग्रच्छी नही लगी। वे सूट मापने के कक्ष मे गये।

"खूब जचता हे," माल बेचनेवाले ने कहा। "पतलून तो बिल्कुल ठीक हे।"

"यह तो जई रखने की बोरी हे ग्रोर पतलून फर्श तक पहुच रहा हे।" गोर्लोव ने बिगडकर कहा।

"पतलून लडके के बढते हुए कद के मुताबिक है," विक्रेता ने मुह बनाते हुए कहा। "मै समझता हू कि ग्रापको ऐसा ही पतलून लेना चाहिये। पहले जरा टाक दीजियेगा ग्रौर फिर खोल दीजियेगा। ग्रगर ग्रापको पसन्द नही, तो ग्राप जाने।"

"ले नापकर देख, यूर्का," त्योरी चढाते हुए गोर्लोव ने यूर्का को दूसरा सूट दिया। "तग है क्या?"

"ग्रापके बेटे के कद के मुताबिक बिल्कुल ठीक है!" विक्रेता ने ऊचे स्वर मे कहा। "ग्रास्तीने ग्रगर छोटी है तो इसलिये कि ग्रापके बेटे के शरीर की बनावट स्टैंडर्ड नही है। कधे पर तो बिल्कुल ठीक है। ठीक है न, लडके?"

यूर्का का दिमाग चकरा गया था और खुद उसकी समझ मे नही आ रहा था कि तग हे या नही। मगर गार्लाव ने फैसला कर दिया –

"तग हे! और लाइये! सभी ले आइये!"

"आप कोई भी सूट क्यो न खरीद ले, गर्मी आते तक वह इसके लिए छोटा हो जायेगा," बुजुर्ग ने कहा। "बच्चे तो बढते रहते हैं, ऐसे बढते है कि बिल्कुल मुसीबत बनकर! मै आप से कहे देता हू कि लडके के बढते हुए कद का सूट खरीदिये, वरना गर्मी शुरू होते ही सिर पकडकर रोयेंगे।"

"हम सूटो को बरसो तक सम्भाले नही रहते," गोर्लाव ने गर्व से कहा। "हम उन्हे पहनते है। क्यो ठीक हे न, यूर्का? गर्मी के शुरू मे दूसरा खरीद लेगे। हमारे पास पैसे काफी है।"

"आप अच्छे बाप नही है!" विक्रेता ने ऊची आवाज मे कहा। "मुझे तो हैरानी हो रही हे आपकी बात सुनकर।"

"ले आइये, ले आइये, बडे मिया," गोर्लोव ने दिलचस्पी दिखाते हुए कहा। "लाइये और सूट!"

"यह लीजिये कमाल का कोट, कमाल की सिलाई है। यह देखिये क्या बढिया पतलून है!" विक्रेता ने खूब तारीफ की। "यहा दो-चार टाके लगाओ और सीधे फैशनघर मे भेज दो!"

"हटाइये भी! बडी बेहूदा सिलाई हे! भलमनसाहत तो आप लोगो मे नाम भर को नही रही!" आखिर गोर्लोव बिगड ही उठा। "किसे उल्लू वना रहे है! ये क्या बच्चो के लायक सूट है, हमारे बच्चो के लायक?! शर्म-हया बेच खाई है आप लोगो ने!"

"हम सूटो की सिलाई नही करते है," बुजुर्ग विक्रेता ने अचानक तग आकर कहा। "यह तो हमारी फैक्टरी ही है जो ऐसी सिलाई करती हे। हमारा काम तो बेचना और तारीफ करना है। तारीफ नही करेगे तो कोई खरीदेगा नही।"

"मॉडल के कपडे भी फैक्टरी मे सिलते है?"

"मॉडल के कपडे मॉडल पर सिये जाते है।"

"तो लाइये मॉडलवाला सूट!" गोर्लोव ने काउटर पर घूसा मारकर कहा।

बुजुर्ग विक्रेता भागे, मैनेजर को बुला लाये, हठी ग्राहक को शान्त करने की कोशिश की और यह विश्वास दिलाया कि मॉडलवाला सूट बिकाऊ नही है। मगर गोर्लोव ने घूसा मारते हुए अपनी ही बात पर जोर दिया—

"लाइये उतारकर मॉडल का सूट! मै तुम्हे बताऊगा क्या होती है कमाल की सिलाई! मै समझाता हू तुम्हे बिना स्टैडर्ड की शरीर की बनावट!"

आखिर हॉल मे खडे हुए एक मॉडल का सूट उतारा गया। बेचारा मॉडल ऐसा नग-धडग चिपका-चिपकाया और सिला-सिलाया-सा रह गया कि यूर्का को उस पर रहम आने लगा। यूर्का ने सूट पहना तो वह उसपर बिल्कुल फिट बैठा। गोर्लोव ने सूट खरीद लिया। हा तो, यह सूट बढिया कपडे का बना हुआ था और उसकी सिलाई भी फरमाइशी थी। अखबार के कागज मे लिपटे रुपये जैसे-तैसे ही पूरे हुए, बस एक रूबल बच रहा।

विक्रेता ने माथे से पसीना पोछा और कहा—

"मै समझ गया था कि आप अच्छे बाप हैं। सिर्फ आपकी खातिर ही मैने यह किया है। लडको के जूते उस कोने मे मिलेगे।"

अनचाहे दोनो का ध्यान पैरो की ओर गया। यूर्का के जूते बिल्कुल भुरकुस हुए पडे थे और उनका तला जीभ निकाले हुए था। गोर्लोव ने हवा मे हाथ झटका और कहा—

"तो यह भी सही! चल बैठ, पहन कर देख!"

जूते खूब लौ देते हुए और नर्म थे तथा उनपर मर्दाना जूतो जैसी गोट की हुई थी। यूर्का का दिल तडप उठा— क्या मजा रहे अगर ऐसे जूते पहनकर स्कूल जाया जाये— राजकीय फार्म के सभी लडके ईर्ष्या से जल मरे

"कितनी कीमत है?" गोर्लोव ने बेचनेवाली लडकी से पूछा। "लपेट दीजिये!"

"रेत पर तो मेरी असली गाडी भी नही चलती," गोर्लोव ने कहा और भारी मन से वहा से हट गया। "हा, यूर्का ऐसी चीज तो गर्मी के शुरू मे खरीदनी चाहिये तब जब सडके बिल्कुल खुश्क हो जाती है।"

गोर्लोव होठ टेढे करके मुस्करा दिया।

"मै तो इतना बडा हो गया और आज तक यह नही जान पाया कि दुनिया मे ऐसे-ऐसे अजूबे भी है"

वे दो पैकेट उठाये हुए प्रलोभनो की इस आकर्षक दुनिया से बाहर आये। गोर्लोव स्टालो पर ठहरा और उसने अपने लिये सिगरेटे और यूर्का के लिये लकडी पर लगी हुई एसकीमो आइसक्रीम खरीदी।

हल्की-हल्की फुहार पड रही थी। सभी ओर छतरियो, थैलो और बरसातियो का प्यारा नजारा था। ट्रेफिक की रग-बिरगी रोशनिया बदल रही थी और कही से रेडियो पर स्वर-लहरिया सुनाई दे रही थी।

"क्यो क्या ख्याल है तेरा, कुछ बुरा तो नही लिया सूट हमने?" गोर्लोव ने पूछा।

"बिल्कुल बुरा नही है," यूर्का ने बडे विश्वास के साथ कहा।

"मै खुश हू कि हमने ठीक सूट चुना है," गोर्लोव ने कहा।

"पतलून भी लम्बा नही है," यूर्का को याद आया।

"हा तो यूर्का, अब हो जाये सैर-सपाटा!" गोर्लोव ने कहा। "हमे भला और करना ही क्या है?"

बस, लगे घूमने-फिरने। दोनो मर्द बच्चे थे जिन्हे किसी औरत के इशारो पर नही नाचना था। वे देर तक गलियो मे चक्कर काटते रहे, स्टैंड पर खडी हुई मोटरो मे दिलचस्पी लेते हुए उन्होने उन्हे खूब अच्छी तरह देखा-भाला, यहा तक कि उनके नीचे भी झाक कर देखा। उन भूमिगत गढो मे भी नजर डाली जिनमे मजदूर काम कर रहे थे। मुह से बजनेवाला बाजा खरीदा और मास भरी हुई एक-एक कचौरी खाई। बिजली के खम्भे पर कठपुतली-थियेटर का एक भीगा हुआ इश्तहार लगा था। उसमे लिखा था कि आज शाम के पाच बजे पादरी और उसके बुद्धू नौकर का तमाशा दिखाया जायेगा।

"लानत इन सभी चीजो पर! चलो तमाशा देखने चले, यूर्का!" घडी पर नजर डालते हुए गोर्लोव ने सुझाव दिया।

"हा, हा, चलिये," यूर्का ने कहा।

उन्होने वहा पहुच कर तमाशे के टिकट खरीदे। गेट-कीपर बुजुर्ग नारी ने दोनो टिकटो का एक-एक टुकडा फाड लिया और उन्हे थियेटर की सजी-सजायी और शीशो से चमचम करती गैलरी मे जाने दिया।

लकडी के फर्श पर कुछ लडकिया बडे ढग से इधर-उधर घूम रही थी। वे ऐप्रन पहने और लाल पेटिया लगाये हुए

थी। वे लोगो को बताती थी कि वे अपने कपडे कहा उतारे। वहा कोट, बरसातिया और छतरिया ली जाती थी और दूरबीने किराये पर दी जाती थी।

गोर्लोव और यूर्का पर तो रोब हावी हो गया। जिधर भी देखते उधर ही उन्हे शीशो मे अपना हुलिया नजर आता — वे सजे-धजे और बने-सवरे लोगो के बीच बिरकुल बेढगे और अटपटे-से लग रहे थे। इतना ही नही, जूते भी गन्दे थे। उन्हे अपने देहाती रग-ढग मे बहुत शर्म महसूस हुई।

वे दोनो मर्दाना टायलेट मे जा घुसे। वहा गोर्लाव ने पैकेट खोले और यूर्का को आदेश दिया —

"कपडे बदल ले!"

यूर्का ने नया सूट पहन लिया जो उसे बिल्कुल ठीक आया। उसे तो न कही टाकने की जरूरत थी और न छोटा करने की। गोटवाले जूते भी सूट के साथ खूब जचे। पुराना सूट और जूते कागज मे लपेटकर उन्होने वहा रख दिये जहा कोट, बरसातिया आदि रखी जाती थी। गोर्लोव ने अपने जूते साफ किये, टायलेट की देखभाल करनेवाले व्यक्ति से ब्रश लेकर अपने कपडे झाडे और इत्र लगाया। वह यूर्का का हाथ थामकर फिर से गैलरी मे आया। उसने कनखियो से शीशे मे नजर डाली तो यह देखकर हैरान रह गया कि यूर्का के साथ वे दोनो कितने अच्छे लग रहे थे! वे कैन्टीन मे गये। वहा उन्होने

पेस्ट्रियो, जबान जैसी दो परतदार मिठाइयो, मछली के अडोवाले दो सैंडविचो और सोडा-वाटर का आर्डर दिया। यूर्का खाने की चीजो पर टूट पडा। गोर्लोव ने भी बडे चाव से हाथ साफ किये और बरबस उसे यह ख्याल आया— "अगर पीना छोड दू तो कैसा रहे?" यह ख्याल आते ही वह काप उठा।

हॉल मे वे पाचवी कतार मे बैठे। गोर्लोव की चौडी पीठ से पीछे बैठे दर्शको के तमाशा देखने मे बाधा पडी। उससे झुकने का अनुरोध किया गया। पादरी और उसके बुद्धू नौकर का किस्सा गोर्लोव को भी यूर्का की भाति ही पसन्द आया। वह बडे रग मे आ गया। उसने जोर से ठहाके लगाये, तालिया बजायी और बूट धमधमाये। आखिर यूर्का को उसकी मलामत करनी पडी।

इतना ही नही, बहुत बाद मे भी जब वे छोटे-से घर की तग कोठरी मे सफरी बिस्तरो पर सोने के लिये लेटे तो गोर्लोव करवटे बदलता, तमाशे के दृश्यो को याद करता और मुस्कराता रहा।

"यूर्का, अरे यूर्का! क्यो कैसे उसने जोर का हाथ जमाया! पादरी छत से जा लगा!"

"अ-हा!"

"और वह जो चिथडोवाला शैतान समुद्र से निकला था! क्या कहा था उसने—'तूने क्यो सताया था हमे?'"

यूर्का शिष्टाचारवश हा मे हा मिलाता और मुस्कराता रहा और आखिर उसकी आख लग गई।

यूर्का को पैडलवाली 'राकेट' गाडी का सपना आया जो गोर्लोव और मा ने उसे उपहार मे दी। यूर्का ने देखा कि वह बडे मजे से हरी घास पर उसे चलाता फिर रहा है। फिर वह गाडी जमीन छोडकर आकाश मे उड चली और यूर्का उसमे हवाबाज की तरह बैठा रहा। उसे और तेजी से उडाने के लिये यूर्का ने हाथ बाहर निकाले और उन्हे पखो की भाति हिलाने लगा। सभी दग हुए जा रहे थे क्यो मुझे पहले यह बात न सूझी कि इतनी आसानी और इतनी शान से उडा जा सकता है?।

नीचे खडे हुए चाचा गोर्लोव और मा बहुत छोटे-छोटे लग रहे थे। वे अपने खुशी भरे चेहरे ऊपर को किये हुए थे। मा ने चिन्ता करते हुए कहा—"कही तार-वार मे फसकर अपना सूट मत फाड लेना, बेटा!" मगर गोर्लोव चाचा ने हसते हुए कहा—"चलाये जा, चलाये जा, यूर्का!"

ड्राइवर को बहुत देर तक नीद न आई। वह करवटें बदलता और सिगरेटें फूकता रहा। उसके दिमाग मे उल्टे-सीधे विचारो का ताता लगा हुआ था। ऐसा इसलिये था कि उस रात उसने पी नही थी। उसकी आखो के सामने दूकान का बूढा विक्रेता, थियेटर का लकडी का फर्श और शीशे घूमते रहे। वह उठा, उसने खिडकी का छोटा पट

खोला और इस बात की जाच की कि यूर्का इत्मीनान से सोया हुआ है। उसे याद आया कि कहा-कहा उसने अपना रुपया खर्च किया और यह कैसे हुआ कि उसने अपनी खून-पसीने की कमाई से किसी पराये बच्चे के लिये जूते खरीद दिये। तब भला यह बात कैसे सच है कि भाई भला न भैया, सब से भला रुपैया! आधी रात के बाद ही उसे उचटी-उचटी नीद आई। वह लगातार करवटे बदलता और बडबडाता रहा और उसने नीद मे चिल्लाकर यह कहा—

"अरे जरा फुर्ती से हाथ-पाव चला। बेयरिग मे तेल दे। हत तेरे की!"

४

अगले दिन भी उसी तरह तेज हवा चलती रही, नमी बनी रही, मगर बारिश रुक गई। सुबह के वक्त गोर्लोव गोदामो के चक्कर काटने और तरह-तरह के कागजो पर हस्ताक्षर कराने के फेर मे रहा। ट्रासफार्मर मिल गया और उसे लादकर वह पेट्रोल डलवाने के लिये गया।

दोपहर के बाद वे गाव की ओर रवाना हुए। रेल के फाटक पर स्लाव्यानोव्का गाव की दसेक सवारिया मिल गई, सभी नारिया।

हवा से सडक कुछ खुश्क हो गई थी, विशेषत उस जगह जहा खुला मैदान था। ट्रक धचके खाये बिना और एक अच्छे

घोडे की तरह तेजी से चली जा रही थी। फिर भी गोर्लोव ने उसे कई बार रोका। गोर्लोव ने इजन का ढक्कन उठाकर इस बात की तसल्ली की कि तेल ठीक तरह से आ रहा है। उसे ऐसे लगा था मानो तेल धीरे-धीरे आ रहा हो, मगर नही, उसका ख्याल गलत था।

पहाड से नीचे जाते हुए ट्रक उस जगह से गुजरी जहा सडक से हटकर उन्होने गढे मे टहनिया भरी थी जिनका भुरकुस निकल गया था। अब ऐसी टहनिया उस वक्त से कही ज्यादा थी। शायद उनके बाद इस आफती चढाई से एक भी गाडी आसानी से नही गुजर पाई थी। गोर्लोव ने इशारा करते हुए कहा—

"क्यो, याद है न?"

"हा, याद है," यूर्का ने पुष्टि की।

यूर्का ने बहुमूल्य गठरियो तथा मीठे समोसोवाली पोटली को अपनी छाती से लगा लिया। यह भी सयोग की ही बात थी कि छोटे घर की मालिकिन ने भी उन्हे रास्ते के लिये मीठे समोसे ही दिये थे।

पीछे से ट्रक की केबिन को जोर से खटखटाया गया। गोर्लोव ने गाडी एक ओर को करके रोक दी। औरतें उतरी, उन्होने सामान को उलटा-पलटा और नीचे उतारा। ड्राइवर ने बेताबी से केबिन का पट खोला और चाहा कि जरा उन्हे घुडक दे ताकि वे देर न लगाये। मगर फिर यह सोचकर

ऐसा न करने का निर्णय किया कि शायद यूर्का को यह मजाक पसन्द नही आयेगा। औरतो ने अपने बटुए खोले और पैसे निकाले। मगर गोर्लोव ने हाथ झटककर कहा —

"सब उतर गई क्या? बस, जाओ!" और उसने मोटर चालू कर दी।

"पैसे क्यो नही लिये?" यूर्का ने हैरान होकर पूछा।

"बस, योही! अपने ही लोग है, किसान लोग। उनसे भला क्या पैसे लेगे " गोर्लोव ने अप्रत्याशित ही कहा और उसे यह सोचकर हैरानी हुई — कैसे बढिया ढग से मैने बात समझा दी।

यूर्का गाडी के चलने से ऊघने लगा। वह अलसायी आखो से रास्ते को देखता रहा, फिर जरा सम्भलकर बैठ गया, उसकी नाक बजने लगी और वह सो गया।

ड्राइवर ने गाडी को जरा धीमा कर दिया, यूर्का के हाथ से धीरे से पोटलिया ले ली और उसकी टोपी ठीक कर दी। "बिल्कुल मा पर गया है! बडा बाका-छैला निकलेगा! भगवान नजरे बद से बचाये! और मा की तरह ही खरा और अभिमानी भी है! पाजी न हो तो! वैसे बात सोचने की है कि मा के लिये अकेले ही उसे पालना-पोसना कोई बच्चो का खेल नही रहा होगा! शाबाश है इस औरत को जो दुनिया के इस दूरस्थ कोने मे बच्चे के साथ काम करती

है   जरूर वह बडा ही कमीना होगा जिसने ऐसे बेटे और मा को उनके हाल पर छोड दिया!"

पिछली रात गोर्लोव की नीद पूरी नही हुई थी। कारण कि वह सुबह छ बजे उठकर गाडी को वापसी सफर के लिये तैयार करने के काम मे जुट गया था। मगर इस बात के बावजूद वह अपने दिल-दिमाग मे एक अनूठी ताजगी और फुर्ती अनुभव कर रहा था। इसके पहले नगर के फेरो के वक्त उसे ऐसी अनुभूति नही हुई थी। उसने खिडकी का शीशा नीचे किया और सिर बाहर निकालकर यह देखने लगा कि फार्म का मोड कब आता है। उसने बहुत तेजी से और बडे सधे हुए ढग से मोड काटा। यूर्का जागा नही, केवल उसका सिर जरा ढुलक गया।

दूरी पर राजकीय फार्म के मकानो की झलक मिली। हवा सुरमई और पानी से लदे हुए बादलो के कारवा को भगाये लिये जा रही थी, मगर लगता था कि इस वक्त वह उनको बिखराकर ही दम लेगी। जहा बादलो मे दरारे पड गई थी वहा से आकाश अपनी झलक दिखा रहा था। खेतो मे धूप के धब्बे दौड रहे थे। अनाज के घने, भीगे हुए और भारी-भरकम खेत लहरा रहे थे। सडक के दोनो ओर धुली हुई, हरी और ताजा घास सिर ऊचा किये खडी थी। अद्भुत दृश्य था। दूर-दूर तक विस्तार, ताजा और प्यारी हवा के झोके और उसमे रसी-बसी हुई तरह-तरह की

गन्ध श्रौर तरह-तरह की महक जिसके प्यारे झकोरे केबिन मे श्रा रहे थे। टीले पर छोटे-छोटे मकान सफेद बिन्दुश्रो की तरह दूर-दूर फैले हुए थे। राजकीय फार्म का तालाब चमक रहा था जिसमे तैरते हुए हस छोटे-छोटे बिन्दु जैसे दिखाई पड रहे थे। तालाब से निकलती हुई गहरे हरे रग की धारा श्रोर सरपत की झाडिया दिखाई दे रही थी। यह जागती, धडकती श्रौर किनारो तक भरी हुई सुन्दर दुनिया थी। यह ऐसी दुनिया थी जैसी बचपन या प्यार के दिनो मे होती है। गोर्लोव ने श्राश्चर्यचकित होते हुए मानो श्रपने जीवन मे पहली बार इस दुनिया को देखा श्रोर वह झूम उठा। उसने श्रपना हाथ बढाया कि यूर्का को झकझोर कर जगाये श्रौर उसे यह करिश्मा दिखाये। मगर लडका इतनी गहरी नीद सो रहा था कि उसे जगाने की बात सोचते हुए गोर्लोव के दिल को दुख हुश्रा श्रौर उसने श्रपना हाथ वापिस खीच लिया।

उसने सोचा कि लडके के सामने तो श्रभी बहुत बडी, बहुत लम्बी जिन्दगी है श्रौर भगवान ने चाहा तो वह श्रभी बहुत बार दुनिया के सौन्दर्य श्रौर सुख से श्रात्म-विभोर हो सकेगा।

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा, आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।